असली एवं प्राचीन

लाल किताब



अनिष्ठ ग्रहों द्वारा
उत्पन्न कठिन से
कठिन समस्या का
सरल टोने-टोटकों
द्वारा समाधान
कराने वाली आज
की बहुचर्चित
दुर्लभ व
अनमोल
पुस्तक

असली एवं प्राचीन लाल किताब

अस्ली प्राचीन:

लाल किताब

भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान प्रदान करने वाली तथा अनिष्ट ग्रहों से मुक्ति दिलाने वाली अद्भुत पुस्तक, विशेष टोटकों सहित!

मूल लेखक :

पं० गिरधारी लाल शर्मा

प्रस्तुतकर्ता :

पं० मनोहरलाल शर्मा (वशिष्ठ)

मूल्य : एक सौ रुपया

प्रकाशक :

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

दूरभाष : 23917707, 23974978

पुस्तक : असली प्राचीन लाल किताब

प्रस्तुतकर्ता : पं० मनोहरलाल शर्मा (वशिष्ठ)

मूल लेखक : पं० गिरधारीलाल शर्मा

प्रकाशक :

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

दूरभाष : 23917707, 23974978

शब्द सज्जा :

श्री साईं क्रिएशन्स, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-110006

मुद्रक :

लक्ष्मी प्रिंटिंग हाऊस, लाल कुआं, दिल्ली-110006

ASLI PRACHEEN LAL KITAB

BY : PANDIT MANOHAR LAL SHARMA (VASHIST)

मूल्य : सौ एक रुपये मात्र [Rs. 100/-]

विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

प्रस्तावना

'असली पुरानी लाल किताब' के नाम से यह पुस्तक पाठकों के सामने रखी गई है। इस किताब को शुरू करने से पूर्व मैंने ओरिजिनल (मूल) किताब का बहुत ध्यान से अध्ययन किया और यह जाना कि यह पुस्तक हस्त रेखा से सम्बन्धित विषय पर लिखी गई है। इसमें दुःखों के निवारणार्थ टोटकों को भी सम्मलित किया गया है। इस पुस्तक में आज के समय के मुताबिक नया कुछ भी नहीं दिखाई देता और नएपन का कोई प्रश्न उठता भी नहीं है, क्योंकि यह पुस्तक प्राचीन समय की लिखी हुई है। वर्तमान समय के नए ज्योतिष में जो कम या अधिक भिन्नता आई है इसका अंशमात्र भी इस पुस्तक में नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि इसमें पाश्चात्य ज्योतिष पर खास महत्व नहीं दिया गया था।

हमारी पुरानी भारतवर्ष की ज्योतिष को लाल किताब के लिखने वाले ने अपनी भाषा में लिखकर प्रशंसनीय कार्य निश्चत रूप से कर दिखाया है। जिस वक्त यह किताब लिखी गई थी, उस समय समस्त देश में उर्दू भाषा का बहुत ज्यादा प्रचलन था, अतः असली पुस्तक भी उर्दू में ही लिखी गई थी। लाल किताब में ग्रहों इत्यादि के भेदों तथा उनके परिणामों को उर्दू कविता के रूप में दर्शाया गया है जो ज्योतिष जैसी विषय की पुस्तक में मुझे कुछ अजीब-सा लगा है। जिस पढ़ने वाले व्यक्ति को इस भाषा को समझ पाने का ज्ञान नहीं है, उस व्यक्ति के लिए लाल किताब का कोई महत्व नहीं हो सकता। कोई भी किताब खरीदनी आसान होती है लेकिन उसको समझ पाना कठिन कार्य होता है। असली लाल किताब को समझ पाना सहज कार्य नहीं है, हालाँकि कुछ लोगों ने उसका खुलासा करके उसे सहज अवश्य बना दिया है।

मेरी स्वयं की यह पुस्तक मौजूदा समय के पाठकों के मुताबिक लिखी गई है। इस पुस्तक को कोई भी पाठक आसानी

से समझ सकता है। ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक पाठक भी इस पुस्तक को सरलता से समझ सकेंगे। इस पुस्तक में मैंनें लाल किताब के लेखक की भाँति कुछ भी समझाने के लक्ष्य से शेर अथवा कविता नहीं दी है। इसके अलावा जहाँ तक हो सका है उर्दू के शब्दों का भी न के समान प्रयोग किया है। मैंने पुस्तक को आम बोलचाल की भाषा में ही लिखा है। लेकिन मेरे लिए यह कुछ आश्चर्यजनक अवश्य है कि असली पुस्तक के लेखक पंडित श्री गिरधारीलाल शर्मा ने ज्योतिष की किताब में ऐसी भाषा का प्रयोग क्यों किया? मुझे कुछ ऐसा लगता है कि शायद वे एक लेखक होने के साथ-साथ शायर या कवि भी रहे हों।

कई लेखकों ने असली लाल किताब को कई हिस्सों में विभाजित करके जैसी की तैसी प्रस्तुत कर दी है। ऐसा करना गलत कार्य है। यदि असली लाल किताब को इसी तरह प्रस्तुत करना था तो फिर पेश करने वाले ने स्वयं की ओर से क्या बड़ा कार्य किया या कौन-सा विचित्र कार्य कर दिखाया।

मैंने अपनी किताब को पेश करने में जन्मकुण्डली के बारह स्थानों (घरों) में ग्रहों की उपस्थिति के बारे में लाल किताब के लेखक की राय को प्रकट करने का गलत साहस ज़रूर किया है और यह इसलिए किया है ताकि मैं पाठकों को यह बता सकूँ कि जन्मकुण्डली के स्थानों (घरों) के फलादेशों में मैंने जो कुछ लिखा है उसके संबंध में उक्त लेखक का क्या कहना है?

पेश की गई पुस्तक में सारे ग्रहों की पूरी जानकारी उनके स्वभावानुरूप दी गई है। जन्मकुण्डली के हर एक स्थान (घर) के बारे में उसका फलादेश भी दिया गया है। इसके साथ ही बुरे ग्रहों के द्वारा हानि पहुँचाए जाने को दूर करने के उपायों के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया है। प्रत्येक क्षेत्र के पढ़ने वाले के लिए प्रस्तुत पुस्तक पढ़ने के लायक तो है ही साथ ही ज्योतिष के ज्ञान की जानकारी उपलब्ध कराने में भी सहायक है।

आपका

पं० मनोहरलाल शर्मा

प्रवेश

भारतवर्ष के बहुत–से विद्वान लेखकों ने "लाल किताब" को विभिन्न रूपों में प्रदर्शित किया है। लाल किताब का मूल लेखक कौन है, यह उनमें से अधिकांश ने स्पष्ट रूप–से प्रकट नहीं किया, संभवतः उन्हें इसकी कोई विशेष जानकारी न रही हो। लाल किताब के दो भागों के प्रस्तुतकर्त्ता एक विद्वान ने तो यहां तक लिख दिया है कि लाल किताब का मूल लेखक कौन नजूमी था, यह विवाद का विषय है। एक अन्य ज्योतिष विषय के लेखक ने लाल किताब के प्रत्येक विभाग से अच्छी तरह से अवगत कराया। उन्होंने वास्तव में सराहने योग्य कार्य किया, किन्तु किताब के मूल लेखक को वो भी गोल कर गए, अर्थात् मूल लेखक के फेर में पड़ने से ही कतरा गए। लाल किताब के बारे में हमारे पास जो जानकारी है, हम उसे यहां दे रहे हैं। रक्षा लेखा विभाग के एक अधिकारी पंडित श्री गिरधारी लाल शर्मा ने उर्दू भाषा में लाल किताब नामक एक पुस्तक लिखी जो ११७२ पृष्ठों की है। अर्थात् पंडित गिरधारी लाल शर्मा ही लाल किताब के मूल और अधिकारी लेखक हैं। लाल किताब में हाथ की लकीरों की वैधता के बारे में तो बताया ही गया है, साथ ही तंत्र विषयक टोटकों और फलित ज्योतिष को संक्षिप्त रूप–से दिया गया है।

यद्यपि लाल किताब ज्योतिष विषय की ही पुस्तक है, किन्तु फिर भी अनेक पाठकों के मस्तिष्क में यह बात आ सकती है कि भारतीय ज्योतिष से अलग हटकर इसमें क्या है ? इस बात को समझाने के लिए हम लाल किताब की कुछ विशेष बातों को यहां बताने जा रहे हैं। भारतीय ज्योतिष का थोड़ा–सा ज्ञान रखने वाला पाठक भी इन बातों को सहज ही समझ सकता है। जैसे कुंडली में लग्न के अंक को कोई महत्त्व नहीं दिया गया है। अर्थात् लग्न में आने वाली राशियों के स्थान पर लाल किताब के लेखक ने उन ग्रहों की राशियों की उपस्थिति मानी हैं, जो उन भावों के कारकों की हैं। जैसे प्रथम भाव को सूर्य का पक्का भाव माना है, वैसे ही द्वितीय भाव को गुरु का, तृतीय

भाव को मंगल का, चतुर्थ भाव को चंद्रमा का, पंचम भाव को गुरु का, षष्ठ भाव को केतु का, सप्तम भाव को शुक्र और बुध दोनों का, अष्टम भाव को मंगल और शनि दोनों का, नवम को गुरु का, दशम को शनि का, एकादश को गुरु का और द्वादश भाव को राहु का पक्का घर माना है और ऐसा मानकर विविध ग्रहों की विविध भावों में स्थिति पर विचार किया है।

लाल किताब में फलादेश करने के लिए यह मान लिया गया है कि प्रत्येक जन्मकुंडली में, चाहे उसकी लग्न कुछ भी हो, लग्न में मेष, द्वितीय भाव में वृष, तृतीय में मिथुन, चतुर्थ में कर्क, पंचम में सिंह, षष्ठ में कन्या, सप्तम में तुला, अष्टम में वृश्चिक, नवम में धनु, दशम में मकर, एकादश में कुंभ और द्वादश में मीन राशि मानी जाएगी। तालिका के द्वारा भी इसे स्पष्ट किया गया है।

भाव	ग्रह	राशि
प्रथम भाव (लग्न)	सूर्य	मेष
द्वितीय भाव	गुरु (बृहस्पति)	वृष
तृतीय भाव	मंगल	मिथुन
चतुर्थ भाव	चंद्रमा	कर्क
पंचम भाव	गुरु (बृहस्पति)	सिंह
षष्ठ भाव	केतु	कन्या
सप्तम भाव	शुक्र/बुध	तुला
अष्टम भाव	मंगल/शनि	वृश्चिक
नवम भाव	गुरु (बृहस्पति)	धनु
दशम भाव	शनि	मकर
एकादश भाव	गुरु (बृहस्पति)	कुंभ
द्वादश भाव	राहु	मीन

कर्मफल के बारे में लाल किताब के रचयिता का दृष्टिकोण बहुत व्यापक है। अर्थात् जो अच्छे या बुरे कर्म हम इस जीवन में या इस समय में कर रहे हैं, उनका मनुष्य की जन्मकुंडली से कोई सरोकार नहीं है, क्योंकि ऐसे कर्मों का फल तो हम प्रायः आगामी जन्मों में पाएंगे और जो हम इस समय भोग रहे हैं, वो हमारे पूर्व जन्म का फल है। यही कारण है कि बहुत-से

लोग अत्यंत घृणित कर्म करते हुए भी इस जीवन में सुखी और धन-संपन्न देखे जाते हैं। ऐसे लोग इस जन्म में किए कर्मों का फल भविष्य में पाएंगे और इस समय उनको पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का फल मिल रहा है। तात्पर्य यह कि पिछले जन्म के अच्छे अथवा बुरे कर्मों का फल ही इस जीवन में जन्मकुंडली द्वारा व्यक्त होता है। यह फल दृढ़ और आदृढ़ दो प्रकार का होता है। आदृढ़ का निवारण तो पूजा, दान, जाप (या जप), रत्न धारण या यंत्र की प्रतिष्ठा आदि से हो सकता है, किन्तु दृढ़ कर्मों का कोई निवारण नहीं है, उनका फल तो पूर्णरूपेण प्रत्येक व्यक्ति को भुगतना ही पड़ता है।

जन्मकुंडली में अच्छे या बुरे कर्मों की अभिव्यक्ति भी अपने ढंग से हो जाती है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में चार संख्या की राशि अर्थात् कर्क पर मंगल आदि पाप ग्रहों की दृष्टि आदि का प्रभाव पड़ रहा है और साथ ही कर्क राशि के स्वामी चंद्र पर भी यही प्रभाव है। इस प्रकार कुंडली के चार संख्या के घर और चतुर्थेश ग्रह दोनों पर पापी ग्रहों की युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभाव है, तो ऐसी स्थिति में मनुष्य का शरीर चार संख्या वाला अंग अर्थात् फेफड़े पूरी तरह से बीमार हालत में समझे जाएंगे। अब अगर इन चारों—कर्क राशि, चंद्र, चतुर्थ भाव और चतुर्थेश सभी पर केवल पाप प्रभाव ही है, तो फेफड़ों की बीमारी लाइलाज समझी जाएगी।

अगर एक दो अंगों (कर्क राशि आदि) पर भी शुभ प्रभाव हुआ तो आशा की झलक मिलेगी और ग्रह शांति निवारण आदि से उस व्यक्ति को सेहत का फायदा हो सकेगा! पहली हालत में किसी तरह के इलाज से कोई फायदा न होगा। कहने का मतलब यह है कि हम मंत्र-जप, रत्न आदि धारण अथवा यंत्र-प्रतिष्ठा से पहले यह देख सकते हैं कि हमारा यह उपचार (इलाज) कहां तक बीमारी को दूर करने में अथवा दूसरे किसी तरह की तकलीफ को दूर करने में मददगार साबित होगा।

कुछ लोगों का यह विचार कि जब हम कर्म का फल भोगने में मजबूर और बंदिश में हैं, तो फिर इन उपायों से क्या फायदा, ठीक नहीं है। मनुष्य यद्यपि कर्म करने में पूरी तरह से स्वतंत्र है, इसलिए ईश्वर और कानून उसको बुरे कर्मों की सजा भी देता है। किन्तु मनुष्य की स्वतंत्रता में तारतम्य है। मनुष्य सर्वथा स्वतंत्र नहीं है, उसकी हालत उन दो घोड़ों के समान है जिसके एक के गले में दस गज़ की रस्सी बंधी हो और दूसरे के गले में पचास गज की। दोनों घोड़े घास चरने के लिए स्वतंत्र हैं, किन्तु दोनों की स्वतंत्रता सीमित

भी है और उसमें तारतम्य भी है। इस तरह कोई मनुष्य कम स्वतंत्र है और कोई ज्यादा, जैसा कि हम अपने जीवन में देखते हैं। यहां हमारे कहने का मतलब यह है कि मनुष्य यदि चाहे तो सही उपाय करके अपने अशुभ कर्मों के फल को किसी हद तक दूर कर सकता है।

चूंकि हमारे विषय का केंद्र जन्मकुंडली है, इसलिए जन्मकुंडली के आधार पर ही अनिष्ट ग्रहों के निवारण का उपाय किया जा सकता है। ज्योतिष का अल्प ज्ञान रखने वाले को भी यह बात पता होती है कि जन्मकुंडली के मुख्य चार अंग होते हैं—ग्रह, राशि, नक्षत्र और भाव (जिन्हें घर भी कहा जाता है)। इनमें ग्रह ही मुख्यतम हैं, क्योंकि राशियों, नक्षत्रों तथा भावों का विवेचन भी ग्रहों ही के आधार पर किया जाता है। जैसे कर्क राशि चंद्र के स्वरूप की परिचायक है। कृत्तिका नक्षत्र सूरज (सूर्य) द्वारा ही अभिव्यंक्ति पाता है और भाव भी अपने कारक ग्रहों के बिना प्रयुक्त नहीं किए जा सकते। अतः जन्मकुंडली में मुख्य वस्तु जिसको समझना अत्यंत आवश्यक है, वो ग्रह हैं।

यहां यह बात ध्यान में रखनी जरूरी है कि मेष से लेकर मीन तक बारह राशियों में कुछ राशिंयां ऐसी हैं, जिनमें कोई ग्रह विशेष आ जाए, तो बलवान् होकर वो बहुत शुभ फल देता है। जहां कोई ग्रह उच्च का होता है, उससे सातवीं राशि में वो नीचे अर्थात् निर्बल हो जाता है। चूंकि ग्रहों के बलाबल पर बहुत कुछ उनका फल निर्भर करता है, इसलिए यह जानना बहुत जरूरी है कि ग्रह कहां ऊंचे (उच्च) और कहां नीचे (नीच) होते हैं। तालिका से यह स्पष्ट हो जाएगा—

ग्रह	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य	१	७
चंद्र	२	८
मंगल	१०	४
बुध	६	१२
बृहस्पति	४	१०
शुक्र	१२	६
शनि	७	१

ग्रह मुख्यतः दो श्रेणियों में विभक्त हैं—१. शुभ, २. पापी। जब शुभ

ग्रहों का प्रभाव पड़ता है, तो प्रभावित वस्तु, तथ्य अथवा व्यक्ति प्रफुल्लित तथा प्रवर्द्धित होता है और पापी ग्रहों से प्रभावित होता है और पापी ग्रहों से प्रभावित तथ्य आदि पीड़ित, दुःखी तथा नष्ट होते हैं।

सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु ये पांचों ग्रह नैसर्गिक पापी अर्थात् कुदरती तौर पर पापी हैं। उनके खिलाफ गुरु और शुक्र नैसर्गिक रूप-से शुभ हैं। चंद्र कभी बलवान् होकर शुभ हो जाता है और कभी निर्बल होकर पापी। जब अमावस का चंद्र होता है, तो सूर्य के समीपतप होने के कारण यह अपना सारा तेज खो बैठता है और बहुत कमजोर यानी निर्बल समझा जाता है। फिर शुक्लपक्ष में चंद्र रोजाना सूर्य से आगे निकलता चला जाता है। जब यह सूर्य से ७२ अंश दूर निकल जाता है, तो ताकतवर होना शुरू होता है, वरना तब तक कमजोर ही रहता है (यहां कमज़ोर को "निर्बल" और ताकतवर को "बलवान्" कहा गया है) और एक पापी ग्रह के रूप में अपनी स्थिति तथा सृष्टि द्वारा कार्य करता है।

अपनी रफ्तार से बढ़ता हुआ चंद्र जब सूर्य से दूर यानी १८० अंशों पर पहुंच जाता है, तो वो पूर्णबली हो जाता है और तब वो शुभ फल देता है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि चंद्र ७२ अंशों से आगे उत्तरोत्तर बली हो जाता है। पूर्णिमा के बाद चंद्र अपना थोड़ा बल खोता है और ऐसा तब तक होता है, जब तक कि सूर्य के अंश ७२ तक नहीं पहुंच जाता। जब इसकी दूरी ७२ अंश से कम होनी आरंभ होती है, यह कमजोर होना शुरू हो जाता है और अमावस्या तक तो बिल्कुल ही निर्बलतम यानी कमजोर हो जाता है।

बुध पापियों के साथ पापी और शुभ ग्रहों के साथ शुभ माना जाता है। राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इन पर यदि शुभ ग्रहों का असर (प्रभाव) हो नो यह अपनी दशा भुक्ति में शुभ फल और पापी ग्रहों के साथ अशुभ फल करते हैं।

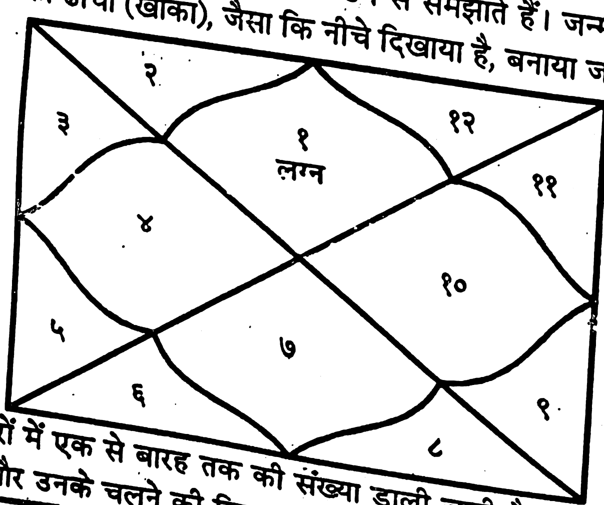
मनुष्य पूर्व जन्म में जैसे कर्म करके आता है, वैसा ही फल इस जन्म में भोगता है और इस जन्म में जो करता है, अगले जन्म में उसे भोगना होता है; यह बात हम पहले बता चुके हैं। फल इस जन्म में भोगा जाए या अगले जन्म में, बुरे कर्म का फल बुरा और अच्छे कर्म का फल अच्छा ही मिलता है। इसलिए शुभ कार्य से ही कल्याण संभव है। मान लीजिए किसी जन्मकुंडली में गुरु एकादश स्थान में पीड़ित अवस्था में है, तो ऐसी दशा में बाप (पिता) आदि से अलग रहना अच्छा नहीं होता। माँ-बाप और बूढ़ों की खिदमत करने से दौलत बढ़ती है और पास में टिकी भी रहती है। इसी तरह अगर किसी की जन्मकुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित हो, तो उस व्यक्ति के आचरण में सात्त्विकता रहती है और उसका खाना-पीना भी पाक और साफ रहता है (इसका कारण

यह है कि सूर्य एक सात्त्विक ग्रह है)। आध्यात्मिकता जिससे सूर्य का संबंध है, बनी रहती है। स्त्रियों को गर्भ की हानि कभी नहीं होती। इन नियमों के उल्लंघन होने पर, सूर्य की पंचम दृष्टि संतान का नाश कर देती है।

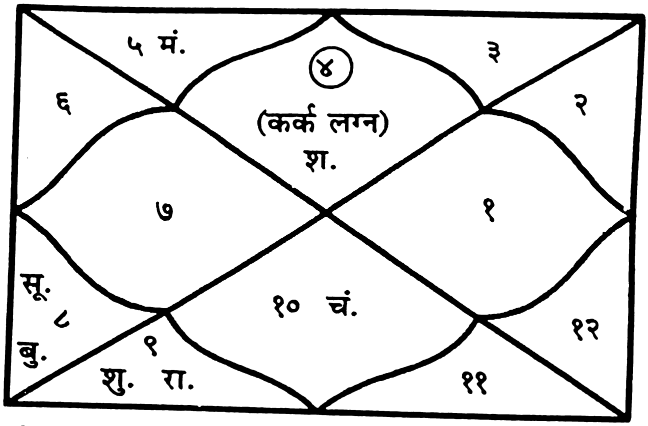
बुध और पापी चंद्रमा अगर आपके तीसरे भाव में है, तो आपका अपनी छोटी बहन के प्रति व्यवहार प्रेमपूर्वक रहेगा। ऐसा न होने पर मन शांत कभी न होगा और धन-दौलत का भी नुकसान लगातार होता रहेगा। इसलिए बहन से प्रेम का इजहार करते रहें। अगर गुरु और सूर्य आपकी कुंडली में इकट्ठे हैं और आपको अपने बेटे से हमेशा शिकायत रहती है तो अपने पिता से मिलकर रहें, उनसे आदर से पेश आएं। आपके ऐसा करने पर आपका बेटा भी आपसे आदर करने लगेगा और किसी भी तरह की शिकायत का कोई मौका नहीं देगा। इसकी वजह यह है कि सूरज (सूर्य) आपका अपना पाप (आत्मा) है और गुरु (बृहस्पति) बड़ा बूढ़ा (पिता समान) है। इसलिए जीवन में जो कुछ भी बदलाव आएगा, इन्हीं दोनों की वजह से ही आएगा, जो बाप-बेटे के बीच मुहब्बत पैदा करने को काफी होगा। इस बात से आसानी से यह पता चल जाता है कि कर्म का फल मिलता अवश्य है, बल्कि व्यक्ति अपने कर्म के फल को ही भोगता है।

कुंडली के बारह घर

इस विषय को आगे बढ़ाने से पहले हम जन्मकुंडली के बारह घरों के बारे में कुछ बताना चाहते हैं, क्योंकि इस बारे में जाने बिना किसी भी कुंडली को समझना असंभव है। इसे हम अपने ढंग से समझाते हैं। जन्मकुंडली के बारह घरों का ढांचा (खाका), जैसा कि नीचे दिखाया है, बनाया जाता है। इस



ढांचे के घरों में एक से बारह तक की संख्या डाली जाती है, ताकि घरों की शुरूआत और उनके चलने की दिशा मालूम हो सके।



मान लीजिए किसी जातक की पैदाइश ऐसे वक्त पर हुई जबकि उसकी पैदाइश की जगह (जन्म, स्थान) के पूरब के क्षितिज पर कर्क नाम की चार संख्या की राशि उदय हो रही थी। इस बात को दर्शाने के लिए चलन है कि घर संख्या १ यानि लग्न में कर्क न लिखकर, सिर्फ उसकी संख्या लिख दी जाती है। दूसरी उदाहरण कुंडली में लग्न यानी पहले घर में (दो त्रिकोणों के बीच में चतुष्कोण) ऊपर की दिशा में कर्क को दर्शाने वाला अंक ४ पड़ा है।

नीचे दी गई तालिका में राशि के सूचक अंक और राशि के स्वामियों के बारे में बताया गया है—

राशिसूचक अंक	राशि	राशियों के स्वामी
१	मेष	मंगल
२	वृष	शुक्र
३	मिथुन	बुध/केतु
४	कर्क	चंद्रमा
५	सिंह	सूर्य
६	कन्या	बुध/राहु
७	तुला	शुक्र
८	वृश्चिक	मंगल
९	धनु	बृहस्पति
१०	मकर	शनि

→

११	कुंभ	शनि
१२	मीन	बृहस्पति

तालिका के मुताबिक पहले घर का स्वामी चंद्रमा होगा। फिर दूसरे घर का स्वामी (या मालिक) उस घर में मौजूद सिंह राशि का स्वामी सूर्य (या सूरज) होगा। तीसरे घर का स्वामी, तीसरे घर में मौजूद कन्या राशि का स्वामी बुध होगा। चौथे घर का स्वामी, चौथे घर में मौजूद (स्थित) तुला राशि का स्वामी शुक्र होगा। पांचवें घर का स्वामी, पांचवें घर में मौजूद वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल होगा। छठे भाव का स्वामी, छठे घर में मौजूद धनु राशि का स्वामी बृहस्पति होगा। सातवें घर का स्वामी, सातवें घर में मौजूद मकर राशि का स्वामी शनि होगा। आठवें घर का स्वामी, आठवें घर में मौजूद कुंभ राशि का स्वामी शनि होगा। नौवें घर का स्वामी, नौवें घर में मौजूद मीन राशि का स्वामी बृहस्पति होगा। दसवें घर का स्वामी, दसवें घर में मौजूद मेष राशि का स्वामी मंगल होगा। ग्यारहवें घर का स्वामी, ग्यारहवें घर में मौजूद वृष राशि का स्वामी शुक्र होगा और बारहवें घर का स्वामी, बारहवें घर में मौजूद मिथुन राशि का स्वामी बुध होगा।

पेश की गई दूसरी कुंडली में पहले घर का मालिक, कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा है, और वो कुंडली के सातवें घर में मौजूद है। घरों की गिनती पहले घर से होती है और उस गिनती में पहला घर भी शामिल किया जाता है। वो लग्नेश यानी लग्न का स्वामी चंद्र मकर राशि में मौजूद है जो कि उसके दुश्मन (शत्रु) शनि की राशि है।

इसी तरह दूसरे घर का स्वामी यानी सिंह राशि का स्वामी सूर्य पांचवें घर में अपने मित्र मंगल की राशि वृश्चिक में बुध के साथ बैठा है। तीसरे घर का स्वामी बुध है जो कि पांचवें घर में सूर्य के साथ मौजूद है।

चौथे घर का स्वामी शुक्र है जो कि कुंडली के छठे घर में अपने शत्रु बृहस्पति (गुरु) की राशि धनु में राहु के साथ मौजूद है। पांचवें घर का स्वामी मंगल दूसरे घर में अपने मित्र सूर्य की राशि सिंह में मौजूद है।

छठे घर का स्वामी बृहस्पति ग्यारहवें घर में अपने शत्रु शुक्र की राशि वृष में मौजूद है। सातवें घर का स्वामी पहले घर में चंद्रमा की राशि कर्क में मौजूद है। आठवें घर का स्वामी शनि है जो पहले घर में, चंद्रमा की राशि कर्क में स्थित है। नौवें घर का स्वामी बृहस्पति ग्यारहवें घर में शत्रुराशि में मौजूद है।

दसवें घर का स्वामी मंगल है जो कि दूसरे घर में मौजूद है। ग्यारहवें घर का स्वामी शुक्र छठे घर में, धनु राशि में राहु के साथ बैठा दिखाया गया है और बारहवें घर का स्वामी बुध पांचवें घर में वृश्चिक राशि में सूर्य के साथ बैठा है।

हमने दूसरी कुंडली के हरेक घर में बैठे ग्रहों के बारे में जानकारी दी। यहां एक बात और भी ध्यान में रखने वाली है कि हरेक ग्रह जहां वो मौजूद होता है, वहां तो अपना पूरा प्रभाव डालता ही है, उसके अलावा वो जन्मकुंडली के दूसरे कई घरों पर भी विशेष प्रभाव डालता है। जैसे सूर्य, चंद्रमा, बुध और शुक्र की दृष्टि अपने से सातवें घर पर भी पड़ती है। मंगल की दृष्टि सातवें घर के अलावा चौथे और आठवें घर पर भी पड़ती है। शनि की दृष्टि सातवें घर के अलावा तीसरे और दसवें घर पर भी पड़ती है, जबकि राहु और केतु की दृष्टि बृहस्पति तथा राहु-केतु की दृष्टि के साथ-साथ पांचवें और नौवें घर पड़ती है।

उपर्युक्त सभी बातों को अच्छी तरह से समझने के लिए जन्मकुंडली के बारह घरों के बारे में जानना बहुत जरूरी है। बारह घरों की जानकारी इस प्रकार है—

पहला घर (लग्न)—शरीर के अंग, शरीर का रंग, जन्म की जाति, आयु, धन, यश, शरीर का कद, जन्म के वक्त का माहौल, बालक की हालत, सिर, बुद्धि, चरित्र, स्त्री की योनि और मरण विधि आदि का विचार इसी से होता है।

दूसरा धन का घर—खाने-पीने की चीजें, इकट्ठी की हुई दौलत, दाहिनी आंख, विद्या की मात्रा, वाणी और उसकी शक्ति, गला, बाल्यावस्था, माता के बड़े भाई और बहन, स्त्री (पत्नी) अथवा पति की आयु और मारकत्व का विचार इसी घर से होता है।

तीसरा संबंधियों का घर—छोटे भाई-बहन, बांहें, बांहों की ताकत, सांस की नली, पुरुषार्थ, आयु, अपना पाप, साले की औरत, साली का खाबिंद (पति) और ससुर आदि का विचार तीसरे घर से किया जाता है।

चौथा सुख का घर—रहने का मकान, माता, रहने का देश, खेत, सुख और दुःख, वाहन, मन, जनता, भावनाएं, फेफड़े, पिता की आयु, छाती, जल, कुआं व पातालादि का विचार इस घर से किया जाता है।

पांचवां पुत्र का घर—पुत्र तथा अन्य संतान, मंत्रणाशक्ति, लेखन-कला, पेट, इष्टदेव, ऊहापोह-शक्ति, भविष्य, सट्टा, सिनेमा, मौज-मस्ती, प्रेमिका, दिल,

बड़े भाई की पत्नी, बड़ी बहन का पति, पत्नी के बड़े बहन-भाई, दौलत और नसीब आदि का विचार इसी घर के द्वारा होता है।

छठा शत्रु का घर—शत्रुत्व, बाधाएं, अल्पता, कर्जा, सेहत और बीमारी, आंतों, गुर्दे, माता का छोटा भाई, बड़े भाई-बहन की आयु का विचार इस भाव से होता है।

सातवां स्त्री का घर—स्त्री (पत्नी), पति, शादी, शादीशुदा जिन्दगी, कामदेव, वीर्य, औलाद, मूत्रेन्द्रिय, यात्रा का पथ, उत्पादन क्षमता, दूध आदि पीने की वस्तुएं, पिता का बड़ा भाई तथा पिता की बड़ी बहन और व्यापार आदि का विचार इसी घर से किया जाता है।

आठवां आयु का घर—आयु (उम्र), मरण-विधि, पाप, अनुसंधान, अंडकोष, विदेश यात्रा, बड़े मामा की स्त्री, माता की बड़ी बहन का पति और नाशादि का विचार इसी घर से किया जाता है।

नौवां धर्म का घर—धर्म, शुभ चिंतन, भाग्य, पिता, राज्यकृपा, गुरु, अपने देश की यात्रा, पिछला जन्म, भूतकाल, पुण्य, स्त्री के छोटे भाई-बहन, छोटे भाई की औरत तथा छोटी बहन के पति का विचार इसी घर से किया जाता है।

दसवां कर्म का घर—शुभ/अशुभ कर्म, यज्ञ कर्म, घुटने, राज्य, शासन, उच्चता, पिता का धन, सास और छोटे भाई की आयु का विचार इसी घर से करना चाहिए।

ग्यारहवां आय का घर—आय (आमदनी), बड़े भाई-बहन, टांगें, परोपकार, पुत्रवधु, पुत्री का पति (दामाद), माता की आयु और पिता के छोटे भाई-बहन का विचार इसी घर से किया जाता है।

बारहवां व्यय का घर—व्यय (खर्च), नींद, भोग, पांव, बायीं आंख, पुत्र और पुत्री की आयु व पिता की आयु का विचार इस भाव से किया जाता है।

नोट—लाल किताब में "भाव" को "घर", "गुरु को बृहस्पति", "सूर्य" को "सूरज", "शनि" को "शनिश्चर" और "पूर्ण" को "पक्का" ही अधिक कहा गया है। हमने "सूरज" को "सूर्य", शनिश्चर को "शनि", "घर" को "भाव" और "पक्का" को "पूर्ण" भी कहीं-कहीं पर लिखा है, जो हमारी अपनी भाषा है और मूल भारतीय ज्योतिष की भी। उर्दू भाषा का प्रयोग भी हमने बहुत कम किया है, पाठक इसे गलत न समझें!

देवताओं का गुरु बृहस्पति

बृहस्पति को महर्षि अंगिरा का पुत्र माना जाता है तथा पुराणों में महर्षि की गणना सप्तऋषियों में की जाती है। बृहस्पति की माता श्रद्धा, कर्दम ऋषि की पुत्री थी। बृहस्पति को देवताओं का गुरु माना जाता है। बृहस्पति अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक बलशाली, कोमल वृत्ति वाला, ज्ञान का प्रदाता तथा शुभ ग्रह है। धनु और मीन राशि का यह स्वामी है। सूर्य, चंद्रमा और मंगल ग्रह इसके अच्छे मित्र हैं, जबकि शनि, राहु और केतु मित्र या शत्रुता के पचड़े में नहीं पड़ते! वो बृहस्पति के न तो मित्र हैं और न ही उससे किसी प्रकार की शत्रुता ही रखते हैं। बृहस्पति के मामले में वो सामान्य बने रहते हैं, किन्तु बुध और शुक्र उससे पक्की शत्रुता रखते हैं। इसका कारण यह है कि वो बृहस्पति की शक्ति को स्वीकार नहीं करते।

बृहस्पति जन्मकुंडली के पांचवें घर का कारक है। अकेला लग्नस्थ बृहस्पति जातक के लाखों दोषों को दूर कर देता है। यह चंद्र और सूर्य की तरह सदा मार्गी नहीं होता, बल्कि समय-समय पर मार्गी, वक्री तथा अस्त होता रहता है। यह जन्मकुंडली के जिस घर में भी मौजूद रहता है, वहां से तीसरे तथा दसवें घर को एक चरण दृष्टि से, पांचवें और नौवें घर को दो चरण दृष्टि से और चौथे तथा आठवें घर को तीन चरण दृष्टि से और सातवें, पांचवें, नौवें घर को पूरी दृष्टि से देखता है।

जिस तरह सूर्य को आत्मा का और चंद्रमा को मन का कारक माना गया है, उसी तरह बृहस्पति को शरीर की शक्ति और ज्ञान का कारक माना गया है। जन्मकुंडली में बृहस्पति अच्छे घर में मौजूद हो और किसी पाप ग्रह की दृष्टि उस पर न पड़ रही हो तो विद्या-बुद्धि से संपन्न, सम्मानपूर्ण जीवन बिताने वाला बनता है। बृहस्पति से धन, ऐश्वर्य, समृद्धि, संपत्ति, न्याय, संतान (पुत्र), स्वर्ग का सुख तथा अध्यात्म का विचार किया जाता है। जिस जातक की जन्मकुंडली में बृहस्पति शुभ घर में मौजूद हो, उसे निश्चित रूप-से एक राजा के समान सुख देता है।

अगर बृहस्पति की स्थिति प्रतिकूल अथवा दोषपूर्ण हो तो नाक, कान, गले और नजले का कारण बनेगा तथा दिल की बीमारी, टीबी, बेहोशी, सूजन और बलगम आदि बीमारियों को प्रभावित करेगा। शरीर में कमर से लेकर जंघा तक इसका प्रभाव क्षेत्र माना गया है। यह सूर्य के साथ सात्त्विक, चंद्र के साथ राजसी और मंगल के साथ तामसी व्यवहार करता है।

लाल किताब के लेखक का कहना है कि बृहस्पति कांस्य धातु, दाल, चना, गेहूं, जौ, घी, पीत वस्त्र तथा मीठे रसीले पदार्थों का अधिपतित्त्व करता है।

बृहस्पति स्त्रियों का सौभाग्यवर्द्धक तथा संतान सुख का कारक ग्रह है। हल्दी, धनिया, प्याज, ऊन तथा मोम आदि का प्रतिनिधि भी बृहस्पति ही है। इसका अशुभ प्रभाव होने के कारण प्रत्येक कार्य में व्यवधान तथा असफलता ही हाथ लगती है। समाज, परिवार तथा बंधुओं के बीच आदर नहीं होता। विद्या प्राप्त करने में भी अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं।

शुभ तथा बलवान् बृहस्पति परमार्थी, चतुर, कोमल मति, विज्ञान का विशेषज्ञ, न्याय, धर्म, नीति का जानकार, सात्त्विक वृत्ति से युक्त तथा दौलतमंद बनाता है। समाज में प्रतिष्ठा और कीर्ति को बढ़ाता है। पुरुषों को पुत्रों का सुख मिलता है और स्त्रियों का वैवाहिक जीवन सुखद होता है, तथा उनके सौभाग्य को खंडित नहीं होने देता।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के १/२/४/५/९/११/१२ घर शुभ और ३/६/७/८/१० घर अशुभ हैं।

बारह घरों में बृहस्पति का फल

पहला घर—जन्मकुंडली में बृहस्पति पहले घर अर्थात् लग्न में हो तो जातक दीर्घायु, विद्वान्, सुंदर, व्यक्तित्व का, धनी, ईश्वर का भक्त तथा सफल भविष्यवक्ता होता है। लगनस्थ बृहस्पति जातक को स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, कार्य परायण, पुत्रवान् तथा राज्य द्वारा सम्मानित करता है। अगर बृहस्पति शत्रुक्षेत्री अथवा नीचस्थ अथवा पाप ग्रहों से दृष्ट है तो जातक को नीच लोगों का दास और मानसिक रूप-से चिंतित बनाता है। इसी तरह अगर लगनस्थ बृहस्पति उच्च राशि में यानी बलवान् होकर शुभ ग्रहों के द्वारा देखा जा रहा हो, तो धन-दौलत सभी प्रदान करता है।

यदि मीन लग्न हो और बृहस्पति आठवें घर में हो और उस पर दो या तीन पापी ग्रहों का असर हो, तो जातक ज्ञानभाव का स्वामी होता है। एक ज्ञानी ग्रह होने से बृहस्पति ज्ञानशक्ति और सूझबूझ का पूरा प्रतिनिधित्व करता

है। ऐसा बृहस्पति आठवे घर में शत्रु की राशि में पाप दृष्टि होने से जातक को जड़-बुद्धि का बना देता है, चाहे बृहस्पति वक्री ही क्यों न हो ? ऐसी हालत में उपाय भी कम असरकारी होता है, तो भी दान-पुण्य और बृहस्पति का रत्न धारण करने से स्थिति में कुछ सुधार अवश्य किया जा सकता है।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के पहले घर में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. अपनी दिमागी ताकत के बल पर देश के रहनुमाओं से दोस्ती में महारथ हासिल होगी।
२. जातक की तालीम पूरे दर्जे की मुकम्मल हो या न हो मगर वो दौलतमंद जरूर होगा। निकम्मा, शक्की मिजाज का न होगा, बहुत ज्यादा गुस्सा करने वाला होने पर भी दिल का साफ, तबियत का नेक और संजीदा होगा।
३. एक बच्चे की पैदाइश के बाद दूसरे बच्चे की उम्र का फर्क आठ साल से ज्यादा न होगा।
४. कई इल्मों का जानकार, सरकारी हाकिम होगा। उम्र बढ़ने के साथ-साथ हालत में भी सुधार आते जाएंगे। जातक (शख्स) बतौर संन्यासी का जीवन भी बसर कर सकता है, सभी लोग उसका बहुत आदर करेंगे।
५. पुश्तैनी जायदाद मिलेगी। शादी के बाद से ही नसीब में कयामत आ जाएगी और अपनी मेहनत की कमाई से ही ऊंचा मकान खड़ा किया जाएगा। किसी के आगे कभी हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा क्योंकि किस्मत साथ देगी।

दूसरा घर—बृहस्पति दूसरे घर में हो तो जातक प्रसन्नचित्त, उत्तम स्त्री का पति तथा रत्नों के व्यापार से लाभार्जित करने वाला होगा। दूसरे घर में गुरु आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक, मधुर बोलने वाला, संपत्ति एवं संततिवान्, सदाचारी, भाग्यशाली, व्यवसायी तथा धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है।

अगर द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्चस्थ अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक अपने जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित व संचय करने वाला होता है। इसी तरह नीचराशिस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री बृहस्पति जातक को मिथ्यावादी, ठग तथा दूसरे की स्त्रियों का भोग करने वाला बनाता है।

बृहस्पति बलवान् होने पर एक वर सिद्ध होता है, क्योंकि ऐसी हालत में बृहस्पति को ११/३/५ घरों का आधिपत्य प्राप्त होता है जो कि सर्वथा शुभ है। इस तरह की कुंडली में अगर बृहस्पति को बलवान् किया जाए तो वो बहुत

धनधायक सिद्ध हो सकता है। अगर ऐसे बलवान् बृहस्पति की दृष्टि पहले (लग्न), दूसरे, पांचवें अथवा ग्यारहवें आदि शुभ भावों पर पड़ती हो तो जातक विशेष मात्रा में धन पाता है।

यदि बृहस्पति निर्बल होकर बुध के साथ हो और दोनों पर शनि और राहु आदि का प्रभाव हो तो जातक को अल्प विद्या की प्राप्ति होती है। उसकी भाषणशक्ति भी बहुत कम होती है। उसके कोष में पैसा भी कम होता है। उसकी माता के बड़े भाई प्रायः बीमार रहते हैं। इन सब हालात में सुधार के लिए बृहस्पति को बलवान् करना अभीष्ट होगा।

बृहस्पति दूसरे और पांचवें घर का मालिक होने पर भी पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो धन का नाश करने वाला स्वयं का पुत्र होता है। यदि बृहस्पति दूसरे और बारहवें घर का मालिक (स्वामी) होकर बहुत पीड़ित हो तो धन का नाश बड़े भाई के द्वारा होता है। इन हालात में भी बृहस्पति को बलवान् करना अच्छा होता है और बलवान् करने के लिए बृहस्पति का रत्न पुखराज पहनना चाहिए।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. दूसरा घर बृहस्पति का असली मुकाम है। इस मुकाम के मालिक शख्स की औलाद, कारोबार और ससुराल के जरिए किस्मत बन जाती है।
२. दुश्मन ग्रहों का बृहस्पति पर कोई असर न होगा, जिस वजह से बृहस्पति का असरकारी शख्स जिंदगी में तरक्की करता जाता है। सोलह से बत्तीस साला उम्र के दरम्यान दौलत की देवी की खास मेहरबानी होती है। वैसे सत्ताइस साल का अरसा तरक्की का रहेगा।
३. जिस शख्स की कुंडली के दूसरे घर में बृहस्पति है, वो सब तरफ का ऐश कर कराकर और कुछ ऐबों का जायका लेकर और रंग-बिरंगी हालत देखकर, फकीरी हालत (संन्यासी आदि) में पहुंचकर, आदर का खास हकदार हो जाता है। वैसे वक्त के साथ इसमें थोड़ा-बहुत बदलाव भी आ सकता है। हर हालत में दिल का साफ और नियत का नेक होगा तथा हुकूमत की ताकत, इराब की पुख्तगी व बुलंदख्याली का मालिक होगा।

तीसरा घर—बृहस्पति तीसरे घर में हो तो जातक परोपकारी, प्रवासी, आस्तिक, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, वाहनयुक्त तथा कामुक होता है। धन को वो कभी भी अनुचित कार्यों में व्यय नहीं करता तथा घूमने-फिरने का शौकीन होता है। तीसरे घर में बृहस्पति दूसरे पाप ग्रहों से न देखा जाता हो तो उसके

कई भाई दीर्घायु होते हैं। किन्तु तीसरे घर में बृहस्पति किसी पाप ग्रह से युति करते हुए बैठा हो तो उसके एक या दो भाइयों की मृत्यु हो जाती है तथा भाइयों के सुख का अभाव हो जाता है।

यदि गुरु तीसरे घर का मालिक होकर निर्बल और पीड़ित हो तो साली के पति की आयु को कम करता है। बृहस्पति ग्यारहवें घर का स्वामी हो और निर्बल और पीड़ित हो तो स्त्री की कुंडली से उसके पति की बड़ी बहन के वैधव्य का सूचक है या फिर उस बहन का विवाह ही न हो। इसके लिए ग्रह को बलवान् करने का उपाय पुखराज धारण करके करना चाहिए, वरना बृहस्पति निर्बल और पीड़ित होकर अपनी पुत्री के विवाह में भी निर्बल सिद्ध हो सकता है और अगर मंगल, केतु आदि के प्रभाव में हो तो पुत्री को विधवा तक बना सकता है, इसलिए बृहस्पति को दान आदि के द्वारा भी बलवान् किया जाना चाहिए।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. लम्बी उम्र और उम्दा सेहत का शख्स होगा। भाई-बहन कारामद और मददगार होंगे।
२. २६ साला उम्र के बाद उम्दा बड़े खानदान और शहाना दौलत की हर तरफ बरकत हो।
३. चालाक आंख, तेज़फ़हम हर शख्स को उसकी आवाज से ही जांचने वाला, सबको तारने वाला, घर का मुखिया होगा।

चौथा घर—बृहस्पति चौथे घर में हो तो जातक धन, वाहन आदि से संपन्न, प्रसन्नचित्त वाला, उद्योगी, ज्योतिष विद्या में रुचि रखने वाला, राजमान्य, माता-पिता का आज्ञाकारी तथा कुलदीपक होता है। यदि चौथे घर में बली बृहस्पति मौजूद हो तो जातक का जन्म संपन्न परिवार में होता है।

चौथे घर का मालिक बृहस्पति पाप ग्रहों से दृष्ट होने पर अशुभ फल जातक को प्रदान करता है तथा चौथे घर में बृहस्पति, चंद्र और शुक्र का मिलान जातक को वाहन सुख तथा गृहस्थी का सुख प्रदान करता है। व्यक्तिगत भाग्य का प्रभाव मातृ कुल की दिव्य (आत्मा) शक्ति द्वारा होगा।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. गांव, शहर या इलाके में हजारों-लाखों की संख्या में लोगों के बीच मशहूर शख्स होगा।
२. मुल्की, रुहानी, हुकूमत व गैबी ताकत का मालिक होगा।

३. न खुद हाथ से कमाई करनी पड़े, बल्कि खुद धनदेवी पांव पकड़ती फिरे, मगर वो खुद लालच से दूर रहे। खूबसूरत बीवी, अच्छी औलाद, नेक माता-पिता का सुख, रहम दिल, आलीशान मकान का मालिक, साथ में तालीम व इल्म की बरकत, कुदरती मदद और सवारी का सुख नसीब होगा।
४. जिसकी कुंडली के चौथे घर में बृहस्पति हो, उसका वालिद खून के मुकदमों का फैसला करने की ताकत का मालिक या आला हाकिम होगा या उसकी पैदाईश के बाद जल्द हो जाएगा।
५. सीप में मोती की तरह खानदान में नाम पाए, जमाने की हवा का पूरा नेक असर और स्वर्ग के राजा इंद्र की तरह लोक-परलोक का मालिक और सुखों को हासिल करने वाला होगा।

पांचवां घर—जिसकी कुंडली के पांचवें घर में बृहस्पति हो तो जातक सहृदय, मित्रों द्वारा सम्मानित, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, सुखी, सुंदर और सबका प्रिय होता है। पांचवें घर का स्वामी बृहस्पति जातक को आस्तिक, ज्योतिषी, लोकप्रिय तथा संततिवान् होता है। कुछ विद्वान् ज्योतिर्विद बृहस्पति को पांचवें घर में निष्फल मानते हैं। अगर बृहस्पति पांचवें घर में पाप ग्रह से युत व दृष्ट हो, वक्री अथवा अस्त हो तो ऐसी दशा में जातक संतान के शोक से पीड़ित होगा।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जाती किस्मत का बुलंद असर अपनी आस-औलाद के जरिया होगी। काम काज व्यापार और दुनियावी कारोबार सब बढ़ता होगा। जवानी में औलाद की जरूरत को महसूस करते हुए उनकी मुकर्रर करने से बुढ़ापा उम्दा होगा। पहली औलाद की पैदाईश से पहले मानों किस्मत भी सोई हुई होगी।
२. कुंडली के दो, नौ, ग्यारह और बारह घरों में अगर बृहस्पति के दोस्त सूर्य, चंद्र और मंगल हों तो उनकी मदद मिलती रहेगी।
३. दूसरे की इज्जत अपने फर्ज से पूरी अदायगी और इंसानी खसलत का मालिक होगा। बेसंतान कभी न होगा। खुशहाल और किस्मत का धनी होगा। सरदार कोज या हाकिम होगा जिसके जेरे-साया बेशुमार प्राणी आराम करते और औलाद को दुहाई देते होंगे। बाप से लेकर पोते तक सुखी और खुशगवार माहौल में जिएंगे।

छठा घर—जन्मकुंडली के छठे घर में बृहस्पति की उपस्थिति से जातक शत्रुओं को जीतने वाला, मधुर भाषी, ज्योतिषशास्त्र में रुचि रखने वाला, दुर्बल शरीर का, उदार, विवेकी तथा प्रतापी होता है।

बृहस्पति शत्रुक्षेत्री अथवा वक्री होकर छठे घर में हो तो जातक को सदैव शत्रु का भय बना रहता है। षष्ठेश (छठे घर का मालिक) बृहस्पति का धन भाव से संबंध, धन संचय में बाधक समझना चाहिए। ऐसी दशा में बृहस्पति को बलवान् करना चाहिए और पूजा, दान और जाप आदि द्वारा शांति करानी चाहिए।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बुजुर्गों के नाम की खैरात अपनी किस्मत की बुनियाद होगी।
२. इज्जत व आबरू का मालिक होगा, दौलतमंद होगा या सोन की खान में रहने वाला होगा और मरते दम तक खुशहाल रहेगा।
३. कम उम्र में ही वालिदान का साया सिर से उठ जाएगा। वालिद के रहने पर भी अच्छी हैसियत वाला होगा। अगर नियत सलामत होगी और दिल का पाक व साफ रहेगा तो बड़े आराम के साथ गुजर बसर होगी और शख्स मेहनत व मशक्कत से रोजी कमा कर खाने का मौका आएगा ही नहीं। वो बगैर मेहनत रोटी पानी हर वक्त हाजिर पाएगा।

सातवां घर—कुंडली के सातवें घर में बृहस्पति हो तो जातक सुंदर, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, धैर्यवान, भाग्यशाली तथा ज्योतिष विद्या में रुचि रखने वाला होता है। जातक की पत्नी पतिव्रता तथा धार्मिक प्रवृत्ति की होती है, पति को मायके की ओर से लाभ प्रदान कराती है।

सातवें घर का मालिक बृहस्पति अगर नीच दशा में निर्बल होकर मंगल आदि पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो यह योग पिता के बड़े भाइयों के अभाव का सूचक होता है। यदि कोई एक भाई हो तो दुःखी जीवन व्यतीत करता है। बृहस्पति का रत्न पुखराज पहनने से पिता के भाई को स्वास्थ्य लाभ रहता है और स्वयं पिता भी बड़े भाइयों द्वारा संभावित अर्थ हानि से बच जाता है।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. तरक्की व दौलत की हालत का फैसला चंद्र की अच्छी व नेक हालत से होगा।
२. औरत (बीवी) के दहेज का आया साजो सामान बरकत देगा।
३. धर्मकार्यों में सबसे आगे रहेगा। कामयाब मुसाफिर और मददगार हस्ती होगा, मगर अपनी घरेलू हालत के लिए ३४ साला उम्र तक बुनियादी ऐशो आराम के बाद भी औलाद (पुत्र) के लिए तरसेगा। ३४ साला

उम्र के बाद बहुत देरी हो जाए, तो भी आखरी हद ४५ साला उम्र में लड़का देखना नसीब में होगा और वो पिछले सब दुःख दरिद्रों से बरी होगा। बहरहाल कर्जदार कभी न मरेगा।

४. इल्म ज्योतिष का जानकार व दुनियावी तजुर्बाकार, तबीयत आराम व ऐश पसंद ज्यादा, दौलत की फिर भी ज्यादा चाह न होगी।

५. अपने बुजुर्गों की उम्दा शानो-शौकत, दौलत और खानदान दोनों शहाना और ठाठ अमीराना, दूसरों की दौलत से मदद करे मगर अपने पेट के लिए अनाज की कीमत के बराबर की मेहनत की शर्त होगी। यानी दौलतमंद होता हुआ भी हर रोज खुद मेहनत करके रोटी नसीब होगी। न कोई मददगार होगा, फिर भी राजदरबार में ऊंचा मर्तबा होगा। जवानी में औलाद की परवाह नहीं पर शानों शौकत के दिखावे पर भागता है और क्या अचंभा हो कि बुढ़ापे में दौलत के लिए भी तरसना पड़ जाए।

आठवां घर—जन्मकुंडली में बृहस्पति आठवें घर में मौजूद हो तो जातक चंचल स्वभाव का, कृश देह वाला, धन और स्त्री सुख से रहित होता है। यदि बृहस्पति आठवें घर का मालिक हो तो जातक दीर्घायु, गुप्त रोग से पीड़ित, ज्योतिष विद्या का जानकार, मधुरभाषी तथा असंतोषजनक आर्थिक स्थिति वाला होता है। यदि बृहस्पति पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक अल्पायु, भ्रष्ट तथा विधवा स्त्री से अवैध संबंध रखने वाला होता है।

यदि जन्मकुंडली किसी स्त्री की हो, लग्न मिथुन अथवा कन्या हो और गुरु निर्बल और पीड़ित हो तो यह योग स्त्री के वैवाहिक सुख का नाश करता है। पीले पुखराज को सदैव धारण किए रहना ऐसी स्त्रियों के लिए बहुत आवश्यक है।

तीसरे घर में, उच्च राशि में मौजूद बृहस्पति पापी ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो यह आयु (उम्र) के लिए अच्छा नहीं है, क्योंकि बृहस्पति अपने स्थान से अष्टम और लग्न से तीसरे घर में निर्बल हो जाता है। ऐसे गुरु (बृहस्पति) को बलवान् करने से ही आयु-वृद्धि की आशा रखनी चाहिए।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. खुद दौलतमंद हो या न हो, मगर दुनिया का हर तरह का आराम (जिसकी चाह हो) मिले और जरूरत का हर काम पूरा हो और मुसीबत के वक्त खुदाई मदद मिले। जाती किस्मत का नेक असर बजरिये खुदाई व गैबी ताकत होगा।

२. जब तक जिएगा किस्मत साथ देगी।
३. कभी बेऔलाद न होगा, कम-से-कम छह बच्चों का बाप होगा। अपनी अस्सी साला उम्र में सुख-ही-सुख पाएगा। मरते दम तक हिम्मत साथ देगी। सेहत, दौलत और खानदान की तरफ से कभी दुःखी न होगा।
४. मरते के मुंह में पानी और दुःखी के आंसू पोंछने वाला होगा।
५. खुद अपने लेख से वाकिफ न हो मगर भेद गैबी तो जरूर वक्त से पहले बतला देगा।

नौवां घर—जिसकी कुंडली के आठवें घर में बृहस्पति हो वो राजा के समान धनी, कृपण, सुखी, पवित्र हृदय वाला तथा स्त्रियों का प्रिय होगा। नौवें घर का बृहस्पति भाग्यशाली, पराक्रमी, यशस्वी, पुत्रवान्, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, विश्वसनीय तथा कानून का ज्ञाता बनाता है। अगर बृहस्पति बली अथवा उच्च राशिस्थ होकर नौवें घर में विद्यमान हो तो सभी प्रकार के सुख, ऐश्वर्य, संपत्ति तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है। पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट नीच राशिस्थ बृहस्पति परिश्रम को निष्फल करने वाला होता है।

नौवें घर का मालिक बृहस्पति निर्बल और पीड़ित हो तो फल यह होता है—

राजदरबार और राज्य कर्मचारियों से हानि की संभावना रहेगी।

छोटी बहन के पति की अल्पायु होगी।

अगर बृहस्पति और सूर्य दोनों इकट्ठे हों और दोनों पर प्रभाव पापी हो तो पिता की आयु कम होती है। उपाय के रूप में बृहस्पति को बलवान् करना आवश्यक है, जिसके बारे में हम आगे बताएंगे।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. ७५ साला उम्र का भोगी होगा।
२. तबियत का नेक और दिल का साफ होगा। खर्च करने को दौलत कम न होगी। बुजुर्गों की बद्दुआओं से बचा रहेगा तो खुशहाल रहेगा।
३. कारोबार में दौलत का फायदा होगा।
४. अपने बुढ़ापे के लिए दौलत छिपाकर और बचाकर रखेगा तो सुखी होगा।
५. पुश्तैनी जमीन-जायदाद का मालिक बनेगा।
६. नियत साफ होगी तो आमद में बरकत रहेगी। चाल चलन में उम्दा और हर सख्त कोशिश में कामयाब होगा।

७. दुनियावी ताल्लुकात में कामयाबी और बरकत होगी, सेहत और तरक्की मिलेगी, बेशक किसी भी वजह से बृहस्पति रद्दी या मंदी हो रहा हो।

दसवां घर—कुंडली के दसवें घर में बृहस्पति के होने से जातक शत्रुहंता, माता-पिता का सेवक, सत्य बोलने वाला, सफल भविष्यवक्ता, राजमान्य तथा धनवान् बनता है। वो स्वतंत्र विचारों का होता है तथा किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करता है। सदैव प्रसन्न रहने वाला कुल का दीपक होता है। पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट बृहस्पति जातक को दुष्कर्मी तथा आलसी बना देता है, तब पुत्र-सुख का भी उसे अभाव रहता है।

बृहस्पति दसवें घर का मालिक होकर निर्बल और पीड़ित हो तो जातक के पिता को जीवन में धन की बहुत हानि उठानी पड़ती है, क्योंकि गुरु धन का कारक होता हुआ पिता के धन का स्वामी बनता है।

बृहस्पति को उसके रत्न पीला पुखराज पहनकर बलवान् करने से तथा जो पापी ग्रह बृहस्पति पर पापी प्रभाव डाल रहा हो, उसकी पूजा, दान और जाप आदि के द्वारा धननाश से बहुत कुछ बचा जा सकता है।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जिस कद्र नेकी करने वाला और ईमान पर यकीन रखने वाला और ईमान पर चलने वाला होगा, उतना ही गृहस्थी से दुःखी और दुनियादारी की ओर से मायूस होगा।
२. शनि उम्दा हो और दो, छह घर में सूर्य या चंद्र कायम हो तो पास में लोहे या तांबे का टुकड़ा भी खरा सोना हो जाए, ऐसा बढ़िया नसीब होगा। कारोबार मुतल्लका शनि यकीनी मददगार साबित होगा।
३. माता-पिता का साया सिर पे लम्बे अर्से तक कायम रहेगा। बृहस्पति नीच न होगा तो फल उत्तम रहेगा। कोई तकलीफ या परेशानी न उठानी पड़ेगी।
४. चोरी और आग से बचाव करना फायदे का सबब बनेगा।

ग्यारहवां घर—कुंडली के ग्यारहवें घर में बृहस्पति के होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, व्यवसायी, अल्प संततिवान्, पराक्रमी तथा अनेकों स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है। राजा के समान अपने कुल तथा वंश का उपकार करने वाला, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, प्रचुर मात्रा में धन संचय करने वाला, पशुओं के क्रय-विक्रय से आर्थिक लाभ अर्जित करने वाला, पांच पुत्रों का पिता होता है।

कुंडली के ग्यारहवें घर में बृहस्पति और चंद्रमा के इकट्ठे होने से जातक प्रबल भाग्यशाली तथा आकस्मिक रूप-से धनालाभ करने वाला होता है।

ग्यारहवें घर का मालिक बृहस्पति यदि निर्बल और पीड़ित हो, तो जहां निजी आमदनी कम होती है, वहां बड़े भाई से विरोध रहता है, विशेषतया कुंभ लग्न वालों का ! अतः अनिष्ट ग्रह के निवारण हेतु रत्न, दान, जप आदि आवश्यक प्रक्रिया है।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का कथन यह है—

१. ऐसे शख्स का पिता लखपति होता हुआ भी मरते समय एक पाई न छोड़कर जाएगा। शायद ही उसे अपने पिता की दौलत का कोई पैसा खर्च करने को मिले।
२. दूसरों से किये हुए वायदे और मुंह का कहा हुआ सफल पूरा करने की हालत अच्छी होगी।
३. ऐसे शख्स की बीवी या तो दुःखी रहेगी या फिर उम्र भर उसका साथ न दे पाएगी।
४. अपना ही कोई भाई बंद साथ मिलने या मिलाकर रखने या मुश्तरका कारोबार करने से किस्मत जागेगी।
५. आखरी वक्त में मंदी की वजह से परेशानियां उठानी पड़ेंगी। इश्क की ज्यादती और हसद बाह से तबाही होगी। पिता की मौत के बाद किसी मच्छर का मुकाबला करने की ताकत न होगी। कोई मुबारक काम न किया तो मरने के बाद कफन भी खैरात का पड़ेगा।

बारहवां घर—कुंडली के बारहवें घर में बृहस्पति हो तो जातक बाल्यावस्था में रोगी, आलसी, मितव्ययी, उदार, संपादक, लोभी तथा दुष्ट चित्त वाला होता है। बारहवें घर का मालिक बृहस्पति जातक को कुकर्मी, दूसरों को ठगने वाला, धार्मिक रुचि रखने वाला बनाता है। यदि बृहस्पति उच्चराशि में स्वक्षेत्री तथा बली है तो जातक को मृत्यु के उपरांत मोक्ष की प्राप्ति होती है।

बारहवें घर का स्वामी बृहस्पति यदि निर्बल होकर सूर्य, शनि अथवा राहु से पीड़ित हो तो नींद न आने का रोग हो जाता है, क्योंकि सूर्य आदि पृथक्ताजनक ग्रहों का प्रभाव नींद (निद्रा) के घर के स्वामी पर पड़ता है। यहां भी पीले रंग का पुखराज पहनने से शनि आदि का दान, व्रत, पूजा व मंत्रजप करने से इस रोग से शांति होती है। यही रोग माता की बड़ी बहन

के वैवाहिक जीवन में गड़बड़ी उत्पन्न कर पति-पत्नी में वैमनस्य की सृष्टि करता है और अगर पाप प्रभाव अधिक हो तो जीवन साथी से पृथक्ता तक ला सकता है।

जन्मकुंडली में बृहस्पति के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जाती किस्मत का नेक असर बजरिया योग तपस्या पूजा पाठ होगा। फिर बेशक बुध मंदा या केतु बुरा हो मगर दौलत की कमी न होगी। दुआओं का फल भी जरूर मिलेगा। नेकी करना लाजिमी है।
२. गृहस्थी का पूरा सुख मिलेगा बशर्ते राहु की शरारतों (बद्‌दयानती, झूठी गवाही, धोखा और फरेब) से परहेज करता रहे।
३. शनिश्चर के कारोबार (लोहा आदि) से अच्छा लाभ मिलेगा। लोगों के सामने हाथ फैलाने से खाक नसीबी होगी।
४. दौलत का मालिक होने पर भी दौलत का कोई फायदा न उठा पाएगा, क्योंकि राहु फिजूल का खर्चा कराता रहेगा।

बृहस्पति के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

बृहस्पति ग्रह का शुभ और अशुभ प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। ग्रह के अनिष्ट प्रभाव के कारण व्यक्ति को अनेक प्रकार के गंभीर रोगों का सामना करना पड़ता है तथा आर्थिक क्षेत्र में भी नुकसान उठाना पड़ता है। अतः ग्रह किसी भी क्षेत्र में अनिष्ट प्रभाव कर रहा हो तो उसका बलवान् किया जाना बहुत आवश्यक है।

यदि बृहस्पति अनिष्टकारी हो तो सारे कुल के हर सदस्य से जहां तक कि रक्त का प्रभाव है, एक-एक पैसा लेकर धर्म-मंदिर में देने से अनिष्ट दूर होता है। बृहस्पति को प्रसन्न करने के लिए जहां मंदिर में दान देना लाभप्रद है, वहां पीपल के वृक्ष को पालना भी लाभप्रद है। बृहस्पति को दान में दी जाने वाली वस्तुओं में केसर, हल्दी, दाल, चना और सोना भी है।

नोट—वैसे तो बृहस्पति ग्रह से संबंधित देवता ब्रह्माजी हैं, पर यदि बृहस्पति की अनिष्ट स्थिति के कारण पुत्र की प्राप्ति न हो रही हो तो श्रीहरि का पूजन करना चाहिए।

टोटके

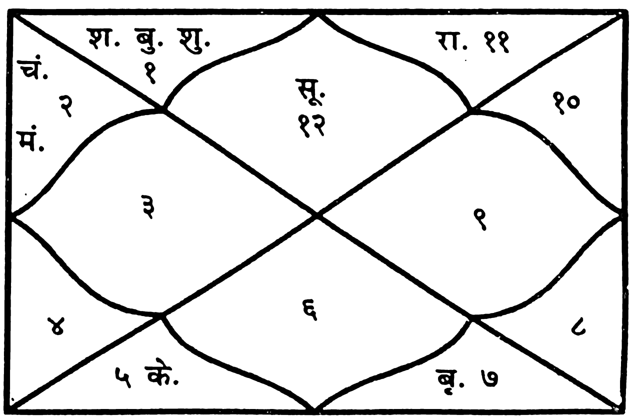
१. प्रतिकूल या अनिष्ट ग्रह बृहस्पति को अनुकूल बनाने के लिए केले की जड़

का टुकड़ा सोने से निर्मित ताबीज (मादलिया) में रखकर, पीले रंग के सूती धागे से बांधकर, बृहस्पतिवार के दिन गले में धारण करना चाहिए।

२. नई चांदी की अंगूठी को शुद्ध घी, सफेद चंदन व पानी में डुबोकर तर्जनी उंगली में पहननी चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन सूर्योद्‌य के समय यह प्रयोग करें।

बृहस्पति का शुभ/अशुभ प्रभाव

१. बृहस्पति यद्यपि एक शुभ ग्रह है, यदि यह वक्री हो जाए तो शुभता में बहुत वृद्धि करता है, तो भी इसका लग्न का आधिपत्य हो और इस पर पांच पाप प्रभाव पड़ रहे हों तो वे प्रभाव इतना ज्यादा असर रखेंगे कि बृहस्पति का वक्रत्व काम न देगा। ऐसा बृहस्पति लग्नेश (पहले घर का स्वामी या मालिक) होकर निर्बल समझा जाएगा और इसी कारण एक निर्बल मस्तिष्क का द्योतक होगा। दूसरे शब्दों में ऐसे जातक में बुद्धि का बहुत कम विकास हो पाएगा। निम्न कुंडली में बृहस्पति आठवें घर में है और शत्रु राशि में है

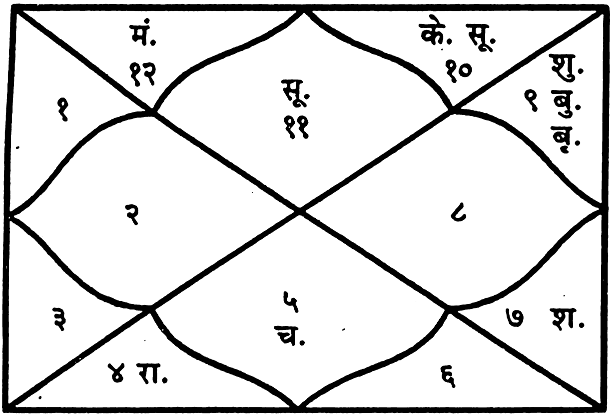


और उस पर राहु की नवम दृष्टि का प्रभाव है और शनि, बुध तथा शुक्र की उस पर दृष्टि है। इसमें शनि पापी है और राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी भी है। दूसरी ओर मंगल और चंद्र भी पापी हैं। यहां शुक्र भी एक पापी ग्रह के रूप में कार्य कर रहा है। जब शुक्र और शनि पापी बन जाएं तो उनके साथ मौजूद बुध भी पापी माना जाएगा।

इस प्रकार बृहस्पति पर तीन पापी ग्रहों शनि, शुक्र और बुध का भी प्रभाव है। अर्थात् कुंडली में बृहस्पति पर छह पाप प्रभाव देखने में आए और यही कारण है कि वक्री होता हुआ भी बृहस्पति यहां अनिष्ट फल प्रदान कर

रहा है। उपाय के संदर्भ में स्पष्ट है कि बृहस्पति को बलवान् किया जाना चाहिए और इसके लिए पीले रंग का पुखराज धारण करना श्रेष्ठ है।

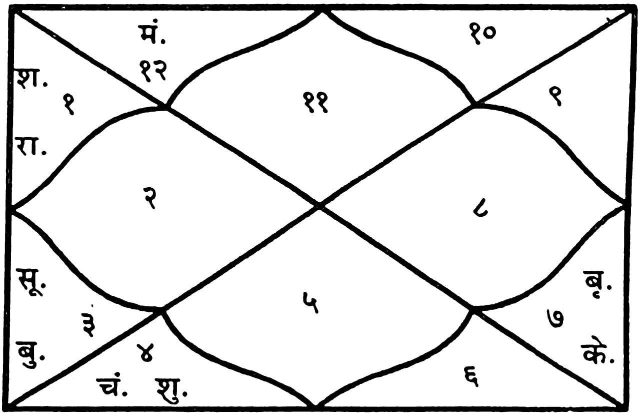
२. बृहस्पति का पेट से भी विशेष संबंध है। पाचनशक्ति इस ग्रह के अधीन बहुत हद तक है। यदि यह ग्रह पांचवें घर के स्वामी के साथ-साथ शनि की दृष्टि में हो तो पेट में गैस (वायु) का रोग होता है। निम्न कुंडली में पांचवें घर का स्वामी और पेट का कारक बृहस्पति दोनों इकट्ठे हैं, साथ में शुक्र है और वो भी सूर्य लग्न से पंचमेश है। इन सब पेट के द्योतक ग्रहों पर शनि की पूर्ण तृतीय दृष्टि पड़ रही है और फिर शनि चूंकि सूर्य और केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी है, इसमें केतु तथा सूर्य का पाप प्रभाव भी शामिल है।



इस प्रकार जहां पीड़ित होने वाले ग्रह लग्न, चंद्र लग्न और सूर्य लग्न से पंचमेश होने के कारण पेट के द्योतक हैं, वहां पीड़ित करने वाला ग्रह भी बहुत क्रूर है। फल बहुत देर तक पेट में कष्ट ! गैस इसलिए कि शनि का प्रभाव मुख्य है, वो वायु ग्रह है। इसके उपाय स्वरूप अनिष्ट ग्रहों को पीला पुखराज धारण करके बलवान् बनाना चाहिए। तथा पीड़ा देने वाले ग्रहों को शांत करने के लिए व्रत, दान और जाप आदि की प्रक्रिया करनी चाहिए।

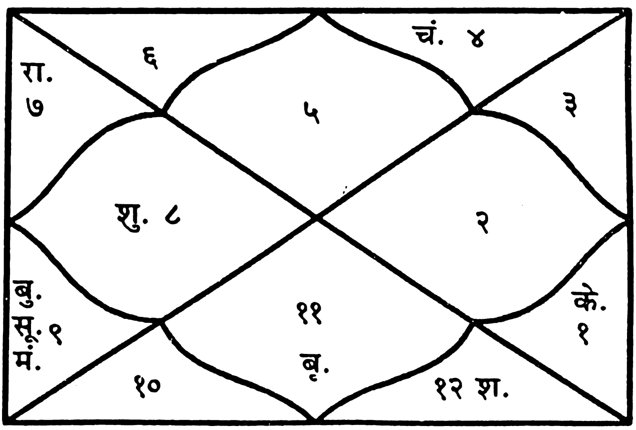
३. जिस कुंडली में मंगल दूसरे घर में हो और शनि तीसरे घर में हो तो यह योग पुत्रहानि करने वाला है। ऐसी हालत में पंचमेश, पंचम, नवमेश और बृहस्पति भी पीड़ित हो तो फिर ऐसे व्यक्ति को पुत्र की क्या, संतानप्राप्ति ही असंभव हो जाती है।

अग्र कुंडली में शनि और मंगल की दृष्टि ने पंचम और पंचमेश (नौवें घर का स्वामी) दोनों का नाश कर डाला। साथ ही उन्होंने नौवें घर को भी



तहस-नहस कर डाला है, क्योंकि वहां भी इन दोनों का क्रूर प्रभाव है। नवमेश शुक्र छठे स्थान में बैठा है, जहां वो निष्फल माना गया है। उसके पक्षबल में हीन पापी चंद्र स्थित है। केतु पांचवें घर और उस घर के मालिक को पीड़ित कर रहा है। बृहस्पति भी शत्रु राशि में केतु के साथ मंगल और शनि से दृष्ट है, इसलिए बलहीन है। चंद्र लग्न में पंचम भाव और उसके स्वामी मंगल पर भी कोई शुभ प्रभाव नहीं है। फलस्वरूप संतानहीनता है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार तो इस कुंडली वाले के आगामी कई जन्मों में भी संतान नहीं होनी चाहिए।

४. बृहस्पति जहां बैठा हो, उस घर को फायदा पहुंचाता है, चाहे वो उस घर का कारक ही क्यों न हो ? यदि वहां पीड़ित हो तो दुगुनी हानि अवश्य करेगा। निम्न कुंडली में बृहस्पति चार ऐसे ग्रहों से अधिष्ठित राशियों का स्वामी है जो चारों पापी हैं। अर्थात् शनि, सूर्य, मंगल और बुध। बृहस्पति एक शुभ ग्रह और कुंडली के सातवें घर में बैठा है, फिर भी बृहस्पति की



विवाह-स्थान में उपस्थिति कुंडली स्वामी का शीघ्र विवाह न करा पायी। इसका कारण यह है कि बृहस्पति की यह स्थिति सूर्य तथा मंगल से मिलकर चंद्र लग्न से सप्तम भाव पर पाप मध्यत्व बनाती है। विवाह में विलंब का एक कारण तो यह बना, दूसरा अष्टमेश और सप्तमेश का व्यत्यय भी विलंब का कारण बना, जबकि एक पूर्णबली शुभ चंद्र की चंद्रलग्न से सातवें घर पर दृष्टि के कारण विवाह की संभावना बनी रही। विवाह की विलंबता को दूर करने के लिए ग्रहों को बलवान् किया जाना चाहिए।

जहां तक उपाय का प्रश्न है, वो चंद्र के और अधिक बलवान् किए जाने और सूर्य आदि की शांति में है, चंद्र को तो चांदी की अंगूठी में मोती लगवाकर पहनने से बलवान् किया जाए तथा सूर्य, मंगल और शनि का पूजन, सभी के मंत्रों का जाप और सभी से संबंधित वस्तुओं का दान दिया जाना चाहिए।

५. बृहस्पति श्रवणशक्ति का कारक भी है। जब यह कान के घर तीसरा अथवा ग्यारहवें घर का मालिक बन जाता है, तो यह कान का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। ऐसी हालत में अगर इस पर बहुत पाप प्रभाव हो तथा तीसरा अथवा ग्यारहवें घर का मालिक हो, पीड़ित हो तो जातक बहरा होता है। जब पांचवां अथवा पांचवें घर का मालिक हो और स्वयं पीड़ित हो तो जिगर का कष्ट उत्पन्न होता है।

विशेष—जन्मकुंडली में बृहस्पति नीच राशिस्थ क्षीण अथवा शत्रुक्षेत्री होने पर अशुभ प्रभाव डालता है, जिसके फलस्वरूप अनेक प्रकार के रोग उपद्रव करने लगते हैं, अतः उन सबसे मुक्ति पाने के लिए पुखराज धारण करना उपयुक्त है।

कुछ खास जानकारियाँ

जब बृहस्पति पर बुरा असर पड़ता है, तो वह अपनी मुसीबत केतु पर डाल देता है। उदाहरण के लिए, बृहस्पति पांचवें घर में हो और केतु किसी अन्य घर में हो, ऐसे में यदि बृहस्पति की अशुभ दिशा आ जाए तो केतु के छठे घर का फल अशुभ हो जाएगा, चन्द्र और मंगल (मित्र ग्रहों) का साथ होने पर बृहस्पति बहुत ताकतवर हो जाता है।

जिस तरह हवा को कहीं भी आने-जाने की रुकावट नहीं होती, उसी तरह बृहस्पति को भी ब्रह्माण्ड में कहीं भी आने-जाने से कोई नहीं रोक सकता, इसलिए बृहस्पति को कुल ब्रह्माण्ड का मालिक माना गया है।

ज्योतिष में पुत्र-सुख के पहले बृहस्पति को देखा जाता है, चन्द्र का साथ होने पर बृहस्पति की ताकत बढ़ जाती है, ह्यलात मंगल के साथ भी यही हैं, जबकि सूर्य का साथ होने पर जातक की मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है, बृहस्पति मान, सम्मान, प्रतिष्ठा और उत्पत्ति आदि की खान है, किन्तु कमजोर होने पर उसकी तमाम खासियतें खत्म हो जाती हैं।

यदि बृहस्पति उच्च हो तो संतान, विद्या, बुद्धि, सम्मान, बड़प्पन आदि जातक को प्राप्त होते हैं, उसकी हथेली की भाग्यरेखा के आखिरी सिरे पर चार आड़ी रेखाएं होंगी अथवा सूर्य या बुध का तारा (नक्षत्र) होगा, ऐसी हालत में जातक बादशाह (राजा) होगा, उसके पास भले ही विद्या न हो, लेकिन वह दौलतमन्द जरूर होगा।

ऐसा जातक शेर की तरह गुस्सैला, मगर शांति का मसीहा होगा, चालाकी को समझने और उसे रोकने की उसमें बला की ताकत होगी, कामयाबी हमेशा उसका साथ देगी, उम्र के हरेक आठवें साल में उसकी उन्नति होगी, किसी की बुराई करने या बराई सोचने पर उसे भारी नुकसान का सामना करना पड़ेगा।

पक्का घर	:	१	ऊंचा (श्रेष्ठ) घर	:	१, ५, ८, ९, १२
मंदे घर	:	६, ७, १०	रंग	:	पीला (जर्द)
शत्रु ग्रह	:	शुक्र, बुध	मित्र ग्रह	:	सूर्य, चन्द्र, मंगल
सम ग्रह	:	राहु, केतु, शनि	कार्य	:	शिक्षा-सम्बन्धी
उच्च	:	४	नीच	:	१०
बीमारी	:	श्वास की	समय	:	सूर्योदय से ८ बजे तक
दिन	:	बृहस्पतिवार	मसनुई ग्रह	:	सूर्य, बुध

लग्न में चन्द्र, राहु, बुध और बृहस्पति—ये चार ग्रह हों, केतु सातवें घर में हो और उसके साथ कोई दूसरा ग्रह न हो, तो जातक का ३५ साल तक एक ही पुत्र जिन्दा रहता है (यों ये चार ग्रह राजयोग देते हैं)। इसके अनिष्ट निवारण के लिए केतु से सम्बन्धित वस्तुएं धर्म-स्थान में दें, लड़कियों को मीठा भोजन कराएं। सतनजे की रोटी बनाकर गाय को खिलाएं।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

बृहस्पति जब मिथुन राशि में आता है, तो अव्यवस्था फैला देता है, अप्रत्याशित घटनाएं घटती हैं। यदि उसके सामने धनु राशि में शनि हो तो

उत्पाद दिखाई पड़ते हैं। बृहस्पति के मित्र सूर्य-चन्द्र अच्छी हालत में न हों तो जातक का भाग्य सोया रहता है। यदि बृहस्पति बुध-शुक्र (शत्रु ग्रह में चला जाए तो बुरा फल देता है। राहु, केतु और शनि के साथ भी बृहस्पति मन्दा हो जाता है। जब बृहस्पति मन्दा हो तो पुत्र पर उसका बुरा असर पड़ता है।

यदि पापी ग्रहों का फल नीच हो रहा हो तो बृहस्पति का फल भी नीच हो जाता है। बाप-दादा या ब्राह्मण का अपमान करने से भी बृहस्पति नीच हो जाता है, यदि बृहस्पति की पहचान है, चोटी के स्थान पर सिर के बाल उड़ जाएं, गले में माला डाले रखें, सोना खो जाए या चोरी चला जाए। झूठी अपवाहें फैलें या शिक्षा बन्द हो जाए।

१. मन्दे बृहस्पति से बचने के लिए नदी में तेल, बादाम एवं नारियल प्रवाहित करें।

२. गले में सोना डाले रखें।

३. केसर का तिलक लगाएं, अथवा केसर खाएं।

४. नाक साफ करके काम शुरू करें।

५. बृहस्पति की चीजें; जैसे सोना, पुखराज, कांस्य-पात्र, खांड (चीखी), घी, पीला रंग, चने की दाल, हल्दी या पुस्तक आदि का दान करें।

नोट-बृहस्पति की उपरोक्त सभी चीजों की नहीं, बल्कि किसी एक चीज का दान करें।

पहले घर का उपाय

१. बुध का दोष दूर करने के लिए नाक में चांदी पहनें।

२. जन्मकुण्डली के घर १, २, ३ के कारणों को दूर करें-

३. यदि शनि ११वें या १२वें घर में हो तो शराब, मांस एवं अण्डे से सख्त परहेज करें।

४. यदि शनि ५वें घर में हो तो शनि को मकान न बनवाएं।

५. यदि शनि ९वें घर में हो तो शनि को मशीनें आदि न खरीदें।

६. बुध, शुक्र या शनि की चीजें धर्म-स्थान में चढ़ायें या नदी में बहा दें।

७. उपरोक्त ग्रहों की चीजें दान करें।

८. बुध-पूजा, गाय की सेवा तथा अछूत की मदद करें।

विशेष-बृहस्पति जब १, ५, १२वें घर में हो तो सूर्य और शनि को तथा ६, ११वें घर में हो तो सिर्फ शनि को मदद पहुंचाता है।

दूसरे घर का उपाय

१. घर आए व्यक्ति की सेवा करें।

२. दूसरों के साथ अच्छाई करें।

३. दान-धर्म में यकीन रखें।

४. सर्प को दूध पिलाकर शनि का प्रभाव दूर करें। इस क्रिया से शुक्र को भी अच्छा किया जा सकता है।

५. चने की दाल को पीले कपड़े में बांधकर मन्दिर में दें।

६. ८वें और ६ठे घर के ग्रहों का उपाय करें।

तीसरे घर का उपाय

१. दस साल से छोटी कन्याओं की पूजा करें, उनकी दुआएं लें, उन्हें मीठा खाना खिलाकर उनके पैरों को जरूर छुएं।

२. झूठ न बोलें।

३. घर के लोगों के साथ मिलकर रहें।

४. भाई-बंधुओं की समय-समय पर मदद करें।

५. लूटमार, शराबखोरी तथा मांसादि से बचकर रहें।

६. किसी को किसी भी वजह से धोखा न दें।

७. बृहस्पति के घरों में कोई शत्रु ग्रह बैठा हो तो उसका उपाय करें।

८. रोजाना दुर्गा-पूजा करें।

९. खुशामदी होगा तो मंदे बृहस्पति का असर खत्म हो जाएगा।

१०. आजीविका नौकरी से चलेगी।

चौथे (उच्च) घर का उपाय

१. अपना शरीर किसी के सामने नंगा न करें।

२. अगर गाय पालें तो उसे मकान के पश्चिम स्थान में बांधे।

३. अपनों से बड़ों की आज्ञा का पालन करें।

४. मौका मिलने पर सांप को दूध जरूर पिलाएं।

५. मांस, मदिरा आदि शनि की चीजों से परहेज करें।

६. बृहस्पति के दुश्मन ग्रहों का उपाय करें। इस क्रिया से बृहस्पति अपने चौथे घर का अच्छा फल देने लगेगा।

७. मक़ान के आसपास कोई पीपल का पेड़ हो तो उसकी सेवा करें।

८. घर में मन्दिर हो तो उसे हटा दें।

९. बुध के पशु-पक्षी—तोता, भेड़ और बकरी आदि न पालें।

१०. अपने मां-बाप, बुजुर्गों और पुरोहित (ब्राह्मण) आदि का आदर सहित सम्मान करें। यथासम्भव उनकी सेवा करें।

पांचवें घर का उपाय

१. घर में कुत्ता पालें।

२. गणेशजी की रोज पूजा किया करें।

३. धर्म के नाम पर कभी किसी से कुछ न मांगें।

४. ईमानदार और परोपकारी बनें।

५. २, ५, ९, ११ और १२वें घर में स्थित बुध, शुक्र या राहु का उपाय करें।

६. केतु का उपाय करें।

छठे घर का उपाय

१. केतु का उपाय करें।

२. कुत्ता पालें।

३. रोज पीपल में पानी दें।

४. छह सौ ग्राम दाल (चने की) छह दिन तक मन्दिर में दें।

५. खुद की बेटी और उसके बच्चों के साथ सदा इज्जत से पेश आएं। अगर हालात ठीक (अच्छे) हों, तो बेटी के परिवार का पालन करें।

६. अपने पिता (वालिद) को पास रखें या उसके पास रहें।

७. बृहस्पति की चीजें—सोना और केसर आदि को हर वक्त अपने पास रखें, तो बुध और केतु की आपसी दुश्मनी से बचाव होता रहेगा।

८. शरीर पर किसी भी रूप में सोना धारण करें।

सातवें घर का उपाय

१. साधु-सन्तों और फकीरों का साथ छोड़कर गृहस्थ जीवन भोगने और पुत्रों को जन्म देने की ओर ध्यान दें।

२. पति की चाहत को कमजोरी समझकर पत्नी उस पर हुकूमत करने की कोशिश न करे। इससे उसके लड़कियां ही ज्यादा होंगी।

३. घर में मन्दिर बना हो, तो उसे हटा दें।

४. पराई औरत से ताल्लुकात न रखें।

५. चन्द्र (शिवपूजन) से सहायता लें।

६. धन प्राप्त करने के लिए सात रत्ती का लाल रत्न कपड़े में बाँधकर स्थापित करें।

७. कमाने वाली औरत का साथ फायदेमंद होगा।

आठवें घर का उपाय

१. श्मशान में पीपल का पेड़ लगवाएं। १२वें तथा ४थे घर में सूर्य को कायम तथा चन्द्र को प्रबल करें।

२. यदि १२वें घर में बृहस्पति के दुश्मन ग्रह हों और दूसरा घर खाली हो तो जातक को मन्दिर में नहीं जाना चाहिए, वरना १२वें घर के दुश्मन ग्रह ८वें घर के बृहस्पति से जा मिलेंगे और बृहस्पति को और भी मंदा करेंगे, अगर ऐसा हो, तो हर समय गले में सोने की चेन पहने रखें या फिर पीला धागा गले में डाल लें।

३. आठ सौ ग्राम चने की दाल आठ दिन तक मन्दिर में देते रहें।

४. आठ दिन तक रोज हल्दी की आठ गाँठें मन्दिर में चढ़ाएं।

५. अगर किसी औरत की वजह से बदनामी पल्ले पड़ गई हो तो आठ बृहस्पतिवार लगातार कच्चे सूत को हल्दी से पीला करके, पीपल के पेड़ के तने से लपेटें।

६. साधु या फकीर को दान देते रहें।

७. राहु की चीजें–जौ, नारियल आदि नदी में प्रवाहित करें या कुएं में डालें।

८. घर से मन्दिर को दूर हटाएं।

९. नाक में चांदी पहनकर बुध को शांत करें अथवा जिस घर में बुध हो, घर के बुध का उपाय करें, यदि बुध नौवें घर में हो तो लोहे की लाल रंग की गोली और बुध बारहवाँ हो तो लोहे का छल्ला मददगार साबित होगा, बुध ग्यारहवाँ हो तो सफेद रेशमी धागे में ताँबे का पैसा डालकर गले में पहनना मददगार होगा।

नौवें घर का उपाय

१. रोजाना मन्दिर जाया करें।

२. अपने से बड़ों की इज्जत करें, उनके साथ मिलकर चलें।

३. यदि नाक में सौ दिन तक चाँदी पहनें तो बुध शांत रहेगा और बृहस्पति को मंदा नहीं करेगा।

४. फिटकरी से सुबह दांत साफ करें और स्टील का कड़ा दाएं हाथ में पहनें, यह उपाय बुध से बचाव करेगा।

५. बकरी का दान मददगार होगा।

६. शनि–राहु पांचवें घर में हों तो धर्म–स्थान में बादाम चढ़ाकर आधे वापस घर में लाकर रखते रहें। इस तरह शनि और राहु कभी बुरा न कर सकेंगे।

७. मूँगा, चाँदी माणिक गले में पहनकर मंगल, चन्द्र, सूर्य को पहले घर में कायम करें; अर्थात् बृहस्पति के मित्रों–मंगल, चन्द्र एवं सूर्य की वस्तुएं धारण करें।

८. पहले घर में बुध या शुक्र हों तो वचन पूरा करने की आदत डालें।

९. अगर ११, १ घर में राहु हो तो जौ और नारियल चलते पानी में बहाएं।

१०. किसी को झूठा आश्वासन न दें।

११. औरतों के चक्कर से दूर रहें और चाल–चलन को ठीक रखें तो शुक्र के मन्दे असर से बचाव होता रहेगा।

दसवें घर का उपाय

१. नीच प्रभाव के समय ४३ दिन तक दरिया या नदी में तांबे का पैसा डालना निरन्तर मददगार होगा।

२. सूर्य ग्रहण में शनि की चीजों का दान करें।

३. पराई औरतों के साथ अनैतिक सम्बन्ध न बनाएं।

४. नाक साफ रखें, इसके बाद ही कोई काम करें।

५. ज्यादा धर्म–कर्म के फेर में न पड़कर चालाकी से अपना काम निकालें, किसी पर भी दया करके उसे गलत तरीके से बचाने की कोशिश न करें।

६. मांस, मदिरा, अण्डे आदि से परहेज रखें।

७. नुकसान पहुँचाने वाले गलत कार्यों से बचें।

८. दरिया में चावल प्रवाहित करके चन्द्र को चौथे स्थान में कायम करें।

९. चलते पानी में तांबे का पैसा डालकर सूर्य को चौथे घर में कायम करें।

१०. दूसरे घर में शनि को कायम करने के लिए मन्दिर में बादाम चढ़ाएं।

११. घर से मन्दिर हटा दें।

१२. सिर पर पगड़ी और मस्तक पर केसर का टीका लगाएं।

१३. अगर चौथे घर में सूर्य अच्छा न हो तो रविवार के दिन बहते पानी में चार सौ ग्राम या चार किलोग्राम गुड़ या गेहूँ बहा देने से सूर्य का अच्छा असर होने लगेगा।

१४. नंगे सिर कभी न रहें।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. सूर्य के व्यवसाय लाभप्रद सिद्ध होंगे।

२. सूर्य ४ में हो या जातक माता को साथ में रखे, तो गुरु कभी मन्दा फल नहीं करेगा।

३. वालिद (पिता) का साथ मददगार होगा।

४. माता-पिता के संग रहें या भाई-बहनों के साथ मिलकर रहें तो मंगल तीसरे घर में होकर बृहस्पति को मदद देकर सबल बनाएगा।

५. ताँबे का कड़ा पहनने से सूर्य तीसरे घर में मदद देकर बृहस्पति को अच्छा करेगा।

६. शरीर पर सोना पहनना अच्छा होगा।

बारहवें घर का उपाय

१. माथे पर केसर का टीका करा करें।

२. भगवान से सदा डरकर रहें और धर्म-कर्म में रुचि लें।

३. गले में सोने की चेन डालें।

४. सिर पर चोटी रखें।

५. पीपल को पानी दें।

६. बृहस्पति और चन्द्र साथ हों तो बड़ के पेड़ को पानी दें।

७. नाक को साफ और खुश्क रखें।

८. सबके साथ नेकी का सलूक करें।

९. फरेब, धोखाधड़ी, चोरी आदि बुरे कामों से दूर रहें।
१०. किसी की तरफ से झूठी गवाही न दें।
११. मांस-मदिरा का सेवन न करें।
१२. रात को सिरहाने पानी और सौंफ रखकर सोएं।

नोट—जब बृहस्पति का दुश्मन ग्रह बुध प्रभाव डाले तो सोना पहनें और शुक्र प्रभाव डाले तो चांदी पहनें।

प्रतिष्ठा का प्रतीक ग्रह सूर्य

सूर्य को महर्षि कश्यप का वंशज होने के नाते कश्यप गोत्रीय कहा जाता है तथा सूर्य को ग्रह शनि का पिता भी माना जाता है। इसका अधिकार आमाशय पर रहता है और यह पेट-संबंधी विकृतियों का परिचालन करता है। यह सिंह राशि का स्वामी है। यह पुल्लिंग और राजस गुणवाला है। इसका ऊंचा स्थान मेष और नीचा स्थान तुला है। सूर्य का बृहस्पति के साथ सात्त्विक, चंद्र के साथ राजस और मंगल के साथ तामस व्यवहार रहता है। शनि, शुक्र, राहु और केतु के साथ उसकी खास दुश्मनी है। कुंडली में अपने से सातवें घर को पूरी दृष्टि से देखता है। विंशोत्तरी दशा के अनुसार सूर्य की महादशा ६ वर्ष की होती है। कुंडली में सूर्य की स्थिति घर के अनुसार आंकी जाती है। यह मेष, वृश्चिक तथा धनु लग्नों में योगकारक होता है।

तामस स्वभाव के कारण सूर्य, मंगल, केतु, शनि और राहु के साथ अनिष्ट फलप्रद होता है। विवाह यात्रा, मांगलिक कार्यों और व्यापार के लिए सूर्य का विशेष अध्ययन किया जाता है। सूर्य की महादशा में जातक की पदवृद्धि होती है, उसके विदेश जाने के योग भी बनते हैं। व्यापार आदि कार्यों में सफेद वस्तु के व्यापार से अच्छा लाभ होता है। इस दशा में जातक धर्मादि कार्यों में रुचि लेता है तथा समाज में भी उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। किन्तु नीच राशि का सूर्य जातक की कुंडली में पड़ा होता है तो उसकी दशा में जातक का धन व्यय होता है, तथा उस पर कर्जा बढ़ा रहता है। साथ ही उसे अनेक प्रकार की व्याधियां भी सताती रहती हैं और परिवार वाले एक-एक कर बिछुड़ते रहते हैं। पुत्र आदि से कलह रहती है।

यदि वर्ष का स्वामी पूर्णबली सूर्य हो तो उस वर्ष जातक को मान-प्रतिष्ठा, धन, पुत्रलाभ और कुटुंबियों से सुख मिलता है। राज्य पद में प्रतिष्ठा बढ़ती है और मकान संबंधी कार्यों से लाभ पहुंचता हैं। स्वास्थ्य अच्छा रहता हैं और अचानक द्रव्यप्राप्ति का योग होता है। किन्तु यदि

सूर्य मध्यबली हो तो जातक को अल्प सुख मिलता है। परिवार में कलह बढ़ती है और नौकरी में हो तो स्थान बदलने का अवसर प्राप्त करता है। ससुराल पक्ष से लाभ मिलता है।

यदि वर्षेश अल्पबली अथवा शून्यबली हो तो जातक को व्यर्थ ही घुमक्कड़ जीवन बिताना पड़ता है। समाज में अपयश फैलता है और आलस्य के कारण सोचे हुए कार्य रुक जाते हैं। यही नहीं, व्यर्थ ही भोग-विलास में धन का अधिक व्यय हो जाता है।

बारह घरों में सूर्य का फल

पहला घर—सूर्य लग्न में हो तो जातक स्वाभिमानी, क्रोधी, पित्त-वात रोगी, प्रवासी, कृशदेही, नेत्र-रोगी, उन्नत नासिका तथा विशाल ललाट वाला होता है। बाल्यावस्था में वो सिर में चोट खाने वाला, वेश्यागामी, भाइयों का विरोधी, आलसी, कंठ, नेत्र में तिल तथा सिर पर थोड़े बालों वाला होता है। किशोरावस्था में उसे शारीरिक कष्ट अधिक होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के पहले घर (लग्न) में होने के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. वालिद की आखरी उम्र तक पूरी खिदमत और मदद करेगा और अपने बेटे को जरूर दौलत जमा करके दे जाएगा।
२. जो उसे तबाह करने की गरज से मारेगा, वो खुद ही बरबाद हो जाएगा।
३. शराबखोरी व गंदे इश्क से दूर मगर नेकी व गरीब की मदद हमेशा चाहने वाला होगा।
४. शरीर के तमाम अंग आखिरी दम तक कायम रहेंगे।
५. ईमानदारी की दौलत फलेगी और बरकत देगी।
६. औलाद बेशक गिनती की होगी मगर औलाद का सुख और औरत का आराम बहुत लम्बे अरसे तक होगा।

दूसरा घर—जन्मकुंडली के दूसरे घर में सूर्य हो तो जातक मुख-रोगी, संपत्तिवान्, भाग्यवान्, झगड़ालू, आंखों, कान और दांतों का रोगी, राजभीरू, स्त्री के लिए कुटुंबियों से झगड़ने वाला होता है। उसका दाम्पत्य जीवन दुःखमय रहता है तथा लोहा, तांबा के व्यवसाय से धन अर्जित करता है। उसे पशु-सुख तो प्राप्त होता है, किन्तु वाहन आदि का सुख कभी नहीं मिलता। यदि सूर्य राहु से युक्त हो तो उसे धन प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसे जातक की स्मरणशक्ति बहुत दुर्बल होती हैं।

जन्मकुंडली में सूर्य के दूसरे घर में होने के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. फौजी व नजवी खुनमवाए होगा। सवारी व चौपाये का सुख मिलेगा।
२. अपने बाजुओं और खुद हिम्मत व ताकत का मालिक होगा, खुद दोहती मेहनत की आदत हुनरमंदी की ताकत का मालिक होगा। खुद सच्चा और सच्चाई पसंद होगा।
३. शौकीन ख्यालात का मालिक होगा, इज्जत अक्ल का मालिक होगा और कभी खुश और कभी उदास हरदम तबियत बदलने वाला होगा।
४. जिस कदर सुखी दाता उसी कदर राज मरतबा ऊंचा और दुश्मन अधीन हो।

तीसरा घर—सूर्य जन्मकुंडली के तीसरे घर में हो तो जातक के छोटे भाई जीवित नहीं रहते और अगर जीवित रह जाते हैं तो उनसे वैचारिक मतभेद बने रहते हैं। जातक अपने मित्रों का हितकारी, स्त्री और पुत्र आदि से युक्त, धनी, धैर्यवान, क्षमाशील तथा स्त्रियों का प्रिय होता है। वो सुंदर शरीर वाला, तीक्ष्णबुद्धि का, उद्योगी, मधुरभाषी, दृढ़-निश्चयी, वाहन-सुख संपन्न तथा घुड़सवारी का शौकीन होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के तीसरे घर में होने के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. औलाद की उम्र लम्बी होगी, न किस्मत मंदी होगी और न कुदरत कभी धोखा देगी। दिनों की गर्दिश, जमाने की चाल, या अक्ल के धोखा और फरेब से कभी मंदा हाल और दुखिया न होगा।
२. चोरी के काल से परहेज मुबारिक होगा। आखरी अवस्था तक कभी भी निर्धन न होगा। दिन-ब-दिन तरक्की करेगा और गृहस्थी को खुशहाल रखेगा। चाल-चलन अच्छा रहा तो औरत के मामले में कभी बदनाम न होगा। बुजुर्गों की खिदमत करेगा, तो उनकी दुआओं से लम्बी उम्र पाएगा।

चौथा घर—सूर्य जन्मकुंडली के चौथे घर में मौजूद हो तो जातक चिंताग्रस्त, परम सुंदर, कठोर, पितृधन-नाशक, भाइयों से बैर रखने वाला, गुप्त विद्याप्रिय तथा वाहन सुखहीन होता है। वो अत्यंत मिलनसार, कोमल हृदय, युद्ध में विजयी, संगीतज्ञ तथा परदेशवासी होता है। उसके जीवन में कई स्त्रियां आती हैं तथा पिता से इसके वैचारिक मतभेद बने रहते हैं।

जन्मकुंडली में सूर्य के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. माँ की सेवा जिसका मौका कम ही मिलेगा, बुनियाद होगी।
२. नई ईजाद से नफे का मालिक होगा।
३. चाहे फांके करके गुजारा कर ले, फिर भी अपनी जिन्दगी पूरी कर जावे। दौलत की उसे फिक्र न होगी, बल्कि वह मरते वक्त जरूर दौलत छोड़ जाए और उसके नाम लेता (उनकी वाला-औलाद) करोड़पति होवे।
४. खुद खफा और दरियादिल रोशन जमीन, अक्लमंद और हुकूमत का मालिक होगा।
५. उम्दा सेहत, चश्मे रिजक व दौलत का फौव्वारा हरदम तरोताजा ही रहेगा।

पांचवां घर—जन्मकुंडली के पांचवें घर में सूर्य के होने पर जातक एक पुत्र वाला, परघरवासी, क्रूर, चंचल, नीच कर्म करने वाला, बुद्धिमान, बहुत जल्दी गुस्से में आने वाला, मोटे शरीर का, बाल्यावस्था में दुःखी, अधिक कन्याओं का पिता, नाट्यप्रेमी, तथा सट्टा-लाटरी तथा शेयर्स के द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बुढ़ापा उम्दा होगा।
२. रोटी-पानी की बरकत होगी।
३. औलाद का इजाफेदार और गृहस्थी का मालिक होगा। अगर राजा हुआ तो परोपकार करने वाला होगा और फकीर (संन्यासी) हुआ तो लम्बी उम्र का मालिक होगा।
४. कोई भी आरजू बाकी न रहेगी। हर तरह बरकत होगी, औलाद की उन्नति होगी। कुंडली के घरों में जब सूरज और शनिश्चर का झगड़ा न होगा तो वाल्दैनी सुख सागर लम्बा अरसा और नेक होगा।

छठा घर—जन्मकुंडली के छठे घर में सूर्य हो तो जातक रोगी, सुबुद्धि, परिजनों का पोषक, ज्ञानियों में श्रेष्ठ, कृशदेह, गृहसुख से युक्त, उत्तम रूप, शत्रु-विजयी, सत्कर्म से लोक में पूज्य, मातृपक्ष से धन का लाभ पाने वाला तथा नौकरी करने वाला होता हैं। स्पष्टवादिता के कारण उसके अनेक शत्रु वन जाते हैं। समाज में विख्यात और राज्य द्वारा सम्मानित होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. राज दरबार की दौलत से बेफिक्र लेकिन जल्द आग की तरह गर्म हो जाने वाली तबियत का मालिक होगा।
२. औरत और दौलत की ज्यादा परवाह न होगी।
३. ४८ साला उम्र के बाद बुरे दिन खुद नेक हो जाएंगे।
४. खुद अपनी सेहत पर मंदे असर उपाय बंदर को गुड़ या भूरी चींटी को सूर्य की वस्तुएं बाजरा इत्यादि मुबारक होगा।

सातवां घर—कुंडली के सातवें घर में सूर्य हो तो जातक स्त्री-विलास में रत, चंचल, कुरूप, स्त्री-क्लेश कारक तथा राज्य द्वारा अपमानित होता है। स्वभाव से कठोर तथा चिंताग्रस्त रहता है। उसे साझेदारी अथवा यांत्रिक शक्ति से विशेष लाभ मिलता है और शारीरिक व्याधियों से अधिक समय तक ग्रस्त रहता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. तपेदिक, खुदकुशी, आग के वाक्यात, गबन वगैरा बहाने होंगे, गृहस्थ से तंग आकर भागे हुए फकीर की किस्मत होगी, बदमिजाजी, खुदगर्जी बेहद तबाहकुन गुस्सा बुनियाद होगी।
२. औलाद के पैदाईश के दिन से दौलत की बरकत मगर वाल्दैनी कुन्बा व ससुराल खानदान का राजदरबारी ताल्लुक में सूरज का बुरा असर, घास पर पड़ी हुई आग की तरह बुरा ही होगा।
३. सूरज कभी मन्दा न होगा और सब कुछ उम्दा होगा।
४. बेशक दुनिया के लाखों दुःख और जमाने की लाखों मुसीबत देखनी पड़ें, मगर फिर भी एक एक जहान दीया और आसानी मर्द होगा।

आठवां घर—जन्मकुंडली के आठवें घर में सूर्य मौजूद हो तो जातक चंचल, विद्वानों का आदर करने वाला, बेकार की बड़-बड़ करने वाला, भाग्यहीन, शीलरहित, नीचसेवी, सदा रोग से पीड़ित तथा परदेशवासी होता है। जब उसको क्रोध आता है तो आपे से बाहर हो जाता है। वो नेत्ररोगी, दीर्घायु, पित्तरोगी, अधीर तथा त्यागी होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. व्यक्तिगत भाग्य का हल पापी ग्रहों का समय का बुरी हालत पर होगा।
२. खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा मगर इवाज न मांगेगा। परोपकार का असूल अपने घर से चलाकर पूरा करता रहेगा।

३. ऐसा शख्स जिससे खानदान में उसके जन्म से पहले किस्मत की हर तरफ मंदी हालत थी। जब उसके जन्म से कुल खानदान का ही पुराना मंदा जमाना खत्म होगा। औरों की किस्मत का ग्रहण हटकर सब तरफ उत्तम रोशनी और कारामद आग पैदा होगी।

४. बढ़ा हुआ कुटुंब, पोते पड़पोते सब खुशियां देखकर जाएगा। खानदानी परवरिश करने वाला किसी का कुछ बने या वह अपनी खानदानी रस्म के लिए अपना सब कुछ बहा देगा मगर ऐवज़ न मांगेगा, और न ही कभी खुद रोटी से भूखा मरेगा बल्कि वह अपनी सात पुश्तों का निगहबान और मददगार होगा। परोपकार का वसूल अपने घर से चलाकर कुल दुनिया के लिए पूरा कर देगा।

नौवां घर—जन्मकुंडली के नौवें घर में सूर्य स्वक्षेत्री अथवा उच्चस्थ हो तो जातक के पिता की आयु अधिक होती है। ऐसा जातक सत्यवक्ता, सुंदर केश वाला, अपने परिजनों का हित करने वाला, देव और ब्राह्मणों का भक्त, बाल्यावस्था में रोगी, धनवान्, अच्छी सूझबूझ वाला, योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता और वाहन आदि के सुख से युक्त होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. अगर हकीमी पेशा अख्तियार किया तो उसके हाथ में शफा की बरकत जरूर होगी।

२. उसका खानदान (उससे पहले बाप दादा गये वह खुद) लम्बी उम्र का ठेकेदार होगा।

३. वाल्देन का जरिए मुआश (जीवन निर्वाह) अमूमन सरकारी मुलाजमत में होगा।

४. सफेल माया मंद भाग्य होगी। दक्खिन के दरवाजे का साथ मौत की पहली निशानी होगी।

दसवां घर—सूर्य जन्मकुंडली के दसवें घर में मौजूद हो तो जातक प्रतापी, व्यवसाय-कुशल, राजमान्य, लब्ध-प्रतिष्ठ, उदार, ऐश्वर्य-संपन्न एवं लोकमान्य होता है। वो नाटे कद का तथा नृत्य व संगीत में रुचि रखने वाला होता है। उसके ज़ीवन का अंतिम काल रोगमय रहता है। साथ ही वो शूरवीर, साहसी तथा पितृ-सुख का लाभ उठाने वाला होता है। यदि सूर्य स्वक्षेत्री अथवा उच्च का हो तो जातक भवन, मंदिर एवं जलाशय आदि का निर्माण करके प्रसिद्धि पाता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के दसवें घर में होने के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. किस्मत, सेहत और दौलत का मालिक मगर एक वहमी शख्स होगा। सिर पर सफेद रंग की टोपी या पगड़ी मुबारिक होगी।
२. अपना मुफ्त का ढिंढोरा और मुसीबत में दूसरों के पास रोना मंदे वक्त की पहली और पूरी तबातलुन निशानी होगी।

ग्यारहवां घर—जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर में सूर्य हो तो जातक बहुत धनवान्, राजा का सेवक, भोगहीन, गुणग्राही, धन से युक्त, स्त्रियों में विशेष लोकप्रिय, बुद्धिमान्, चंचल, स्वाभिमानी, मितभाषी, अल्पसंततिवान् तथा उदर-रोग से ग्रस्त रहता है। उसके ऊपर उच्चाधिकारियों, धनिकों, सज्जनों सभी का स्नेह रहता है। उसकी पत्नी सुंदर होती है तथा उसे अनेक माध्यमों से आर्थिक लाभ होते हैं। जीवन में वाहन-सुख पर्याप्त मिलता है, राज्य की ओर से सम्मानित होता है। यदि सूर्य स्वक्षेत्री अथवा उच्चस्थ हो तो राजा, उच्चाधिकारी, कोर्ट, कचहरी तथा शत्रुओं से धन का लाभ होता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के ग्यारहवें घर में होने के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. लालची होगा मगर तपस्वी राजा की हैसियत का शख्स होगा। अगर ईमान में हर तरह से पूरा हो तो खुद और उसका सब कुटुंब सुखी होगा।
२. अमूमन पूरा ईमामी (धर्मी) मगर सिर्फ अपना ही ऐश पसंद होगा। अगर शनिश्चर के गंदे खानों से दूर रहे तो कम से कम तीन नेक और मुकम्मल लड़कों का बाप होगा।
३. झूठ और हरामकारी का पुतला होगा, फिर भी यकीनी तौर पर उसकी उम्र लम्बी होगी।

बारहवां घर—जन्मकुंडली के बारहवें घर में सूर्य हो तो जातक उदासीन रहने वाला, मानसिक रोगी, आलसी स्वभाव का, परदेशवासी तथा कृश शरीर का होता है। उसे नेत्र रोग से पीड़ित रहना पड़ता है। पिता का सुख भी उसे नहीं मिलता तथा वो अपव्ययी, धनहीन, परस्त्रीगामी एवं व्यर्थ का बकवादी होता है। यदि सूर्य छठे घर के स्वामी से युक्त हो तो कुष्ठ रोग का भय होता है तथा शनि तथा चंद्रमा से युक्त हो तो दिवालिया हो जाता है।

जन्मकुंडली में सूर्य के बारहवें घर में होने के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. धनी हो या न हो, मालिक रहे या नौकर बनकर और तंगदस्ती में बेशक

भंगी घर भी मिले मगर धर्महीन लावल्द या लंगोट बंद साधु न होगा। गर होगा तो बड़ी जागीर का मालिक होगा।

२. खुद कमाई करने वाला होगा या बारौनक जिंदगी का मालिक होगा।
३. आजाद जिंदगी, साफ रूह, ब्रह्मशानी और जिंदादिल होगा।
४. व्यापार से नफा होगा मगर हुनरमंदी दस्तीकान या लोहे की मशीनों के कारोबार से सूरज ग्रहण की किस्मत का ही नजारा दरवेश होगा।

सूर्य के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

सूर्यादि अनिष्ट ग्रहों के उपाय के संदर्भ में किस ग्रह से कौन-सी वस्तु संबंधित है, जिसका दानादि लाभप्रद सिद्ध हो सकता है, यह ज्ञान अत्यावश्यक है। इसलिए ग्रहों का कारकत्व जानना अपेक्षित है।

सूर्य हृदय का द्योतक है। यदि जन्मकुंडली में सूर्य अथवा इसकी राशि पर राहु का प्रभाव हो तो हृदय गतिरोध की संभावना रहती है, विशेषता तब जबकि कुंडली का पांचवां घर और उसका मालिक भी राहु के प्रभाव में हो। ऐसी हालत में सूर्य को बलवान् करना होता है और राहु की पूजा अभीष्ट होती है।

ग्रहों की शांति का एक मौलिक नियम यह है कि जिस ग्रह पर पाप प्रभाव पड़ रहा है और उसको बलवान् किया जाना अभीष्ट है, उससे संबंधित रत्नादि को तो धारण किया जाए और जो ग्रह अपनी युति अथवा दृष्टि से पीड़ा प्रदान कर रहा है, उस ग्रह की पूजा आदि के द्वारा शांति कराई जाए। मान लीजिए, किसी कुंडली में सूर्य शत्रु राशि के दूसरे घर में मौजूद है, उसको मंगल ग्यारहवें घर में स्थित होकर अपनी चौथी दृष्टि से प्रभावित कर रहा है तो ऐसी हालत में सूर्य पीड़ित होगा और मंगल पीड़ा देने वाला। अतः उन दोनों का निवारण आवश्यक है।

सूर्य अग्निरूप भी है। यह मंगल आदि ग्रहों से मिलकर लग्नों को पीड़ित कर सकता है। सूर्य एक पृथक्ताजनक और कलहकारी ग्रह भी है। जब यह किसी जन्मकुंडली के सातवें घर में शत्रु राशि का होकर मौजूद हो तो यह दाम्पत्य जीवन में कलह की सृष्टि कर स्त्री अथवा पुरुष से वियोग करवा देता है।

सूर्य पिता है, अतः यदि वो नौवें घर का स्वामी होता हुआ राहु तथा शनि के प्रभाव में हो तो पिता के कष्ट का द्योतक होता है। सूर्य हड्डी का प्रतिनिधि है। जब यह ग्रह लग्नेश होकर चौथे घर में पीड़ित हो तो हड्डी

टूटने का योग बनता है। इसी प्रकार पांचवें घर में स्थित हुआ सूर्य गर्भ की हानि करता है।

जब सूर्य जन्मकुंडली में बुरी स्थिति में पड़ा हो और सूर्य द्वारा प्रदर्शित बातों से हानि हो रही हो, जैसे दिल को कष्ट हो, राजदरबार से परेशानी हो, आंखों में कष्ट हो, दिल का दौरा हो, पेट की बीमारियां हों, हड्डियों की कोई तकलीफ हो तो उस समय गुड़ का दान, गेहूं, तांबा दान करना शुभ रहता है।

सूर्य भगवान विष्णु का रूप है। इसलिए हरिवंश पुराण की कथा से सूर्य द्वारा उत्पादित दु:खों की निवृत्ति ही कही है। लाल किताब के लेखक के मुताबिक जिसका सूर्य बलवान् होता है, वो नमक कम खाता है, दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जो लोग नमक ज्यादा खाते हैं, उनका सूर्य निश्चय ही निर्बल होता है।

सूर्य सातवें घर में प्राय: बुरा माना गया है। कारण संभवतया यही है कि सातवें घर में प्राकृतिक रूप-से तुला राशि है जो कि सूर्य के लिए नीच राशि है। ऐसी स्थिति में यदि सूर्य सातवें घर में स्थित होकर बुरा फल कर रहा हो तो एक टोटका दिया है कि रात के समय आग को दूध से बुझाओ। भाव यह प्रतीत होता है कि अग्नि रूप सूर्य को उसके मित्र दूध रूप चंद्रमा की सहायता प्राप्त होगी।

इसी प्रकार सूर्य के उस सातवें भाव में स्थिति के दशा-परिणाम की निराकृति के लिए एक टोटका है कि व्यक्ति मुंह में मीठा डालकर ऊपर से पानी पिया करे। लाल किताब के लेखक के बारे में मंगल का संबंध मीठे शहद आदि से है। मीठे और पानी के उक्त प्रयोग का मतलब होगा कि व्यक्ति चंद्र (पानी) और मंगल (मीठा) का उपयोग कर सूर्य के मित्रों चंद्र और मंगल की सहायता लेकर सूर्य के द्वारा उत्पादित दु:ख की निवृत्ति कर रहा है।

यदि सूर्य कुंडली के दसवें घर में हो और पीड़ित होकर अपनी संबंधित वस्तुओं आदि द्वारा कष्ट पहुंचा रहा हो तो टोटका दिया कि चलते पानी में तांबे का पैसा बहा देना अच्छा होगा। यहां यह सिद्धांत कार्य करता है कि जो ग्रह पीड़ित हो, उससे संबंधित धातु आदि वस्तु का दान करना चाहिए। चूंकि सूर्य से संबंधित और वस्तुओं के अलावा तांबा भी है, अत: तांबे का सिक्का पानी में बहा देने के बारे में कहा गया है कि चलते पानी में सिक्का बहा देने का आश्रय केवल यही है कोई शक्ति हमसे हमारे कष्ट को दूर बहा ले जा रही है।

टोटके

१. प्रतिकूल या अनिष्ट ग्रह सूर्य को अपने अनुकूल बनाने के लिए किसी भी रविवार को बेल की जड़ का टुकड़ा सोने के ताबीज में भरवाकर सूत के बने गुलाबी रंग के धागे के सहारे दाहिनी भुजा में धारण करें।

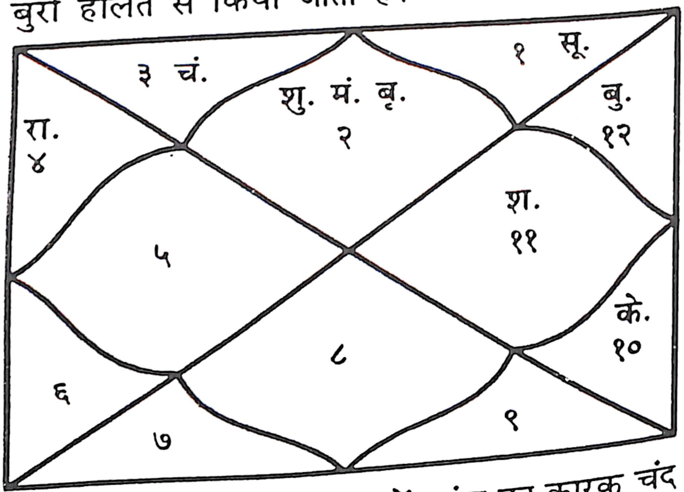
२. सूर्य ग्रह को अनुकूल करने के लिए रविवार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय गाय के दूध और घी में, तांबे की अंगूठी डुबोकर उसे अनामिका उंगली में पहननी चाहिए। साथ ही सूर्य के मंत्र का जप भी करना चाहिए। मंत्र यह है—

ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमतं
मत्यंन्च। हिरण्येन सवितारथेन देवो याति
भुवनानि पश्यन्। सूर्याय नमः।

विशेष—सूर्य देव को प्रसन्न करने के लिए भगवान विष्णु का पूजन और हरिवंश पुराण की कथा की व्यवस्था करनी चाहिए।

सूर्य का शुभ/अशुभ प्रभाव

सूर्य प्रकाश का स्रोत होता हुआ पिंड में आंख द्वारा प्रतिनिधित्व पाता है। चंद्रमा भी सूर्य से प्रकाश लेकर इसका विस्तार करता है। यह भी आंख है। उधर जन्मकुंडली में दूसरा और बारहवां घर क्रमशः दायीं और बायीं आंख के प्रतिनिधि हैं, अतः आंखों की दृष्टि अंधता आदि का विचार दूसरे तथा बारहवें घरों और उन घरों के मालिकों एवं सूर्य-चंद्रमा की अच्छी या बुरी हालत से किया जाता है।

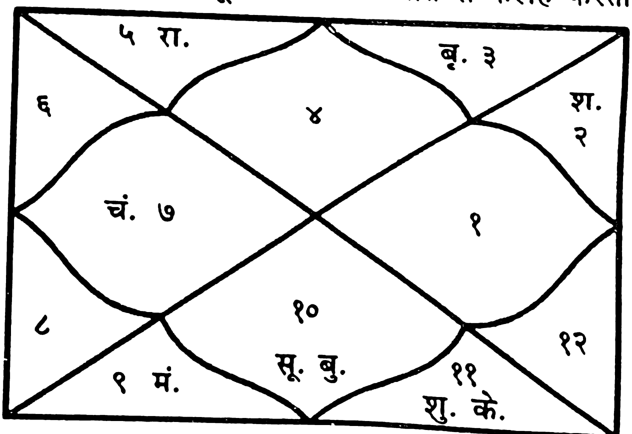


दूसरा स्थान दायीं आंख का है। उसमें आंख का कारक चंद स्थित है।
उपर्युक्त कुंडली में चंद्र स्वयं आंख रूप-से हानि उठा रहा है, वहां वो पापी

ग्रह बनकर आंख के स्थान अर्थात् दूसरे घर को भी हानि पहुंचा रहा है। इसके अलावा दूसरे घर पर मंगल तथा राहु द्वारा पाप मध्यत्व की सृष्टि हो रही है।

दूसरे घर का स्वामी भी नीच राशि का होकर न केवल सूर्य और शनि के पाप मध्यत्व में है, बल्कि इस पर राहु की नवम दृष्टि भी है। इस तरह दूसरे पर, उसका मालिक और चंद्र सभी मंदे और पीड़ित पाए गए हैं। आंख का दूसरा कारक सूर्य भी आंख ही के स्थान बारहवें घर में है। यद्यपि उच्च राशि में है, किन्तु एक प्रबलतम ग्रह शनि (जो कि प्रमुख केंद्र में स्वक्षेत्री है) की पूर्ण तीसरी दृष्टि में है। शनि केतु अधिष्ठित राशि का मालिक (स्वामी) भी है, अत: उसकी सूर्य पर पड़ने वाली दृष्टि में केतु का पाप प्रभाव भी शामिल है। बारहवें घर का स्वामी शुक्र और बृहस्पति के साथ शुभ ग्रहों के साथ है और मंगल पर न केवल सूर्य और चंद्र का पाप मध्यत्व है, बल्कि उस पर केतु की पूर्ण दृष्टि और शनि का केन्द्रीय प्रभाव भी है। इस कारण बारहवां घर और उसका मालिक व सूर्य तथा सभी आंख द्योतक अंग पीड़ित हैं। यही कारण है कि जातक की आंखों की रोशनी उम्र के तीसरे साल में ही जाती रही। यदि जन्मकुंडली का अच्छी तरह से अध्ययन किया जाता और तीसरे साल से पहले ही मंगल को बलवान् करने का उपाय किया जाता, तो शायद ऐसी नौबत न आती।

अपने विशाल आकार, गरमी और प्रकाश के कारण सूर्य असहनीय हो जाता है और जिस संबंधी के घर में पड़ता है, उससे कलह पैदा कर देता है, विशेषतया तब जबकि उसकी मदद शनि और राहु भी कर रहे हों, जैसे सातवें घर में मकर राशि में स्थित सूर्य स्त्री अथवा पति से कलह करता है। निम्न



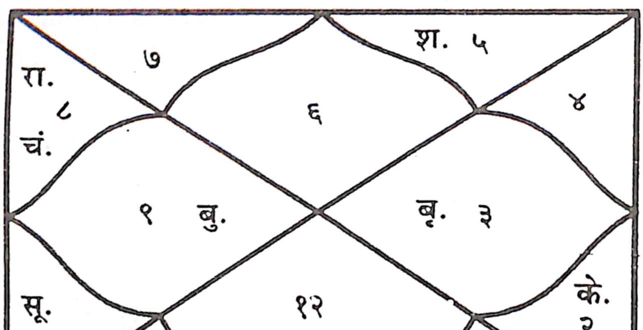
जन्मकुंडली एक ऐसी स्त्री की है, जिसका विवाह तीस साल की उम्र में हुआ था और विवाह के कुछ महीनों के बाद ही पति उससे कलहपूर्वक व्यवहार

करने लगा। यद्यपि वो दोनों एक लड़के के माता-पिता भी बने, तो भी स्त्री को पति से अलग हो जाना पड़ा।

उपर्युक्त जन्मकुंडली में सूर्य की सातवें घर में शत्रु राशि में स्थिति है और सूर्य सातवें घर के लिए वैवाहिक सुख का नाश करने के लिए भी उद्यत है, क्योंकि राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी है। सातवें घर पर मंगल तथा केतु आदि का पाप मध्यत्व है। सातवें घर का मालिक शनि ग्यारहवें घर में स्थित है तो भी राहु तथा मंगल के पाप मध्यत्व में है। यहां चंद्र लग्न से सातवें घर का मालिक मंगल यद्यपि राहु पूरी पांचवीं दृष्टि में है तो भी बृहस्पति मंगल को देखता है। अतः बृहस्पति को बलवान् किया जाना अपेक्षित है।

कुंडली के बारह घरों में से पहला, पांचवां तथा नौवां घर अग्नि रूप हैं। अतः जब सूर्य, मंगल, केतु अथवा इन ग्रहों द्वारा अधिष्ठित राशियों के स्वामी और लग्नेश, पंचमेश अथवा नवमेश (पांचवें, नौवें घर का स्वामी) शरीर द्योतक अंगों अर्थात् लग्न अथवा लग्नेश तथा चंद्र अधिष्ठित राशि के स्वामी पर अपनी युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभाव डालें तो शरीर में किसी-न-किसी प्रकार से आग का संपर्क होता है और ऐसा प्रभाव अधिक हो तो मृत्यु भी आग अथवा बिजली द्वारा संभव है। यदि सूर्य लग्न का स्वामी होकर कुंडली में पीड़ित हो या पापी ग्रहों से पीड़ित हो तो जातक को गिरने आदि से हड्डियों के टूटने की संभावना बनी रहती है।

पांचवां घर, उसका स्वामी और सिंह राशि के साथ सूर्य भी शनि आदि पापी ग्रहों से पीड़ित हो तो जातक पेट कष्ट से पीड़ित होता है। निम्न कुंडली



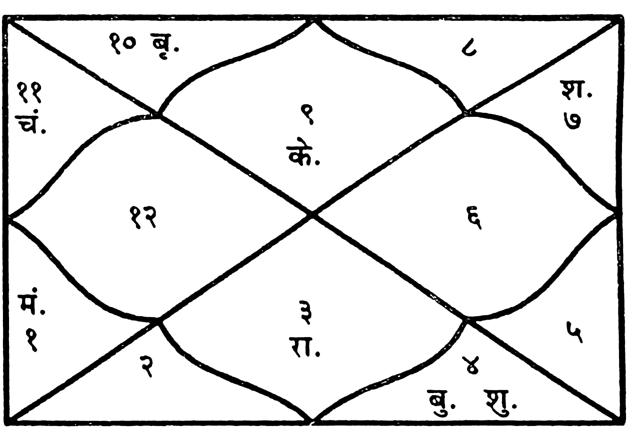
में पांचवें घर में अर्थात् शत्रु राशि में सूर्य पड़ता है जो कि पंचम का अष्टमेश और लग्न से द्वादशेश और शनि अधिष्ठित राशि का स्वामी है। अतः यह

स्पष्ट है कि न केवल सूर्य स्वयं पीड़ित है, बल्कि पांचवां घर भी पीड़ित है क्योंकि इस घर पर केतु की पूरी नौवीं दृष्टि है, साथ ही केतु पर मंगल और शनि की दृष्टि पड़ रही है, अत: सूर्य और कुंडली का पांचवां घर बहुत पीड़ित है। पांचवीं राशि सिंह पर भी पाप प्रभाव की कोई कमी नहीं है, क्योंकि इस पर शनि का योग है और मंगल की पूरी दृष्टि है।

सिंह राशि पर शुक्र की भी दृष्टि है और शुक्र केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी है, इसलिए इसका प्रभाव भी पापी है। पांचवें घर का स्वामी शनि है। वो पांचवें से आठवें में शत्रु राशि में, बारहवें घर में केतु से केंद्र में तथा मंगल और शुक्र के प्रभाव में है। पांचवां घर और उस घर का स्वामो पांचवीं राशि और पांचवीं राशि का स्वामी चारों पाप प्रभाव में हैं और यही चारों पेट का प्रतिनिधित्व करते हैं। अत: पेट में अल्सर आदि का होना अनिवार्य है। इस तरह के कष्ट के निवारण के लिए बृहस्पति को बलवान् तथा शनि की पूजा की जाती है।

सूर्य अपने आप में ही शनि तथा राहु की भांति पृथक्ता लाता है। यदि यह राहु अथवा शनि अधिष्ठित राशि का स्वामी बन जाए तो इसमें पृथक्ता द्वारा हानि पहुंचाने की शक्ति अत्यधिक उत्पन्न होती है और फिर इसका प्रभाव शरीर के जिस अंग पर भी पड़े, उस अंग की हानि हो जाती है।

राहु जब अपना पूर्ण प्रभाव डालता है तो अचानक ही डालता है, इसलिए हृदय द्योतक अंगों अर्थात् कुंडली का पांचवां घर, उस घर का मालिक, सिंह राशि तथा सूर्य सभी पर जब राहु का प्रभाव हो; यह हृदय-गतिरोध का योग बनता है। निम्न कुंडली हृदय-गतिरोध का एक उदाहरण है कुंडली का



अध्ययन करने पर मालूम होगा कि केतु के पाप प्रभाव के कारण ही इस रोग की उत्पत्ति हुई है।

उदाहरण है कुण्डली का अध्ययन करने पर मालूम होगा कि केतु के पाप प्रभाव के कारण ही इस रोग की उत्पत्ति हुई है।

राहु और केतु की दृष्टि अपने से पांचवें और नौवें घर पर पड़ती है। कुंडली में केतु की पांचवीं दृष्टि स्वक्षेत्री मंगल जो पांचवें घर में मौजूद है, पर है। इसकी नौवीं दृष्टि नौवें घर में स्थित स्वक्षेत्री सूर्य पर भी है। इस प्रकार केतु की दृष्टि में न केवल पांचवीं राशि सिंह और उसका मालिक सूर्य ही है, बल्कि पांचवां घर और उसका स्वामी मंगल भी है। चंद्र लग्न से पंचम भाव (पांचवां घर) पर राहु की मौजूदगी का असर है और उसके मालिक पर राहु, केतु, शनि, मंगल सभी का पूरा असर है। यहां राहु और केतु का प्रभाव होने से हृदय गतिरोध के रोग की उत्पत्ति हुई। बृहस्पति की दृष्टि जो चंद्र लग्न से पांचवें घर के मालिक बुध पर पड़ रही है, कुछ मददगार है पर ज्यादा नहीं क्योंकि बृहस्पति भी तो केतु अधिष्ठित राशि का मालिक होने से केतु ही का असर डाल रहा है। जहां तक उपाय का प्रश्न है, इतने व्यापक अंगों पर केतु का प्रभाव होने से रोग की रोकथाम करना तो मुश्किल बात है, किन्तु सूर्य और मंगल को बलवान् बनाकर और मंगल, शनि व केतु को शांत करके रोग की प्रचंडता को कम जरूर किया जा सकता है। सूर्य को बलवान् करने के लिए सोने की अंगूठी में माणिक पहनना चाहिए और मंगल के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहननी चाहिए।

कुछ खास जानकारियाँ

जन्मकुण्डली के जिस घर में सूर्य होगा, उस घर से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं पर यह मंदा प्रभाव करता है, मित्रों के मिलाप से इसकी शक्ति बढ़ जाती है, किन्तु शत्रुओं के मिलाप से इसका फल क्षीण हो जाता है। बुध का साथ होने पर एक ओर जहाँ सूर्य को महानता और ताकत मिलती है, वहीं दूसरी ओर बुध का दोष भी सूर्य के मिलने पर दूर हो जाता है।

पक्का घर : १	ऊंचा (श्रेष्ठ) घर : १, ५, ८, ९, १२
मंदे घर : ६, ७, १०	रंग : पीला (तांबा)
शत्रु ग्रह : राहु, केतु, शनि, शुक्र	मित्र ग्रह : चन्द्र, बृहस्पति, मंगल
सम ग्रह : बुध	कार्य : सरकारी हिसाब-किताब, क्षत्रिय
उच्च : १	नीच : ७
समय : प्रात : ८ से १० बजे तक	दिन : रविवार
बीमारी : ज्वर, सिरदर्द, नेत्र-विकार	मसनुई ग्रह : बुध, शुक्र

जिस जातक का सूर्य शुभ राशि १, ४, ५, ८, ९, १२ में होगा, वो तेजस्वी, प्रतापी और शत्रु-नाशक होता है। यदि वह अशुभ राशि में हो, तो जातक क्रोधी, दूसरों का अहित करने वाला और नीच प्रकृति का होता है।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

जब सूर्य का बुरा असर चल रहा हो, तो सूर्य के दुश्मन ग्रहों को अच्छा कर लेना चाहिए। यह दशा केवल सूर्य ६ और ७ के वक्त ही होगी। इन घरों में सूर्य होने पर बुध को उपाय दोबारा ठीक कर लेना चाहिए। मन्दे सूर्य से बचना चाहिए तथा उसे उच्च करने की कोशिश जरूर कर लेनी चाहिए।

१. गुड़ और चावल जल में प्रवाहित करें।
२. रविवार के दिन गुड़ के चावलों में दूध मिलाकर खाएं।
३. गेहूं भूनकर, गुड़ मिलाकर बच्चों को बाँटें।
४. गले में तांबे का पैसा डालें।

पहले घर का उपाय

१. शादी जल्दी करने पर सूर्य अच्छा फल देगा।
२. दिन में सहवास करने का विचार मन से निकाल दें।
३. पति-पत्नी दोनों में से एक को गुड़ खाना छोड़ देना चाहिए।
४. पानी का नल लगवाना मददगार साबित होगा।
५. शनि के मंदे कामों से परहेज करें, शनि की चीजें पानी में बहाएं।
६. मंगल की वस्तुओं का दान करें।

दूसरे घर का उपाय

१. मुफ्त के माल से परहेज करें।
२. मन में सन्तोष रखने से किसी प्रकार की कोई क्रमी नहीं आएगी।
३. शुक्र पर सूर्य का मंदा असर दूर करने के लिए धर्म-स्थान में बादाम का तेल तथा नारियल चढ़ाएं।
४. जर, जोरू तथा जमीन के नाहक झगड़ों से दूर रहें।

तीसरे घर का उपाय

१. मंदे कार्यों से बचते रहें।
२. माता का आशीर्वाद लें।
३. अच्छे चाल-चलन पर काबिज रहें।
४. चावल-दूध का दान करते रहें।
५. ९वें तथा ११वें घर मे मंदे ग्रहों की वस्तुएं दान करते रहें।

चौथे घर का उपाय

१. ज्यादा लालच करना नुकसानदेह होगा।
२. मंदे कामों से बचकर रहें।
३. अन्धों को रोटी खिलाया करें।

पांचवें घर का उपाय

१. लाल मुंह के बन्दर की सेवा अच्छा फल देगी।
२. दूसरों के साथ अपनापन दिखाएं और प्यार का इजहार करें।
३. चने की दाल, चावल, हल्दी, पीले फूल तथा देशी खांड आदि को जल में प्रवाहित करके बृहस्पति के असर को दूर करें।
४. तेल को जमीन पर गिराया करें ताकि तीसरे घर में शनि का फल सातवें घर के शनि में बदल जाए।

छठे घर का उपाय

१. हठधर्मी से बचें।
२. चांदी का टुकड़ा या दरिया का पानी घर में रखें।
३. बन्दरों को गुड़ खिलायें।
४. पिता की आयु को बढ़ाने के लिए रात को सिरहाने पानी रखकर सोएं।
५. मकान की पश्चिम दीवार में रोशनदान बनाकर कुदरती रोशनी का इंतजाम करना बहुत मददगार होगा।
६. कुत्तों की पालना करें।
७. लड़कियों और औरतों के मान-सम्मान का ध्यान रखें।
८. पुराने रस्मो-रिवाजों को जारी रखें।
९. रात में आग पर दूध की धार डालकर चन्द्र की और धर्म-स्थान में चने की दाल आदि चढ़ाकर बृहस्पति की मदद से सूर्य को बलवान करें।

सातवें घर का उपाय

१. सूर्य-बुध को कायम करने के लिए तांबे के चौकोर टुकड़े भूमि में दबाएं।
२. चन्द्र का प्रभाव नष्ट करने के लिए रात में अग्नि को दूध से बुझाकर सोएं।
३. खाना खाने से पहले खाने का एक हिस्सा आग में डालें।
४. पानी का घूँट पीकर काम की शुरूआत करें।
५. भूरी गाय की सेवा से अच्छा फल मिलेगा।
६. २२वें साल में शादी न करें।
७. दिन में सहवास करने से सूर्य और शुक्र का मिलाप हो जाता है, अत: दिन में सहवास करना, मौत को बुलाने समान होगा।
८. सिर्फ सहवास के लिए पति-पत्नी एक चारपाई पर जाएं और सहवास के अलावा एक चारपाई पर न सोएं।
९. पति-पत्नी दोनों में से एक गुड़ खाना छोड़ दें।

आठवें घर का उपाय

१. गाय की सेवा से आयु की वृद्धि होगी।
२. बड़े भाई के आदेश का पालन करें।
३. काली या लाल गाय की सेवा करें।
४. गुड़ खाकर और पानी पीकर काम की शुरूआत करें या काम पर जाएं।
५. ८ सौ ग्राम गेहूं और ८ सौ ग्राम गुड़ रविवार से शुरू करके निरंतर आठ दिनों तक मन्दिर में चढाएं। इससे सारे कष्ट दूर हो जाएंगे।
६. झूठ, मक्कारी, धोखाधड़ी और गंदी मुहब्बत से बचें।
७. सच्चाई से काम लें।
८. ऊपरवाले को हमेशा याद करते रहें और बुराई से दूर रहें।
९. दरिया में गुड़ बहाएं।
१०. जब भी मौका मिले, तांबे का पैसा जलती चिता में डालें।

नौवें घर का उपाय

१. परोपकार तथा सामाजिक सेवा से उन्नति होगी।

२. दूध, चावल और चांदी का दान सूर्य की शक्ति को बढ़ाता है, किन्तु इनका दान लेना तबाही ला सकता है।
३. समय-समय पर तीर्थयात्रायें करते रहें।

दसवें घर का उपाय

१. नदी या दरिया में तांबे का पैसा डालना लाभ करेगा।
२. काले और नीले कपड़े पहनने से परहेज करें।
३. सफेद या शरबती रंग की पगड़ी या टोपी से हमेशा सिर ढांप कर रखें।
४. मांस, अण्डे और शराब आदि से दूर रहें।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. बृहस्पति के गुण अपनाएं।
२. शनि को मन्दा न करें।,
३. सूर्य को मंदा करने वाले कामों से बचें।
४. रात को पाँच मूली सिरहाने रखकर सुबह मन्दिर में दान करें।
५. अपने पापों (पाप-कर्म) से निजात पाने के लिए, अपने वजन के बराबर दूध देने वाली बकरियों की संख्या के बराबर बकरे जंगल में छोड़ें।

बारहवें घर का उपाय

१. धर्म का पालन करें।
२. झूठी गवाही न दें।
३. बन्दरों को गुड़ खिलाएं।
४. किसी रिश्तेदार या अपनों के संग मिलकर कोई काम न करें।
५. आंगन वाले मकान में रहें।

नोट-बुध के व्यवसाय से उन्नति होगी।

❑❑

अद्भुत शीतल ग्रह चंद्र

चंद्र ब्रह्मा के पुत्र महर्षि अत्रि के नेत्र जल से उत्पन्न हुआ है, प्रजापति दक्ष की सत्ताइस कन्याओं का पति है तथा एक पौराणिक कथा के अनुसार चंद्र अनुसूया के तीन पुत्रों में से एक है। वैसे तो चंद्र एक उपग्रह है, किन्तु ज्योतिषशास्त्र में उसे एक ग्रह की श्रेणी में ही रखा गया है। सूर्य तथा बुध उसके अच्छे मित्रों में हैं और राहु व केतु उसके पक्के शत्रु हैं, जबकि शुक्र, मंगल और शनि उसके साथ न तो किसी प्रकार की मित्रता ही रखते हैं और न ही किसी प्रकार से उसके शत्रु ही हैं। चंद्र के साथ वो सदैव समभाव रखते हैं।

चंद्र वृष राशि में उच्च का तथा वृश्चिक राशि में नीच का होता है। इसकी स्वराशि कर्क है। कुंडली के चौथे घर का इसे कारक माना गया है, किन्तु बली चंद्र ही चौथे घर में अपना श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। यदि चंद्र चौथे घर में जन्मांग चक्र में पड़ा हो और निर्बल हो अथवा राहु के साथ मिलकर ग्रहण योग बना रहा हो तो ऐसी दशा में, चौथे घर में होते हुए भी यह अपना पूर्ण फल कभी नहीं देगा।

चंद्र अपने स्थान से सातवें घर को पूरी दृष्टि से देखता है। विंशोत्तरी दशा के अनुसार इसकी महादशा १० वर्ष की होती है। कुंडली में चंद्र की स्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि यह बहुत शीघ्र अपनी गति बदलता है और जातक को तुरंत लाभ-हानि पहुंचाने की क्षमता रखता है। यह मन और तत्त्वसंबंधी कार्य, सुगंधित द्रव्य, पानी, माता, आदर-सम्मान, संपन्नता, एकांतप्रियता, सर्दी, जुकाम, चर्मरोग और हृदयरोग का कारक होता है। बृहस्पति के साथ यह उच्च फल देता है, किन्तु सूर्य और बुध के साथ भी यह योग बनाने में समर्थ होता है। प्रश्न कुंडली में संपूर्ण विचार इसी के द्वारा किया जाता है। यात्रा, विवाह और शुभकार्यों के लिए इसका विशेष अध्ययन आवश्यक होता है।

यदि किसी की कुंडली में जन्म लग्न (मेष, वृष तथा कर्क राशि हो तो) में चंद्रमा हो तो वह जातक धनवान्, कांतिमान् तथा पूर्ण आनंद का भागी होता है। यदि लग्न में (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ और मीन) हो तो वह जातक धन से हीन, दुर्बल, दरिद्र, मूर्ख तथा बहरा होता है। ऐसा जातक स्थूल शरीर का एवं गायन विद्या का विशेष प्रेमी होता है।

बारह घरों में चंद्र का फल

पहला घर—जन्मकुंडली के पहले घर (लग्न) में चंद्र हो तो जातक बलवान्, ऐश्वर्यशाली, सुखी, व्यवसायी तथा स्थूल शरीर का होता है। पहले घर में जो राशि स्थित रहती है, उसके स्वामी को लग्नेश कहते हैं। यदि लग्नेश निर्बल हो तो जातक रोगी रहता है, किन्तु यदि लग्नेश शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक स्वस्थ रहता है तथा युद्ध अथवा मुकदमें के बाद उसे धनालाभ होता है। यदि लग्न में उच्चराशि का चंद्रमा विद्यमान हो तो जातक अधिक संतान वाला होता है। उसे धन, ऐश्वर्य की कमी नहीं होती। यदि क्षीण चंद्र पहले घर में रहता है तो जातक नेत्ररोगी, उन्माद रोगी, नीच स्वभाव का, व्याधिग्रस्त तथा दरिद्र होता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के पहले घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. अमूमन ९० साला लम्बी उम्र होगी। राजदरबार में इज्जत व कामयाबी होगी। आम सुख २७ साल और औलाद का सुख खासकर होगा।
२. इल्म और दौलत का मालिक होगा।
३. जब तक वाल्दैन का हुक्म बजा लाता रहेगा और उसके कदमों को छूकर उसकी दुआएं लेता रहेगा, उम्र रिजक व दौलत की कभी कमी न रहेगी।
४. हर किस्म की सवारी का सुख होगा और जरो-दौलत की तरक्की होगी, उम्दा जिंदगी होगी।

दूसरा घर—जन्मकुंडली के दूसरे घर में चंद्र हो तो जातक भाग्यशाली होता है। उच्चराशि का चंद्र हो अथवा बली चंद्रमा हो तो जातक का व्यक्तित्व अति शोभन तथा कांतिमय होता है। क्षीण चंद्र दूसरे घर में हो तो जातक मुख रोगी, अल्पबुद्धि का तथा धन से हीन होता है। शुभ चंद्र होने पर जातक मधुरभाषी, परदेशवासी, सहनशील, शांतिप्रिय, उदार, विद्याप्रेमी, स्त्री विलासी, मित्रों का सुख पाने वाला होता है। दूसरे घर में नीच का चंद्र होने पर जातक दुःखी, दुर्बुद्धि तथा धनहीन होता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. ऐसे शख्स की अमूमन बहन नहीं हुआ करतीं मगर भाई जरूर होंगे।
२. अव्वल तो उम्र अमूमन २५ साल ही होगी वरना २५/३४ साल उम्र का अरसा हर तरह से मंदा व गरीबी से भरपूर होगा। ऊपर का मंदा तल अमूमन में ५० साल (२५ और ७८ साला उम्र का दरम्यान) मंदा ही होगा।
३. दौलतमंद और घोड़ों का शहसवार औलाद और वाल्दैन से सुखी होगा।
४. खानदानी नस्ल कभी बंद न होगी।
५. चंद्र और बुढ़ापा दोनों नेक फल देंगे।

तीसरा घर—जन्मकुंडली के तीसरे घर में चंद्र की उपस्थिति से जातक प्रसन्नचित्त, आस्तिक, मधुरभाषी, कफरोगी तथा मिलनसार प्रवृत्ति का होता है। तीसरे घर में चंद्रमा यदि शुभ राशि में हो, उच्च का हो या मित्रक्षेत्री हो तो जातक काव्यप्रेमी, साहसी और छोटे भाइयों से प्रेम करने वाला होता है। चंद्र नीच राशिस्थ हो अथवा लग्नेश तथा षष्ठेश का योग हो तो जातक को चोर व राज्य की ओर से भय रहता है तथा गले के रोग से पीड़ित भी रहता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. साधु हो तो सिद्धि की साधना का मालिक, गृहस्थ हो तो धन-दौलत का भंडारी। हर हालत में दौलतमंद होगा।
२. सब मालो खान मंदिर दुनियावी शादी मुहब्बत से नफरत करने वाला होगा। छत्रपति शिवाजी की तरह मौत पर भी काबू पा लेने की तरह बुलंद हिम्मत का मालिक होगा, न कभी रिजक की कमी और न ही कभी चोरी होगी।
३. मैदाने जंग में हमेशा फतेहयाब होगा।
४. राजयोग होगा, वाल्दैनी सुख सागर नेक व उम्दा व लम्बा अरसा और उत्तम बल देगा। खुद तसल्ली व दौलत का चश्मा चलता होगा।
५. अस्सी साला उम्र और ताकत का मालिक, खुले दिल का लम्बी अक्ल का नेकनीयत व शराफत का माकूल जवाब देने की हिम्मत वाला होगा।

चौथा घर—जिसकी जन्मकुंडली में, चौथे घर में चंद्र होगा, वो दानशील, सुखी, उदार, आकर्षक व्यक्तित्व का, उत्तम स्वास्थ्य का, कृषिकार्य से लाभ

अर्जित करने वाला, बुद्धिमान्, प्रेमी और जल-क्रीड़ा करने वाला होगा। ऐसे व्यक्ति का भाग्योद्य विवाहोपरांत होता है। यदि चौथे घर में बली चंद्र मौजूद हो अथवा उच्च राशि का हो तो जातक को वाहन का सुख मिलता है। अपने भाइयों में वो श्रेष्ठ होता है, समाज में यश तथा कीर्ति अर्जित करता है। उसकी बाल्यावस्था आर्थिक अभाव में और शारीरिक कष्ट में बीतती है। अगर चौथे घर में क्षीण चंद्र हो अथवा नीच राशि का हो तो जातक व्यसनी, नीच लोगों का सेवक, मकान तथा वाहन आदि के सुख से हीन होता है। चौथे घर में चंद्र व मंगल का मिलान हो, तो जातक जीने के लिए नहीं, बल्कि खाने के लिए जीता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. खर्चने पर और भी बढ़ने वाला दौलत का दरिया या जिस कदम खर्च ज्यादा होवे, दौलत उसी कदर और भी बढ़ेगी।
२. जद्दी कारोबार उत्तम फल देंगे। पूरा इकबालमंद और औलादे-नरीना के जन्मदिन से इकबालमंद होगा।
३. इतना सुखी होगा कि दुःख क्या होता है, इसका अहसास तक भी न होगा।
४. चालचलन और बर्त्ताव उम्दा खानदानी खून का सबूत होगा।
५. राजदरबार से दौलत और लम्बी समुन्दरी यात्राओं से बेशुमार मुनाफा होगा।

पांचवां घर—जन्मकुंडली के पांचवें घर में चंद्र हो तो जातक चंचल स्वभाव का, अधिक कन्या संतति वाला, शादी के १२ वर्ष के बाद पुत्र लाभ प्राप्त करने वाला, सट्टे या लाटरी के द्वारा आकस्मिक धन को प्राप्त करने वाला, स्वभाव से अत्यंत शर्मीला तथा तंत्र, मंत्र जैसी गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। उसके आर्थिक स्रोत कई होते हैं तथा वो व्यवसाय द्वारा आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। उसकी पत्नी बहुत सुंदर होती है। कुंडली के पांचवें घर में बली और पूर्ण चंद्रमा हो तो जातक की ससुराल धनवान् होती है। उसकी पत्नी आज्ञाकारी, पढ़ी-लिखी और पतिव्रता होती है। यदि कुंडली के पांचवें घर में क्षीण चंद्र यदि नीच राशि में हो तो उक्त फलों को एकदम विपरीत समझना चाहिए। यदि पांचवें घर में चंद्र शुभ राशि में हो तो जातक तेजस्वी, सुंदर नयन-नक्श व धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यदि चंद्र पांचवें घर में वृष अथवा कर्क राशि में हो तो

जातक को शेयर्स मार्केट, सट्टे एवं लाटरी से धन का बहुत अधिक लाभ होगा।

जन्मकुंडली में चंद्र के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बच्चों की परवरिश और ईमान की तबियत पर दौलत की बरकत की हालत होगी।
२. जिस शख्स की कुंडली में पांचवें घर में चंद्र मौजूद होगा, वो कट जावेगा, मगर किसी के आगे कभी झुकेगा नहीं।
३. अदलो इंसाफ के तराजू का मालिक रहमदिल इंसान, लड़ाई-झगड़े में जिसकी तरफ हो जावे, उसी तरफ फतेहयाब और उसी का पल्ला भारी होगा। व्यापार अमूमन मंदा होगा मगर धन दौलत की आमदन के जरिया में इजाफा होगा।
४. जंगल और पहाड़ को भी आजाद करने वाला धर्मात्मा होगा। कम से कम पांच पुत्रों का पिता होगा।
५. अपना कोई भेद छुपाकर नहीं रख सकता, उसका भेदी ही उसको तबाह करे। लालच और खुदगर्जी नष्ट होने की बुनियाद होगी। दिमाग से काम लेगा तो अपने ऊपर से मंदी के असर को दूर कर सकेगा।

छठा घर—कुंडली के छठे घर में चंद्र की उपस्थिति से जातक कफ-रोगी, अधिक व्यय करने वाला, आंखों के कष्ट से पीड़ित, भाइयों के प्रति प्रेम रखने वाला होता है। अगर छठे घर में चंद्र पूर्ण हो तो जातक दीर्घायु, बलिष्ठ व शत्रुहंता होता है। नौकरी से उसे अधिक लाभ होता है। छठे घर में चंद्र वृष राशि का हो तो जातक कब्ज-रोग से पीड़ित रहता है। क्षीण चंद्र छठे घर में अशुभ फल प्रदान करता है और जातक को मानसिक रूप-से पीड़ित भी करता है। बाल्यावस्था में उदर एवं मंदाग्नि से पीड़ित रहता है। चंद्र, राहु और केतु के साथ मिलान करे तो अशुभ फल और भी बढ़ जाता है। छठे घर में उच्च राशि का शनि तथा चंद्र का योग शुभ फलकारी होता है। छठे घर में चंद्र शुक्र के साथ मिलकर बैठे तो जातक बंधुओं से प्रेम करने वाला होता है। वो स्त्रियों के पीछे अपने धन का व्यय अधिक करता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जैसे बीज बोएगा, वैसी फसल काटेगा। अच्छा करेगा, तो उसका फल भी अच्छा मिलेगा और बुरे का फल भी बुरा होगा। धन-दौलत,

धर्म-ईमान और जिस्मानी सेहत मंदी, दूध का इस्तेमाल मंदा, बल्कि रात का पिया दूध तो जहर की तरह असरकारी साबित होगा।

२. खुद या अपनी औरत या दोनों एक आंख से काने होंगे। माता का साया बचपन में सिर से उठ जाए।

नोट—चंद्र अनिष्ट प्रभाव करे जिस वजह से पूरी जिंदगी में मंदी आवे, तो धर्मस्थान में यदाकदा चंद्र के दोस्त ग्रहों सूरज, मंगल और बृहस्पति की मुतल्लका कोई न कोई चीज देते रहना या वैसे ही धर्मस्थान में जाकर सिर झुका आना मददगार होगा।

विशेष—सेहत के ताल्लुक में दूध पीना अगर जरूरी हो तो सिर्फ दिन के वक्त इस्तेमाल करना बेहतर होगा। रात का पिया दूध किसी तरह के जहर से कम फल न देगा।

सातवां घर—कुंडली के सातवें घर में चंद्र होने पर जातक व्यवसाय करने वाला, समाजसेवी, शांत स्वभाव का, अहंकारी तथा धैर्यवान् होता है तथा अपनी पत्नी का भक्त होता है। यदि सातवें घर में बलवान् तथा उच्च राशि का चंद्र हो तो जातक की पत्नी बहुत सुंदर, तीखे नयन-नक्श की, सुशील तथा धनाढ्य परिवार की होती है। सातवें घर में यदि शनि और चंद्र का मिलान हो तो जातक का विवाह देर से होता है। यदि चंद्र क्षीण तथा शत्रु की राशि में हो तो जातक का दाम्पत्य जीवन बहुत कलह और कष्ट के साथ बीतता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. शादी के दिन औरत के घर से खाबिंद के घर तक औरत के साथ ही अगर चंद्र की अशियां दूध चांदी दरिया का पानी, दूध औरत के वजन के बराबर पहले से ही मौजूद हों तो अल औलाद बढ़ती रहेगी वरना इंद्र, शुक्र का झगड़ा औरत की अपनी माता या धन दौलत बरबाद होने शुरू हो जाएंगे।

२. दौलतमंद, नगर व गृहस्थी हालत में हमेशा रंजो मुसीबत होगी।

३. बूढ़ी माता की इज्जत में कमी करे तो सारी इज्जत दौलत मिट्टी की तरह उड़ जाएगी।

४. दूध पानी मोल बेचने से औलाद और धन-दौलत घटे। चंद्र के साथ शुक्र बैठे तो कुंडली का घर मंदा हो, मगर दौलत मंदी न होगी और न ही नसीबा मंदा होगा।

आठवां घर—कुंडली के आठवें घर में चंद्र हो तो जातक ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है तथा प्रमेह रोगी और कामुक होता है। जातक व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है। जातक स्वभाव से वाचाल, स्वाभिमानी तथा कमजोर शरीर का होता है। उसे शत्रुओं से नुकसान होता है तथा मित्रों द्वारा बहिष्कृत होता है। चंद्रमा बृहस्पति की युति अष्टम भाव (आठवें घर) में होने पर जातक क्षय रोग से पीड़ित होता है। जातक को जल में डूबने का भय रहता है। यदि आठवें घर में चंद्र मित्र राशि में हो या स्वक्षेत्री होकर विद्यमान हो तो जातक सर्दी तथा कफ रोग से ग्रसित रहता है। आठवें घर में चंद्र शुभ ग्रह से युति करके जातक को साझेदारी-व्यवसाय करने की ओर प्रेरित करता है, तथा जातक को लाभ दिलाता है। क्षीण चंद्र आठवें घर में हो तो जातक की बाल्यावस्था में मृत्यु हो जाती है।

जन्मकुंडली में चंद्र के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बेशक किसी गरीब घर पैदा हो, कोई लम्बा-चौड़ा परिवार भी न हो फिर भी अपने जन्म से मिट्टी में चांदी की तरह चमकदार होगा।
२. मौत के वक्त आखरी घड़ी अपने घर घाट (जद्दी) इलाका में ही होगा।
३. बहू बेटी और वाल्दैन लड़का बहन की मुहब्बत को अलहदा और इश्क धारणा से दूर रहने वाला दूध की मानिंद सफा दिल होगा। राजदरबार में इज्जत और चंद्र की संबंधित वस्तुएं (जानदार व बेजान) का सुख होगा।
४. शायरी या इल्मे ज्योतिष का माहिर भी हो सकता है, वरना चाल-चलन शक से बरी न होगा। अंदरूनी अक्ल और खुदाई पहुंच दर्जा कमाल होगी।
५. ३४ साला उम्र तक मंदी जिंदगी और दौलत जमा न होगी।
६. बच्चों और बूढ़ों के आशीर्वाद बजरिए उनके पांव धोते रहने से हर तरफ बचत और बचाव होता रहेगा।

नौवां घर—कुंडली के नौवें घर में चंद्र हो तो जातक बहुत भाग्यशाली होता है। उसका पूरा जीवन भोग-विलास, सुख, ऐश्वर्य तथा समृद्धिपूर्वक बीतता है। उसे जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं। वो धर्मात्मा, प्रवासप्रिय, विद्वान, साहसी, संपत्तिवान, उद्यमी, देखने में सुंदर और उत्तम संतान वाला होता है तथा उसका दाम्पत्य जीवन अत्यंत सुखकर बीतता है। जातक को जीवन में तीर्थयात्रा तथा पर्यटन का सौभाग्य मिलता है। अगर नौवें घर में चंद्र शुभग्रही हो तो जातक की पत्नी सुंदर, सुशील, घर के कामों में प्रवीण

व मन भावन होती है। नौवें घर में पूर्ण चंद्र होने पर जातक दीर्घायु होता है। क्षीण चंद्र होने पर जातक धनहीन, ऐश्वर्यहीन, कुटिल पत्नी युक्त, मूर्ख तथा उद्योगहीन होता है। माता-पिता का विशेष सुख भी उसे नहीं मिलता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. औलाद, रिजक व ईमान में सब तरफ बरकत बढ़ती होगी।
२. कर्म, धर्म और दया व दौलत की बरकत होगी। बाहरी और हवाई हर दो ताकत की बरकत होगी। मामूली बेड़ी का मालिक होता हुआ भी आला जिंदगी व भारी परिवार का मालिक हो जाएगा।
३. शराफत और चंद्र की ताकत में सबसे ऊपर उत्तम हालत का मालिक और दिमागी बुध से मुश्तरका रियाजी (हिसाब वगैरा) उसूलों का वाकिफ होगा। दुखियों को आराम देने वाला, नसीब का धनी होगा।
४. बीस साल तीर्थयात्रा का मौका मिलेगा। बेशक उसके दिल के समुन्दर में कृतघ्न इंसानों की नस्ल से तमाम दुनिया गंदी कर देने वाला कूड़ा-करकट ही क्यों न डाला जाए, फिर भी दुनिया की हालत में वो खुदाई रहनुमा होगा।
५. दुश्मन गंदी नजर से उस पर कभी फतह न पा सकेगा।

दसवां घर— कुंडली के दसवें घर में चंद्र विद्यमान हो तो जातक कुलदीपक, प्रसन्नचित्त, दीर्घायु, दयालु, व्यवसाय करने वाला, सुखी तथा जीवन में यश कमाने वाला होता है। जातक का अपने परिवार तथा कुटुंब के प्रति विशेष लगाव रहता है। जातक जीवन में शृंगार-संबंधी वस्तुओं का व्यवसाय करके अर्थोपार्जन करता है। औषधि-व्यवसाय में भी उसे लाभ हो सकता है। अगर दसवें घर में चंद्र मंगल के साथ मिलान करते हुये बैठा हो तो जातक को व्यवसाय में हानि होती है। इसी प्रकार शनि के साथ चंद्र की दशम भाव में युति (दसवें घर में होना) व्यवसाय में अनेक प्रकार की कठिनाइयां उत्पन्न करती है। दसवें घर में चंद्र पाप ग्रहों से युति करे तो जातक का संबंध किसी विधवा स्त्री के संग होता है तथा जातक पापी होता है। दसवें घर में पूर्ण चंद्र जातक महत्त्वाकांक्षी, सज्जन, संतोषी तथा मित्रों का सहयोग प्राप्त करने वाला होता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. उम्र बहुत लम्बी होगी।

२. वाल्दैनी सुख सागर उत्तम मगर औरतें यानि माशूका या बेवाएं (बतौर फर्ज) हक अदा न करेंगी। खुश्क कुएं भी स्वयं पानी देने लग जाएं और उजड़े घर आबाद होंगे। हर तरफ चंद्र के नेक असर से दूध, चांदी और मोती की वर्षा से मुबारिक जमाना होगा।
३. हैसियत का चंद्र होगा। ऐसा शख्स आंख के फरेब से बदनाम होगा और शनिश्चर की आंख शरारत की वजह होगी।
४. शनिश्चर (मकान) राहु (ससुराल) दोनों ही की मंदी हालत होगी।
५. फेफड़े और छाती की बीमारियां होंगी। दिन के वक्त मौत पानी से होगी।

ग्यारहवां घर— जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर में चंद्र हो तो जातक यशस्वी, दीर्घायु, लोकप्रिय व चंचल स्वभाव का होता है। उसका जीवन अधिकतर परदेश में ही बीतता है तथा उसे राज्य द्वारा सम्मानित किया जाता है। उसकी संतान भी गुणी व संपत्तिशाली होती है। वह ज्योतिष तथा तंत्र-मंत्र विद्या में रुचि रखने वाला होता है। उसकी पत्नी सुंदर, सुशील तथा गृहकार्य में दक्ष होती है तथा अधिक कन्या संतान की माता होती है। जातक को जीवन में मकान, वाहन तथा नौकर-चाकरों का सुख प्राप्त होता है। यदि ग्यारहवें घर में क्षीण चंद्र हो तो जातक का जीवन बड़ा ही संघर्षमय तथा रोग ग्रसित रहता है। उसे दाम्पत्य तथा ऐश्वर्य-सुख नहीं मिलता। यदि ग्यारहवें घर में चंद्र के साथ शुक्र भी बैठा हो तो जातक को वाहन का सुख मिलता है। यदि शुक्र के स्थान पर शनि विराजमान हो तो जातक के लिये उसकी कुंडली का यह घर निश्चय ही राजयोग कारक होता है। ऐसा योग होने पर जातक अनेक विद्याओं का जानकार तथा समाज में यश-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. आमदन के ताल्लुक में शांति, माकूल कमाई का मालिक होगा। इस घर में चंद्र निहायत उत्तम फल देगा और मंदा भी नहीं के बराबर होगा।
२. उम्र लम्बी, मकान का सुख और दौलत उम्दा होगी।

बारहवां घर— जिसकी जन्मकुंडली के बारहवें घर में चंद्र विद्यमान हो, वह कफ-रोगी तथा चंचल स्वभाव का होता है। साथ ही एकांतप्रिय, नेत्र रोगी तथा मधुर वाणी बोलने वाला होता है। उसके बहुत से शत्रु होते

हैं। स्त्रियों के प्रति कम आसक्त होता है। यदि बारहवें घर में चंद्र के साथ मंगल भी बैठा हो तो जातक नेत्र-रोगी, राजदंड पाने वाला, नीच बुद्धि का होता है। बारहवें घर में चंद्र, कर्क, कन्या अथवा मीन राशि का हो तो जातक को राजयोग प्राप्त होता है। जातक धार्मिक प्रवृति का होता है तथा उसका संबंध कई स्त्रियों से रहता है। बारहवें घर में पूर्ण चंद्र जातक को साहसी, ज्ञानी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला, क्रोधी तथा जुआरी बनाता है।

जन्मकुंडली में चंद्र के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. दुनिया में कोई अपना नुकसान नहीं चाहता और न ही कोई दुःख-दर्द, रहमत मांगता है। मगर कुंडली के बारहवें घर के चंद्र वाला खुद जाम के बजाए पानी से ही जलता और दूसरों को जलाता होगा।
२. रात की नींद और सिर की जिद्द कभी ही सुख की होगी। चंद्र की बेजान चीजों का फल प्रायः मंदा होगा।
३. ससुराल की जायदाद फूंके और खुद अपनी भी न जोड़े।
४. धर्म-कर्म की दौलत की बरबादी होगी।
५. माता-पिता या किसी बुजुर्ग के पांव छूकर उसका आशीर्वाद लेना चंद्र के उत्तम फल पैदा करने की सबसे बढ़िया बुनियाद है।

चंद्र के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

चंद्र से चकंदी का संबंध सर्वत्र माना गया है। जब चंद्र जन्मकुंडली के किसी घर में बैठकर अपने से संबंधित वस्तुओं द्वारा कष्ट दे रहा हो, जैसे माता बीमार हो अथवा जातक को मानसिक चिंता या निर्बलता हो, अथवा फेफड़ों का कोई रोग हो, धन का नाश हो रहा हो तो चांदी को दरिया में बहा देना चंद्र से संबंधित कष्टों को निवारण करने वाला होगा।

चंद्र जब अशुभ फल दे रहा हो तो रात को दूध या पानी का एक बर्तन सिरहाने रखकर सो जाएं और प्रातः कीकर के वृक्ष पर डाल दें। यहां चंद्र से संबंधित वस्तु पानी, दूध, चांदी का किसी-न-किसी रूप में दान करना अथवा अपने से पृथक् करने के बारे में कहा गया है। यहां चंद्र से पानी, दूध और चांदी आदि का संबंध माना गया है, अतः चंद्र जब कष्टकारी हो रहा हो तो भगवान् शिव की जल, दूध आदि द्वारा पूजा लाभप्रद मानी गई है।

चंद्र यदि लग्न में स्थित होकर अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा हो तो लाल किताब के अनुसार दूध कभी नहीं बेचना चाहिए। जातक को प्राकृतिक जल,

चावल, चांदी आदि चंद्र की वस्तुओं को धारण करना चाहिये। यह सब टोटकों की प्रक्रियाएं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि टोटकों को निश्चित करते समय लाल किताब का रचयिता तीसरे आदि घरों में प्राकृतिक राशियों का ध्यान रखता है। जैसे यदि चंद्र (चंद्रमा) तीसरे घर में मौजूद रहकर अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा है तो सब्ज रंग का कपड़ा लड़कियों को दान में देना चाहिए, ऐसा उपाय है। यह तीसरे घर में प्राकृतिक राशि तीन संख्या की अर्थात् बुध की है और बुध सब्ज अर्थात् हरे रंग का भी है, कपड़ा भी है और लड़की भी। अत: इस प्रकार तीसरी राशि का ध्यान यदि रखा जाए तो उपाय हेतु संगत होने का भेद समझ में आ जाता है।

चंद्रमा यदि चौथे घर में अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा हो तो रात को दूध नहीं पीना चाहिए। ऐसी दशा में लोगों को दूध मुफ्त में पिलाना चाहिए। जब चंद्र आठवें घर में स्थित होकर अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा हो तो टोटके की प्रक्रिया के रूप में आप श्मशान की सीमा के अंदर स्थित कुएं का पानी अपने घर में रखें। ऐसा करना चंद्र के अनिष्टकारी फल को दूर करने वाला सिद्ध होगा।

लाल किताब के लेखक का मत है कि शनि यदि दसवें घर में मौजूद होकर अनिष्टकारी फल प्रदान कर रहा हो तो रात्रि को कभी दूध नहीं पीना चाहिये, अन्यथा अनिष्ट में वृद्धि होती है। यह विचार इस सिद्धांत पर आधारित प्रतीत होता है कि जो ग्रह पीड़ित हो रहा है, उससे संबंधित वस्तुओं का छोड़ना तथा दान आदि में देना ही लाभप्रद है। उनका सेवन करना विपरीत प्रभाव डालता है।

चंद्र यदि ग्यारहवें घर में मौजूद होकर अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा हो तो टोटके के रूप में भैरव जी के मंदिर में दूध देना लाभदायक सिद्ध होगा। यहां भी चूंकि चंद्र ग्यारहवें घर की प्राकृतिक राशि कुंभ में, जो इसके शत्रु शनि की राशि का स्वामी है, भैरव का रूप है।

टोटके

चंद्र ग्रह यदि प्रतिकूल या अनिष्ट फल प्रदर्शित कर रहा हो, तो इस अनिष्ट के निवारण के लिये अथवा चंद्र को अनुकूल करने के लिये निम्न टोटकों का प्रयोग करना चाहिये—

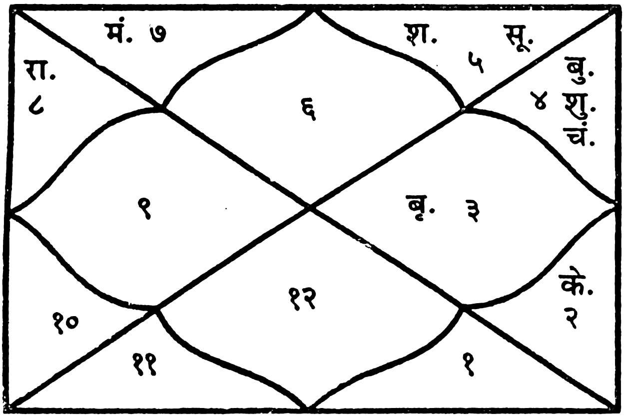
१. किसी भी सोमवार के दिन सफेद सूती कपड़े में खिरनी की जड़ बांधकर सफेद ऊन के धागे से दाहिनी भुजा या गले में धारण करनी चाहिये।
२. सोमवार को प्रातःकाल गाय के कच्चे दूध और सफेद चंदन के घोल

में डुबोकर शंख की अंगूठी अनामिका उंगली में, चंद्र को मन में स्मरण करते हुये पहननी चाहिए।

चंद्र का शुभ/अशुभ प्रभाव

चंद्र और जन्मकुंडली का बारहवां घर, दोनों बायीं आंख के कारक हैं। जब चंद्र स्वयं बारहवें घर का स्वामी बन जाए और पाप प्रभाव में हो तो खास कर बायीं आंख को नुकसान पहुंचता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में चंद्र आंख का पूरा प्रतिनिधि होता हुआ पीड़ित होता है। चंद्र का खाने-पीने से भी विशेष संबंध है। इसी प्रकार द्वितीयेश लग्नेश भी खाने-पीने का प्रतिनिधि है। जब ये सब ग्रह राहु के प्रभाव में हों तो खाने-पीने की वस्तुओं में राहु के दोष आ जाते हैं। राहु चूंकि मलिन तथा मदकारी है, अतः उसका योग पीने की वस्तु को मादक बना देता है। फलस्वरूप जातक शराब आदि का सेवन करने लगता है, (निम्न कुंडली देखें)।

निम्नलिखित कुंडली में लग्न का मालिक (स्वामी) बुध दूसरे घर का स्वामी शुक्र और चंद्र तीनों जो खान-पान के द्योतक हैं, इकट्ठे हैं और फिर तीनों पर राहु की नौवीं दृष्टि का प्रभाव है। राहु ने जलीय चंद्र और जलोय शुक्र को शराब का रूप दिया है। चंद्र लग्न पर और उसके स्वामी पर भी उसी राहु का प्रभाव है। चंद्र लग्न से दूसरे धर में स्वक्षेत्री सूर्य है, पर वो भी

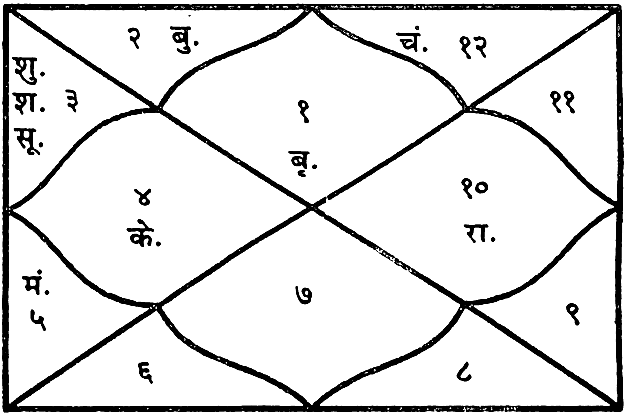


शनि से दूषित है। इस तरह खान-पान के सभी अंग बिगड़े हुए हैं। केवल बृहस्पति की द्वितीय भाव (दूसरे घर) पर दृष्टि ही अंधेरे में एक छोटी-किरण है। यहां बृहस्पति को बलवान् करने से कुछ काम बन सकता है। अर्थात् बृहस्पति को सोने की अंगूठी में पुखराज लगवाकर पहनने से बलवान् किया

जा सकता है। केसर आदि पीले पदार्थों का प्रयोग भी बृहस्पति को बलांवित करता है। उधर राहु का उपाय भैरव जी का पूजन, उसके मंत्र का जाप, कोयले और सरसों का दान तथा कोढ़ियों को खाना खिलाना आदि हैं। ऐसा करने से जातक की शराबखोरी की आदत काफी हद तक सुधर सकती है।

नोट—यदि आप कुंडली में राहु कीं चंद्र, शुक्र तथा बुध पर दृष्टि की अवहेलना कर दी जाये तो आपको यह पता न चल पाएगा कि जातक को शराबखोरी की बहुत बुरी आदत है। अतः कुंडली में राहु की दृष्टि देखना अनिवार्य है।

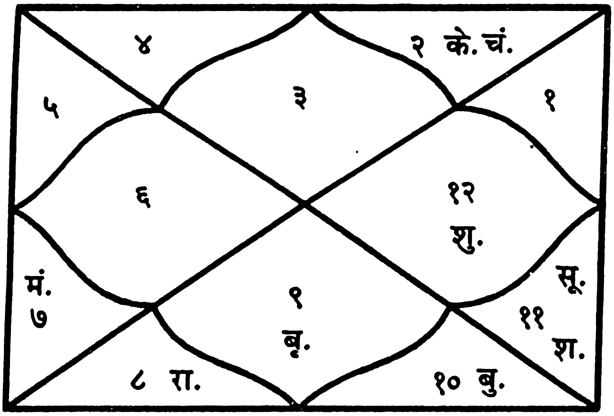
चंद्र का मनुष्य की भावनाओं एवं आकांक्षाओं आदि से कारक रूप में संबंध है। कुंडली का चौथा घर भावनाओं का है। इसी प्रकार ग्रहों में बुध और घरों में पहला और पांचवां बुद्धि के द्योतक हैं। जब चौथा, पहला और पांचवां घर इनके स्वामी तथा चंद्र और बुध पापी ग्रहों द्वारा प्रभावित हों तो जातक में पागलपन आ जाता है। मिरगी के रोग में मन अचानक भयग्रस्त हो जाता है। भावनाओं की तरह डर भी मन की एक भावना है, अतः इस रोग में चंद्र एक कारण है। चंद्र यदि सबसे अधिक किसी से भयभीत होता है तो केवल राहु से होता है। अतः जब राहु का प्रभाव मन रूपी चंद्र पर विशेष रूप से पड़ रहा हो, तो इस रोग की उत्पत्ति होती है। निम्न कुंडली इसका उदाहरण है।



कुंडली से साफ पता चलता है कि मिरगी का रोग मन के कारक और मन के घर के मालिक चंद्र पर राहु के भयावह प्रभाव के कारण हुआ है। चंद्र त्रिक्‌भाव (दसवां) में न केवल मंगल और केतु से दृष्ट है, बल्कि उस पर राहु अधिष्ठित राशि के मालिक शनि की पूरी दसवीं दृष्टि भी है। चंद्र से चौथे घर पर भी शनि का प्रभाव है। उस घर के मालिक बुध पर भी

राहु की पांचवीं पूरी दृष्टि है। ऐसी हालत में चंद्र को बलवान् करना बहुत जरूरी है। साथ ही राहु की शांति का भी प्रयास करना चाहिए। चंद्र को चांदी की अंगूठी में मोती लगवाकर बलवान् करें और राहु के उपाय हेतु भैरव जी की पूजा-अर्चना करें।

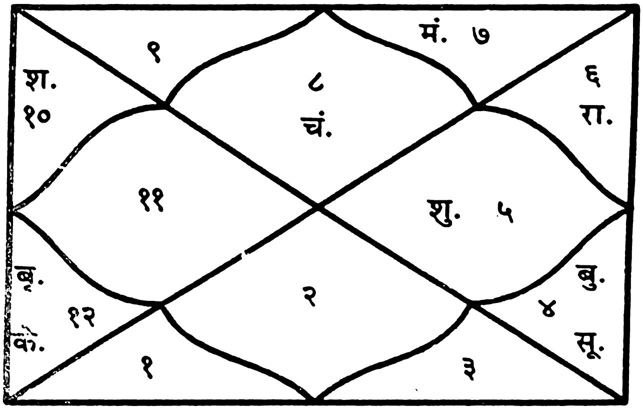
जन्मकुंडली में चौथी राशि (कर्क), उसका मालिक चंद्र, चौथा घर और उस का मालिक सभी पीड़ित हों, तो फेफड़ों का घातक रोग होता है। लग्न तथा आठवां घर व इनके मालिकों पर पड़ने वाला प्रभाव अपने गुण-दोषों से मृत्यु के ढंग को बता सकता है। अतः जब इन पर जलीय ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक की मृत्यु का कारण बनता है। अर्थात् उसकी मृत्यु जल में डूबने से होती है। इसी प्रकार रोग में बुध से विचार करना चाहिए, क्योंकि बुध श्वास की नली का प्रतिनिधि है। यदि कुंडली में राहु और शनि द्वारा बुध, मिथुन और चंद्र पीड़ित हों तो श्वास रोग की उत्पत्ति समझनी चाहिये।



उपरोक्त कुंडली में मिथुन राशि लग्न में मौजूद है, इसलिये लग्न का मालिक पूरी तरह से श्वास की नली का प्रतिनिधि बन रहा है, वो बुध त्रिक् स्थान में केतु की पूरी नौवीं दृष्टि में है और केतु में मंगल का पाप प्रभाव भी शामिल है, क्योंकि केतु मंगल से दृष्ट है और फिर बुध पर मंगल की पूरी चतुर्थ यानी चौथी दृष्टि है और मंगल राहु का रूप है, क्योंकि वो राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी (मालिक) है। साथ ही मंगल छठा और ग्यारहवां होता हुआ रोगप्रद भी है। चूंकि चंद्र और बुध राहु के प्रभाव में हैं, अतः बुध और चंद्र को बलांवित करने से श्वांस नली को बल मिलेगा। बुध को पन्ना, चंद्र को मोती पहनकर बलवान् करें तथा राहु के लिये भैरव की पूजा-उपासना ही श्रेष्ठ उपाय है।

नोट— एक साथ दो रत्नों को धारण करने से पहले यह अवश्य देख लें कि वे दोनों आपस में शत्रु तो नहीं हैं। यदि शत्रु हुए तो लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक करेंगे।

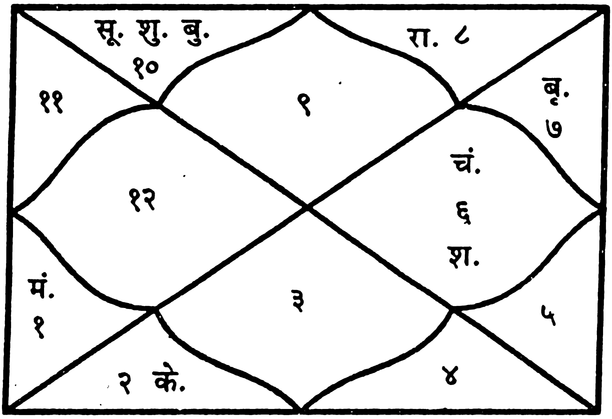
प्रत्येक ग्रह किसी-न-किसी रोग का कारक है। चंद्र, मंगल और बुध कुष्ठ जैसे रोग के प्रमुख कारक हैं। यह तीनों इस रोग के कारक कैसे हैं ? यह बतलाते हैं—चंद्र रक्त का कारक है, मंगल रक्त और मांसपेशियों का और बुध त्वचा का कारक है; यदि ये राहु अथवा शनि से पीड़ित हों तो इस रोग की उत्पत्ति होती है। निम्न कुंडली कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति की है।



कुंडली में चंद्र पहले घर (लग्न) में है। मंगल यहां पर लग्न का स्वामी है जो रक्त का द्योतक है और चंद्र अधिष्ठित राशि का स्वामी है और मंगल पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। यही कारण है कि मंगल पीड़ित होकर रक्त को बिगाड़ रहा है। शनि की प्रबल दृष्टि बुध पर भी है। रोग का प्रहार संभवतया देर से इसलिए हुआ कि लग्न तथा चन्द्र पर बृहस्पति की दृष्टि है। इस दृष्टि का लाभ उठाकर अगर उम्र भर चांदी पर अंगूठी में पुखराज लगवाकर पहना जाता तो बृहस्पति सहायक होता! रक्त के लिये चंद्र को बलवान् करना आवश्यक था। अर्थात् उसी चांदी की अंगूठी में मोती भी लगवा लेना चाहिए। शनि के लिये जापादि की प्रक्रिया करने से उसकी शांति कराई जा सकती है। कुष्ठ रोग का निवारण करने के लिये यह अति उत्तम उपाय है।

जहां चंद्र मन है, वहां शनि वैराग्य और त्याग का ग्रह है। जब कुंडली का चौथे घर और उसका स्वामी तथा चंद्र वैराग्यवान् होता है और अगर दूसरा धन का घर, चौथा घर बार का और बारहवां भोग विलास का घर भी अलग तरह के ग्रहों— शनि, राहु तथा सूर्य से दुःखी हों तो

जातक वैराग्यवान्-संन्यासी होता है। निम्न कुंडली में इस स्थिति को स्पष्ट किया गया है।



कुंडली से मालूम होता है कि चौथा मन के घर और मन का कारक चंद्र दोनों पर वैराग्यमय शनि का प्रभाव है और फिर चौथे घर का स्वामी बृहस्पति न केवल वैराग्यदायक शनि और राहु के बीच में स्थित है, बल्कि उस पर राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी मंगल की पूर्ण सातवीं दृष्टि का प्रभाव भी है। बृहस्पति चूंकि चंद्र से भी चतुर्थेश (चौथे घर का स्वामी) है, इसलिए उसका इस प्रकार शनि तथा राहु के प्रभाव में बैठना मन में पूर्ण वैराग्य की सृष्टि कर रहा है, जिससे जातक वास्तविक अर्थों में संन्यासी बनता है।

बृहस्पति लग्न और चंद्र दोनों में चतुर्थेश है। यह घर-मकान का भी पूर्ण प्रतिनिधि है। इस पर शनि और राहु का प्रभाव घर से बाहर निकालता है। उधर बारहवें घर पर राहु, मंगल तथा शनि का पृथक्ताजनक प्रभाव भोगों से अलग करता है। तीसरे कुटुंब के घर पर केतु की पूर्ण दृष्टि पृथक्ताजनक है। वहां पर शनि अधिष्ठित राशि के स्वामी बुध और सूर्य का बैठना भी कुटुंब से पृथक्ता देता है। शुक्र भी वहां केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी बनकर आया है। इस प्रकार संन्यास का योग, त्याग और वैराग्य दोनों रूपों में बन रहा है। बृहस्पति अधिष्ठित राशि का स्वामी शुक्र अपने प्रभाव से संन्यास को कुछ रोक सकता था, किन्तु बृहस्पति स्वयं घर बार का स्वामी होकर एक पक्ष में है। यदि यहां पुखराज को सोने की अंगूठी में पहना जाता तो शायद वैराग्य के प्रभाव को कुछ कम किया जा सकता था।

जिस व्यक्ति की लग्न (जन्मकुंडली का पहला घर) बलवान् हो, अर्थात् लग्न लग्नेश को शुभ ग्रह देखते हों अथवा लग्नेश लग्न को देखता हो और

लग्न अथवा लग्नेश शुभ ग्रह से भी युक्त अथवा दृष्ट हो और इसी प्रकार चंद्र लग्न भी बलवान् हो (अर्थात् चंद्र लग्न को शुभ ग्रह देखते हों अथवा चंद्र लग्न का स्वामी चंद्र लग्न को देखता हो और चंद्र लग्न अथवा उसका स्वामी चंद्र लग्न को देखता हो और चंद्र लग्न अथवा उसका स्वामी शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो), तो वह व्यक्ति बहुत दौलतमंद होता है। दूसरे शब्दों में, लग्न की भांति चंद्र लग्न भी धन का द्योतक है।

विशेष– यदि किसी व्यक्ति के स्वभाव का अध्ययन करना हो कि वह कामी है अथवा क्रोधी, शांत अथवा चंचल है, तो पहले और चौथे घर के स्वामी और मन का कारक चंद्र इन सब पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना चाहिये।

कुछ खास जानकारियां

जन्मकुन्डली में अगर अकेला चन्द्र हो और उस पर किसी दूसरे ग्रह की नजर न हो, तो जातक हर हालत में अपने कुल की हिफाजत करता है। उसका बर्ताव दया और नम्रतापूर्ण रहता है। जातक में अपने ऊपर आने वाले किसी भी आघात, दोष, यहाँ तक कि सजा-ए-फांसी को भी खारिज करवाने की बेमिसाल ताकत होती है।

पक्का घर	:	४	ऊंचा (श्रेष्ठ) घर	:	१, २, ३, ४, ५, ७, ९
मंदे घर	:	६, ८, १०, ११, १२	रंग	:	दूधिया, सफेद
शत्रु ग्रह	:	राहु, केतु,	मित्र ग्रह	:	सूर्य, बुध
सम ग्रह	:	शुक्र, शनि, मंगल, बृहस्पति	कार्य	:	खजाने, समुद्री सेना या शिक्षा
उच्च	:	२	नीच	:	८
समय	:	प्रातः चांदनी रात, दोपहर पूर्व	दिन	:	सोमवार
बीमारी	:	कफ और पेट-सम्बन्धी	मसनुई ग्रह	:	सूर्य + बुध

लाल किताब के लेखक के अनुसार, अगर जातक का जन्म शुक्ल पक्ष का हो और चन्द्र, मीन १२ का हो तो जातक का जीवन सुखी होता है। अगर

चन्द्र क्षीण, मिथुन ३, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, मकर १० और कुम्भ ११ का हो तो जातक दुःखी रहता है। कुण्डली में सूर्य के घर से अगले सात घरों में चन्द्र हो तो शुक्ल पक्ष होता है।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

जिस घर में चन्द्र होता है, वहाँ सूर्य का प्रभाव भी आ जाता है और शत्रु ग्रहों के साथ बैठा मन्दा हो जाता है। ८ में मृत्यु से बचाता है, ७ में धन-सम्पत्ति देता है और ३ में लड़ाई में मददगार होता है। अगर किसी जातक का चन्द्र नीच का है, तो वह आगे लिखे उपायों को करें। अगर चन्द्र मन्दा हो, तो प्रत्येक घर में उसके प्रभाव को बढ़ाने के उपाय लिखे गए, यों चन्द्र के मन्दे होने की निशानी इस प्रकार है—अकस्मात् दूध देने वाला पशु मर जाए, नल से पानी न आए, कुआँ या तालाब आदि सूख जाए। व्यवसाय आदि में रुकावट भी मन्दे चन्द्र की निशानी है।

१. रात में किसी बरतन में पानी सिरहाने रखकर सुबह उसे कीकर के पेड़ में डालें।
२. सोमवार के दिन सफेद कपड़े में मिश्री बांधकर चलते पानी में बहाएं।
३. सन्तान के लिए घर में सन्तान पालें।
४. चांदी की अंगूठी में मोती पहनें।
५. अपने बुजुर्गों की दुआएं लें।

पहले घर का उपाय

१. बड़ के पेड़ की जड़ में कभी-कभी पानी जरूर दें।
२. घर में चांदी की थाली रखें।
३. पानी, दूध या चाय चांदी के गिलास में पिएं।
४. पत्नी या बच्चों के साथ सफर पर हों, तो नदी या नहर में पैसा डालें।
५. अपनी मां से चांदी और चावल लेकर घर में सुरक्षित रखें।
६. दौलत मे बढोत्तरी के लिए लाल रंग की मंगल की चीजें घर में रखें।
७. अपने पास लाल रूमाल रखें।
८. २४ से २७ साल की उम्र में शादी न करें।
९. बेटे के सुख के लिए जमीन में सौंफ दबाएं।
१०. तीस साल की उम्र के बाद अपनी कमाई से मकान बनवाएं।

११. साली से बचकर रहें और हरे रंग से परहेज करें।
१२. चारपाई के चारों पायों पर चांदी की कीलें लगाएं।

दूसरे घर का उपाय

१. मकान की बुनियाद में चांदी के पत्र दबाना सहायक होगा।
२. ४३ दिनों तक हरे रंग का कोई कपड़ा कन्याओं को दान करें।
३. लम्बी उम्र के लिए पुराने चावल चांदी की डिब्बी में बन्द करके रखें।

तीसरे घर का उपाय

१. लड़की के जन्म पर चन्द्र की और लड़के के जन्म पर सूर्य की चीजें दान करें।
२. विवाह होने पर यदि राहु या शुक्र साथ हों तो गेहुं या गुड़ का दान करें।
३. दौलत और जायदाद के लिए घोड़ा या चकोर पालें।

चौथे घर का उपाय

१. दूध का व्यवसाय न करें।
२. दूध का दान करें।
३. कोई भी शुभ कार्य करने से पहले पानी या दूध का घड़ा सामने रखें।

पांचवें घर का उपाय

१. प्रत्येक काम में दूसरे से मशिवरा करें।
२. ईमानदारी, सच्चाई और न्याय पर चलें।
३. सोमवार के दिन सफेद कपड़े में मिश्री और चावल बांधकर पानी में बहाएं।

छठे घर का उपाय

१. दूध, देशी खांड, केसर, शहद, सौंफ और चने की दाल मन्दिर में दें।
२. दूध और चावल का दान करें।
३. सूर्य, मंगल एवं बृहस्पति की चीजों का दान करें।
४. दही का खाना मददगार होगा।

५. घर में खरगोश पालें।
६. अस्पताल या श्मशान में नल लगवाएं या कुआं खुदवाएं।
७. पिता को अपने हाथ से दूध पिलाएं।

सातवें घर का उपाय

१. दूध और पानी न बेचें।
२. चौबीसवें साल में शादी न करें।
३. घर में चन्द्र की चीजें दूध और पानी हर समय रहें।
४. अपनी मां से कभी झगड़ा न करें।

आठवें घर का उपाय

१. मन्दिर में चने की दाल चढ़ाएं।
२. माता से चांदी और चावल लेकर, उन्हें चांदी की डिब्बी में सम्भालकर घर में रखें।
३. दूध या चावल का दान करें।
४. राहु-केतु का प्रकोप हो, तो किसी बोतल में दूध भरकर वीराने में जाकर दबाएं।
५. कुएं वाले मकान में न रहें, छत पर मकान बनवाएं।
६. अपनी मां की दुआएं लेते रहें।
७. श्मशान के अहाते के अन्दर के कुएं का पानी घर में रखें।
८. चन्द्र की वस्तुओं का संग्रह करें।
९. स्त्रियों के प्रेम के फेर में न पड़ें।

नौवें घर का उपाय

१. तालाब की मछलियों को चावल डालें।
२. संगीत में रुचि लें।
३. सर्प को दूध पिलाएं।
४. गरीबों को दूध दान दें।

दसवें घर का उपाय

१. नदी, दरिया अथवा कुएं का जल घर में रखें।

२. डॉक्टर या वैद्य, हकीम का काम न करें।
३. रात को दूध न पिएं।
४. नित्य मन्दिर में जाएं।
५. मांस, शराब, पराई एवं विधवा औरतों से परहेज करें।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. सोने को दूध में बुझाकर, उस दूध को पिएं।
२. छोटे-छोटे १२५ पेड़े बाँटें या दरिया में बहाएं।
३. अगर घर में कोई पत्थर गड़ा हो और दादी उस पत्थर को दूध से धोती रहे, तो चन्द्र की शक्ति से परिवार बढ़ता है।
४. चांदी में सच्चा मोती जड़वाकर पहनें।
५. भैरव मन्दिर में दूध चढ़ाएं।
६. पुत्र-सुख एवं धन-प्राप्ति के लिए दूध का दान करें।
७. पुत्र के जन्म के बाद १०० दिन तक दादी का चेहरा न देखें।

बारहवें घर का उपाय

१. पानी का घूंट भरकर काम शूरू करें या काम पर जाएं।
२. वर्षा का पानी घर में स्थापित करें।
३. कान में सोना पहनें।
४. अपने घर में हैण्डपम्प या नल न लगवाएं।

कला का सौंदर्य ग्रह शुक्र

शुक्र सौर मंडल का सबसे चमकीला ग्रह है। पुराण के अनुसार शुक्र को महर्षि भृगु के पुत्र के रूप में जाना जाता है। जिस प्रकार देवताओं का आचार्य बृहस्पति है, उसी प्रकार दैत्यों का आचार्य शुक्र है। सभी दानव शुक्र को अपने आचार्य के रूप में सम्मान देते हैं। बुध, शनि, राहु और केतु उसके विशेष मित्र हैं। सूर्य और चन्द्रमा को यह अपना जानी दुश्मन मानता है, जबकि मंगल और बृहस्पति न तो उसके मित्र हैं और न ही शत्रु हैं; अर्थात् उससे समभाव रखते हैं। शुक्र को शुभ ग्रह माना गया है। इसकी स्वराशि वृष और तुला है। यह मीन राशि के २७ अंश तक परम उच्चस्थ अर्थात् उच्च का तथा मेष राशि के २७ अंश तक परम नीचस्थ अर्थात् नीच का माना जाता है। तुला राशि पर यह बहुत अधिक बलवान् हो जाता है।

बारह घरों में शुक्र का फल

पहला घर—जिसकी जन्मकुंडली के पहले घर (लग्न) में शुक्र हो, वो आकर्षक व सुंदर शरीर का होता है। उसका अंग-प्रत्यंग मानों सांचे में ढला होता है। प्रतिदिन नई स्त्री के साथ विहार करने को लालायित रहता है तथा उच्च कर्मों का पालन करता हुआ सुखपूर्वक दिन व्यतीत करता है। वह सुखी, मृदु, मधुरभाषी, विद्वान, कामी, राज्य-कार्य में दक्ष तथा दीर्घायु होता है। यदि जन्मकुंडली में शुक्र, कर्क अथवा वृश्चिक राशि में मौजूद होकर मंगल से दृष्ट हो तो जातक वेश्यागामी होकर रतिजन्य रोगों से दुःखित रहता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के पहले घर (लग्न) के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. शुक्र असर के लिये एक तरफ चाल का मालिक होगा, यानी जिस पर मेहरबान हुआ, उस पर अपनी जान भी कुर्बान कर दी और जिसके खिलाफ हुआ उसकी मिट्टी ही उड़ाकर रख दी।
२. औरत जात का दीवाना, दो स्त्रियों से बच्चे बनाने को तैयार, खूबसूरती व

रंग-बिरंगी दिलफरेब हुस्न का दीवाना, दिल-दिमाग पर काबू न रख पाने वाला, धर्महीन, इश्क रोग से पीड़ित और शमा का परवाना होगा।

३. शुक्र जाहिरा आशिकाना मगर अंदरूनी सूफियाना फल देगा।
४. किस्मत के ताल्लुक में इकबालमंद और खुशनसीब होगा।
५. जवानी, इश्कबाजी, घर की नंबरदारी न सिर्फ अपनी बल्कि बाकी ताल्लुकेदारों की भी तबाही का बहाना होगा।
६. बदन दिन-ब-दिन ढलता जाएगा और सेहत खत्म होगी और बीमारी खाट पकड़ा देगी।
७. रिश्तेदारों की मुहब्बत मुंह देखी होगी।

दूसरा घर—कुंडली के दूसरे घर में शुक्र हो तो अनेक प्रकार के धन से युक्त होता है। वह प्रियभाषी तथा बुद्धिमान होता है। यदि कुंडली स्त्री की हो तो वह सर्वश्रेष्ठ सुंदरी का पद पाने को अग्रणी रहती है, जबकि पुरुष सुंदर और नये-नये वस्त्रों का शौकीन, परस्त्रीरत, मिष्ठानभोजी, लोकप्रिय, जवाहरात का पारखी, कवि, दीर्घजीवी, साहसी और भाग्यवान् होता है। यदि जातक की कुंडली में शुक्र दूसरे घर में हो और तीसरे घर का मालिक कमजोर हो तो वह नेत्ररोग से पीड़ित होता है। यदि शुक्र ग्रह सूर्य अथवा चंद्र के साथ द्वितीय भाव (दूसरे घर) में युति करे, तो जातक रतौंधी से अवश्य पीड़ित होता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. दुनिया खुदाई दोनों ही इश्क का मालिक होगा। अपना रिज़क व दौलत और ससुराल की धर्मावस्था हमेशा नेक होगी।
२. गृहस्थ औरत का ताल्लुक नेक व उम्दा होगा, औरत सिवाय औलाद बनाने के काम के बाकी हर तरह से उत्तम होगी।
३. जानों और जानदारों का उम्दा हाल जो बीमारी के झगड़ों का कोई हिसाब न होगा मगर रिजक कभी भी खराब न होगा।
४. शख्स की असली दुनिया अपने असली मुकाम व आरामगाह पर होगी, जिससे बाल-बच्चों की बरकत, शादियों के नेक नतीजे, गृहस्थी सूर्य की वृद्धि और शुक्र का कबीदी नेक फल होगा। दौलत की आमदनी होगी।
५. उस शख्स के लिये किसी से बुराई करना खुद अपने हक में बुरा होगा।
६. इश्क में दर्जा कमाल और कामयाब आशिक होगा। उसमें बाहमी बुझती कुब्बते वाह या कामदेव की ताकत तो जरूर होगी, मगर उनके बीच

या बुर्ज में औलाद पैदा करने की ताकत कम होगी। मर्द औरत खुद औलाद बनाने के काबिल न होंगे। दूसरे की औलाद को अपनी औलाद बनाना ही उनके नसीब में होगा।

तीसरा घर—जिसकी कुंडली में शुक्र तीसरे घर में होगा, वह जातक को अपना निकृष्ट फल देगा। ऐसा जातक कृपण, अप्रिय, सुख और संपत्ति से हीन, बिना स्त्री के ही रहता है। स्त्री होती भी है तो उसका प्रेमी नहीं होता और पुत्र लाभ होने पर भी संतुष्ट नहीं रहता। साहसी होते हुये भी साहस के कार्यों से घबरा उठता है। वह यात्रा करने का शौकीन, विद्वान, आलसी, चित्रकार और भाग्यवान् होता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत है—

१. खुद अपनी बीवी सिर्फ मामूली हालत की होने के बजाए भाई की तरह बराबर के मर्द का काम देगी। जिसमें सिर पर पगड़ी बांधकर मदद करने की पूरी हिम्मत होगी। ऐसी औरत मर्दाना खून की वजह से खूंखार मगर अपने मर्द के साथ बर्ताव में बुजदिल या खुशामद पसंद की होगी। जिसके बैठे चोर, ऐयार और मृत्युदूत से भी बचाव ही होगा।
२. दौलतमंद होता हुआ भी अपने पेट के लिये अनाज की कीमत के बराबर मेहनत किए बगैर रोटी न पाएगा।
३. भाई बंदों के हाथों से धन हानि आम होगी, दौलत की बरबादी की वजह कोई औरत भी हो सकती है।
४. तीर्थयात्रा और नेक कामों का उम्दा फल मिलेगा।

चौथा घर—जन्मकुंडली के जिसके चौथे घर में शुक्र हो तो वह जातक उत्तम सवारी, अच्छा मकान, आभूषण, वस्त्र और सुगंधित पदार्थों से संपन्न होता है। ऐसा जातक अपने साथियों से आगे बढ़ जाता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है। इसके अनेक मित्र होते हैं। आवश्यकता का सभी सामान उसके पास होता है। जन्म से ही वह अपनी माता का पालन-पोषण करता है। वो दीर्घायु, परोपकारी, आस्तिक, व्यवहार-दक्ष तथा कुशल होता है। यदि चौथे घर में शुक्र पाप ग्रहों के साथ युति करता हुआ मौजूद हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है तथा भयंकर गुप्त रोगों से पीड़ित होता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है कि—

१. मर्द की जन्मकुंडली में शुक्र दो मुराद औरत व औरत की कुंडली में उसका खाबिंद मुराद होगी। एक जगह दो औरत या दो मर्द, मगर औरत और मर्द बच्चा दोनों ही से न बने। अगर पहली औरत से पहला ही मर्द दोबारा शादी की रस्म अदा कर ले तो शुक्र की दो औरत होने की शर्त न रहेगी और औलाद जल्दी होगी। मगर औरत की सेहत खासकर रहम (बच्चेदानी) बरबाद होगी। बहरहाल मर्द के लिये उसकी औरत की किस्मत का न कोई साथ होगा मगर वह खुद खूब ऐश करेगी।

२. औरत एक ही वक्त में दो बिंदा होगी। एक बूढ़ी मां की तरह बड़ी उम्र की और दूसरी ऐश आराम की मालिक हरफनमौला जमाना की बेगम होगी मगर औलाद की फिर भी किल्लत ही रहेगी।

३. यह घर खासकर औरत मर्द के जिस्मानी रिश्ते का, खाबिंद और बीवी व औलाद का है।

पांचवां घर—यदि शुक्र कुंडली के पांचवें घर में हो तो जातक धनयुक्त, किसी राजा की भांति वैभवशाली, पुत्र सौख्य से युत स्वयं बुद्धिमान होता है। अल्प परिश्रम से ही उसके कार्य सम्पन्न होते हैं। ऐसा व्यक्ति कविहृदय, सुखी, भोगी, न्यायवान्, आस्तिक, उदार और व्यवसायी होता है। यदि शुक्र पाप ग्रह से दृष्ट अथवा अस्त हो तो जातक विलासिनी स्त्रियों का प्रिय होता है तथा उसे स्त्री संसर्ग जनित रोग होते हैं।

जन्मकुंडली में शुक्र के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. देश प्रेम का परवाना होगा और सूफी हुआ तो भव सागर से पार और अगर आशिक दुनिया हो तो दरख्त में फंसे हुए पतंग की तरह किस्मत का हार होगा।

२. हर तरह बरकत ही बरकत होगी।

३. चाल-चलन से माली हालत का भेद खुल जायेगा मगर औरत और औलाद पर फिर भी मंदा असर न होगा।

४. आशिकाना मुहब्बत के नतीजे पर की हुई शादियां वाल्दैनी की मर्जी के खिलाफ, लड़की की खूबसूरती की लगन की वजह से शादी हो, तो ऐसे शख्स की औलाद उसे बाप न कहेगी या बाप न मानेगी या बहैसियत औलाद बाप के काम न आएगी।

५. मेहनती होगा और यह मेहनत ही जिंदगी में रंग लाएगी।

छठा घर—कुंडली के छठे घर में शुक्र हो तो जातक ठीक तरह से

काम करते रहने पर भी कामयाब नहीं होता। मित्रों द्वारा उसका आचरण नष्ट हो जाता है और गलत कार्यों में धन व्यय कर लेता है। नित नए उसके शत्रु पैदा होते रहते हैं। ऐसा जातक पिता और गुरु आदि के सुख से वंचित रहता है। वह स्त्री के सुख से हीन, दुखी और गुप्त आदि रोग से ग्रस्त रहता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. सेहत उम्दा, जुबान में ताकत और आंखों की रोशनी साफ होगी, घर के कामकाज में मनहूस असर होगा।
२. अपनी औरत, पराई औरत या औरत के सुख से मरहूम होगा। आखिरी उम्र में आराम होगा जिसके लिये चंद्र का उपाय मद्दगार होगा।
३. दौलतमंद होगा मगर औलाद निकम्मी और नालायक होगी।
४. दुश्मन नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं।

सातवां घर—जिस जातक की जन्मकुंडली में सातवें घर में शुक्र होता है, वह विलासी, प्रवासी तथा अल्प उद्योगी होता है। ऐसा व्यक्ति उदार, लोकप्रिय, धनिक, व्यर्थ की चिंता करने वाला, व्यभिचारी, चंचल और स्त्री से सुखी होता है। विवाह के बाद उसका भाग्योद्य होता है। यदि सातवें घर में शुक्र के साथ शनि भी मौजूद हो तो जातक की औरत निश्चय ही व्यभिचारी होती है।

जन्मकुंडली में शुक्र के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. उम्र बढ़ने की ख्वाहिश या लम्बी उम्र की कोई मुराद नहीं।
२. उम्र भर मर्द-औरत का सुखिया जोड़ा होगा।
३. माया दौलत सब बढ़ती और शुक्र का फल उम्दा होगा।
४. ब्याह शादी और शुक्र के मुतल्लका कारोबार हमेशा नेक फल देगा। खुदगर्जी बरबादी की बुनियाद होगी।

आठवां घर— जिस व्यक्ति की कुंडली में आठवें घर में शुक्र होता है, वह दीर्घजीवी, कटुभाषी, रोगी, क्रोधी, चिड़चिड़ा, दुःखी, पर्यटनशील तथा पराई स्त्रियों में धन का व्यय करने वाला होगा। वाहनादि का वह पूर्ण सुख प्राप्त करता है तथा उसके कार्य कष्ट से संपन्न होते हैं। जातक की माता को गंडमाला रोग अथवा अन्य कष्ट होता है। यदि आठवें घर में वृष, तुला अथवा मीन राशि का शुक्र हो तो जातक को मूत्राशय संबंधी रोग अवश्य होते हैं। जातक परस्त्रीगामी होता है, जिससे उसे कोई गुप्त रोग भी हो सकता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. २५ साला उम्र तक शादी करना गैर मुबारिक होगा। शादी के बाद शख्स जिस्मानी तरह से सुखी मगर औरत की तेज जुबानी और कड़वा बोलने की वजह से दुःखी रहेगा।
२. किसी के लिये कसम खाना या जमानत देना कभी उत्तम या नेक फलदायक न होगा।
३. गंदी औरत का संग हो जावे, जब चाल का चलन का हल्का हुआ तो आतशक, सुजाक वगैरा सब बीमारियों का शिकार होगा।

नौवां घर— यदि जन्मकुंडली के नौवें घर का शुक्र हो तो जातक धनी, आस्तिक, गुणी, प्रेमी, राजप्रेमी तथा मौजी स्वभाव का होता है। धर्मादिक कार्यों में उसकी रुचि बहुत बढ़ी हुई होती है। सगे भाइयों से उसे बहुत सुख मिलता है। अपना जीवन वह सुखपूर्वक व्यतीत करता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. खुद शुक्र की अपनी बीमारी के जरिये धनहानि, भंडार, ऐशो–आराम के सामान या धन की कमी न होगी।
२. भाइयों की मदद से परहेज न होगा, ज्योतिष इल्म का जानकार होगा। तीर्थयात्रा करेगा तो अपनी जिंदगी को सुधारेगा, और बुजुर्गों की दौलत को बढ़ता देखेगा।

दसवां घर—जन्मकुंडली में शुक्र दसवें घर में मौजूद हो तो जातक दीर्घायु, ज्योतिषी, माता–पिता तथा गुरुजनों का सेवक, मुकदमे से सम्मान पाने वाला, रत्नादि धातुओं का पारखी तथा अधूरी शिक्षा पाने वाला होगा। उसे संतान–सुख का अभाव–सा होगा।

जन्मकुंडली में शुक्र के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. पराई औरत से ताल्लुक का बहुत मौका मिलेगा। औरत जात को जेरे नजर रखता और अमूमन उसके ख्वाब देखेगा। चंद्र और मंगल संग होंगे तो उनका साथ निकम्मा होगा।
२. बाग–बगीचे मकानात उम्दा होंगे।
३. औरत की सेहत उम्दा, औरत मर्द हर दो धर्म मूरत होंगे, परिवार व धन–दौलत उम्दा होंगे, बुढ़ापे में आराम मिलेगा। जवानी में ऐश रहेगी।

इश्क की हर तरह से कामयाबी होगी और बुढ़ापा नेक होगा। मोटर आदि का असर उम्दा होगा।

४. पराई औरत से जिस्म की आग बुझेगी। जवानी इश्क का घर तो बुढ़ापे के वक्त औलाद आदि के ताल्लुक में रोता ही रहेगा।

ग्यारहवां घर—जन्मकुंडली में शुक्र ग्यारहवें घर में मौजूद रहे तो जातक भ्रमणशील, प्रेमी, स्त्रीजाति में रुचि रखने वाला, राजनीतिज्ञ, सुंदर, सुशील, कीर्तिमान्, गुणवान्, भाग्यवान्, धनवान्, अनेक प्रकार के सुखों से परिपूर्ण, कामी तथा पुत्रसुख भोगता हुआ ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक कीर्तिमान स्थापित करता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत है—

१. खुफिया काम करने का आदी होगा। हरदम तबीयत बदलने वाला होगा मगर धन से खाली न होगा। बारह साल तक तो खूब धन-दौलत आएगी। शादी का कोई पैमाना न होगा।

२. अमूमन मौत सर कटने से होगी।

३. औरत घर की खजांची कभी मुबारक न होगी। लड़कियां घर की दौलत धन बरबाद कर देंगी। औरत जो किस्मत की मालिक मालूम होती होगी मगर वह खुद ही तबाही का सबब होगी।

बारहवां घर— कुंडली के बारहवें घर में शुक्र हो तो जातक न्यायशील, मितव्ययी, स्थूल शरीर वाला, बाल्यावस्था में रोगी, परस्त्रीगामी, आलसी तथा नीच कर्म करने वाला होता है। यदि शुक्र के साथ मंगल भी उस घर में बैठा हो तो जातक धातु विकार से पीड़ित, चिंताग्रस्त और आंखों के कष्ट से दुःखी होता है।

जन्मकुंडली में शुक्र के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. रात का आराम तथा दौलत का सुख होगा।

२. कवि, शायर आदि भंडारों का मालिक होगा। उम्र लम्बी ९६ साला होगी।

३. लोगों को नसीहत करने के लिये बुढ़ापा का मैदान खुला पड़ा होगा।

४. भवसागर से पार करने वाली गऊ माता की तरह गृहस्थी संख को पैदा करेगी। हर मुसीबत के वक्त पहले औरत खाविंद की मुसीबत को झेलेगी और मर्द को किसी तरह की तकलीफ का कोई अहसास न होने देगी।

शुक्र के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

यदि जन्मकुंडली में शुक्र अनिष्टकारी स्थिति में हो तो अपनी थाली में से भोजन निकालकर गायों को भोजन कराना चाहिये। इससे ग्रह के अनिष्टकारी प्रभाव को दूर करने में सहायता मिलेगी। गाय का दाम तथा उसका चारा भी अनिष्ट ग्रह का निवारण करता है।

शुक्र से संबंधित दान में देने योग्य वस्तुएं हैं—घी, दही, काफूर और सफेद मोती। स्त्रियों की सहायता व पालन भी लाभप्रद है। शुक्र का देवता लक्ष्मी जी हैं। यदि कुंडली में शुक्र अनिष्ट प्रभाव कर रहा हो, तो लक्ष्मी जी की पूजा करनी चाहिए।

टोटके

शुक्र ग्रह यदि प्रतिकूल या अनिष्ट फल प्रदर्शित कर रहा हो तो इस अनिष्ट के निवारण के लिये अथवा शुक्र को अनुकूल करने के लिये निम्न टोटकों का प्रयोग करना चाहिए—

१. स्वर्ण निर्मित मादलिए (ताबीज) में सरपंखा की जड़ रखकर, सफेद सूती धागे द्वारा उसे गले में धारण करना चहिए। शुक्रवार का दिन इसके लिये उपयुक्त है।
२. प्लेटिनम धातु की अंगूठी शुक्रवार के दिन बनवाकर, प्रातःकाल के समय गाय का दूध और शहद के मिश्रित योग में स्नान कराकर अनामिका उंगली में धारण करें।

शुक्र का शुभ/अशुभ प्रभाव

कोई ग्रह पाराशरीय नियमों के अनुसार केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी होने के कारण राजयोग कारक ही क्यों न हो, अगर वो जन्मकुंडली में बहुत अधिक पाप प्रभाव में है तो राजयोगकारक समृद्धि का फल न देखकर उल्टा दिवाला तक निकाल सकता है।

चन्द्र लगन से सप्तमेश होकर लग्न से सप्तम स्थान में यदि शुक्र बहुत से ग्रहों द्वारा पीड़ित हो अथवा लग्न से सप्तमेश होकर चन्द्र लग्न से सप्तम में बैठकर अतीव पीड़ित हो तो स्त्री की जन्मकुंडली में ऐसा योग होने पर स्त्री को योनि या कैंसर प्रदान करता है।

शुक्र पुरुषों की जन्मकुंडली में स्त्री का कारक ग्रह है। यदि शुक्र सप्तम (सातवां) सप्तमेश (सातवें घर का मालिक) के साथ बहुत पाप प्रभाव में हो

में हो और शुभ प्रभाव का इन अंगों पर अभाव हो तो विवाह नहीं होता। यदि शुभ प्रभाव तो हो, किन्तु साथ ही इन अंगों पर सूर्य, शनि तथा राहु का (जो पृथक्ताजनक ग्रह हैं) प्रभाव भी हो तो विवाह के बाद दाम्पत्य जीवन में कलह आदि द्वारा परस्पर पृथक्ता, तलाक आदि हो जाता है।

शुक्र (तुला लग्न वालों का) लगन का स्वामी और आठवें घर का स्वामी दोनों होता है। इसलिए यहाँ शुक्र पर पाप बाहुल्य हो और शुभ ग्रहों के प्रभाव का अभाव हो तो जातक की आयु थोड़ी समझनी चाहिए। उपाय के रूप में शुक्र को बलवान् किया जाना चाहिए।

विशेष—शुक्र ग्रह के अशुभ प्रभाव तथा उससे उत्पन्न होने वाले रोगों से मुक्ति पाने के लिए हीरा धारण करना उत्तम है। किन्तु सामान्य आय वाले व्यक्ति के लिए इतना कीमती रत्न धारण करना प्रायः असंभव ही है। अतः शुक्र के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए नियमित रूप से लक्ष्मी जी की पूजा करनी चाहिए।

कुछ खास जानकारियां

चौबीस साल के बाद यानि पच्चीस साल की शुरूआत होने पर मनुष्य के शरीर के शुक्र की शक्ति का जन्म होने लगता है और सत्ताइस साल की उम्र तक शुक्र पूरी तरह से मनुष्य के शरीर में अपनी जगह बना लेता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के अन्दर प्यार-मुहब्बत की उमंग एवं भावना का नाम शुक्र है। शुक्र का अर्थ बलवान होता है, और बली आदमी हजारों में भी साफ दिखाई देता है। शुक्र-प्रधान व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक रूप से पुष्ट होता है। यदि शुक्र मन्दा न हो तो उसे धन की कोई कमी नहीं होती।

पक्का घर : ७	श्रेष्ठ घर : २, ३, ४, ७, १२
मन्दे घर : १, ६, ९	शत्रु ग्रह : सूर्य, चन्द्र, राहु
मित्र ग्रह : शनि, बुध, केतु	कार्य : शिक्षा सम्बन्धी
उच्च : १२	नीच : ६
बीमारी : वीर्य सम्बन्धी	समय : दोपहर का
मसनुई ग्रह : राहु + केतु	कारोबार : खेती-बाड़ी, पशुपालन, बिसाती का सामान बेचना

यदि जातक अपनी स्त्री को सताएगा, स्त्री समाज का अपमान करेगा, गौ आदि को पीड़ित करेगा तो उच्च शुक्र उसे अपना प्रभाव नहीं देगा। चंचल स्वभाव की शरारती स्त्री अपना कष्ट चन्द्र (माता) पर डाल देती है। शुक्र और चन्द्र आमने-सामने हों तो जातक की माता को आँखों का कष्ट होता है।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

नीच शुक्र वाला जातक काली कपिला गाय की सेवा किया करे। दही, लाल ज्वार धर्म-स्थान में चढ़ाए। सफेद रेशमी वस्त्र का दान करे। लाल ज्वार पत्नी के वजन के बराबर या उसका दसवां हिस्सा मन्दिर में दे।

१. शुक्र को उच्च करने के लिए बादाम का सेवन करे।
२. उबले आलू को पीले कर, कपिला गाय को खिलाए।
३. शनि नीच वाला व्यक्ति तेल, शराब, उड़द मांस और अण्डे का प्रयोग न करे।
४. तेल में पकौड़े बनाकर शनि के दिन काले कौओं को खिलाए।

पहले घर का उपाय

१. दही को मलकर स्नान करें।
२. काली गाय की सेवा करें।
३. २५वें साल में शादी न करें।
४. कन्यादान के वक्त ससुराल से चांदी जरूर लें।
५. घर में अपना बड़प्पन न दिखलाएं, बल्कि घर के दूसरे लोगों से मश्विरा करके ही किसी काम की शरूआत करें।
६. गुड़ खाने से परहेज करें।
७. कभी भी दिन में सहवास न करें।
८. बीमारी से बचने और उसे दूर करने के लिए चरी या अनाज का दान करें।
९. सातवें घर में शुक्र आने पर अनेक प्रकार की बीमारियां देता है, इसलिए इससे बचने के लिए मोती दान करें।
१०. सात तरह का अनाज दान करें।
११. पराई औरत या घर की नौकरानी से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना नुकसानदेह साबित होगा।
१२. जब शुक्र मन्दा हो तो गौ-मूत्र और जौ का सेवन लाभ करेगा।

१३. पुरुष जातक लड़की का कन्यादान और स्त्री जातक गौ का दान करे।

दूसरे घर का उपाय

१. मनियारी का कारोबार करें।
२. दो किलोग्राम गाय का घी मन्दिर में दें।
३. मिट्टी, खेती य पशुओं का व्यवसाय करें।
४. दो किलोग्राम आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलाएं।
५. किसी के साथ बुराई न करें। करते हों, तो छोड़ दें।
६. सिंहमुखी मकान में न रहें और न उसे खरीदें।
७. सोने से ताल्लुक रखने वाले काम न करें।
८. बाजारू और पराई औरतों से जिस्म की भूख न मिटाएं।

तीसरे घर का उपाय

१. अपनी औरत की इज्जत करें।
२. ९वें और ११वें घर में अगर दुश्मन ग्रह हों, तो उनका उपाय करें।
३. बुध अन्धा हो तो २० साल तक तीर्थ-स्थलों पर कभी-कभी जाया करें।

चौथे घर कर उपाय

१. औरत (पत्नी) बीमार हो तो मकान की छत पर शहद से भरा कोई छोटा बरतन रखें अथवा चांदी की डिब्बी में शहद भरकर तालाब की चिकनी मिट्टी में दबाएं।
२. बृहस्पति की चीजें-चने की दाल और केसर आदि को कुएं में गिराना मददगार साबित होगा।
३. जन्मकुन्डली के चौथे घर में जब शुक्र के साथ कोई अन्य ग्रह साथी बन रहा हो, तो आड़ू की गुठली में सूराख करके, उसमें सुरमा भरकर किसी वीरान जगह पर, घास वाली जमीन में जाकर दबाएं। इस उपाय से पुत्र और स्त्री दोनों सुखी रहेंगे।
४. बृहस्पति का उपाय मददगार होगा।
५. औलाद की कमी चन्द्र के उपाय से ठीक होगी।
६. पहली औरत का नाम बदलकर, उससे दोबारा शादी करें।
७. मंगल के कारोबार करें।

८. अगर किसी दूसरी औरत से शादी करने जा रहे हैं, तो यह बात पहली औरत से न छिपाएं।
९. माता के वजन के बराबर या उसका दसवां हिस्सा दूध, चावल और चांदी दरिया में प्रवाहित करें।

पांचवें घर का उपाय

१. शुक्र का उपाय सहायक होगा।
२. औरत (पत्नी) अपने गुप्तांग को दूध-दही से साफ करती रहें।
३. चाल-चलन पर काबू रखने और पाक-साफ रहने से औरत की सेहत ठीक रहेगी।
४. दूध, चांदी और चावल दरिया में प्रवाहित करें।
५. मां-बाप की मर्जी से शादी करें।
६. रोजी-राटी में बरकत के लिए मां और गाय की सेवा करें।
७. शुक्र का उपाय मददगार होगा।

छठे घर का उपाय

१. औरत (पत्नी) अपने नंगे पांवों को जमीन पर न रखें, जुराब या जूती पहने रखें।
२. मन्दिर आदि में दूध, चावल, देशी खांड, शहद, सौंफ और गुड़ दें।
३. औरत की उम्दा सेहत और बीमारी दूर करने के लिए छह शुक्रवार सफेद पत्थर पर (उसे धोकर) सफेद चन्दन लगाकर नदी में डालें।
४. अच्छी सेहत के वास्ते गुप्तांग को लाल दवा से धोएं।
५. चांदी की गोली जेब में रखें।

सातवें घर का उपाय

१. लाल गाय की सेवा करें।
२. औरत के बीमार होने पर उसके वजन का दसवां हिस्सा मन्दिर में दें।
३. मां-बाप की दुआएं लें।
४. गन्दे नाले में नीला फूल डालें।
५. शुक्रवार के दिन कांसे का कोई बरतन मन्दिर में दान करें।

६. सफेद गाय की सेवा करने से परहेज करें।
७. किसी भी ससुराली को कारोबार में हिस्सेदार न बनाएं।
८. औरत काले या नीले रंग के कपड़े न पहनें।
९. शनि या राहु से सम्बन्ध रखने वाले कारोबार न करें।
१०. पराई औरतों से इश्कबाजी नुकसानदेह साबित होगी।
११. विवाह में काम आने वाली चीजों के कारोबार से लाभ होगा।

आठवें घर का उपाय

१. औरत (पत्नी) कष्ट में हो तो चन्द्र-केतु की चीजों से मदद करें।
२. चन्द्र मन्दा हो तो बुध की मदद लें।
३. काली या भूरी गाय की सेवा करें।
४. आठ सौ ग्राम जिमीकन्द जमीन में दबाएं।
५. काली गाय को नित्य हरी ज्वार खिलाएं।
६. दुःख और परेशानी में लाल गाय की सेवा करें।
७. शुक्र की मदद के लिए स्त्री के भार का दसवां हिस्सा ज्वार जमीन में दबाएं।
८. आठ शुक्रवार गुड़ मिला आटे का पेड़ा काली गाय को दें।
९. शादी के बाद गाय का दान करें।
१०. गन्दे नाले में फूल या तांबे का पैसा सौ दिन तक रोज डालने से जर, जोरू और जमीन का नुकसान नहीं होगा।
११. औरत को पीड़ित या परेशान न करें।
१२. पच्चीसवें साल के बाद शादी करें।
१३. शुक्र ८ का दोष चन्द्र, मंगल और बुध की मदद से दूर होगा।

नौवें घर का उपाय

१. मकान की बुनियाद में चांदी की चीजें दबाना सुखदायक होगा।
२. शादी पच्चीसवें साल में करें।
३. ससुराल के किसी भी आदमी या औरत को साथ न रखें।
४. खेती की जमीन पास में न रखें और गाय पालें।
५. नीम के पेड़ में चांदी के छोटे-छोटे चौकोर पत्थर ४३ दिनों तक एक-एक करके गाड़ें, इससे कई तरह की मुसीबत टल जाती है।

६. घोड़ा, चांदी शहद घर में रखना अच्छा है, कुआं खुदवाना अथवा कुएं के पास रहना भी अच्छा रहता है।
७. पत्नी के हाथों में चांदी की लाल मीना वाली चूड़ियां मददगार होंगी।

दसवें घर का उपाय

१. धर्म-स्थान में बादाम का दान करें।
२. अपना मकान न बनवाएं और बनवाना जरूरी हो, तो उसकी पश्चिम दीवार को कच्चा रखें तथा उस स्थान में बकरी की पालना करें।
३. बीमारी और दुर्घटनाओं से बचने के लिए शनि का उपाय करें।
४. पति या पत्नी जिसमें भी काम का वेग बहुत ज्यादा हो, वो अपने गुप्तांग को दही से धोया करें। इससे दिमाग को सुकून मलेगा, प्रसवकाल में कोई बाधा नहीं आएगी और सेहत भी अच्छी बनी रहेगी।
५. काली कपिला गाय का दान गल-सड़कर मरने से बचायेगा। उम्र का फैसला जल्दी ही इधर या उधर हो जायेगा।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. थोड़ा-सा तेल लेकर पानी में प्रवाहित करें।
२. शादी के वक्त गाय का दान करें।
३. दही और रूई मन्दिर में दें।
४. पापी ग्रहों के नीच असर के वक्त तेल का दान जोशी को दें।
५. चमड़ी का रोग (एलर्जी) होने पर सांप की केंचुली, मछली का तेल फौलाद का कुरता दरिया में प्रवाहित करें।
६. मर्दाना ताकत में कमी हो, तो सोना दूध में बुझाकर उस दूध को पिएं।

बारहवें घर का उपाय

१. अगर औरत शुक्र के नीच असर की वजह से बीमार हो तो गुड़ चावल तथा जौ को वीराने में जाकर दबाएं।
२. जब राहु-बुध शुक्र को नीच कर रहे हों तो नीला फूल ४३ दिन तक जमीन में दबाएं।
३. लाल या काली गाय का दान करें।

नोट—औरत की इज्जत करें, हमेशा इज्जत और सलीके से पेश आएं, क्योंकि आपका नसीब आपकी औरत की मुट्ठी में होगा। ❑❑

पराक्रमी ग्रह मंगल

मंगल को पृथ्वी का पुत्र अर्थात् पृथ्वी नंदन कहा गया है। यह बलिदान का स्वरूप, त्याग का अवतार तथा रोग-पीड़ा का विनाशक है। इसकी शक्ति अद्वितीय है। मंगल का अशुभ प्रभाव मनुष्य के वैवाहिक जीवन में विशेष बाधक होता है। मांगलिक दोष होने पर जातक का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहता।

मंगल ग्रह मकर राशि पर उच्च का तथा कर्क राशि पर नीच का होता है। मंगल ग्रह रात्रिबली तथा दक्षिण दिशा का स्वामी है। इसका विशेष अधिकार सिर पर रहता है। मेष और वृश्चिक राशि का यह स्वामी है। यह पुल्लिंगी और तामस ग्रह है। यह बृहस्पति के साथ सात्त्विक और सूर्य के साथ राजस व्यवहार रखता है।

बुध इसका पूरी तरह से शत्रु है। यह अपने घर से चौथे, सातवें और आठवें घर को पूरी दृष्टि से देखता है। विंशोत्तरी दशा के अनुसार मंगल की महादशा सात वर्ष की होती है। यह लाल रंग का प्रतिनिधि है। मनुष्य शरीर में पेट से पीठ तक का भाग, सिर, नाक, कान, फेफड़े, मस्तिष्क तथा रक्तकोष पर इसका नियंत्रण रहता है। मंगल ग्रह को पाप ग्रह माना जाता है। यह पूर्व दिशा में उदित तथा पश्चिम दिशा में अस्त होता है।

बारह घरों में मंगल का फल

पहला घर—जन्मकुंडली के पहले घर (लग्न) में मंगल हो तो जातक अति क्रूर व साहसी होता है। ऐसा जातक अल्पायु होता है और उसके शरीर में चोट लगती है। उसका मन सदैव चिंतित रहता है। स्त्री और पुत्रों द्वारा उसे मानसिक कष्ट मिलता है। प्राय: उसके अधिकतर कार्य अधूरे ही रह जाते हैं। ऐसा जातक अत्यंत महत्वाकांक्षी, विचाररहित तथा गुप्त रोग से पीड़ित होता है। यदि इस घर में नीच राशि का मंगल हो तो जातक को आँखों का कष्ट होता है।

जन्मकुंडली में मंगल के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. छोटे बड़ों की शर्त नहीं मगर अकेला भाई न होगा।
२. दूसरों की नेकी और अपनी सच्चाई को कभी नहीं भूलता।
३. कम-से-कम २८ साला जाती कमाई या मुलाजमत का अरसा या जरिये आमदन (आय) अच्छे पैमाने का होगा। कोई बराबर का भतीजा, दोहता, पोता, ताया, चाचा वगैरा नफा देंगे।
४. दुश्मनों से कुदरती तौर पर बचाव रहेगा।
५. अपने भाइयों और ससुराल को तारने वाला होगा।
६. खुद नेक सच्चा और नेकी सच्चाई पसंद होगा। उसकी जुबान का कहा कभी खाली न जाएगा।
७. बहन या तो होगी ही नहीं और अगर हुई तो मानिंद नसीबा में इकबालमंद होगी।
८. जिस कदर बदी से दूर उसी कदर अपनी जड़ मजबूत होगी वरना अपने खून की कीमत मल से भी कम होगी। खानदान के लिए दमदार होगी। नेकी और अहसान का बदला कभी वापस न देगा।
९. कारोबार मुतल्लका शुक्र मुबारिक फल देंगे।
१०. माता पिता के लिए मनहूस होगा, औलाद और बीवी उसके लिए परेशानी का सबब होंगे, कभी शाह और कभी फकीर होगा।

दूसरा घर—जन्मकुंडली के दूसरे घर में मंगल प्रभावहीन समझा जाता है। इसका जातक धन से हीन होता है। कुटुम्ब से क्लेश पाता है एवं लड़ाई, मुकदमे आदि में हमेशा हार का मुँह देखता है। वो कटुभाषी, विद्याहीन एवं पशुपालक होता है, उसे अनेक प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ता है। यदि मंगल षष्ठेश (छठे घर का मालिक) से युक्त हो तो जातक नेत्र रोग से पीड़ित अवश्य रहता है। वैसे उसे अंगघात, अनिद्रा आदि का रोग भी हो सकता है।

जन्मकुंडली में मंगल के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. इरादे का पक्का और हुकूमत का ख्वाहिशमंद होगा।
२. ससुराल से दौलत पाएगा। औरत का लाया हुआ दहेज फलेगा और मर्द औरत दोनों ही घर कभी लावल्द न होंगे।
३. ससुराल में हमेशा बरकत बढ़ती होगी और वह हर तरह से मददगार होंगे।

४. खुद साख्ता अमीर होगा और दौलत खुद-ब-खुद जमा होती जाएगी और तमाम उम्र हर तरह से सुखी होगा।

५. मजबूत जिस्म और तंगदस्ती खुद से दोनों दूर रहें और बेवक्त जरूरत रुपया पैसा हमेशा हाजिर रहे।

६. मंगल कमजोर होगा तो अनेक बुराइयों को जन्म देगा और जरूरत से ज्यादा शरीर के अंगों को बीमार रखेगा। पेट या खून की खराबियों से जिस्म के दायें हिस्से पर सख्त तकलीफ होगी।

तीसरा घर—जिस व्यक्ति की जन्मकुंडली के तीसरे घर में मंगल होगा, वो सामान्य रूप से नीरोग तथा स्वस्थ शरीर का होगा। यदि तीसरे घर में मंगल नीच राशि का अथवा शत्रुक्षेत्री होकर विद्यमान है तो जातक को चर्म रोग, अग्निभय तथा चोट लगने के कारण हड्डी टूटने का भय बना रहता है। जातक को गुप्त रोग भी प्रभावित कर सकते हैं। क्षीण तथा अशुभ मंगल जातक की मानसिक दशा संतुलित नहीं रखता तथा उसे पागलपन से ग्रसित कर देता है। ऐसे व्यक्ति के धन के व्यय करने के सौ रास्ते होते हैं पर आंय सीमित ही रहती है। यह विपत्तियों पर विपत्तियों को सहन करता हुआ जीवन-यापन करता है।

जन्मकुंडली में मंगल के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. दौलतमंद ससुराल से दौलत मिलेगी।

२. मौत बीमारी से बचाव उम्दा सेहत मकान दौलत सबमें हर तरफ से सुखिया। अगर मकान शेर दहाना हो तो उसकी दिन-ब-दिन तरक्की होगी, उम्र ९० साला और बीनाई बहुत तेज होगी।

३. किसी पर ज्यादती होते देखना उसे सहन न होगा।

४. मंगल की मंदी हालत में शख्स चालबाज और धोखेबाज होगा। ऐयाश और तंग शाह होगा, कर्जे के बोझ तले रोएगा।

चौथा घर—जन्मकुंडली में मंगल की चौथे घर में उपस्थिति अन्य ग्रहों की अनुकूलता व्यर्थ सिद्ध कर देती है। जातक प्रवासी, संततिवान्, अल्पमृत्यु अथवा मृत्यु को प्राप्त होने वाला, बंधु-विरोधी और कृषि-कार्यों में निपुण होता है। उसे वाहनादि का सुख भी मिलता है। माता का सुख उसे अल्प अथवा नहीं के बराबर होता है। जीवन में तरक्की करता है। नौकरी उसके लिए विशेष लाभप्रद होती है। शरीर में चोट तथा अग्निभय सर्वदा बना रहता है, जातक व्यसनी भी होता है। प्रायः शरीर की कमजोरी उसे सताती रहती है।

जन्मकुंडली में मंगल के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. शरारत का माकूल जवाब देने की हिम्मत का मालिक, दिल का साफ सच्चा होगा।
२. भाई की औरत दौलत उत्तम व नेक होगी, बड़े भाइयों की तरफ या उनकी तादाद पर कोई बुरा असर न होगा।
३. छोटी उम्र में माता की उम्र तक मंदा साबित होगा। उस वक्त सारे परिवार के लिए ही मंदा होगा।
४. अमूमन ऐसा शख्स कड़वा स्वभाव, अकड़खां, ऐयाश, सारी ही उम्र गुलामी (नौकरी वगैरा) में गुजार देगा। खुद मियां पंजीयत औरों को नसीहत करने वाला होगा। मुँह खोलकर एक को उसकी बर्खलाफ या ऐब की बातें सुना देगा।
५. बड़े भाई की औरत दौलत और दफीने (त्रुटि) पर अपनी २८ साला उम्र तक हर तरह से मंदा असर करेगा।
६. जिस दरख्त पर जा बैठे वह जड़ से ही उखड़ जावे या फिर जहरीले सांप की तरह उसके इरादों को ही बर्बाद करे।

पांचवां घर—जिसकी कुंडली में मंगल पांचवें घर में होता है, उसे संतान का सुख नहीं मिलता। उसके भाग्य में अनर्थ होते रहते हैं। ऐसा जातक चुगलखोर तो होता है, मगर बुद्धिमान नहीं होता। उसकी जठराग्नि बहुत तीव्र होती है। पाप कार्य में भी वो निपुण होता है, शीघ्र क्रोध में आने वाला होता है और क्रोध में अंधा होकर वो कुछ भी करने को तैयार हो जाता है।

जन्मकुंडली में मंगल के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. उम्र बढ़ने के साथ-साथ दौलत भी बढ़ती जावे।
२. नेकी और बदी के कामों में ताकतवर होगा।
३. खानदानी खून हकीमी या डाक्टरी का जरूर ताल्लुकेदार होगा। दुनियावी कारोबार में मुंसिफ होगा।
४. साहबे हल्म ओ औलाद होगा। औरत औलाद का सुख आम होगा। उसके बुजुर्ग बेशक कैसे भी हों, मगर वो और उसकी औलाद के लिए हर गुजरी हुई पिछली घड़ी नेक और तकलीफ के बाद आराम देने वाली होगी, औलाद भी नेक और सुख देने वाली होगी। औलाद के

जन्म दिन से हालत नेक होगी। दौलतमंदों का बाप और दादा होगा या उसके लड़के पोते दौलतमंद होंगे।

५. जिसकी कुंडली में, पांचवें घर में मंगल मंदी की हालत में होगा तो शख्स का शरीर नजर से ही तबाही करता जाएगा। आग का खौफ व खतरा रहेगा। ऐसी हालत में औलाद का सुख भी कम मिलेगा। सगे संबंधियों व रिश्तेदारों में खास लोगों की मौतें भी देखनी नसीब होंगी। उसकी मेहबूबा भी उसकी तबाही का बहाना हो सकती है। रातों की नींद भी पूरी तरह से नसीब न होगी।

छठा घर—जिसकी कुंडली के छठे घर में मंगल हो वो जातक शत्रुओं को जीतने वाला, राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है। मामा का सुख भी उसे नहीं मिलता। धन भी उसके पास होता है और खर्च भी वो अनाप-शनाप करता है और इस खर्च के कारण ही उसका धन समाप्त होता जाता है। यदि कुंडली के छठे घर में मंगल मिथुन या कन्या राशि में हो तथा किसी अन्य ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक के संबंध अनेक स्त्रियों से होते हैं।

जन्मकुंडली में मंगल के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. हिम्मत से भरपूर, पाताल और पानी में भी आग लगा देने की हिम्मत का मालिक होगा। खुद साहिबे इकबाल (तेजस्वी) व हुक्मरां वो दुनिया का मुंसिफ (न्यायकर्त्ता) होगा। अगर लेखक हुआ तो उसकी कलम में तलवार से भी ज्यादा पैनापन होगा और उसकी कलम का लिखा हुआ जरूर असर करके ही रहेगा।
२. चाल चलन पर खुद का काबू होगा।
३. पोते पड़पोते देखकर मरे। तीन पुश्त तक औलाद की बरकत रहे। औलाद की कमी न होगी बल्कि औलाद उम्दा मुबारक होगी।
४. बहन भाई दुःख का बहाना होंगे।

सातवां घर—जिसकी कुंडली में इस घर में मंगल मौजूद होता है, वो जातक चाहकर भी एक जगह पर टिककर नहीं रह पाता है। शत्रु भी अपने ढंग से पीड़ित करने में सफल होते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति की पत्नी की मृत्यु जवानी में होनी संभव है। मंगल के सातवें घर का जातक ईर्ष्यालु, धूर्त्त, मूर्ख, वातरोगी, राजभीरु, कटुभाषी व निर्धन होता है।

जन्मकुंडली में मंगल के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. किस्मत के मामले में ऐसा शख्स या तो बहुत अमीर होगा या फिर बहुज ज्यादा गरीब। उसकी जिंदगी बड़ी उतार-चढ़ाव वाली होगी।
२. नेक काम वक्त मुसीबत रोते को ढांढस बंधाकर पक्का हौसला और मदद देकर हंसाने वाला होगा।
३. सोहबत के असर से कभी खाली न होगा।
४. इल्मे रियायी का माहिर और वजीरे खून का ताल्लुकेदार होगा। अगर सितारा बुलंद रहा तो जागीर व दौलत की बरकत होगी। जिस किसी भी चीज की ख्वाहिश हो वो एक दफा जरूर मिलेगी मगर दूसरी दफा या बार-बार मिलने की कोई शर्त न होगी।
५. बीवी की मौत या बहन को बेवा होते देखेगा, यह तब होगा जब कुंडली में मंगल मंदा होगा।

आठवां घर—मंगल जिसकी कुंडली के आठवें घर में होता है, वो कुतनु (खराब शरीर वाला अर्थात् शरीर में कहीं रोग हो), धनहीन और अल्पायु होता है। लोग उसकी निंदा करते हैं। कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि ऐसा जातक नीरोग, कांतिमय, शोभन व्यक्तित्व का तथा दीर्घायु होता है। अग्नि से उसे भय रहता है और मूत्राशय सम्बन्धी रोग उसे परेशान करते हैं। लाल किताब के लेखक का इस बारे में क्या कहना है, अब यह जानकारी हासिल करते हैं। अर्थात्—

जन्मकुंडली में मंगल के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. किस्मत का धनी चाहे न हो मगर उसका जिस्म दौलत पाने के लिए पूरी मेहनत करने का आदी होगा।
२. दुश्मन कितना ही ताकत का क्यों न हो उसका हमला रोकने की पूरी हिम्मत का मालिक होगा।
३. पैदा होने के बाद भाइयों के लिए नुकसानदेह होगा मगर वो अपनी माता पर किसी भी तरह का मंदा असर न देगा।
४. आसूदा (धन-धान्य) हालत, उम्दा सेहत और लम्बी उम्र का मालिक होगा और गुजारे लायक दौलत की भी उसके पास कमी न होगी।
५. गले में हर वक्त चांदी का लटके रहना या कायम रहना मुबारिक फल देगा।
६. जिस्मानी खेल की ज्यादती की वजह से पेशाब नली में जलन वगैरा की शिकायत मुमकिन है।

नौवां घर—जिस जातक क़ी कुंडली के नौवें घर में मंगल होता है वो व्यर्थ का द्वेष रखने वाला, अभिमानी, क्रोधी, अधिकारी, नेता, यशस्वी एवं भ्रातृ-विरोधी होता है। ऐसे व्यक्ति को मंगल ग्रह धनी और समाज में श्रेष्ठ होने का अवसर प्रदान करता है। उसकी बुद्धि तीक्ष्ण तथा पाप प्रधान होती है। जितना परिश्रम वो करता है, उतना फल उसे प्राप्त नहीं होता।

जन्मकुंडली में मंगल के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यहं है—

१. नौवें घर में अकेला मंगल हो तो बुजुर्गों से चलता आया शाही तख्त जन्म से ही तैयार हो जावे। खुद दुनियावी मुंसिफ मिजाज होगा। भाई की औरत किस्मत की बुनियाद होगी। मैदान में शेर बहादुर की तरह उजली किस्मत का मालिक होगा। गरीबी या तंगदस्ती से तंग आकर किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़ेगा।
२. उम्दा हालात में शहाना परवरिश पाएगा, हुकूमत करने का मौका और दौलत जमा करने का बहुत वक्त मिलेगा। कारोबार बरकत देगा। कर्मों का फल नेक होगा। उसके भाई उससे ईर्ष्या करेंगे। हालात मंदी न हुई तो ऐश करेगा और सुख से जिएगा।

दसवां घर—जिसकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें घर में बैठा हो वो राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी, कुल का दीपक तथा समाज में श्रेष्ठ होता है। लोग उसका आदर करते हैं। ऐसा जातक धनवान्, गुणी, श्रेष्ठ, कवि, सुखी, यशस्वी होता है। उसे वाहनादि का सुख मिलता है और वो संतति कष्ट पाने वाला होता है। अपनी प्रतिभा से वो सबको चमत्कृत कर देता है। यदि कुंडली के दसवें घर में मंगल दुर्बल अथवा क्षीण हो तो जातक मद्यपान करने वाला, शरीर से दुर्बल होता है। यदि दसवें घर में कर्क राशि में मंगल विद्यमान हो तो जातक की पत्नि का गर्भपात हो जाता है और यदि मंगल शुभ राशि में हो तो जातक के भाई दीर्घायु होते हैं; तथा जातक भी दीर्घायु होता है।

जन्मकुंडली में मंगल के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. अपने साथ-साथ दूसरों के नसीब को भी बदल देने वाला होगा।
२. खानदान को तारने वाला होगा।
३. जिस घर में उसकी पैदाईश होगी वह घर अगर पहले गरीब घराना भी रहा होगा तो भी धनाढ्य घर बन जाएगा। ऐसा शख्स जन्म से ही

दुनियावी राजा की शान का मालिक होगा और जायदाद व दौलत खुद पैदा कर लेगा। वह कभी लावल्द न होगा।

४. किसी शहनशाह के यहाँ जन्म ले तो यकीनन तख्तोताज का मालिक बने।

५. किस्मत के मैदान का बेताज बादशाह होगा।

६. भाई की जिंदगी किस्मत में दौलत की आमद की बुनियाद होगी। खुद वह अपनी पूरी ९६ साला उम्र दौलत व उम्दा सेहत के बल पर पूरी करेगा।

७. अगर मंगल ग्रह मंदी हालत में होगा तो औलाद बहुत देरी से कायम होगी।

८. अगर कुंडली में शनिश्चर उम्दा हालत में हो तो मंदी हालत का असर न के बराबर होगा।

ग्यारहवां घर—जिस जातक की कुंडली के ग्यारहवें घर में मंगल हो वो न्यायप्रिय, साहसी, झगड़ा मोल लेने वाला, अधिक क्रोध करने वाला, दंभी और धैर्यवान् होता है। वो शत्रुओं का विनाश करने वाला तो होता ही है, अभागा होता हुआ भी अपने को भाग्यवान् समझता है। व्यापार से इसे धन का विशेष लाभ होता है। यदि मंगल ग्यारहवें घर में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली होता है तथा बाल्यावस्था में पेट दर्द, दंत रोग तथा नेत्र-पीड़ा होती है। जातक को चोर तथा अग्नि-भय आजीवन बना रहता है।

जन्मकुंडली में मंगल के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. माली हालत हर तरह से उम्दा होगी।

२. तेरह साला उम्र से उसके वाल्दैन के पास दौलत का भंडार जमा होगा।

३. हुकूमत के साथ सुख कायम होगा। फिर २८ साला उम्र (मंगल का वक्त) जब मंगल नेक हो, से वही उम्दा हालत व शानो शौकत का नजारा बारौनक होगा जो वक्त पैदाईश वाल्दैन का था।

४. कुंडली का ग्यारहवां घर मंगल के दोस्त (मित्र) बृहस्पति और शनिश्चर से प्रभावित है जो मंगल से दुश्मनी नहीं करता, अतः मंगल इस घर में उत्तम फल देता है। अगर बृहस्पति उत्तम फल में हो तो मंगल बहुत उम्दा फल देगा। तीसरा घर मंगल/बुध (शनि) से प्रभावित है, अतः तीसरे घर की दृष्टि में होने के कारण बुध शनिश्चर की अच्छी या मंदी हालत पर भी मंगल का उम्दा या नीच फल होगा।

५. जिस घर बृहस्पति हो उसके घर में लिखे हुए भाइयों की तादाद का मालिक हो। बुध और या बृहस्पति कुंडली के घर एक से दस में हो तो आठ भाई तक। बृहस्पति ग्यारहवें घर में हो तो एक भाई तक और बृहस्पति बारहवें घर में हो तो अमूमन अकेला भाई होगा।

६. अगर बुध/शनिश्चर उम्दा हो तो २४ से २८ साला उम्र तक दौलत खूब जमा हो जाएगी।

बारहवां घर—जन्मकुंडली के बारहवें घर में मंगल की मौजूदगी से जातक चुगलखोर, क्रूर, अधम, झगड़ालू, मूर्ख, स्त्री-नाशक तथा नीच प्रकृति का होता है। उसका धर्म (ईमान) नष्ट हो जाता है। कोई अधिक बुरा कार्य न करने पर भी वो लांछन पाता है तथा झूठे अपवाद से व्यथित रहता है। चोरों, ठगों तथा बेईमानी से वो छला जाता है। ऐसा जातक नेत्र रोग, कफ तथा वात रोग एवं शस्त्र भय से पीड़ित रहता है। जातक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बलिष्ठ होता है। किन्तु पर-स्त्रीगामी होने के कारण गुप्त रोग से पीड़ित रहता है। यदि कुंडली के बारहवें घर में मंगल/शुक्र की युति हो तो जातक को अग्निभय तथा दुर्व्यसन का रोग होता है।

जन्मकुंडली में मंगल के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. गुरु चरण का ध्यान रखने वाला गिर जाए मगर धर्म न हारे।

२. बड़ा भाई जिंदा न रहने देगा मगर कुंडली के मालिक (जिसके बारहवें घर में मंगल हो) के जन्म लेने से पहले उसका बड़ा भाई जरूर जिंदा और कायम होगा मगर औरत की कुंडली में अपने बड़े भाई को तबाह करने की कोई शर्त नहीं है।

३. अगर मंगल बारहवें घर में हो और बुध का पहले घर में होना कभी बुरा असर न करेगा। जिस शख्स की कुंडली में ऐसा योग हो, वो गर्म तबियत, खुद परस्ती, आजादी और खुद मुख्तयारी का मालिक होगा।

४. दमकता कुटुंब दुश्मन की कारगुजारी से आजाद होगा। मौत और बीमारी का हमेशा बचाव होता रहेगा, जब तक कि कुंडली के ग्यारहवें घर का ग्रह आठवें घर का दुश्मन न हो।

५. अपनी २८ साला उम्र तक बड़े भाइयों की उम्र पर भारी होगा, सिवाय उस बड़े भाई के जिसकी कुंडली के दसवें घर में मंगल हो।

६. बुध अपना मंदा असर बहाल रखेगा और मंगल का उस पर कोई जोर न चल सकेगा।

७. मंदी हालत के वक्त अपने धर्म स्थान की मदद मुबारिक होगी।

मंगल के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

मंगल के बारे में यह माना जाता है कि यह मेष लग्न वाले जातकों की आयु का पूर्ण प्रतिनिधि होता है, क्योंकि उसका पहला और आठवां दो आयु स्थानों पर आधिपत्य हो जाता है। ऐसा मंगल यदि शनि आदि पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो यह आयु की अल्पता का द्योतक होता है। ऐसी हालत में आयु बढ़ाने के लिए मंगल को बलवान् करना आवश्यक हो जाता है।

मंगल को बलवान् करने के लिए, मंगल का रत्न मूंगा धारण करना चाहिए और शनि आदि जो पाप ग्रह मंगल पर प्रभाव डाल रहे हों, उनके मंत्र का जाप आदि कराकर, उनकी शांति करनी चाहिए। यदि वृश्चिक लग्न में चन्द्र मौजूद हो तो मंगल पूरी तरह से रक्त का प्रतिनिधि होता है। ऐसी हालत में अगर मंगल पर शनि और राहु का प्रभाव हो तो समझ लेना चाहिए कि जातक के रक्त में मलिनता आदि दोष पैदा होंगे।

रक्त की सफाई के लिए मंगल का बलवान् होना बहुत जरूरी है और इसके लिए चाँदी की अँगूठी में मूंगा लगवाकर पहना जा सकता है। शनि और राहु की शांति का उपाय वैदिक या धार्मिक रीति से करना चाहिए।

यदि मंगल लग्नेश (लग्न का स्वामी) होकर अथवा वैसे ही छह, आठ या बारहवें घर में स्थित हो और उस पर सिर्फ पापी दृष्टि हो और किसी शुभ ग्रह की युति अथवा दृष्टि का प्रभाव इस पर न हो तो जातक के पुट्ठे सूख जाते हैं और किसी भी औषधि से यह रोग दूर नहीं होता। इसके लिए चाँदी की अँगूठी में मूंगा पहनना चाहिए। यह उपाय रोग को दूर करने में सक्षम होता है। यदि मंगल का युति अथवा दृष्टि संबंध पहला घर और उसका मालिक, चौथा घर और उसका मालिक तथा चंद्र से हो तो ऐसे जातक का मन अतीव हिंसक होगा। अतः ऐसे मंगल की शांति हनुमान जी के स्तोत्र पाठ आदि के द्वारा की जानी चाहिए।

जब मंगल पहले घर का मालिक होकर चौथे घर में नीच का हो तो जातक को छाती आदि के रोग प्रदान करता है तथा धन का नाश भी संभव है। इसके लिए भी चाँदी की अँगूठी में मूंगा लगवाकर पहनना लाभदायक रहता है। इस प्रक्रिया से उम्र, सेहत और दौलत का कभी नाश नहीं होता अथवा इन तीनों में फायदा ही फायदा होता है।

यदि मंगल और केतु का मिलाप या उनकी दृष्टि का प्रभाव पांचवें

घर और उसके स्वामी और बृहस्पति पर हो तो जातक के पुत्रों की मौत या उनके अभाव का कारण बनता है और यदि पांचवें घर का स्वामी बलवान् होकर पीड़ित हो तो पुत्रों की मृत्यु तक संभव हो जाती है। पुत्र-मरण के दोष को दूर करने के लिए जहाँ पांचवें घर के मालिक (स्वामी) को रत्न आदि धारण करने से बलवान् करना अभीष्ट होगा, वहाँ मंगल के उपाय के लिए श्री हनुमान जी की पूजा-अर्चना की जानी चाहिए।

सातवां घर पुरुष की जन्मकुंडली में स्त्री का और स्त्री की कुंडली में पुरुष का होता है। पुरुष के सातवें घर का कारक अर्थात् स्त्री का कारक शुक्र होता है और स्त्री के सातवें घर का कारक अर्थात् पति का कारक बृहस्पति होता है। जब सातवां घर, उसका मालिक और शुक्र पीड़ित हों तो पुरुष की स्त्री (पत्नी) की मृत्यु का योग बनता है और जब स्त्री की कुंडली में सातवां घर, सातवें घर का मालिक और बृहस्पति पीड़ित हों तो उसके पति की अल्पायु होकर, उसके लिए वैधव्य (विधवा) योग बनता है।

चूंकि किसी के भी जीवन को खत्म कर देने में मंगल को महारथ हासिल है इसलिए ज्योतिष के आचार्यों ने प्रत्येक उस स्थिति को जिसमें मंगल का प्रभाव जीवन-साथी की आयु को कम करने वाला हो, अनिष्टकारी माना है। मांगलिक एक ऐसी ही स्थिति है, जिसमें मंगल पुरुष अथवा स्त्री के पहले, चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें—इन पांच घरों में से किसी घर में स्थित हो तो वह मांगलिक योग बनाता है। पहले घर यानी लग्न में हो तो अपनी पूरी सातवीं दृष्टि से सातवें घर पर अपनी मारणात्मक क्रूर दृष्टि डालेगा। यदि चौथे घर में हुआ तो अपनी चौथी दृष्टि से सातवें घर को देखेगा। यदि सातवें में हुआ तो सीधा उस घर को अपनी स्थिति से पीड़ित करेगा।

इसी प्रकार यदि मंगल आठवें में हुआ तो उसकी पूरी सातवीं दृष्टि दूसरे घर पर पड़ेगी जिसकी वजह से दूसरा घर पीड़ित होगा और चूंकि दूसरा घर सातवें से आठवां है अर्थात् जीवन-साथी की आयु का स्थान है, इस पर भी मंगल की दृष्टि वैसे ही जीवन-साथी की आयु के लिए हानिकारक होगी, जैसे कि उसकी दृष्टि सातवें घर पर पड़ेगी। इसलिए उपर्युक्त पांच भावों में मंगल मांगलिक योग अथवा कुजदोष उत्पन्न करता है।

यह योग प्रायः जीवन-साथी (पुरुष अथवा स्त्री जैसा भी हो) की आयु के हरण करने का योग है। किन्तु इतना ध्यान रहे कि यह कोई जरूरी नहीं कि जब भी मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें अथवा बारहवें घर में हो तो वह अवश्य स्त्री अथवा पुरुष, जीवन-साथी को मारेगा ही। हो सकता है कि

सातवें घर पर मंगल का प्रभाव हो, किन्तु सातवें घर का मालिक ग्रह और शुक्र (पुरुष की कुंडली में) अथवा सातवें घर का मालिक ग्रह और बृहस्पति स्त्री की कुंडली में बलवान् हो तो ऐसी स्थिति में जीवन-साथी की आयु में बहुत थोड़ी कमी जाएगी और वो जीवन लम्बा ही रहेगा।

मंगल भी जब सातवें घर में हो अथवा उसको देखता हो तो प्रत्येक अवस्था में सातवें घर को एक जैसा नुकसान नहीं पहुंचाता। जैसे स्वक्षेत्री अथवा उच्च मंगल सातवें घर में पति अथवा पत्नी के लिए नुकसानदेह नहीं है। जब मंगल के ऊपर शनि तथा राहु आदि ग्रहों का प्रभाव हो और वह नीच राशि में स्थित हो तो मंगल निर्बल हो जाता है। ऐसी हालत में भी उसकी दृष्टि यदि सातवें घर पर है तो उस दृष्टि में बल न होगा। परिणामस्वरूप सातवें घर को कम नुकसान होगा और मांगलिक योग नाममात्र का मांगलिक योग रह जाएगा।

यदि मंगल का प्रबल प्रभाव सातवें घर पर पड़ रहा हो और विशेषतया उसकी युति अथवा दृष्टि का प्रभाव सातवें घर के मालिक और दूसरे घर के मालिक तथा कारक ग्रह (सत्री की कुंडली बृहस्पति और पुरुष की कुंडली में शुक्र) पर पड़ रहा हो तो मंगल का उपाय अवश्य ही करवाना चाहिए अर्थात् मंगल की पूजा, मंगल के देवता हनुमानजी की पूजा, मंगलवार का व्रत, मंगल के मंत्र का जाप तथा दान आदि करवाना चाहिए।

यह देखने में आए कि मंगल अपने प्रभाव से अनिष्ट की उत्पत्ति कर रहा है, तो इस दशा में मंगल को जितना बलवान् किया जाएगा, उतना ही वो और अधिक अनिष्टकारी बनता चला जाएगा। अतः जिस कुंडली में मांगलिक योग बनता हो, उसके जातक को मूंगा कभी नहीं पहनना चाहिए। यदि मंगल और केतु की तथा इनके द्वारा अधिष्ठित राशि के स्वामी (मालिक) की आठवें अथवा उसके स्वामी पर दृष्टि आदि का प्रभाव हो तो व्यक्ति की मृत्यु किसी दुर्घटना द्वारा होगी, ऐसा विचार करना चाहिए। इस संदर्भ में यह याद रहे कि छठे और ग्यारहवें घर के स्वामी भी चोट देने वाले होते हैं। जब मंगल तथा केतु का प्रभाव पहला घर उसका स्वामी, आठवां घर उसका स्वामी सभी पर हो और अन्य कोई प्रभाव न हो तो मृत्यु अवश्य किसी दुर्घटना से होती है।

यदि उपर्युक्त स्थानों आदि पर एकाध मांगलिक प्रभाव हो तो उपाय द्वारा कष्ट का निवारण किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में लग्न का सवामी और आठवें घर के स्वामी को उनके संबंधित रत्न पहनकर और मंगल तथा केतु की दान, पूजन, व्रत, मंत्र द्वारा शांति कराकर लाभांवित होना चाहिए। यहाँ यह भी ध्यान रहे कि मंगल को बलवान् करना आवश्यक नहीं है।

यदि मंगल आठवें घर का मालिक होकर राहु तथा शनि की युति अथवा दृष्टि द्वारा पीड़ित हो और आठवें घर पर भी पाप दृष्टि हो तो मंगल के और आठवें घर के पीड़ित होने के कारण बवासीर आदि अंडकोषों के समीप के क्षेत्र के रोगों की उत्पत्ति होती है। ऐसी हालत में मंगल को बलवान् करना अभीष्ट होगा और यह कार्य मूंगा पहनकर किया जा सकता है।

मंगल छोटे भाइयों का कारक है। जब यह तीसरे घर का स्वामी हो तो छोटे भाइयों का विशेष प्रतिनिधि बनता है। ऐसा मंगल यदि बलवान् होकर लग्न के स्वामी बृहस्पति अथवा सूर्य से संबंधित हो तो साले के जरिए से या उसकी मदद से दौलत के मिलने की उम्मीद रहती है। इस हालत में मंगल जितना ज्यादा ताकतवर (बलवान्) होगा उतना ही साले के जरिए धन-दौलत मिलेगी। इस दशा में मंगल का रत्न मूंगा पहनकर, मंगल को बलवान् करना उचित होगा।

कुंडली के दसवें धर में मौजूद मंगल मिला-जुला फल देगा। यह ग्रह जब बलवान् होकर दसवें घर में स्थित हो तो उन घरों को बल पहुँचेगा, जिनका कि वो स्वामी या मालिक होगा। किन्तु मंगल की चौथी दृष्टि सदा लग्न पर पडेगी। यह दृष्टि आयु को कम करने वाली समझनी चाहिए, चाहे मंगल लग्न में अपनी ही राशि देखता हो। इस आयु की कमी को दूर करने के लिए मूंगा तो कभी नहीं पहनना चाहिए, क्योंकि मूंगा मंगल को और भी ज्यादा बल देगा, जिस वजह से जातक की आयु ज्यादातर कम होगी। हाँ, मंगल से संबंधित देवता हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए।

कर्क लग्न हो और उसमें सूर्य और मंगल हो, चंद्रमा छठे और शनि चौथे घर में हो तो यह योग अपमान तथा अनादर का योग है, क्योंकि यहां आदरसूचक लग्न, लग्न का मालिक, दसवें घर का मालिक या स्वामी तथा सूर्य सभी शनि द्वारा पीड़ित हैं। ऐसी दशा में शनि का उपाय बहुत जरूरी होगा। दूसरे ग्रहों को बलवान् करने के लिए सोने की अँगूठी में मूंगा और मोती दोनों लगवाकर धारण करें।

लाल किताब के लेखक का कहना है कि मंगल के लिए साधारण नियम यह है—यदि मंगल अनिष्ट फल कर रहा हो तो इसे दूर करने के लिए तंदूर में मीठी रोटी लगवाकर दान करें या रेवड़ियाँ पानी में बहा दें। इसी प्रकार मीठा भोजन दान करें या बताशा चलते पानी (दरिया आदि) में डाल दें। मंगल के दान में दी जाने वाली वस्तुएं जिनके पास रखने में मंगल का अनिष्ट फल दूर होता है, हिरण की खाल है। मंगल के देवता श्री हनुमान जी हैं, अतः उनकी पूजा करें और प्रसाद लें।

टोटके

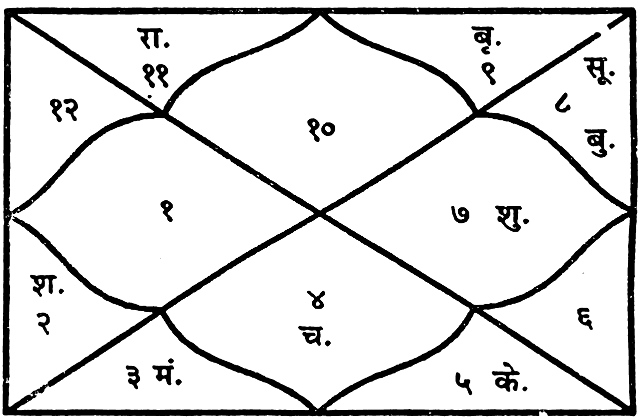
मंगल ग्रह यदि प्रतिकूल या अनिष्ट फल प्रदर्शित कर रहा हो, तो इस अनिष्ट के निवारण के लिए अथवा मंगल को अनुकूल करने के लिए निम्न टोटकों का प्रयोग करना चाहिए–

१. किसी भी मंगलवार को सोने के ताबीज में अनंतसूल की जड़ भरकर लाल रंग के सूती धागे से बांधकर पहनें।

२. सोने की अंगूठी, गाय के दूध में डुबोकर मंगलवार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय धारण करें। इस बात का ध्यान रखें कि यह अंगूठी अनामिका उंगली में धारण की जाती है।

मंगल का शुभ/अशुभ फल

मंगल एक तो ऐसे ही हिंसात्मक है और जब यह कुंडली के छठे और ग्यारहवें हिंसात्मक घरों का मालिक बन जाए और साथ ही अगर केतु अधिष्ठित राशि का मालिक भी हो तो फिर मंगल से बढ़कर हिंसा का द्योतक और कोई ग्रह नहीं हो सकता। अब अगर ऐसे मंगल का प्रभाव मन पर पूर्ण हो अर्थात् चौथे घर चन्द्रमा आदि पर सभी पर हो तो मन में इतनी हिंसा की वृत्ति प्रबल हो जाती है। ऐसी कुण्डली वाला व्यक्ति किसी की हत्या तक भी कर सकता है। निम्न कुण्डली में मंगल को छठे घर में बैठा हुआ दिखाया गया है।



मंगल को दसवें घर में दिग्बल की प्राप्ति होती है (बुध और बृहस्पति लग्न (पहले घर) में रहने पर, चंद्रमा और शुक्र चौथे घर में रहने पर, शनि सातवें घर में रहने पर तथा सूर्य और मंगल दसवें घर में मौजूद रहने पर दिग्बली होते हैं)। इसलिए दसवें से सातवें अर्थात् चौथे घर में नीच राशि

कर्क में स्थित हो तो और भी बलहीन होकर चौथे तथा पहले घर को हानि पहुँचाएगा। ऐसे जातक को छाती के कोई-न-कोई रोग, जैसे अस्थमा (दमा), क्षय आदि की संभावना रहती है। विशेषतया ऐसी हालत में जबकि मंगल पर कोई शुभ दृष्टि भी न हो। लग्न उसका मालिक, आठवां घर और उसका मालिक पर पड़ने वाला प्रभाव मृत्यु के ढंग को बतलाता है, अतः यदि इन सब पर मंगल का प्रभाव हो विशेषतया तब जबकि मंगल केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी हो या छठे या ग्यारहवें घर का स्वामी या मालिक हो, तो ऐसे जातक की मृत्यु हत्या द्वारा संभावित है। उस समय तो अवश्य जब दूसरे और आठवें घर के स्वामी का भी मृत्यु लाने में हाथ हो।

मंगल हिंसाप्रिय क्रूर ग्रह है। यह जिस घर पर भी प्रभाव डालता है, उस पर चोट लगती है। केतु भी मंगल की तरह से चोट करता है। जन्मकुंडली में छठा घर चोट से संबंधित है। ग्यारहवां घर भी छठे ही की भाँति चोट देने वाला है, अतः जब मंगल केतु; इनके द्वारा अधिष्ठित राशियों के स्वामी, षष्ठेश (छठे घर का स्वामी) और एकादशेश (ग्यारहवें घर का स्वामी) किसी भाव तथा भावांधिपति पर अपना पूरा प्रभाव डाल रहे हों तो वो भाव जिस अंग का प्रतिनिधि हो, शरीर के उस अंग पर चोट लगती है। श्री हनुमान जी की पूजा आदि इसमें लाभ करती है।

कुछ खास जानकारियाँ

मंगल में अन्य ग्रहों की अपेक्षा एक बहुत ही खास बात है। यह अपना अच्छा असर दिखाते-दिखाते जब कभी बुरा असर करता है, तो उसकी चाल में अचानक बहुत तेजी आ जाती है। फिर तेज चाल से यह बुरा असर डालना शुरू कर देता है। जब तक इसके मन्दे असर को रोकने के लिए कोई उपाय किया जाए, तब तक यह इतना भारी नुकसान कर देगा, जिसकी भरपाई करने में बहुत लम्बा वक्त गुजर जाएगा, कभी-कभी तो इसके मन्दे असर को रोकना ही नामुमकिन हो जाता है। लाल किताब के लेखक का मत है कि इसके मन्दे असर को चन्द्र की मदद से दूर किया जा सकता है।

पक्का घर	:	३	श्रेष्ठ घर	:	१, ३, ५, ७, ९, १२
मन्दे घर	:	४, ८	रंग	:	लाल
शत्रु ग्रह	:	केतु, बुध	मित्र ग्रह	:	बृहस्पति, चन्द्र, सूर्य
सम ग्रह	:	शुक्र, शनि	कार्य	:	पुलिस या सेना

उच्च	:	१०	नीच	:	४
समय	:	पक्की दोपहर	दिन	:	मंगलवार
बीमारी	:	रक्त-विकार	मसनुई ग्रह	:	सूर्य, बुध (मंगल नेक) सूर्य-शनि (मंगल बद)

यदि मंगल उच्च वाला व्यक्ति अपने भाई अथवा मित्र के साथ विश्वासघात करेगा या उनका अपमान करेगा तो मंगल उच्च अपना प्रभाव नहीं देगा।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

जहां शुभ मंगल जातक को शूरवीर, पुलिस या सेना का अधिकारी बनाता है, वहां अशुभ मंगल जातक को बदमाश, हत्यारा, चोर या लुटेरा बनाता है, अतः अशुभ मंगल से जल्दी पिंड छुड़ा लेना चाहिए, आगे बताए जाने वाले कुछ उपायों के द्वारा।

१. मंगलवार के दिन हनुमान मन्दिर में जाया करें।
२. मिठाई दान करें।
३. मृगछाला का इस्तेमाल करें।
४. रेवड़ियां और बताशे पानी में बहाएं।
५. सफेद सुरमा आंखों में लगाएं।

पहले घर का उपाय

१. रोजाना हनुमान मन्दिर में जाकर माथा टेकें तथा हनुमानजी की पूजा करें।
२. बृहस्पति और शुक्र का उपाय करें।,
३. मंगल को नीच करने वाले मकान के दोषों को दूर करने के उपाय करें।
४. चन्द्र और सूर्य की चीजों से मदद लें।

दूसरे घर का उपाय

१. भाइयों तथा मित्रों की मदद से धन-दौलत बढ़ेगी।
२. ससुराल पक्ष से लाभ होगा।
३. घर में चन्द्र की चीजें रखने और चन्द्र के व्यवसाय से लाभ होगा।

४. कारोबार से दौलत कमाने के लिए बिजली से सम्बन्धित कारोबार करें।
५. बीमारियों से निजात पाने के लिए बताशे और रेवड़ियां पानी में बहाएं।

तीसरे घर का उपाय

१. हाथीदांत घर में रखें।
२. कोमल हृदय के रहें, किसी पर, किसी भी बात पर गुस्सैले न हों और सभी से नमी से पेश आएं।
३. जब भी मौका मिले, अपने भाइयों की मदद करें।

चौथे घर का उपाय

१. मंगल बद की हालत में रेवड़ियां पानी में प्रवाहित करें।
२. चन्द्र का उपाय करें।
३. मृगछाला का इस्तेमाल करें।
४. मकान के दक्षिण दरवाजे में लोहे की कीलें गाड़ें।
५. सोने, चांदी और तांबे मिश्रित धातु की अंगूठी पहनें।
६. चार सौ ग्राम चावलों को कच्चे दूध में धोकर सात मंगलवार दरिया में प्रवाहित करें।
७. चांदी का चौकोर पत्र अपने पास में रखें।
८. सवेरे उठते ही दांतों को फिटकरी के पानी से साफ करें।

पांचवें घर का उपाय

१. रात को सोते समय सिरहाने पानी से भरा हुआ लोटा रखकर सोएं सुबह उस पानी को पौधों मे डाल दें।
२. मंगलवार के दिन मसूर की दाल को इस्तेमाल न करें।
३. लाल रूमाल अपनी जेब में रखें।

छठे घर का उपाय

१. अपने बच्चों को सोना न पहनाएं।
२. शनि का उपाय करें।
३. मंगल को जन्मे लड़के और शुक्र या शनि को जन्मी लड़की की उम्र का कोई भरोसा न होगा, अतः छह कन्याओं को दूध पिलाएं।

४. यदि समर्थ हों, तो कुछ चांदी का दान करें। चावल का दान भी लाभ करता है।
५. पुत्र के जन्म पर नमकीन चीजें बांटें।

सातवें घर का उपाय

१. शनि को उच्च करें।
२. मकान में कोई दीवार बनाना अच्छा फल देगा।
३. ठोस चांदी की गोली हमेशा अपनी जेब में हिफाजत से रखें।
४. मंगल के मन्दे असर से बचने के लिए पिता को अथवा अपनी बहन को लाल कपड़े दान करें।
५. पति-पत्नी प्रातः स्नान करके सबसे पहले लाल कपड़े पहनें (चाहे बाद में बदल लें)।
६. तांबे का बरतन चावलों से भरकर, चन्दन का लेप लगाकर हनुमान मन्दिर में दें।

आठवें घर का उपाय

१. पत्नी की सलामती के लिए घर में कभी तन्दूर न लगाएं।
२. एक ओर सिंकी आठ मीठी तन्दूरी रोटियां लेकर कुत्तों को खिलाएं।
३. सोना, चांदी और तांबा मिश्रित धातु की अंगूठी पहनें।
४. रेवड़ियां और बताशे पानी में बहाएं।
५. चावल, गुड़ और चने की दाल धर्म-स्थान में दें।
६. मकान के आखिर में अंधेरी कोठरी कायम करें।
७. मंगल के आठवें घर में नीच असर से बचने के लिए किसी बेवा को मीठा देकर उसकी दुआएं लें।
८. गरम तवे पर पानी की छींटें देकर बाद में रोटी सेंकें।
९. रसोईघर में बैठकर ही खाना खाएं।
१०. देशी खांड को मिटी की हांडी में भरकर श्मशान के पास उजाड़ जगह में दबा दें।
११. अपनें बुजुर्गों के कदमों में झुक्कर उनकी दुआएं लें।
१२. गले में हर वक्त चांदी की जंजीर डाले रहें।
१३. मंगल बन्द की दशा में हाथीदांत से बना कोई आभूषण पहनें।

नौवें घर का उपाय

१. हमेशा अपनी जेब में लाल सुर्ख रंग का रूमाल रखें।
२. मंगलवार के दिन हनुमानजी को सिन्दुर चढ़ाएं और भोग लगाएं।
३. मूंगा पहनना भी मंगल को अच्छा करता है।
४. आरामदायक जिन्दगी के लिए बड़े भाई के साथ रहें, उसका कहना मानें और उसकी इज्जत करें।
५. धर्म में रुचि लें, दान-दक्षिणा दें और आस्तिक बने रहें।

दसवें घर का उपाय

१. हिरण के साथ रहना, उसका पालन करना, उसका पेट भरना लाभदायक होगा।
२. भाई के भाग्य से जीवन में खुशहाली आएगी।
३. हनुमानजी की सेवा करें।
४. दौलत और जायदाद की बढ़ोत्तरी के लिए शनि को प्रसन्न करने का उपाय करें।
५. मंगलपरी के दिन केवल मीठा भोजन करें।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. हनुभान मन्दिर में जाकर हनुमानजी पर सिन्दूर चढ़ाएं।
२. घर में शहद रखना मददगार होगा।
३. काला या सफेद कुत्ता पालना अच्छा रहेगा।
४. बृहस्पति मंदा हो तो उसे उच्च करने का उपाय करें।

बारहवें घर का उपाय

१. मंगलवार के दिन हनुमान मन्दिर में जाकर बेसन के लड्डू और बताशे चढ़ाएं।
२. घर में किसी भी तरह का बिना धार वाला हथियार न रखें।
३. रोज बारह ग्राम गुड़, बारह दिन तक दरिया के जल में प्रवाहित करें।
४. मीठी तन्दूरी रोटी कुत्ते को खिलाएं।
५. रात को सिरहाने सौंफ रखकर सोएं और सुबह उस सौंफ को किसी पेड़ की जड़ में डाल दें।

६. पानी में गुड़ डालकर सूर्य को अर्पण करें।

७. चोटी रखने वाले चोटी रखें और चोटी न रखने वाले खाकी रंग की टोपी लगाएं।

८. चांदी या चावल अपने पास रखा करें।

९. दौलत और जायदाद के वास्ते अथवा उसमें बढ़ोत्तरी के लिए आने वाले मेहमान अथवा रिश्तेदार को मीठा खिलाएं। बच्चों और मित्रों को भी मिठाइयां खिलाया करें।

नोट—घर का मंगल जातक को सज्जन बनाता है, जबकि बुरे कामों और बुरी संगत से परेशानियां पैदा होती हैं तथा शुभ की जगह मंगल का अशुभ प्रभाव होने लगता है, पाक-साफ रहें, धर्म-कर्म में विश्वास जताएं। उसमें रुचि लें और बुरे कामों तथा गन्दी आदतों से बचकर रहें।

बुद्धि-विवेक का ग्रह बुध

बुध को चंद्र का पुत्र कहा गया है। पुराणों में भी बुध को चन्द्र (चन्द्रमा) की पत्नी रोहिणी का पुत्र माना जाता है। प्रजापति दक्ष की जिन सत्ताइस कन्याओं का विवाह चन्द्र के साथ हुआ था, रोहिणी उन्हीं में से एक है; यह सभी सत्ताइस कन्याएँ आज भी सत्ताइस नक्षत्रों के रूप में जानी जाती हैं। बुध, ग्रहों में सबसे छोटा है। कहीं-कहीं पर बुध को बृहस्पति का दूत भी बताया गया है। बुध ग्रह जिस समय सूर्य की गति का उल्लंघन करते हुए राशि संचरण करता है तो आंधी, तूफान, वर्षा अथवा सूखे की सूचना देता है। इसकी गति शुक्र की गति के समान है।

बुध ग्रह मुख्य रूप से व्यवसाय का प्रतिनिधि है, बुद्धि-विवेक और वाणिज्य का नियामक है। यह जाति से शूद्र तथा मस्तिष्क से वणिक् है। बुध ग्रह को अकेले होने की अवस्था में शुभ तथा पाप ग्रह से युक्त होने पर अशुभ की संज्ञा दी गई है। मिथुन और कन्या राशि का यह स्वामी है। सूर्य, शुक्र, राहु और केतु इसके अच्छे मित्र हैं, चंद्रमा को यह अपना शत्रु मानता है तथा मंगल और बृहस्पति न उसके मित्र हैं न शत्रु; अर्थात् यह दोनों बुध से समभाव रखते हैं।

बुध कन्या राशि के १५ अंश तक परम उच्चस्थ तथा मीन राशि में १५ अंश तक परम नीच का माना जाता है। सूर्य और चन्द्र की भाँति बुध सदैव मार्गी नहीं रहता, अपितु समय-समय पर मार्गी, वक्री तथा अस्त होता रहता है।

बुध ग्रह यदि शुभ ग्रहों से युत हो तो शुभ फल और पाप ग्रह से युत हो तो अशुभ फल देता है। बुध के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए उससे संबंधित रत्न पन्ना धारण करना चाहिए।

बुध जातक की जन्मकुंडली में जिस घर में बैठा हो, वहाँ से तीसरे और दसवें घर को एक चरण दृष्टि से, पांचवें और नौवें घर को दो चरण दृष्टि से तथा सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। मनुष्य के शरीर में कंधे

से लेकर गरदन तक इसका नियंत्रण रहता है। यह उत्तर दिशा का स्वामी, नपुंसक तथा त्रिदोषकारी है। ये श्याम तथा हरे रंग वाला, बहुभाषी, कृश शरीर, रजोगुणी, पृथ्वी तत्त्व वाला, स्पष्टवादी, पित्त व कफ प्रकृति वाला, शूद्र जाति का है। यह अपने स्थान से सातवें भाव (घर) को पूरी दृष्टि से देखता है। इसकी विंशोत्तरी महादशा १७ वर्ष की मानी गई है। यह दशा जातक के लिए भाग्यवर्धक बनती है।

विभिन्न स्थितियों के अनुसार बुध ग्रह मुनि, वेद-पुराण, ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन, चाचा, साक्षी, राज्य, व्यापार, वैद्यक, कुष्ठ, संग्रहणी आदि रोगों का कारक है। उच्च, बलवान् या स्वराशिस्थ बुध की दशा में जातक को बहुत लाभ होता है। पुत्रों से उसे विशेष सुख मिलता है और पुत्र की कीर्ति से वह सम्मानित होता है।

बुध नीच और हानि राशि में हो तो जातक को कफ, वात, पित्त आदि रोगों से पीड़ित करता है। धनहानि के साथ-साथ मानसिक चिन्ता से भी व्यथित होता है एवं कपटपूर्ण कार्यों में लिप्त होने को विवश होता है।

बलवान् बुध वर्षेश (वर्ष का स्वामी या मालिक) हो तो जातक के लिए श्रेष्ठ लाभकारी होता है। उसकी बुद्धि का विकास होता है। कठिन परीक्षा में भी वो आसानी से सफल हो जाता है। बलवान् बुध उच्च प्रशासनिक सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त करता है। कलाओं में भी वो निपुणता प्राप्त करता है। लेखक हो तो अपनी लेखनी के द्वारा सम्मान प्राप्त करता है। राज्यों में भी जातक को अपनी कला के द्वारा सम्मान मिलता है और उसकी आय के कितने ही स्रोत बन जाते हैं।

यदि किसी जातक के वर्ष में मध्यबली बुध वर्षेश हो तो वो व्यापारिक कार्यों में सफलता पाता है। मित्रों में सम्मान प्राप्त करता है और विद्या, परीक्षा आदि कार्यों में निपुणता प्राप्त कर यश और लाभ का भागी बनाता है। हीनबली बुध वर्षेश होने पर जातक अपने धर्म से गिर जाता है। हर समय उन्मत्त अवस्था में घूमता रहता है और कई प्रकार के खर्चों से उसकी संचित निधि समाप्त हो जाती है। हीनबली बुध पुत्र की मृत्यु का योग भी करता है अथवा संतान पेट में ही मर जाती है। ऐसी दशा में जातक दुराचरण और तिरस्कार आदि फल प्राप्त करता है।

बारह घरों में बुध का फल

पहला घर—जन्मकुंडली के पहले घर (लग्न) में बुध हो तो जातक

अत्यन्त सुन्दर, सत्यवक्ता, विलासप्रिय, सदा परदेश में रहने वाला, दीर्घायु, आस्तिक, गणितज्ञ, स्त्रीप्रिय तथा मितव्ययी होता है। पहले घर में बुध अन्य ग्रहों के दुष्प्रभाव को समाप्त करने में सक्षम है। यदि पहले घर में बुध उच्च राशि में हो अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक को भाई का सुख मिलता है। ऐसा बुध जातक को ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता तथा लेखन वृत्ति से निर्वाह करने वाला बनाता है। यदि बुध के साथ शनि भी मौजूद हो तो जातक की बायीं आँख में कष्ट होता है। अथवा पहले घर में वृश्चिक राशि हो और बुध पहले घर का मालिक हो तो जातक रसायन शास्त्र में रुचि रखने वाला, सफल चिकित्सक व शल्य चिकित्सक होता है। जबकि पहले घर में निर्बल या क्षीण बुध जातक को अंगहीन तक बना सकता है।

जन्मकुंडली में बुध के पहले घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. आसमान में किसी चीज का न होना या आसमान खाली-खाली सा दीखना, बुध के होने का पक्का सबूत है। कुंडली का पहला घर सूरज यानी सूर्य की जमीन और उस पर बना हुआ मंगल का मकान है जिसमें बुध तो बेचारा सिर्फ एक किरायेदार की हैसियत रखता है। इसलिए कुंडली के पहले घर पर सूर्य, मंगल और बुध तीनों का पूरा असर होगा। पहले घर में मंगल का फल बेशक निकम्मा साबित हो, मगर सूर्य का असर कभी मंदा न होगा। अर्थात् इस घर के जातक का मिजाज थर्मामीटर के पारे की तरह ऊपर नीचे होता रहता है। उसका गुस्सा भी पारे की तरह ऊपर चढ़ता जाता है।
२. कुंडली के पहले घर का शख्स अपनी मर्जी का मालिक होता है, किसी दूसरे की मर्जी पर कोई काम करना या जीना उसे सख्त नापसंद होता है।
३. जिस घर में सूर्य हो, उस घर के मुतल्लका रिश्तेदार चंद दिन में दौलतमंद हो जाएंगे।
४. रोटी-पानी की कोई कमी न होगी, मगर ईमान पर ज्यादा अमल करने वाला न होगा।
५. नये माहौल में जीने वाला होगा।
६. शनि आदि जितने भी पापी ग्रह होंगे, वो सब बुध के इशारे पर चलेंगे।
७. औरत उत्तम और अमीर घराने की होगी।
८. लड़कियाँ खुद अपने या अपने खाबिंद के भाग्य से राज्य करेंगी, सुख

भोगेंगी, अगर जवानी के आलम में बदनामी या तौहमत का डर न हुआ।

९. मंगल का असर चाहे जितना मंदा हो मगर सूर्य का असर कभी मंदा न होने पाएगा। जब मंगल कुंडली के बारहवें घर में बैठा हो तो बुध का पहला घर कभी मंदा असर न होगा।

१०. बुध के मंदे हाल में शख्स शराब व गोश्त का इस्तेमाल करने वाला, परदेश में रहने वाला, बहुत ज्यादा गुस्सा करने वाला तथा दूसरों के दिल को अपने काबू में करने वाला होगा।

दूसरा घर—अगर दूसरे घर में बुध मौजूद हो तो जातक बहुत सुन्दर तथा कोमल शरीर का होता है। वो पिता का भक्त, पाप से डरने वाला, सत्यवादी, भ्रमणशील, मिष्ठान्न प्रेमी तथा वकील का पेशा करने वाला होता है। जातक सर्वगुणसम्पन्न, लेखन तथा प्रकाशन कार्य से लाभ प्राप्त करने वाला, मितव्ययी तथा परदेशवासी होता है। अगर दूसरे घर में बुध और बृहस्पति की युति हो तो जातक गणितज्ञ होता है। जीवन भर वो सुख, प्रफुल्लता तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है। किन्तु वो वात रोग से पीड़ित रहता है। वृद्धावस्था में गठिया, कमर में दर्द, उदर रोग आदि कष्टकारी होते हैं। यदि कुंडली के दूसरे घर में उच्च राशि का अथवा स्वक्षेत्री बुध हो, तो जातक गौरवर्ण, कोमल, धार्मिक विचारों का बुद्धिमान तथा परिश्रमी होता है।

जन्मकुंडली में बुध के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. उम्दा बोलने की ताकत का मालिक होगा। दिमागी खराबियों का कभी शिकार न होगा, पिता का सुख न होगा मगर खुद इकबालमंद होगा। औलाद से दुखिया मगर लावल्द न होगा। घर और ससुराल को तारने वाला होगा।

२. दिल की ताकत का मालिक और नसीहत करने वाला होगा।

३. उभरी हुई परेशानी का मालिक होगा जिसमें जहानत तथा साथ हुई किस्मत का नेक असर होगा।

४. खुदगर्ज और मतलब परस्त होगा।

५. काफिर (अधर्मी) को मारने वाला और दुश्मनों को बर्बाद करने वाला होगा।

६. बीरबल की तरह हाजिर जवाब होगा। पुख्ता राय की ताकत का मालिक होगा। उसकी जुबान में ऐसा यश होगा कि हर तरह के नुक्स को छिपा लेने में कामयाब होगा।

७. अपनी तकदीर का ख़ुद मालिक होगा। जुबान और कलम दोनों में हर तरह से बरकत होगी।
८. व्यापार से दौलत का लाभ मिलेगा। उसे अपनी इज्जत-आबरू का बहुत ध्यान रहेगा। नेक हालत में लम्बी उम्र पाएगा।
९. पिता की उम्र कभी शक्की न होगी।
१०. दुश्मन को जीतने वाला होगा।
११. कुटुंब का बोझ उसके कंधों पर होगा। कोशिश से बनाई उत्तम जिंदगी का मालिक होगा। खुद इकबालमंद होगा और खुद साख्ता होगा।
१२. पिता का सुख न होगा।
१३. मंदी हालत में सब धन-दौलत राख होता होगा। सट्टा व्यापार या ख्याली कारोबार, जुआ वगैरा सब के सब मंदा असर देंगे।
१४. मंदी हालत में या तो बाप वक्त से पहले मर जाएगा, अगर जिंदा रहा तो मुर्दा से बदतर होगा।
१५. बुध की चीजें बहन, बुआ, लड़की सब जरूरी असर की होंगी, किन्तु साली का साथ गैर मुबारक होगा।

तीसरा घर—जन्मकुंडली के तीसरे घर में बुध हो तो जातक साहसी, बड़े परिवारों से युक्त, कुशलता पूर्वक अपने अभीष्ट कार्य को पूर्ण करने वाला, व्यवसायी, सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता, मित्र प्रेमी एवं सद्‌गुणी होता है। यदि बुध बली, शुभ ग्रह युक्त हो तो जातक गंभीर तथा दीर्घायु होता है। प्रवास में रहकर वो धन अर्जित करता है तथा वृद्धावस्था में संन्यासी वृत्ति अपना लेता है। धार्मिक प्रवृत्ति का होता है, व्यापारिक कार्यों में उसकी बहुत रुचि होती है तथा स्वतंत्रचेता एवं निर्भीक व्यक्ति के साथ उसकी मित्रता स्थायी होती है। नम्र स्वभाव और उदार हृदय वाला यह जातक कार्यदक्ष तथा परिश्रमी होता है। उसकी बाल्यावास्था रोगमय बीतती है। बचपने में उसे अनेकों रोगों का सामना करना पड़ता है। उदर रोग, कफ विकार तथा वायु विकार उसे पीड़ित करते हैं।

जन्मकुंडली में बुध के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. नेक हालत में बुध का हर तरह से उत्तम फल होगा।
२. दौलत और कुटुंब बढ़ता होगा। बुध की चीजों का उत्तम फल होगा। अपने भाई बुध व बिरादरी के ताल्लुकदार (संबंधी) उसके अपने लिए जरूर मददगार व नेक असर देंगे।

३. औलाद मामू का उत्तम फल और दमा के मरीज का आला हकीम होगा।
४. ८० साल उम्र से कम न होगी। अगर हालत नेक रही तो अपनी उम्र पूरी करेगा।
५. दूसरों के लिए मददगार या फायदेमंद न होगा।
६. जन्मकुंडली में बुध तीसरे घर से नौवें और ग्यारहवें घर को बड़ी साफगोई से देखता है, इसलिए तीसरे घर से ताल्लुक रखने वाली आमदन और नौवें घर से ताल्लुक रखने वाले बाप दादा पर भी तीसरे घर के बुध का नीच असर होगा या तीसरे, नौवें घर में जो ग्रह होगा उससे ताल्लुक रखने वाले रिश्तेदार बहुत दु:खी होंगे।
७. मंदी हालत जिस कदर थोड़े नुकसान पर खत्म हो जावे अच्छा है।

चौथा घर—कुंडली के चौथे घर में बुध हो तो जातक पंडित, भाग्यवान, स्थूलदेही, बन्धु प्रेमी, नीतिज्ञ तथा वाहन सुख का भोग करने वाला होता है। जातक की स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र रहती है तथा जातक अनेक स्त्रियों का भोग करने वाला होता है। चौथे घर में बुध पापी हो तो बहुत धनों से युक्त तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाला होता है। यदि बुध उच्च राशिस्थ अथवा स्वग्रही हो तो जातक चंचल बुद्धि वाला, निर्लज्ज, कृश जांघ वाला, बाल्यावस्था में रोगी रहता है। चौथे घर में बुध प्रभावहीन होने के कारण जातक को मातृकष्ट, वाहनकष्ट तथा प्रवास आदि दुष्प्रभावों से पीड़ित रहना पड़ता है; अत्यंत बुद्धिमान होता है। राज्य में उसकी प्रतिष्ठा तथा मित्रों में सम्मान होता है। पिता के धन से वो वंचित रहता है। बचपन में एक-न-एक रोग से ग्रसित रहता है। यदि चौथे घर में बुध कन्या राशि में स्थित हो तो जातक को कोई गुप्त रोग अवश्य होता है, इसका कारण यह होता है कि उसके संबंध अनेक स्त्रियों से रहते हैं।

जन्मकुंडली में बुध के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. दुनियावी सुख उत्तम और मर्द व औरत की जोड़ी बेहद बारौनक (भव्यशाली) होगी।
२. वाल्दैनी सुख लम्बे अर्से तक कायम रहेगा।
३. बुध जब अकेला हो तो हर तरफ से उत्तम और सबके लिए मय खुद खरा सोना होगा। मंदे का दुनियावी फल माया दौलत उम्दा मगर गैबी असर दिल की शांति और दूसरों की मदद के ताल्लुक से निकम्मा ही होगा।

४. परिवार, दौलत और उम्र—तीनों की बरकत होगी और पापी ग्रह कोई बुरा असर न देंगे।

पांचवां घर—कुंडली के पांचवें घर में बुध हो तो जातक स्त्री-पुत्रों से युक्त, सुखभागी, कमल के फूल के समान सुंदर मुख वाला, देव-द्विज भक्त तथा पवित्र हृदय वाला होता है। अपने बुद्धि-कौशल से अनेक बार लोगों को चमत्कृत कर देता है तथा समाज व परिवार में उसकी प्रतिष्ठा व यशोगान होता है। वो तीव्र बुद्धि का होता है तथा यांत्रिक विषयों में गहन रुचि रखता है। उसे वृद्धावस्था में पुत्र का लाभ होता है। यदि बुध पाप ग्रह से दृष्ट अथवा शत्रु क्षेत्री होकर पंचम भाव (पांचवें घर) में मौजूद हो तो जातक झगड़ालु स्वभाव का होता है। यदि पांचवें घर में बुध और राहु की युति हो तो जातक जुआरी तथा सट्टा लाटरी में रुचि लेने वाला होता है। वो प्राय: मानसिक रोग से पीड़ित होता है। यदि बुध ग्रह पाप ग्रह से युति करते हुए पांचवें घर में मौजूद हो तो जातक की संतान दुर्बल बुद्धि वाली होती है जो समय-समय पर पागल शब्द से भी सुशोभित होती रहती है।

जन्मकुंडली में बुध के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. इंसानी सिफत खसलते इंसानी का मालिक होगा। जद्दी मकान का असर हर तरह से उत्तम होगा। गृहस्थी व अल औलाद की हालत हर उम्दा होगी। ३४ साला उम्र के बाद किस्मत का सितारा बुलंद होगा। औलाद, औरत और खुद अपनी किस्मत सब उम्दा जब अपना घर गऊमुख (गाय के मुँह जैसा) हो, बुध का खुद नेक फल साथ होगा।

२. पिता के लिए मंदा नसीब मगर औलाद के लिए कभी मंदा न होगा।

३. गले में तांबा लटकाने से दौलत की बरकत होगी।

छठा घर—जिसकी कुंडली में, छठे घर में बुध मौजूद हो, वो विवेकी, कलहप्रिय, आलसी, रोगी, अभिमानी, कमजोर शरीर वाला, कामी तथा स्त्रीप्रिय होता है। उसका अन्य मनुष्यों के साथ भारी विरोध रहता है। तंत्र आदि क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वो धन का बहुत अधिक व्यय कर डालता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की सहायता लिए बिना, अपने पुरुषार्थ से धन संचय करता है। छठे घर में बुध हो और वक्री हो तो जातक को शत्रुओं से भय बना रहता है। किन्तु यदि बुध शुभ ग्रह की राशि में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक शत्रुओं को जीतने वाला, सुखी होता है। छठे घर में बली बुध की मौजूदगी जातक को नेतृत्व प्रदान करती है। यदि बुध छठे घर में कर्क राशि

में हो तो जातक को उदर रोग तथा जिगर की शिकायत रहती है; साथ ही वात रोग, फोड़ा-फुंसी तथा रक्तजन्य रोग आदि पीड़ित करते हैं।

जन्मकुंडली में बुध के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. छठा घर बुध का अपना घर है और दूसरा घर चन्द्र से प्रभावित है, इसलिए चन्द्र की जानदार अशियों (वस्तुओं) के अलावा सब अशियों के साथ मददगार होगा। कारोबार वगैरा बुध की अशियों से लाभ होगा। जुबान से निकली हर अच्छी-बुरी बात पूरी होगी। खेती की जमीन से दौलत का लाभ होगा। नेक काम करते वक्त बुध की अशियाँ का शगुन उत्तम फल देने वाला होगा।

२. दिमागी कारोबार और तिजारत (व्यापार) का पूरा फायदा मगर दस्ती काम (हस्तकला) हुनरमंदी वगैरा हल्का ही फल देंगे।

३. आखरी वक्त तक जुबान बंद न होगी और जुबान का बोला हुआ अच्छा या बुरा शब्द जरूर पूरा होगा।

४. फकीरी से खुदसाख्ता अमीर दौलतमंद और फूल की तरह उम्दा जिन्दगी का मालिक होगा। दिल का राजा होगा और शुक्र की हालत पर बुध का आम असर होगा। जो ग्रह कायम होगा बुध उसी का असर देगा। यानी जैसा शुक्र हो बुध का भी वैसा ही फल हो जाएगा। बुध का जाती फल बुध की जाती चीजों पर कभी मंदा न होगा। तमाम कुंडली में जब भी कोई ग्रह उम्दा फल देने वाला होने लगे, बुध फौरन उसी ग्रह के नेक फल का हो जाएगा।

५. उत्तर की दिशा में ब्याही जाने वाली पुत्री दुःखी रहेगी। पानी (समुंदर) के सफर का नतीजा यकीनन उम्दा होगा।

६. दौलतमंद होगा और औरत भी अमीर घराने से होगी।

७. जन्मकुंडली के छठे घर का बुध शख्स को ३४ साला उम्र में मंगल का बद असर देगा, माता के इन्तकाल का वक्त हो सकता है और औलाद कायम होने का वक्त भी यही हो सकता है। ऐसी हालत में औरत (पत्नी) के बायें हाथ पर चांदी का छल्ला मददगार होगा।

सातवां घर—जन्मकुंडली में सातवें घर में शुक्र हो तो जातक सुंदर, विद्वान, व्यवसाय कुशल, धार्मिक, दीर्घायु, उदार तथा सुखी रहता है, स्त्री के लिए सुखदायक होता है। यदि सातवें घर में बुध शुभ राशि अथवा उच्च राशि का होकर मौजूद हो तो जातक उत्तम कुल में पैदा हुई स्त्री का पति

होता है। यदि बुध बली हो तो जातक अनेक औरतों से संबंध रखने वाला होता है। किन्तु यदि सातवें घर में बुध निर्बल तथा पाप राशि से युक्त होकर मौजूद हो तो जातक की औरत उससे पहले ही मर जाती है तथा जातक को विधुर जीवन व्यतीत करना पड़ता है। जातक स्वभाव से चंचल प्रकृति का, राज्यपूजक, दुर्बल वीर्य एवं मध्यम दृष्टि वाला तथा परस्त्रीगामी होता है। उसे धातु संबंधी रोग होता है।

जन्मकुंडली में बुध के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. हुनरमंदी, दस्तकारी के काम की बरकत होगी। हाजर माल का व्यापार उत्तम फल देगा। फौजदारी मुकद्दमात या तकरार, फसाद में उलझन कभी न होगी। तलवार के मुकाबले कलम में ज्यादा पैनापन और ताकत होगी, अगर यह कलम की बारीकी अकल का साथ न देगी मगर खजाना की दौलत हमेशा मदद पर होगी।
२. थोड़ी-सी मुलाकात से ही मदद करने को आतुर होगा।
३. बुढ़ापा हमेशा उम्दा होगा। अपने कुल को तारने वाला होगा।
४. औरत का घराना अमीराना होगा।
५. कुंडली का सातवां घर बुध और शुक्र दोनों से प्रभावित होता है। ये दोनों ग्रह आपस में दोस्त और एक-दूसरे के मददगार हैं, इसलिए सातवें घर में बुध दूसरों के लिए उत्तम होगा, लेकिन अपने मालिक के लिए उतना फायदेमंद न होगा। शुक्र की मुतल्लका चीजों में शुक्र व बुध दोनों का अपना-अपना और उत्तम असर औरत के इश्क में गर्क रहेगा जो उसे सुख ही देगा। इन ग्रहों का असर कभी मंदा न होगा।
६. औरत की बहन उस पर भी जान से न्यौछावर होगी और खुद उसके भाई से मिलकर उसकी मिट्टी खराब करेगी।
७. एक से दो नहीं बल्कि दो सौ गुना बनाने के चक्कर में नुकसान उठाएगा।

आठवां घर—जन्मकुंडली के आठवें घर में बुध हो तो जातक दीर्घायु (लम्बी आयु का) होता है। वो देश-विदेश में ख्याति अर्जित करता है। व्यापार से आशातीत लाभ कमाता है तथा एक साथ कई स्त्रियों से रमण करता है। ऐसा व्यक्ति स्वभाव से बहुत अभिमानी, सुन्दर, कृषि-कार्यों में निपुण, कवि, न्यायाधीश, वक्ता, वकील एवं धर्मात्मा स्वभाव का होता है। यदि आठवें घर में बुध निर्बल, पाप ग्रहों से युक्त होकर अथवा दृष्ट हो तो जातक में बहुत अधिक कामुकता होती है और वो छोटे-मोटे रोगों से सदैव दुःखी रहता है।

जन्मकुंडली में बुध के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. आठवें घर में बुध के साथ कोई पुरुष ग्रह हो तो कभी मंदा असर न होगा और बुध का असर वैसा ही उम्दा होगा जैसा कि पुरुष ग्रह का हो।
२. ३४ साला उम्र में बुध का असर उत्तम फल वाला होगा। माता की उम्र लम्बी होगी और चन्द्र की अशियाँ सब नेक फल होगा।
३. अब बुध और मंगल दोनों का ही घर आठ का फल उत्तम होगा।
४. ऐसी खुफिया सजा मिले कि यमराज भी चिल्लाने लगे मगर कसूर का पता न चले।
५. माता छोटी उम्र में गुजर जाए वरना माता व बेटा हर दो का हाल मंदा होगा।
६. जोड़ों और पट्ठों की बीमारियाँ परेशान करेंगी।

नौवां घर—इस घर में बुध हो तो जातक भाग्यवान्, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाला, बुद्धिमान्, तीर्थ-स्थानों की यात्राएँ करने वाला, कुलदीपक होता है। यदि नौवें घर में शुभ राशि का बुध हो तो जातक धन, स्त्री और पुत्रों से युक्त होता है। यदि पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक कुमार्गगामी तथा वेदशास्त्रों का निन्दक होता है। ऐसा जातक सदाचारी, ज्योतिष-प्रेमी, व्यवसायरत, गवैया, संपादक तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। वो स्त्री/पुत्र के सुख से संपन्न, सत्पुरुषों की सेवा से लाभ अर्जित करने वाला, बंधुवर्ग तथा समाज से प्रतिष्ठित होता है। उसका पिता दीर्घायु होता है।

जन्मकुंडली में बुध के नौ घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुंडली में नौवां घर शनि का है। शनि के साथ बुध का दोस्ताना है, किन्तु शनि की चालाकी से वो वाकिफ नहीं है। बुध उससे दोस्ती का हक अदा करता रहेगा और शनि चालाकी के साथ उसकी आँखों में धूल झोंकता रहेगा। बुध के नेक होने पर शख्स को अपने पेट के लिए रोटी न मिले मगर परिवार का पालन जरूर करता होगा।
२. कुंडली के नौवें घर की हालत कुंडली के ग्यारहवें घर से जाहिर होगी, मानो बुध का भेद ग्यारहवें घर की हालत पर होगा। अगर ग्यारहवां घर एकदम खाली हो तो वह बुध बदबख्त (बलात्कार) और बेहया लड़की जो अपनी माँ के ताल्लुक में अपने जन्मदाता बाप के ताल्लुक

को बदफेली के नाम से करार देवे और खुद उसी बाप से जिनाह (बलात्कार) करने की शाम की मालिक हो।

३. बुध कभी मंदा न होगा, बल्कि उसके करम से बरकत और दौलत उत्तम होगी।

४. लोहे की गोल चीज जिस पर मंगल का रंग हो, बुध को मंदी हालत से बचाएगी। नाक छेदन सबसे उत्तम और दरिया के पानी से धोया हुआ पीला कपड़ा मुबारिक होगा। घर की तह जमीन में चाँदी दबाना भला और जिस्म पर चाँदी पहनना मुबारिक होगा।

दसवां घर—कुंडली के दसवें घर में बुध हो तो जातक माता-पिता तथा गुरुजनों की सेवा करने वाला, बहुत धनी और स्वअर्जित धन के द्वारा वाहन-सुख को भोगने वाला, सत्यवादी, विद्वान, लोकमान्य, मनस्वी, व्यवहार-कुशल, कवि, न्यायी एवं हुकूमत की इच्छा रखने वाला, जमींदार होता है। ऐसा जातक अनेक प्रकार के व्यवसाय से धन कमाने वाला होता है। यदि बुध उच्च राशि का हो और स्वक्षेत्री अथवा बृहस्पति से युक्त होकर दसवें घर में मौजूद हो तो जातक कई तरह के काम करने वाला, गुरुजनों का आदर करने वाला होता है। नीच राशि में होने पर अथवा शत्रुक्षेत्री अथवा क्षीण बुध होने पर जातक मूर्ख तथा नीच सेवक होता है। उसे पिता के धन का सुख भी मिलता है और नीति तथा दंडशास्त्र पर उसका असाधारण अधिकार रहता है। वो बाल्यावस्था में उदर रोग तथा वृद्धावस्था में वात रोग से पीड़ित रहता है।

जन्मकुंडली में बुध के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. आगे से चौड़ा और पीछे से सकरा (शेर मुंहा) मकान होगा जिसमें अपनी गृहस्थी के साथ रहना भारी नुकसानदेह होगा। ऐसी जगह पर कारोबार करना फायदेमंद होगा जिससे बरकत होगी और दौलत का लाभ होगा।

२. कुंडली में दूसरा घर शनि का है और बुध शनि के साथ दोस्ताना सलूक करता है जबकि शनि एक मक्कार ग्रह है जो दिखावे के लिए तो दोस्त बना रहता है मगर दिल से उसे कभी दोस्त कबूल नहीं करता, किन्तु बुध और शनि का असर उम्दा होगा और बुध अकेला दोगुना नेक होगा।

३. शनि मंदा होगा तो शख्स शराबी कबाबी होगा। जुबान का चस्का खराबी की पहली निशानी होगी। दिखावे के लिए तो शनि बुध के इशारे पर चलेगा किन्तु असल में मक्कारी उसकी बुनियाद होगी।

४. ऐसा शख्स शरारती, मतलब परस्त, चालबाज और धोखेबाज, खुद शर्मसार व हुनरमंद होगा।
५. शेर दहाने वाला मकान जंगी तिजारती काम और मर्दों की बरकत मगर औरतों और बच्चों के लिए गैर मुबारिक होगा।

ग्यारहवां घर—कुंडली के ग्यारहवें घर में बुध हो तो जातक शास्त्र-चिंतक, अपने कुल का पोषक, सुन्दर नेत्रों वाला, धन और स्त्रियों से युक्त, दीर्घायु, गायनप्रिय, पुत्रवान्, शत्रुनाशक, यशस्वी, अधिक कन्या सन्तान वाला, सामुद्रिक तथा ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता होता है। यदि एकादश भाव (ग्यारहवें घर) में बुध ग्रह उच्च राशि का अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक शुभ कर्मों से धनालाभ करता है और लेखन कला के द्वारा धन अर्जित करता है। जिसकी जन्मकुंडली में लग्न से ग्यारहवें घर में मंगल हो तो जातक अपने शत्रुओं का नाश करने वाला होता है और अभागा होता हुआ भी अपने आपको भाग्यवान् समझता है। गाय, घोड़े आदि के व्यापार में उसे विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक न्यायप्रिय, साहसी, झगड़ालू, क्रोधी, दंभी और धैर्यवान् होता है। बाल्यावस्था में वो उदर रोग से, युवावस्था में स्वस्थ और वृद्धावस्था में मंदाग्नि रोग से पीड़ित रहता है।

जन्मकुंडली में बुध के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. पैदाईश से लेकर चौंतीस साला उम्र तक ऐसा मंदा असर देगा कि एक मुर्दे की तरह किस्मत के हाल में बर्बाद होगा और चन्द्र, बृहस्पति व शनि का फल मंदा करता रहेगा।
२. बुध का शुभ/अशुभ होना बृहस्पति की हालत पर निर्भर होगा।
३. आधी उम्र गुजरने के बाद आराम मिलेगा। बुध मददगार और तारने वाला होगा। जरो दौलत की सब कमी दूर होगी।
४. दिन का वक्त कम खुशी का होगा मगर रात शहाना हालत हमेशा आराम और खुशी की होगी।
५. शनि बुध के फेर में होगा।
६. दौलत की बर्बादी होगी, मन को चैन न मिलेगा और सख्त मेहनत करने पर भी मेहनत का पूरा फल न मिलेगा। किसी साधु या फकीर आदि से कोई तावीज इत्यादि लेकर बांधना या घर पर रखना नुकसानदेह साबित होगा, जबकि मंदी हालत में तांबे के सिक्के को गले में लटकाए रखना फायदेमंद रहेगा।

बारहवां घर—कुंडली के बारहवें घर में बुध मौजूद हो तो जातक धनहीन, दूसरे के धन और स्त्री में लोभ करने वाला, उपकारी, व्यसन से रहित, वकील, धर्मात्मा, कुलीन, गुणी, बंधुओं को संतुष्ट रखने वाला, शास्त्रों का ज्ञाता होता है। बुध यदि स्वग्रही अथवा शुभ ग्रह से युक्त होकर बारहवें घर में मौजूद हो तो जातक जीवन में दूसरों की बातों के बहकावे में आकर अपना नुकसान करने वाला तथा धोखा खाने वाला होता है और मानसिक रूप से चिंतित तथा अपयशी होता है। ऐसा जातक फुफ्फुसीय विकार, सिर दर्द, गुप्त रोग तथा वायु विकार से पीड़ित रहता है। वृद्धावस्था में वो स्नायु दुर्बलता से पीड़ित रहता है।

जन्मकुंडली में बुध के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बुध बारहवें घर में हो और बृहस्पति का साथ हो तो इज्जत न खराब होगी न अच्छी होगी मगर शनि के साथ होने पर मालो-दौलत परिवार मिलेगा। दिमाग में रखें, बारहवां घर बृहस्पति का है जिसके साथ बुध दुश्मनी रखता है जबकि बृहस्पति किसी के साथ दुश्मनी नहीं करता, इसलिए इस घर में नीच फल करता है।
२. बहन, बुआ, बेटी, मौसी, फूफी अपने घर दुखिया मगर अपनी ससुराल में बारौनक व खुशहाल होंगी।
३. अक्ल (बुध) के साथ अगर होशियारी (शनि) का साथ मिल जाए तो जहर भी आबेहयात (अमृत) होगा जो मुर्दा को भी जिन्दा कर देगा।
४. बुध खानदान और मालो दौलत के ताल्लुक में आबेहयात का भरा हुआ तालाब होगा।
५. इज्जत, ताकत, दुनियावी शौहरत सब कुछ होगा मगर दौलत की चोरी का नुकसान भी होगा। बेकार के खर्च की वजह से भी दौलत जाया हो सकती है।
६. अपने मतलब के लिए बात बदल लेना और झूठ के हथियार से संगीन तलवारों को स्याह कर देना उसके बायें हाथ का करिश्मा होगा। उसका दिमागी ढांचा उसकी तहरीर के लफ्जों के दायरों को मिट्टी में दबे हुए जुगनुओं की तरह कर देगा जो उसके साथियों के लिए मंदे धोखे से बरी न होगा।
७. दिमाग में आई हुई बात को पूरी करने के लिए सिर से पांव तक अपनी पूरी जिस्मानी ताकत लगा देगा।

८. मंदी हालत की पहली वजह मांसादि खाने और शराबखोरी से शुरू होगी जिस पर झूठ का रंग चढ़ता और आखिर में दगा-फरेब का पैमाना बढ़ता यानी जुबान से सच्चा और अंदर से झूठ के लुच्चेपन का तरीका आम होगा।

९. इस घर में बुध एक ऐसा कोढ़ और खालिस जहर होगा जो अचानक के दम में तमाम जिस्म को फाड़कर दो टुकड़ों में कर देवे।

१०. हवाई काम, व्यापार, लाटरी-सट्टा सब मंदे असर वाले होंगे, पच्चीस साला उम्र में निकाह करके पूरे खानदान को तबाह और परेशान करे।

११. शुक्र के दो भाग यानी बुध और केतु माने गए हैं। बुध बारहवें घर में बैठा हुआ न सिर्फ खुद मंदा होगा बल्कि छठे घर को जहाँ कि बुध के साथ केतु को भी (बाहैसियत) पक्के घर माना है बर्बाद कर देगा। गोया इस तरह करके दोनों हिस्से बुध और केतु नर (पुत्र) औलाद बर्बाद होंगे। बुध बिना शुक्र पागल होगा। फल देगा मगर फल उसका कच्चा ही होगा। उसकी औरत दुखिया, लड़के लड़कियाँ दोनों नामुकम्मल हालत में रह जाने की वजह से अपने वालिद को याद करते होंगे।

१२. अगर जेल खाना नहीं तो पागल खाना जरूर नसीब होगा, बेशक कोई भी कसूर या बीमारी हो। ऐसी हालत में मन्दिर में जाकर सिर टेकना जहमत का बहाना होगा।

बुध के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

जिसकी जन्मलग्न वृष है और उसकी कुंडली के छठे घर में (तुला राशि) शुक्र और शनि है। सूर्य और बुध चौथे घर में है और राहु मंगल आठवें घर में है, तो ऐसे शख्स को हर्निया और गुर्दों की शिकायत जरूर होगी। क्योंकि कुंडली में छठी राशि और उसका मालिक बुध और छठा घर और उसका मालिक शुक्र यानी छह संख्या वाले अंग के सभी प्रतिनिधि पीड़ित हैं।

कन्या राशि सूर्य और शनि के पाप मध्यत्व द्वारा उसका मालिक राहु द्वारा दृष्ट होने की वजह से और छठा घर और उसका मालिक शनि और केतु के प्रभाव (असर) में होने की वजह से। तो ऐसी हालत में छठी राशि और छठे घर के मालिकों को ताकतवर (बलवान्) करना फायदेमंद होगा।

शुक्र को तो हीरा पहनकर बलवान् करें और बुध को बलवान् करने के लिए पन्ना फायदेमंद रत्न साबित होगा। इस प्रक्रिया से शरीर का छठा

अंग दृढ़ और स्वस्थ होता है। बुध ग्रह के बारे में हम एक बात और बताते हैं। अगर किसी बालक की लग्न वृष है और उसके बुध पर शनि तथा राहु का असर पड़ने की वजह से उसका मन लिखने-पढ़ने में नहीं लग रहा, तो ऐसी हालत में दूसरा विद्या के घर का मालिक तथा विद्या के कारण बुध का बलवान् किया जाना जरूरी होगा। इसके लिए बालक को पन्ना पहनवाना चाहिए।

जब किसी जन्मकुंडली में बुध तीसरे घर का मालिक होकर अथवा आठवें घर का मालिक होकर पाप ग्रहों से दुःखी हो तो यह योग अकाल मृत्यु तक दे देता है, इसलिए ऐसी हालत में बुध को बलवान् करने के लिए ज़हाँ पन्ना पहनना चाहिए, वहीं श्री दुर्गा जी की पूजा आदि करना भी लाभदायक होगा। यहाँ यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि अगर ग्यारहवां अथवा चौथे घर का मालिक होकर बुध बहुत दुःखी (पीड़ित) हो तो पिता को अकाल मृत्यु दे सकता है।

बुध शरीर की त्वचा का कारक भी है। जब यह ग्रह सूर्य, चन्द्र अथवा लग्न के साथ मिलकर बैठ जाता है तो त्वचा का पूरी तरह से प्रतिनिधि बन जाता है। ऐसे बुध पर अगर राहु, शनि वगैरा बीमारियाँ देने वाले ग्रहों का असर हो तो त्वचा के अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसी हालत में बुध किसी भी धर में पड़ा हो तो उसका बलवान् किया जाना बहुत जरूरी है। बलवान् करने के लिए पन्ना पहनना लाभदायक है। पन्ना पहनने से बुध बलवान् हो जाता है और त्वचा की बीमारियों से छुटकारा मिल जाता है।

यहाँ चन्द्र को बलवान् करने से और भी जल्दी फायदा होता है। इसके लिए चाँदी की अँगूठी में मोती लगवाकर पहनना चाहिए। अगर किसी का बुध और चन्द्र पीड़ित हो और साथ ही पहले, चौथे व पांचवें घर के मालिक भी मंदे हों तो उन्माद जैसी बीमारी हो जाती है। इसके लिए हीरा पहना जाना ही फायदेमंद रहता है।

दूसरे घर का स्वामी और बुध दोनों छठे घर में मौजूद हों और उन पर राहु तथा शनि की दृष्टि आदि द्वारा प्रभाव हो तो इसका मतलब है यह होगा कि वाणी के दो प्रतिनिधि दूसरे घर का मालिक और बुध दोनों शनि तथा राहु द्वारा दुःखित हैं। इसका फल यह होगा कि जातक की वाणी (आवाज) में रुक-रुककर बोलना अथवा बोलने की ताकत को कदाचित् खो देना होगा। ऐसी हालत में दूसरे घर के मालिक और बुध दोनों को ऊपर बताए तरीके से बलवान् किया जाना जरूरी होगा।

बुध जब अपनी मौजूदगी से अनिष्ट कर रहा हो तो कौड़ियों को जलाकर उनकी राख को उसी दिन दरिया में बहा दें या तांबे के पैसे में सूराख करके दरिया में डाल दें। बुध से संबंधित दान की वस्तु है साबुत मूंग तथा इसको बलवान् करने के लिए रत्न पन्ना है। बुध का देवता दुर्गा जी हैं। जब बुध अनिष्टकारी फल कर रहा हो, तो दुर्गा सप्तशती का पाठ कराना चाहिए। दुर्गाजी का पूजन भी करें।

जिसका बुध अनिष्टकारी हो, उसको अपनी नाक का छेदन कराना लाभकारी होगा।

इसी तरह फिटकरी से दांत साफ करना और लड़कियों की पूजा/सेवा करना भी लाभप्रद रहेगा। अगर बुध के अनिष्टकारी होने की वजह से कोई बीमारी हो रही हो तो फोका कद्दू (जो हलवाई लोग मिठाई बनाने में काम में लाते हैं) धर्म स्थान में दान देना चाहिए।

बुध यदि लग्न में स्थित होकर अनिष्टकारी सिद्ध हो रहा हो तो उसका अनिष्ट प्रभाव मंगल पर जो कि लग्न की प्राकृतिक राशि मेष का स्वामी है, इसलिए मंगल की वस्तुओं का दान देना लाभप्रद रहेगा।

बुध को दान की वस्तुओं में बकरी भी शामिल है, यानी बकरी के दान से भी बुध का अनिष्टकारी प्रभाव शांत हो जाता है।

टोटके

बुध ग्रह यदि प्रतिकूल या अनिष्ट फल प्रदर्शित कर रहा हो, तो इस अनिष्ट के निवारण के लिए अथवा मंगल को अनुकूल करने के लिए निम्न टोटकों का प्रयोग करना चाहिए—

१. चाँदी के ताबीज में विधारा की जड़ रखकर हरे रंग वाले सूती धागे के द्वारा बुधवार को धारण करने से बुध ग्रह का कुप्रभाव दूर होता है।
२. चाँदी या पीतल की अँगूठी घी, सफेद चंदन, शहद और गाय के दूध में डुबोकर कनिष्ठिका उंगली में बुधवार को प्रातःकाल पहननी चाहिए।
३. बुध को खाली बर्तन (कोरा घड़ा) चलते पानी में बहाना लाभदायक होगा।
४. लोहे का छल्ला पहनने से भी ग्रह का अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है।

बुध का शुभ/अशुभ प्रभाव

बुध कुमारावस्था का द्योतक ग्रह है। यदि इसके साथ शैशवावस्था

का द्योतक चन्द्र भी पीड़ित हो और अत्यधिक पीड़ित हो तो फिर प्रबल अरिष्ट की उत्पत्ति समझनी चाहिए, अर्थात् बालक की शीघ्र मृत्यु संभावित है, यदि बृहस्पति उच्च राशि का होकर वक्री होकर और लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो।

बुध की मूलत्रिकोण राशि कन्या है जो कि गुर्दों का प्रतिनिधित्व करती है। जब कन्या राशि, बुध, जन्मकुंडली का छठा घर और छठे घर का स्वामी, सभी पीड़ित हों, विशेषतया तब जबकि ऐसी स्थिति लग्न और चन्द्रलग्न दोनों से हो, तो गुर्दों में कष्ट होता है और इतना कष्ट होता है कि शल्य चिकित्सा के द्वारा गुर्दों को शरीर से बाहर निकाल देने की नौबत आ सकती है।

बुध मस्तिष्क और उसकी शक्ति का भी प्रतिनिधि है। जब यह पीड़ितावस्था को पहुँचता है तो मस्तिष्क के कई प्रकार के कष्ट उत्पन्न कर देता है। यदि लग्नेश बुध पर केतु तथा मंगल का प्रभाव हो तो सिर पर भारी चोट लग्ने का भय रहता है। ऐसी स्थिति में बाल्यकाल में ही बुध को बलवान् करना चाहिए और मंगल तथा केतु की दान, जाप, पूजा, व्रत और दुर्गा राप्तशती के पाठादि के द्वारा शांति करा लेनी चाहिए।

यदि स्वक्षेत्री लग्नस्थ (लग्न का स्वामी) बुध पर शनि तथा राहु का प्रभाव हो अथवा लग्नेश तथा बुध पर उक्त प्रभाव हो तो सिर में बचपन से ही दर्द तथा कष्ट होगा। यदि चन्द्र तथा चौथे घर का स्वामी निर्बल हो तो पागलपन का अथवा मस्तिष्क की दुर्बलता का योग बनता है। ऐसी हालत में चाँदी की अँगूठी में पन्ना लगवाकर पहनना चाहिए और धार्मिक रीति से शांति करवानी चाहिए। यदि लग्नेश बुध, मंगल और केतु के प्रभाव में हो और लग्न भी इन्हीं पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो यह माता के छोटे भाई की हानि का भी योग बनता है। ऐसी हालत में बुध मामा के स्थान अर्थात् छठे घर से आठवें घर का स्वामी (आयु का प्रतिनिधि) होकर प्रबल मारक मंगल और केतु द्वारा पीड़ित है। अतः जहाँ छठे घर के स्वामी को बल देना अभीष्ट होगा, वहाँ बुध को भी पन्ना पहनकर बलवान् करें और मंगल तथा केतु की शांति, उनकी पूजा आदि के द्वारा करानी चाहिए।

बुध जिस घर में बैठा हो, उस घर पर और उसके स्वामी पर सूर्य, शनि और राहु आदि पृथक्ताजनक ग्रहों का प्रभाव पड़ रहा हो तो जातक घर से बार-बार भाग जाने का आदी होता है। यदि ऐसा बुध शुक्र के साथ मिलकर बैठा हो और

उन दोनों पर मंगल और केतु की दृष्टि हो तो यह स्त्री की मृत्यु का योग है। ऐसी हालत में स्त्री के जीवन का उपाय करना चाहिए। अर्थात् चाँदी की अँगूठी में हीरा और पन्ना दोनों लगवाकर पहनना स्त्री की आयु में वृद्धिकारक होगा।

यदि कुंडली स्त्री की हो और बुध व बृहस्पति इकट्ठे होकर मंगल और केतु की दृष्टि में हों तो पति के जीवन का भय समझना चाहिए। ऐसी हालत में स्त्री को पुखराज पहनकर लाभ हो सकता है। यहाँ भी पीड़ित करने वाले ग्रहों की शांति आवश्यक है।

जन्मकुंडली के तीसरे घर में मिथुन राशि हो और मंगल आदि ग्रहों का प्रभाव उस पर पड़ता हो तो यह योग बांह में कष्ट उत्पन्न करने वाला होता है। यदि पाप प्रभाव अधिक हो तो वो हाथ या उस हाथ का कोई हिस्सा कट सकता है। ऐसी हालत में सोने की अँगूठी में पन्ना लगवाकर पहनना चाहिए ताकि बुध बलवान् हो।

साथ ही मंगल आदि पाप प्रभाव डालने वाले ग्रहों को जाप, दान, व्रत आदि से शांत कराना चाहिए। यह योग जातक की छोटी बहन के लिए भी घातक सिद्ध हो सकता है। उपर्युक्त उपाय से ही बहन पर से पाप प्रभाव समाप्त हो जाता है।

यदि ग्रहों की स्थिति उपर्युक्त हो किन्तु मिथुन राशि कुंडली के चौथे घर में हो तो जातक के पिता की अकाल मृत्यु का भय रहता है, क्योंकि बुध सुख फल देने में विख्यात् है और यहाँ पिता को दर्शाने वाले नवमेश (नौवें घर का मालिक या स्वामी) और सूर्य भी पीड़ित होंगे तो पिता को आयु की चिन्ता होगी। ऐसी हालत में चाँदी की अँगूठी में नीलम तथा पन्ना लगवाकर पहनना फायदेमंद साबित होगा।

यदि बुध पांचवें घर का स्वामी होकर नौवें घर में हो और पांचवें घर में अथवा लग्न में राहु मौजूद हो तो राहु की दशा और राहु की भुक्ति में रोगवश बेहोशी हो जाने की संभावना होगी, क्योंकि बुद्धि और चेतना का द्योतक बुध जब बुद्धि भाव का स्वामी होगा तो वो बुद्धि का पक्का प्रतिनिधित्व करेगा। उस पर ह्रासात्मक राहु का प्रभाव और साथ ही राहु का चेतना द्योतक पांचवें और नौवें घरों पर प्रभाव चेतना के ह्रास का कारण बनकर बेहोशी देगा।

कुंडली का पांचवां घर, पांचवें घर का मालिक तथा बृहस्पति पर शनि और बुध का प्रभाव हो और अन्य किसी ग्रह का प्रभाव न हो तो यह योग पेट में अग्निमांद्य को उत्पन्न करता है क्योंकि शनि और बुध ठंडे और नपुंसक ग्रह हैं जो जठराग्नि को दीप्त होने से रोकते हैं। ऐसी हालत में सूर्य और

मंगल को बलवान् करना आवश्यक होगा ताकि अग्नि प्रदीप्त हो। साथ ही पांचवें घर के मालिक को बलवान् करना आवश्यक हैं। बलवान् करने का कार्य रत्न द्वारा और धार्मिक रीति से शांति करके करना चाहिए।

बुध का किसी भी तरह से मंगल आदि के द्वारा पीड़ित होना स्त्री की बड़ी बहनों की अल्पता अथवा अभाव का सूचक है। ऐसी मौसी के जीवन के लिए अथवा स्वास्थ्य के लिए पन्ना पहनना लाभप्रद रहेगा। यदि बुध छठे घर का मालिक होकर कमजोर और दुःखी हो तो माँ के छोटे भाइयों यानी मामाओं की संख्या को न केवल अत्यल्प करता है, बल्कि उनका अभाव भी कर सकता है। ऐसी स्थिति में पन्ना पहनना मामा के स्वास्थ्य के लिए शुभ होगा। यही योग जातक के बड़े भाई को भी अल्पायु दे सकता है।

यदि बुध कुंडली के छठे घर का स्वामी होता हुआ सूर्य, शनि, राहु अथवा इनके द्वारा अधिष्ठित राशियों के स्वामी द्वारा प्रभावित हो तो शरीर के छठें अंग अर्थात् अंतड़ियों के रोगों की संभावना रहती है। हर्निया आदि रोग हो सकता है। यदि पाप प्रभाव अधिक हो तो अंतड़ियों के कैंसर की बीमारी भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में सूर्य, शनि, राहु की पूजा, दान, व्रत करना चाहिए और छठे घर के स्वामी से संबंधित रत्न पहनना चाहिए।

जैसे वृष लग्न हो और शुक्र सिंह राशि में चौथे घर में सूर्य, शनि आदि के पाप मध्यत्व में हो और बुध पर भी पाप प्रभाव हो तो यह अंतड़ियों के कैंसर का योग है, ऐसी हालत में हीरा और पन्ना पहनना लाभकारी होगा।

कुंडली के सातवें घर और उसके स्वामी तथा शुक्र पर केवल शनि, राहु तथा बुध का या इन ग्रहों से अधिष्ठित राशियों के स्वामियों का प्रभाव हो तो यह योग जातक को नपुंसक बनाता है। यदि लग्न के स्वामी और दसवें घर के स्वामी का तथा चौथे घर के स्वामी और सातवें घर के स्वामी का परस्पर दृष्टि आदि संबंध हो जाता हो, विशेषकर जबकि पुरुष की कुंडली में चौथे घर का स्वामी एक स्त्री ग्रह हो और स्त्री की कुंडली में चौथे घर का स्वामी एक पुरुष ग्रह हो तो यह योग जातक को व्यभिचारी बनाता है। कारण यह है कि कुंडली का चौथा घर जनता का है और दसवां घर उसके गुप्त अंग का द्योतक है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि जनता में से किसी अजनबी के शरीर का जातक के शरीर से और उसके गुप्त अंग का इसके गुप्त अंग से संपर्क व्यभिचार की सृष्टि करेगा। ऐसे योग वाले स्त्री या पुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए और भूल से ऐसा हो गया हो तो बृहस्पति को बलवान् करना चाहिए।

यदि पीड़ित बुध आठवें घर में या आठवें घर का स्वामी हो तो यह अकाल मृत्यु का कारण बन जाता है और अगर बुध नौवें घर या उस घर का स्वामी हो तो रिश्ते-नाते में बिगाड़ पैदा हो जाता है, तथा पिता को भी विशेष कष्ट होता है। यदि कुण्डली में मंगल भी पीड़ितावस्था में हो तो पत्नी के छोटे भाई को विशेष कष्ट होता है। यही योग छोटे भाई की पत्नी अथवा छोटी बहन के पति को भी कष्टकारक होगा। इस हालत में पन्ना पहनना लाभकारी हो सकता है।

कुंडली के दसवें घर में बुध पाप प्रभाव में आया हुआ हो तो छोटे बहन-भाइयों के जीवन के लिए भयकारक है, अतः बुध को पन्ना पहनकर बलवान् करना भाई-बहनों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। यदि जन्मकुण्डली में मिथुन अथवा कन्या राशि में बृहस्पति दसवें घर में मौजूद हो और बुध कुंडली के दूसरे घर में हो तो जातक परोपकार के कार्य करने वाला होता है। इस प्रवृत्ति को और गूढ़ करने के लिए चाँदी की अँगूठी में पन्ना अथवा पुखराज पहना जाना चाहिए।

बुध ग्यारहवें घर का स्वामी होकर मंगल के द्वारा पीड़ित हो तो माता की अकाल मृत्यु का कारण होता है, भले ही चंद्र बलवान् हो। अतः बुध को पन्ना पहनकर बलवान् करना अभीष्ट होगा।

कुण्डली में ग्यारहवें घर के मालिक बुध और शुक्र दोनों इकट्ठे हों और दोनों पर मंगल और केतु का प्रभाव हो तो यह योग पुत्रवधू की अल्पायु का द्योतक है। ऐसी हालत में पन्ना और हीरा पहनने से लाभ होता है।

बुध और बृहस्पति इकट्ठे हों और मंगल तथा केतु का प्रभाव हो तो दामाद की अल्पायु होती है। इस स्थिति में पुखराज पहनना चाहिए।

बुध और मंगल एकत्रित हों और उन पर केतु और शनि आदि का प्रभाव हो तो पिता की छोटी बहनों और भाइयों का जीवन अल्प होता है। यहाँ मूंगा पहनने से पिता के बहन-भाइयों के सुख में वृद्धि होती है।

बुध और बृहस्पति साथ हों और मंगल व केतु से पीड़ित हों तो बड़े भाई का जीवन अल्प होता है। इसके लिए बृहस्पति को बलवान् करना चाहिए, जिसके लिए पुखराज धारण करना लाभकारी रहता है।

कुण्डली में यदि बारहवें घर का स्वामी होकर बुध बृहस्पति के साथ अथवा पांचवें घर के स्वामी के साथ मौजूद हो और उन पर मंगल आदि ग्रहों की दृष्टि का प्रभाव हो तो यह योग पुत्र की आयु को कम करता है। इसके लिए बृहस्पति का रत्न पुखराज पहनने से आयु में वृद्धि होती है।

कुछ खास जानकारियां

बुध जब कभी कष्ट की स्थिति में होता है, तो वह अपने मित्र शुक्र को मुसीबत में डालकर अपना बचाव कर लेता है, यानि वे अपनी बला शुक्र के गले में डाल देता है। बुध उच्च वाला व्यक्ति यदि देवी, कन्या, बहन और बुआ आदि का अपमान करेगा, तो उच्च शुक्र अपना प्रभाव नहीं देगा।

पक्का घर	:	७	श्रेष्ठ घर	:	१, २, ४, ५, ६, ७
मन्दे घर	:	३, ८, ९, १२	रंग	:	हरा (सब्ज)
शत्रु ग्रह	:	चन्द्र	मित्र ग्रह	:	सूर्य, शुक्र, राहु
सम ग्रह	:	शनि, बृहस्पति, मंगल, केतु	कार्य	:	खजानें, समुद्री सेना, शिक्षा
उच्च	:	६	नीच	:	१२
बीमारी	:	दांत व नाड़ियों की	समय	:	सायं ४ से ६ बजे तक
दिन	:	बुधवार	मसनुई ग्रह	:	बृहस्पति + राहु

सूर्य को बुध का मित्र इसलिए माना गया है, क्योंकि सूर्य का साथ मिलने पर बुध का दोष नष्ट होकर उसमें अनेक प्रकार के गुण उत्पन्न हो जाते हैं। अभी हमने ऊपर बताया कि बुध का एक और मित्र शुक्र भी है, जिससे बुध को प्रबलता मिलती है, बुध का तीसरा मित्र राहु है, दोनों एक-दूसरे से परस्पर सहयोग करते हैं, ये दोनों किसी कुण्डली में मन्दे घरों में हों, तो जातक जीवित होता हुआ भी मरे के समान हो जाता है, इसलिए इनका अलग-अलग घरों में होना ही अच्छा है।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

बुध आदि ग्रह को कायम रखने के लिए अपनी थाली में से गाय, कुत्ते एवं कौए के लिए रोटी निकालकर बाद में आप खाएं ऐसा करने से स्त्री, पुत्र, धन की प्राप्ति होगी और सेहत भी अच्छी रहेगी।

१. बुध नीच वाले व्यक्ति बुधवार के दिन साबुत मूंग की दाल न खाएं।
२. हरे रंग के कपड़े न पहनें।
३. अपने घर की छत पर चौड़े पत्तों वाले पौधे, चक्की का पुड तथा बांस न रखें।
४. नाक छिदवाकर उसमें १०० दिन तक चांदी डालकर रखें।

५. मंगलवार की रात को मूंग भिगोकर रखें और बुध की प्रातः वह मूंग जानवरों को खिला दें।

पहले घर का उपाय

१. मांस, शराब मछली और अण्डे आदि से परहेज करें।
२. रात में सोते वक्त सिरहाने सौंफ रखा करें।
३. अण्डों का व्यवसाय न करें।
४. अपनी साली से इश्क न लड़ाएं, साली को साथ भी न रखें, वरना वो बदनामो और बर्बादी की वजह बन जाएगी।
५. जो भी काम करते हों, उस पर अडिग रहें।

दूसरे घर का उगाय

१. घर में भेड़-बकरी या तोता न पालें।
२. छोटी कन्याओं की सेवा से लाभ होगा, बुध का मन्दापन दूर होगा।
३. चन्द्र और बृहस्पति का उपाय मददगार होगा।
४. यदि घर में सूत के गोले बने पड़े हों, तो उन्हें खोलकर लच्छी बनाकर रखें, उसमें जातक का नसीब लिपटा होता है।
५. रात को सिरहाने पानी रखकर सोएं और सुबह उठने के बाद उसे पीपल में चढ़ा दें।
६. साली का साथ नुकसानदेह साबित होगा।
७. नाक छेदन कराकर उसमें चांदी पहनें।
८. शराब, मांस और अण्डों का कारोबार न करें।

तीसरे घर का उपाय

१. पीले रंग की कौड़ियां जलाकर दरिया में बहाएं।
२. बुध को बकरी दान करें और पक्षियों की सेवा करते रहें।
३. चन्द्र और केतु के उपाय करें।
४. यदि जातक गंभीर रूप से बीमार पड़ जाए और कोई दवा या दुआ काम न कर रही हो, तो नौ और ग्यारह घर के ग्रहों के रंग के पत्थर जमीन में गाड़ दें।
५. जिस मकान का दरवाजा दक्षिण की ओर हो, उसमें न रहें।
६. गले में मूंगा और चांदी पहनें।

७. रोजाना सूर्य देवता को पानी दें।
८. औलाद की दुःख-तकलीफ को दूर करने के लिए एक या तीन कुत्तों को पालें।
९. नाक छिदवाकर सौ दिन तक उसमें चांदी पहनें।
१०. पानी में रात को साबुत मूंग भिगोकर सुबह जानवरों को खिला दें। खुद उसे न खाएं।

चौथे घर का उपाय

१. मन बेचैन हो तो गले में चांदी की चेन पहनें।
२. धन-दौलत के लिए गले में सोने की जंजीर डालें।
३. ४३ दिनों तक केसर का तिलक लगाएं और उसका सेवन भी करें।
४. बुध नीच के लिए सूर्य का उपाय मददगार होगा।
५. चार सौ ग्राम गुड़ सात रविवार को दरिया में बहाएं।
६. बृहस्पति या सूर्य का उपाय करें।
७. चावल और दूध धर्म-स्थान में दें।
८. मकान के पूर्व की ओर दरवाजे में लाल रंग की वस्तुएं लगाएं।

पांचवें घर का उपाय

१. बाल-बच्चे पैदा करें, उनसे रोटी-रिजक में बरकत होगी।
२. चन्द्र-बृहस्पति का उपाय करें।
३. बुध के मन्दे असर से बचाव के लिए जुबान पर काबू रखें।
४. चन्द्र और सूर्य का साथ मददगार होगा।
५. गले में चांदी की चेन लटकाएं।
६. धागे में सूराख वाला पैसा डालकर गले में पहनने से धन-दौलत बढ़ेगी।
७. आगे से तंग और पीछे से चौड़े मकान में रहें।

छठे घर का उपाय

१. शुक्र नीच की दशा में एक हांडी में दूध भरकर घर से दूर किसी वीराने में जाकर दबा दें।
२. यदि चन्द्र सहायक हो तो गंगाजल की बोतलें खेती वाली जमीन में दबाएं।
३. फूल अपने साथ लेकर ही किसी काम से जाएं।

४. शरीर पर किसी भी रूप में सोना धारण करें।
५. छोटी लड़कियों का पूजन करके उनसे आशीर्वाद लें।
६. औरत (पत्नी) अपनी बायीं उंगली में चांदी का छल्ला पहनें।
७. जब केतु-चन्द्र मन्दे हों तो चांदी की अंगूठी दाएं हाथ की उंगली में पहनें।
८. शुक्र मन्दा हो तो बारिश का पानी बोतल में भरकर खेती की जमीन में दो हाथ गहरे में दबाएं।

सातवें घर का उपाय

१. साली का साथ न रखें।
२. ब्याही बहन, लड़की, बुआ, मौसी अथवा साली के पास न रहें।
३. किसी से साझेदारी न करें।
४. काले रंग की भोंडी गाय की सेवा से मदद मिलेगी। मन्दा बुध भी उत्तम फल देगा।
५. हाथ से किए गए काम से दौलत में इजाफा होगा।

आठवें घर का उपाय

१. जब भी वर्षफल में बुध नम्बर ८ आ जाए, तो जन्मदिन शुरू होने से ३४ दिन पहले मिट्टी के पात्र में देशी खांड भरकर मिट्टी के ढक्कन से ढांप कर श्मशान या वीराने में जाकर दबाएं। दूसरे बुधवार को तांबे की गड़वी में साबुत मूंग भरकर तांबे के ढक्कन को टांके से बन्द करके दरिया में बहाएं।
२. ३४ मावे के पेड़े, जिनमें खांड न मिली हो, कुत्तों को खिलाएं या दरिया में डालें।
३. मन्दे ग्रहों से बचने के लिए गेहूं, गुड़, गन्दुम, तांबा, मछली, भैंस आदि का दान करें।
४. अगर ससुराल से अनबन हो तो अपने घर की सीढ़ियां तुड़वाकर नई बनवा लें।
५. देवी या कन्याओं का पूजन करें।
६. पीला कपड़ा दरिया के पानी से ४३ दिनों तक धोएं।
७. मिट्टी के बर्तन में मशरूम रखकर मन्दिर में रख आएं।
८. घर के पूजा-स्थल को बदल दें।

९. किसी बर्तन में दूध या औलों का पानी भरकर मकान की छत पर रखें।
११. मिट्टी की हांडी में खांड या शहद भरकर, उसका मुंह बन्द करके श्मशान या विराने में जाकर दबाएं।
१२. लड़की की नाक में चांदी का छल्ला डालें। उसे लाल रंग के कपड़े न पहनाएं।
१३. सिरहाने सौंफ की थैली रखें।
१४. छोटे-से तांबे के कलश में साबुत मूंग भरकर दरिया में बहाएं।
१५. मन्दे बुध के वक्त चन्द्र की चीजें उससे सम्बन्धित रिश्तेदार को दें।

नौवें घर का उपाय

१. चांदी घर की जमीन में दबाएं तथा शरीर पर किसी भी रूप में चांदी धारण करें।
२. हरे रंग के कपड़े न पहनें, कहीं भी हरे रंग को इस्तेमाल न करें।
३. बकरी या तोता घर में न पालें।
४. लोहे की लाल रंगी हुई गोली अपने पास रखें।
५. चने की दाल और चावल नदी में बहाएं।
६. नीच बुध के असर को दूर करने के लिए नाक छेदन जरूर कराएं। अगर इससे नीच बुध शमन न हों, तो पीले चावल नदी में बहाएं।
७. पीले केसर का तिलक लगाया करें।
८. लाल गाय को रोटी खिलाएं।
९. बुध की वस्तुएं—बहन, बुआ या साली को कुछ भी दान देकर घर से विदा कर दें। उन्हें अपने साथ रखने से परहेज करें।
१०. बृहस्पति-चन्द्र की चीजें घर में कायम करें।
११. नए कपड़े को दरिया के पानी में धोकर अथवा उस पानी का छींटा देकर पहनें।
१२. बृहस्पति के रंग के कपड़े पहनें।
१३. सुबह उठकर सबसे पहले फिटकरी के पानी से दांतों को साफ करें।

दसवें घर का उपाय

१. दूध, चावल और चांदी मन्दिर में चढ़ाएं।
२. अपने भोजन का एक भाग कौओं को खिलाएं।
३. शनि का उपाय करें।
४. मांस-मछली और शराब आदि का इस्तेमाल न करें।
५. शेर के मुंहाने वाले मकान में निवास न करें। लाभ के लिए वहां कोई कारोबार करें।
६. ठेकेदारी के काम से लाभ मिलेगा।
७. जीवन में एक बार समुद्री यात्रा जरूर करें।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. अपनी विधवा बहन को साथ में न रखें। दूर रहकर उसकी मदद करें।
२. किसी मौलवी-मुल्ला या तांत्रिक से कोई ताबीज या यंत्र न लें। न ही उसे बांधें और न ही घर-दुकान में रखें।
३. हरे रंग से दूर रहें, इस रंग का कोई भी पत्थर या रत्न न पहनें।
४. लोहे की लाल रंग की गोली हमेशा अपनी जेब में रखें।
५. मन्दे बुध की दशा में छेद वाला तांबे का सिक्का जेब में डालें।

नोट—जब कभी किसी कारण से बुध नीच हो रहा हो तो ३४ साल तक का वक्त भारी दुःखों में बीतता है।

बारहवें घर का उपाय

१. नाक छेदन जरूर कराएं।
२. पीला धागा हर समय गले में डाले रखें।
३. खाली घड़ा दरिया में बहाएं।
४. काला या सफेद कुत्ता पालें।
५. रोज गणेशजी की पूजा करें।
६. बुध के नीच असर को बृहस्पति और केतु की सहायता से दूर करें।
७. माथे पर केसर का टीका लगाया करें।
८. २५वें साल में शादी न करें।
९. लोहे की अंगूठी अथवा स्टील का कड़ा पहनें। ❑❑

रोग एवं कष्ट का कारक ग्रह शनि

शनि का जन्म सूर्य की दूसरी पत्नी छाया के गर्भ से हुआ था, किन्तु शनि के सांवले रंग को देखकर सूर्य असमंजस में पड़ गया और उसने अपनी पत्नी पर यह आरोप लगाया कि शनि उसके वीर्य से उत्पन्न नहीं हुआ है। उसी समय से शनि और सूर्य में ठनी हुई है। दोनों एक-दूसरे को अपना शत्रु मानते हैं, तथा एक-दूसरे की काट में लगे रहते हैं।

ग्रह मंडल में शनि को सेवक का पद प्राप्त है। सौर मंडल की बारह राशियों में केवल मकर और कुंभ राशि शनि के प्रभाव क्षेत्र में आती हैं। अर्थात् शनि को इन्हीं दोनों राशियों का स्वामित्व मिला हुआ है। यह तुला राशि के २० अंश तक ऊंचा और मेष राशि के २० अंश तक नीचा माना जाता है। कुंडली के सातवें घर में शनि को बलवान् कहा गया है। यह किसी वक्री ग्रह अथवा चंद्र के साथ युति करके चेष्टाबली होता है।

बुध और शुक्र से शनि का बहुत अच्छा दोस्ताना है। बृहस्पति को यह न अपना दोस्त मानता है और न ही दुश्मन समझता है। यद्यपि सूर्य और मंगल इसके पक्के दुश्मनों में जाने जाते हैं। यह बात और है कि सूर्य शनि से दुश्मनी रखता है और शनि मंगल को अपना दुश्मन मानता है।

बुध के साथ सात्त्विक तथा शुक्र के साथ राजसिक संबंध रखता है। इसे कर्म तथा भाव का कारक माना गया है। इसका विशेष अधिकार मनुष्य की जंघाओं पर रहता है। एक राशि पर यह अढ़ाई वर्ष कायम रहता है। विंशोत्तरी शनि की महादशा १९ वर्ष की होती है। जन्मकुंडली में शनि की स्थिति से आयु, मृत्यु, चौर्यकर्म, द्रव्य की हानि, दिवाला, बंधन, जेल, मुकदमा, फांसी, दुश्मनी, त्यागपत्र, बाजुओं में पीड़ा, वात, गठिया एवं वायु-संबंधी रोग तथा दुष्कर्म आदि का ज्ञान भी इसी ग्रह के द्वारा किया जाता है।

बलवान् स्व-राशिस्थ या ऊंचे (उच्च के) शनि की दशा में जातक को द्रव्य की विशेष प्राप्ति होती है। विदेश यात्रा के योग भी स्वतः बन सकते हैं,

किन्तु ऐसी यात्रा से धन का कोई विशेष लाभ नहीं होता। मुकदमें में उसकी जीत होती है और वो विलास तथा ऐशो-आराम का जीवन बिताता है। शनि नीच राशि में हो तो जातक को मर्म स्थान की पीड़ा से दुःख भोगना पड़ता है। पूर्णबली शनि की दशा में जातक का नया घर बनता है। जन्म-स्थान का निर्माण होता है एवं राज्यपक्ष में उन्नति होती है। मध्यबली शनि की दशा में वाहन नष्ट हो जाता है। तस्करी, झूठ, कपट अथवा ठगी के कार्यों से धन-दौलत मिलती है। प्रौढ़ अथवा वृद्धा स्त्री के साथ संगम होता है तथा भोजन व वस्त्र-संबंधी समस्याओं से जातक चिंताग्रस्त रहता है। अल्पबली शनि की दशा में जातक को चोरी आदि का सामना करना पड़ता है अथवा वो ठगी का शिकार होता है। शीत तथा वात के कोप से कई रोग उत्पन्न होने लगते हैं। झूठे कलंक से सामाजिक सम्मान का पतन होता है एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। जबकि नष्टबली शनि की दशा पुरुषों को कई प्रकार के व्यसन सिखा देती है। उसे पुत्र, मित्र आदि के विरोधों का सामना करना पड़ता है तथा किसी आकस्मिक् संकट से वो मरणतुल्य हालत में पहुंच जाता है।

शनि का विशेष फल जीवन के आरम्भ अथवा अन्त में प्राप्त होता है। इसकी गणना पाप ग्रहों में की जाती है। जन्मकुंडली में शनि जिस घर में बैठता है, वहां से तीसरे तथा दसवें घर को एक चरण दृष्टि से, पांचवें और नौवें घर को दूसरी दृष्टि से तथा चौथे व आठवें घर को तीन चरण दृष्टि से और सातवें, तीसरे एवं दसवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह जातक के जीवन में ३५ से ४२ वर्ष की अवस्था में विशेष फल देता है।

बारह घरों में शनि का फल

पहला घर—जन्मकुंडली में जिसके पहले घर (लग्न) में शनि हो तो वो जातक संपत्तिशाली, काम-लोलुप, शोक करने वाला तथा मन्द दृष्टि का होता है। वो स्वयं रुग्ण रहता हुआ भी शत्रुओं का विनाश करने में सफल रहता है। यदि तुला तथा मकर लग्न हो तो शनि बहुत शुभ फल प्रदान करता है। यदि इसके अलावा अन्य राशियों का लग्न हो तो शनि अपनी दशा में हीन फल देता है। ऐसे जातक का बाल्यकाल रोगमय बीतता है। वो वात रोगी, कफ प्रकृति का, व्रण रोगी तथा किसी प्रकार के त्वचीय रोग से ग्रस्त होता है। अगर पहले घर में शनि कर्क राशि में मौजूद हो, तो जातक श्वास रोग से पीड़ित रहता है। इसी प्रकार कुंडली के पहले घर में शनि कन्या राशि में हो तो जातक को पित्त आदि रोग से ग्रसित रखता है।

जन्मकुंडली में शनि के पहले घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. नेक हालत में शनिश्चर के मुतल्लका सम्मान का फल उत्तम होगा।
२. शनिश्चर (शनि) सिर्फ एक आंख का मालिक होगा। अगर मेहरबान हुआ तो ताकतवर और दौलतमन्द बना देगा, अगर बर्खलाफ (विपरीत) हुआ तो पेट के लिए रोटी भी खत्म करा देगा। दाने-दाने को मोहताज करेगा और जिंदगी को जहन्नुम बना देगा।
३. कुंडली के पहले घर में बैठा शनि खुराक रिजक और माया दौलत पर भारी असर करता है।
४. मां वाप तो बेटे की खुशी में बाजे बजवाने में लगे होंगे मगर अजल का फरिश्ता उन सब चीजों की जो कुछ भी पैदाईश के दिन घर में मौजूद हों, नीलामी के लिए सूची बनवाता होगा। या जन्मदिन का सरमाया व शान उजड़ कर ही खत्म होवे या नीलाम हो।
५. बुध मन्दा तालीम की अधूरी निशानी होगा।
६. अगर मंगल कुंडली के छठे या बारहवें घर में हो तो धन दौलत व ताल्लुकात में ज्यादती होगी। शनि माया दौलत को बेशुमार मगर तादाद मेम्बरान खानदान की ज्यादती और उन हरेक की जाती कमाई की बरकत की कोई शर्त न होगी।
७. शनि खुश्क रिजक व भगवान् की तरह पालने की हिम्मत का मालिक होगा और शुक्र लक्ष्मी साथ लाये हुए खजाने का दाता होगा।
८. कुंडली में चन्द्र उम्दा हालत में हो और लड़का पैदा हो तो घर में दौलत की कोई कमी न रहेगी।
९. जिस्म पर हद से ज्यादा बाल हों तो यह निर्धन होने की निशानी है।
१०. शराबखोरी या इश्क जवानी सब मन्दी हालत का बहाना होंगे।
११. ऐसा मकान जिसका दरवाजा पश्चिम की ओर हो या दरवाजा पश्चिम की ओर बनेगा तो शनि मन्दा असर देगा। जमीन में सुरमा दबाना, बड़ के दरख्त की जड़ के दूध से तिलक लगाना पाप व जहमत बीमारी में मदद देगा। मन्दी माली हालत में सूरज (सूर्य) की मदद मुबारिक होगी।
१२. शनि जब मन्दी हालत में होगा तो तालीम, दौलत और औरत की हालत मन्दी होगी।
१३. अपनी उम्र खुद लम्बी होगी, रिश्तेदार बुरा असर देंगे, पिता की हालत

मन्दी होगी और ऐसी मन्दी हालत में किस्मत की बदनसीबी मुंह चिढ़ाएगी।

१४. शनि, राहु और केतु तीनों का असर कारोबार में मंदा होगा।

दूसरा घर—यदि जन्मकुंडली में शनि दूसरे घर में मौजूद हो तो जातक मानसिक रूप से चिंतित और दुःखी रहता है, सुख की खोज में वो इधर-उधर भागा फिरता रहता है, लेकिन उसके मन को कभी शांति नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति मुख-रोगी, साधु-संन्यासियों को कटु वचन कहने वाला, भ्रातृ-वियोगी तथा सोने का संग्रह करने वाला होता है। यदि दूसरे घर में शनि पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है तथा जातक नीच कर्म करके लोक-निंदित होता है। उसको जीवन में शस्त्रभय बना रहता है।

जन्मकुंडली में शनि के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. उम्दा सेहत का मालिक मगर ईमान के दर पर कम ही जाने वाला होगा। जाहिरा बेवकूफ मगर गिनती और अक्ल में मानिंद चीज वजीर होगा। खुद सुखिया और रहमदिल व काबिल होगा। निर्धन कभी न होगा और किसी को कुछ न देगा, बल्कि गुरु की शरण का ध्यान रखने वाला जद्दी जमीनों का मालिक होगा।
२. जब तक जिंदा रहे अपनी खुद मुख्तयारी और नम्बरदारी या खुद काम करने के दिन से खुद कारोबार करते रहने के वक्त तक उम्दा हालत, खुश व हस्व हैसियत गुजरान होगी।
३. संन्यासी, उदासी, अलहदगी, गोशानंदी (गुप्त) की ताकत का मालिक होगा।
४. हद दर्जा की उदासी का मालिक होगा।
५. माता का सुख और लम्बी उम्र मगर पिता बर्बाद होगा।
६. अक्ल की बारीकी और खुदाई पहुंच दर्जा गाल होगी।
७. शनि का जाती भला या बुरा असर सिर्फ शनि की अशियाँ (वस्तु) पर करेगा।
८. मुल्की लहर का मालिक, पादरी, कर्म धर्म वाला, सोचकर कम खर्च करने वाला, दौलतमंद मगर हासिद (ईर्ष्यालु) और कंजूस। तबियत का गुलाम, इरादा कच्चा पक्का, मुर्दा दिल, साधु और संतों के ख्यालात वाला, हर जगह हौंसले का मालिक। मंदी हालत में मंदी शौहरत को पसंद करने वाला।

९. ३४ साला उम्र तक कोई लड़की पैदा हो और वो लड़की अपने ससुराल में दे दे तो लड़की ससुराल के लिए अमृतकुंड का सबूत देगी जब तक कि वो अपने माता-पिता की कमाई से परवरिश या गुजरान (जीविका) शुरू न करे।

१०. नंगे पांव मन्दिर में जाकर भूल मान लेना नामहानि बला के बुरे असर से देगा। काली या दो रंग की भैंस मनहूस साबित होगी।

११. बुरी शोहरत और खुद पसन्दी का मालिक होगा। मशहूर ज्वारिया और दिमागी वहम का मालिक होगा मगर आमदन खर्च की जमा तफरीक बराबर होगी।

१२. २५ से ४० साला उम्र तक हमेशा बीमारी का सामना करता रहेगा।

तीसरा घर—जिस जातक की जन्मकुंडली के तीसरे घर में शनि होता है वो मातृ सुख से हीन, श्रेष्ठ वक्ता, सुंदर, प्रभावोत्पादक भाषण देने वाला उद्योगहीन होता है। उसका भाग्य सदैव विघ्नों से घिरा रहता है। ऐसा जातक निरोग रहने वाला, विद्वान, मल्ल कुश्ती लड़ने का शौकीन, विवेकी तथा शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। तीसरे घर में शनि यदि उच्च का हो तो जातक को भाग्योद्य कारक तथा साहसी बनाता है।

जन्मकुंडली में शनि के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुत्ता पालना हर तरह से लाभ करेगा। अगर कुत्ता न रखें और कोई कुत्ता काट ले तो शनि जरूर बरबादी करेगा।

२. गैर शख्स की मदद पर होगा।

३. बेहुनर और ऐयाश होगा। अपने भाई बंद की खराबी का सबब होगा। माली हालत में बहुत कमजोर होगा। केतु का उपाय मददगार होगा।

४. नजर की दवाई मुफ्त बांटने से अपनी नजर में बरकत होगी।

५. मकान के आखिर पर अंधेरी कोठरी वास्ते धन दौलत मुबारिक होगी।

६. उम्र की हिफाजत होती रहेगी जब तक जुबान के चस्के के लिए शराबी और कबाबी न हो।

७. शनि के मुतल्लका कारोबार व रिश्तेदार उत्तम फल देंगे।

८. चोरी, दौलत का नुकसान दीगर खराबियाँ आम होंगी।

चौथा घर—जन्मकुंडली के चौथे घर में शनि हो तो जातक आँखों का रोगी, वात, पित्त प्रकृति वाला तथा मानसिक रोगी होता है। उसे पिता का धन प्राप्त नहीं होता और बंधु-बांधवों की तरफ से उसे दुःख मिलता है,

कुल की हानि होती है तथा ऐसा व्यक्ति माता-पिता को दुःख देने वाला, बलहीन, अपयशी, शीघ्र क्रोध से भड़क उठने वाला, कपटी, धूर्त्त तथा उदासीन होता है। यदि चौथे घर में शनि वक्री होकर विद्यमान हो तो जातक आजीवन रोगी बना रहता है। यदि चौथे घर में शनि और आठवें घर के स्वामी की युति हो तो जातक तथा उसकी माता के लिए अनिष्टकारक होता है। इसी प्रकार यदि किसी क्रूर ग्रह के साथ शनि युति करते हुए चौथे घर में मौजूद हो तो जातक की आँखों की रोशनी बहुत कम होती है।

जन्मकुंडली में शनि के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. शनि की मुतल्लका अशियाँ से मंदी सेहत में शफा होगी बल्कि आजुर्दा हालत और गरीबी वगैरा के वक्त शनि के कारोबार या रिश्तेदार मुतल्लका शनि मददगार होगा। शनि की चीजें या हकीमी पेशा और जहरीले जानवरों के काटे का इलाज मुबारक और जहर खुद अपनी दवाई का काम देगा।
२. वाल्दैन का सुख सागर व अपनी गृहस्थी व दुनियावी सुख सागर लम्बा अर्सा और उत्तम होगा।
३. रात का पिया दूध जहर का काम करेगा।
४. छाती पर बाल न हों तो वो बेएतबार होगा।
५. कुंडली के चौथे घर में शनि बेशक बैठा हो मगर यह घर चन्द्र का है, अतः इस घर पर दोनों का मिला-जुला प्रभाव होगा और इस प्रभाव के कारण पानी से मौत का खतरा होगा। धन, दौलत, बर्बाद, जायदाद, जद्दी के कोयले करेगा।
६. रात के वक्त मकान की बुनियाद रखने से शनि मंदा और बुरा फल देगा।

पांचवां घर—जिस जातक की कुंडली में शनि पांचवें घर में होता है, वो पुत्र की प्राप्ति करता है। उसकी पत्नी हमेशा बीमार रहती है, जिस वजह से वो फिक्रमंद रहता है। ऐसा व्यक्ति मतिमंद, कुल धन नाशक, भाग्यवान्, कार्यकर्त्ता तथा शास्त्रप्रिय होता है। यदि जन्मकुंडली में शनि पांचवें घर में नीच राशि का होकर विद्यमान हो तो जातक हृदय रोगी, गुप्त रोगी तथा अपयशी होता है। जातक को जल में डूबने का भय आजीवन बना रहता है, छठे वर्ष में अग्नि पीड़ा होती है एवं वो कामुक स्वभाव का होता है।

विशेष—शनि कुंडली के जिस पांचवें घर में मौजूद है, वो घर शनि के शत्रु पिता सूर्य का है। यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पिता

और पुत्र के इस झगड़े में केतु की बर्बादी होती है, जिस कारण पुत्र का सुख कम होता है।

जन्मकुंडली में शनि के पांचवें घर के बारे मे लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुंडली के पांचवें घर में शनि ताकतवर होकर बैठा हो तो केतु के असर से औलाद का सुख कम होगा और अगर केतु कुंडली के उत्तम स्थान पर हो तो पुत्र के सुख को बढ़ा देता है। बुध और मंगल के मेल से शनि की हालत मंदी हो जाती है।

२. वर्षफल के मुताबिक शनि का औलाद पर कोई बुरा असर न होगा और किसी उपाय की भी जरूरत न होगी। औलाद की तादाद और उम्र पर भी बुरा असर न होने पाएगा। मगर ऐसी औलाद वाल्दैन के कोई कारामद साबित न होगी और अपने घर के साजो–सामान की खुद ही चोर होगी।

३. कुंडली में औलाद की हालत केतु से और मकान की हालत राहु से पता चल जाएगी। चाहे कुछ भी हो, ऐसा शख्स लावल्द कभी न होगा। खुद्दारी की तबियत का मालिक होगा।

४. खुद अपने बनाए हुए मकान या खरीदे हुए मकान औलाद की कुर्बानी लेंगे मगर औलाद के बनाए हुए या खरीदे हुए मकान कभी बुरा फल न देंगे। वास्ते औलाद जद्दी मकान में मंगल या बृहस्पति की मुतल्लका अशियों (वस्तुओं) को कायम करना मुबारिक होगा।

५. छानबीन की आदत से उम्दा जिंदगी बना लेने वाला होगा। औलाद बढ़ती ही होगी।

६. मकान बनाने में कामयाबी मिलेगी।

७. पहला लड़का कायम रहे या न रहे मगर औलाद पर पांचवें घर के शनि का बुरा असर न होगा।

८. मंदी हालत के कुत्ते को पालना मुबारिक फल देगा।

९. धर्म स्थान में बादाम चढ़ाकर आधे वापस लाकर घर में रखने से शनि का अनिष्ट फल बाकी नहीं रहेगा।

१०. औलाद के जन्मदिन पर मीठी की जगह नमकीन चीजें बांटना मुबारिक होगा।

११. तमाम जिस्म पर बालों की तादाद बहुत ज्यादा हो तो शख्स चोर या फरेबी होगा। मंद भाग्य और बदनसीब होगा, मुकदमा जहमत बीमारी का आम झगड़ा होगा।

१२. मंदे वक्त किसी की दौलत जले, किसी की औलाद बर्बाद हो और कोई खुद ही अपने जिस्म और नजर पर मंदा हो बैठे।

छठा घर—यदि जन्मकुंडली में शनि छठे घर में मौजूद हो तो जातक कंठ रोगी, श्वास रोगी तथा तीव्र जठराग्नि वाला होता है। वो विधर्मियों द्वारा लाभ अर्जित करता है। बलवान्, धैर्यवान् तथा वीर्यवान् होता हुआ भी ऐसा जातक कमर के दर्द से दुःखित रहता है। साथ ही बड़े-बड़े कार्य करने वाला, अरिष्ट नाशक, पराक्रमी एवं शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। यदि उच्च राशि का शनि छठे घर में मौजूद हो तो जातक प्रफुल्लचित्त, दीर्घायु तथा सभी मनोकामना को पूर्ण करने वाला होता है। जातक को बाल्यकाल में बहुत चोट लगती है तथा वो व्रणयुक्त होता है। यदि शनि आठवें घर का मालिक होकर, छठे घर में ही मौजूद हो तो जातक को वातशूल होता है। इसी प्रकार मिथुन, कन्या, धनु अथवा मीन राशिस्थ शनि षष्ठ भाव (छठे घर) में मौजूद हो तो जातक को क्षय रोग अथवा संधिवात रोग होता है।

विशेष—छठे घर को पाताल माना जाता है और यह बुध व केतु से प्रभावित रहता है। दोनों ग्रह एक-दूसरे के शत्रु हैं और शनि दोनों का मित्र है, इसलिए शनि को प्रभावशाली रखने से शनि, बुध व केतु तीनों का फल उम्दा होगा। शनि छठे घर में बैठा अपनी उल्टी दृष्टि से कुंडली के दूसरे घर को देखता हुआ, उसमें मौजूद ग्रह को हानि पहुँचाता है और यह भी नहीं सोचता कि उस दूसरे घर में उस समय उसका मित्र ग्रह बैठा है या शत्रु ग्रह। यदि ऐसे समय में राहु कुंडली के आठवें घर से दूसरे घर के ग्रह को देखता हो, तो दूसरे घर का ग्रह बर्बाद होगा और उस घर की वस्तुओं को हानि होगी। आठवां घर मंगल का है जिसके साथ छठे घर के शनि का मिलाप होता रहेगा, इसलिए मंगल की २८ साल की उम्र से पहले शादी करने से केतु का असर जाता रहेगा और वो बेअसर होगा। औलाद के ऐशो-आराम के लिए २८ साल की उम्र गुज़ार देने के बाद शादी करनी चाहिए, उससे पहले शादी का ख्याल तक भी मन में न लाना चाहिए। कुंडली में यदि राहु मंदा होगा तो छठे घर में मौजूद शनि के असर को भी कम करेगा।

जन्मकुंडली में शनि के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जिस्म पर एक ही जगह दो-दो बाल उगे हों तो शख्स अक्लमंद और हुनरमंद होगा। उसे मंदे असर का सामना भी न करना पड़ेगा।
२. माता-पिता, जर व दौलत, अक्ल, हुनर सबकी बरकत होगी।

३. मंदा जमाना सिर्फ ४२ साला उम्र तक होगा, जिसके बाद शनिश्चर हलफिया नेक असर देगा।
४. नालायक बेटे और खोटे सिक्के से परहेज न करें और हिफाजत के साथ रखें क्योंकि बुरे वक्त में यही दोनों काम आएंगे।
५. जब शनि नेक घरों में आ जाए या कुंडली में वर्षफल के मुताबिक नेक असर का होवे तो बुध और बृहस्पति का असर होगा और लड़की की जगह लड़का पैदा होगा।
६. सफर का नतीजा उम्दा होगा, मशहूर खिलाड़ी हर मैदान में उम्दा खेल दिखाएगा।
७. जिसकी कुंडली के छठे घर में शनि होगा, अगर वो अपने जरूरी काम रात में निपटाएगा तो जरूर कामयाबी पाएगा।
८. अगर शनि छठे में बैठा मंदा असर करे तो किसी शीशी में सरसों का तेल भरकर, उस शीशी को पानी से भरे तालाब आदि के तल में जमीन में दबा दें, शनि का मंदा असर खत्म हो जाएगा।

सातवां घर—जन्मकुंडली के सातवें घर में शनि हो तो जातक की स्त्री (पत्नी) सदैव रोगी रहती है। वो परस्त्री, कमजोर शरीर वाला, ठग तथा मिथ्यावादी होता है। उसका धन स्थायी रहता है, पत्नी की भांति पुत्र भी सदा रोगी रहता है। वो किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले हिचकिचाता रहता है। उसकी प्रवृत्ति लोभी होती है। ऐसा जातक क्रोधी, नीच, भ्रमणप्रिय, आलसी और स्त्री का दास होता है। यदि सातवें घर में शनि उच्च राशि का या स्वराशि का होकर बैठा हो तो जातक बहुत अधिक कामुक होता है और यदि सातवें घर में शनि व शुक्र का मिलाप हो तो जातक स्त्री की जननेंद्रियों में विशेष रुचि लेता है और कामशास्त्र में पूर्णतया निपुण होता है।

विशेष—शनि के बुध और शुक्र मित्र हैं जो शनि के घर को प्रभावित करते हैं, यही वजह है कि सातवें घर में शनि शुभ फल देने वाला होगा। शनि के घर में शनि के शुक्र ग्रह जब आएंगे तो यकीनन मंदा असर करेंगे।

जन्मकुंडली में शनि के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. शनि की अशियां (वस्तुएं) कारोबार (लोहा व लोहे से बनी मशीनरी वगैरा) में दौलत का फ़ायदा करेंगी।
२. उम्र लम्बी और सेहत उम्दा होगी।

३. रहम, दान, परोपकार और मदद करने से दौलत का कुआं कभी खाली न होगा, बल्कि पाप के घड़े की तरह भरता ही जाएगा। अपने गृहस्थ को सुखी और बीवी से प्यार-मुहब्बत रखने से इज्जत व दौलत की बढ़ोत्तरी होगी।
४. पराई औरत से इश्क और मुहब्बत, घर बार और जिंदगी, सब कुछ चौपट हो जाएगा।
५. शनि के घर में बुध, शुक्र और राहु उम्दा असर डालेंगे और शत्रु ग्रह होंगे तो मंदा असर देंगे।
६. यहां शनि की बुनियाद शुक्र होगा और असर की ताकत सात गुना होगी। दौलत व हुकूमत का साथ होगा।
७. २२ साला उम्र से पहले शादी करना फायदेमंद होगा और बाद में नुकसानदेय; आंखों का कोई घातक रोग भी हो सकता है।
८. बने बनाये मकानात का लाभ मिलेगा।
९. नेक काम करने, दूसरों की मदद करने से लक्ष्मी की तरह दौलत घर में (पास में) टिकी रहेगी। वरना माया की तरह आगे बढ़ जाएगी, फिर पछताते रहना ही जीवन होगा।
१०. चालाकी और होशियारी के लिये उड़ती हवा को फर्जी तौर पर एक पक्षी मानों तो उस पक्षी की आंख पर मिट्टी डालने की हिम्मत का मालिक होगा।
११. उच्च शनि अपने वक्त में नेक बृहस्पति का काम देगा। या बृहस्पति व शुक्र का फल उम्दा होगा जो दौलत से मालामाल करेगा।
१२. बिना पुल बांधे समुंद्र को पार करने की हिम्मत को रखने वाला होगा।
१३. पराई औरत की मुहब्बत के वक्त अपनी औलाद मंदी बल्कि नदारद ही होगी। सब कुछ बिक जाएगा, लेकिन जब तक पुराने जद्दी मकान की दहलीज कायम रहेगी, सब कुछ वापिस बहाल होगा।
१४. शराबखोरी शनि के मंदे असर की पहली निशानी होगी।
१५. घर में शहद का बर्तन रखना मुबारिक होगा, वरना पोते की शक्ल देखने से पहले ही सारी माया दौलत खत्म हो जाएगी। मंदी हालत में मौत भी गरदन कटने से हो सकती है, इसलिये लड़ाई-झगड़ा करना या खाली मजमा देखना, इससे बचकर रहना जिंदगी का सबूत होगा।

आठवां घर—कुंडली के आठवें घर में शनि हो तो जातक अपने भाइयों स्वजनों से अकारण ही बैर बनाये रखता है। ऐसा जातक स्थूल शरीर

का, आलसी और धूर्त होता है। वाचालता, डरपोकपन, धूर्तता और उदारता उसके विशेष गुण होते हैं। शनि उसके हृदय को संकुचित और कलुषित बना देता है। इसके साथ ही वो अपने जातक को खांसी, व्रण, चर्म रोग, पांडु रोग, हृदय रोग, प्रमेह, भगंदर, रक्त विकार तथा संग्रहणी आदि रोगों से पीड़ित रखता है। जातक को जीवन में कोई-न-कोई रोग सदैव बना रहता है। आठवें घर में नीच राशि का शनि तथा मंगल की युति गुप्तांग रोग से पीड़ित रखती है। आठवें घर में राहु, सूर्य तथा शनि की युति अस्थमा (दमा) और बवासीर जैसे रोग प्रदान करती है।

जन्मकुंडली में शनि आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. इस घर में शनि के जितने साथी ग्रह हों, उतनी ही मौतों के बाद ऐसा शख्स (जिसकी कुंडली के आठवें घर में शनि है) पैदा होता है। आठवां घर मृत्यु स्थान माना गया है जो मंगल से प्रभावित है। खुद शनि भी आठवें घर में मृत्युदाता का काम करता है जो किसी-न-किसी को मारने की इंतजार में रहता है।
२. शराबखोरी से परहेज रखना शनि का असर मंदा न होने देगा।
३. शनि की मंदी हालत में शख्स कम उम्र का बल्कि आखिरी वक्त तक कम दौलत का दीन और दुखिया रहेगा। अगर छाती पर बाल बहुत ज्यादा हों तो उम्र भर गुलामी में गुजार देता है।
४. बुढ़ापे में नजर धोखा देगी।
५. शनि की मंदी हालत में चांदी का टुकड़ा (चंद्र का उपाय) पास में रखकर, किसी पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करना शुभ फल देगा। स्नान करते समय अपने पांव के तलवे के नीचे कोई चीज जरूर रख लें, चाहे वो कोई कंकर ही क्यों न हो, ताकि तलवा ज़मीन से न लग जाये। यह उपाय करने से शनि आदि हरेक ग्रह का अनिष्ट प्रभाव दूर होगा।

नौवां घर—जिसकी जन्मकुंडली के नौवें घर में शनि हो वो जातक नितांत कठोर बुद्धि वाला होता है, किन्तु उसका स्वाभाव मृदु होता है। योग-वैराग्य आदि पर उसकी विशेष श्रद्धा होती है। रजो-प्रधान ऐसा व्यक्ति क्षुद्र बुद्धि के कारण मित्रों तथा बंधुओं के व्यंग बाणों से दुःखी रहता है। ऐसा व्यक्ति या तो कठोर कर्म करता है अथवा शनि की दशा में संन्यासी हो जाता है। यह ज़ातक रोग पालने वाला, भ्रमणशील, कृशदेही, भीरु, धर्मात्मा,

मातृहीन तथा शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। यदि शनि उच्च राशिस्थ अथवा अशुभ हो तो जातक अनेक शास्त्रों का ज्ञाता तथा वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है। नीच का अथवा अशुभ शनि धनहीन, रोगी तथा पिता के लिये अनिष्टकारी होता है।

विशेष—यह घर बृहस्पति का है। इस घर में शनि को उत्तम माना गया है।

जन्मकुंडली में शनि के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. भरा-पूरा कुटुंब और जागीरों का मालिक हमेशा सुखिया (सुखपूर्ण) और लम्बी उम्र वाला होगा। माता-पिता का सुख भी उम्दा होगा। किसी भी हालत में अपने पीछे कर्जा छोड़कर नहीं जाएगा।
२. तीन पुश्त (दादा, बाप और पोता) हर दम कायम का मालिक खुद शनि कभी मंदा असर न देगा।
३. यदि परोपकार करने वाला रहे तो हर तरह से सुखी होगा, दुःख उसको छू भी न पाएगा।
४. ठंडी पहाड़ी हवाएं और ऊंचे पहाड़ की तरह उत्तम और सरसब्ज देखने वाली आंख का मालिक होगा।
५. मकान बनाने की उत्तम तालीम में कामयाब, अगर खुद के लिए दो मकान बनाए तो लम्बी उम्र को भोगने वाला हो।
६. माता-पिता के बाद अगर तकलीफ होवे तो बृहस्पति का उपाय मददगार होगा, वरना मुखालिफ दुनिया उसको चैन से जीने न देवे।
७. घर में पैदाइश के वक्त का गड़ा हुआ पत्थर मुबारिक फल की निशानी होगा।
८. कुंडली में जब शनि उत्तम बैठा हुआ हो और शुक्र कहीं भी हो तो वो उत्तम फल देगा। लेकिन अगर शुक्र कुंडली के दूसरे घर में हो तो शनि पहले से नौ गुना ज्यादा नेक असर होगा, जबकि चंद्र हर हालत में मंदा होगा।
९. औलाद का हाल मंदा न होगा। कुदरत की तरफ से कोई बुरा वाका दुःख न मिलेगा। औरत अमीर खानदान से और खुशकिस्मत होगी।
१०. धर्म स्थान में रोज-रोज जाकर कुछ चढ़ा आने से शनि का होने वाला मंदा असर दूर होगा। सूर्य, चंद्र व बृहस्पति ग्रहों से मुतल्लका अशियां वीरान जगहों पर फैंकना कुदरती आफतों से बचाव में मददगार होंगी। चावलों को दरिया में बहाने से शनि का कुप्रभाव मंदा होगा।

११. खुद अपना बदला लेने वाला वरना औलाद को बदला लेने की नसीहत कर जाने वाला होगा।
१२. धन दौलत पर तवज्जो जरूरत से ज्यादा कभी न देगा।

दसवां घर—यदि जन्मकुंडली में दसवें घर में शनि मौजूद हो तो जातक अपने बाहुबल पर यकीन करने वाला, इल्म ज्योतिष का जानकार, संगीत का प्रेमी तथा उद्यमी होता है। यंत्र तथा चमड़े के काम से उसे लाभ होता है। ऐसे जातक के माता-पिता की मृत्यु बाल्यकाल में ही हो जाती है। अधिकार के घमंड से वो नीच कार्य करने में प्रवृत्त हो जाता है। जीवन में उसका सुख धीरे-धीरे बढ़ता है। जीविका अल्प और युद्ध में विजयश्री मिलती है। यह जातक नेता, न्यायी, राजयोगी, अधिकारी, चतुर, महत्त्वाकांक्षी, परिश्रमी तथा उदर विकार से पीड़ित रहता है। नीच राशि का अथवा अशुभ शनि जांघ अथवा जननेंद्रिय रोग से पीड़ित रखता है। दसवें घर में शनि और मंगल का मिलाप प्रमेह अथवा मधुमेह का रोग प्रदान करता है।

विशेष—कुंडली का यह दसवां घर शनि का अपना घर है, जहां शनि हर तरह से अच्छा है। दूसरे घर के ग्रह बृहस्पति व शुक्र, शनि दसवें घर को भी उत्तम करेंगे। दसवें घर का शनि अगर पहले घर के ग्रह का मददगार हो, तो दो गुना उम्दा फल वरना दसवें घर का शनि पहले घर के ग्रह का पक्का दुश्मन होगा।

जन्मकुंडली में शनि के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. अकेले शनि की हालत में उम्र का हर तीसरा साल उम्दा और शनि चारों तरफ देखने वाली आंख का मालिक या मदद करने वाला होगा। और हर तरह मान, इज्जत, दौलत और बरकत देगा।
२. तरह-तरह की जायदाद का मालिक ध्वजाधारी की तरह शहाना दौलत और आसमान तक की बुलंदी व इज्जत-आबरू पाकर आखरी वक्त ऐसा गिरेगा कि उसका निशान ढूंढना भी मुश्किल होगा, खासकर जबकि वो धर्मात्मा हो, लेकिन अगर शनि की तबियत वाला हुआ तो हर तरह से उम्दा व उत्तम मान का मालिक होगा।
३. उम्र ९० साल के करीब होगी और पिता की उम्र भी लम्बी होगी।
४. जिस कदर दूसरों की इज्जत करे उतनी ही खुद उसकी इज्जत बढ़ती होगी।
५. जब तक शराब का इस्तेमाल न करे, शनि की बरकत बढ़ती रहेगी।

हर तरह की ऐश और सवारी का आराम होगा। ससुराल वाले अमीर होंगे और दौलत देंगे। शनि एक सोये हुये सांप की तरह से होगा, मगर फिर भी असर मुबारिक ही देगा।

६. बाहरी कामों की बजाय एक जगह बैठकर काम करना दौलत का लाभ देगा।

ग्यारहवां घर—यदि जन्मकुंडली में शनि एकादश भाव यानि ग्यारहवें घर में हो तो जातक दीर्घायु, सुखी, व्यवसायी, विद्वान्, रोगहीन, क्रोधी, नीतिवान् तथा कन्याप्रज्ञ होता है। ऐसे जातक के माता-पिता की मृत्यु उसके बचपन में ही हो जाने की संभावना रहती है। पिता द्वारा अर्जित धन नष्ट हो जाता है तथा वो अप्रत्याशित आपत्ति से सदैव दुःखी रहता है। वो प्रपंची, उत्कृष्ट, वीर, दीर्घायु, क्रोधी, शिल्पी, व्यवसायी, विद्वान, गुणीजनों का आदर करने वाला, रोगहीन तथा संतान की ओर से दुःखी होता है। ग्यारहवें घर में दूषित अथवा अशुभ शनि जातक की पत्नी को बंध्या बनाता है।

विशेष—ग्यारहवां घर भी शनि का अपना है जो बृहस्पति से प्रभावित है, इसलिए इस घर में शनि धर्म की मूरत बना रहेगा।

जन्मकुंडली में शनि के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब का मत यह है—

१. शनि खुद किस्मत का हर दम राजा या पाप की स्याही धोने वाला होगा।
२. ४८ साला उम्र में किस्मत का फैसला होगा।
३. दौलतमंद मगर आंखों की होशियारी और फरेब से धन कमाए।
४. शनि नेक हो तो मिट्टी में हाथ डालने पर भी सोना निकले और मंदा हो तो सोना भी मिट्टी हो जाए।
५. शनि बच्चे के हुक्म देने वाला खुद ही बहैसियत विधाता होगा। यानी औलाद के योग बेशक मंदे हों मगर अब ऐसा मनुष्य कभी लावल्द न होगा। वो धर्मी तबीयत और धर्मी आंखों का मालिक होगा।
६. बेशक जमाने का उतार-चढ़ाव देखेगा मगर गुजरान मंदी न होगी।
७. बृहस्पति निकम्मा हो और पिता, पिता तुल्य कोई बुजुर्ग, गुरु या लम्बी उम्र का कोई बूढ़ा, कोई साथी न हो तो बृहस्पति का उपाय मददगार होगा। मंदे वक्त में बृहस्पति का उपाय मदद देगा। जाती स्वभाव के असूल पर अगर शनि मंदा हो तो खुद शनि का उपाय मददगार होगा।
८. मंदी हालत में स्त्री से दूर रहे, लंगोट पर काबू रखे। पानी का भरा

हुआ घड़ा कायम रखना सब ही मंदी हालतों में और हमेशा ही नेक फल देगा। जिस मकान में रहे उसका दरवाजा दक्षिण दिशा में रखने से धन-दौलत की वृद्धि होगी। जब शनि का जाती स्वभाव मंदा हो तो खुद शनि का उपाय मुबारिक होगा। राहु केतु मंदे या उनकी चीज़ों की गंदी निशानियां या ग्रहण निशानी हो तो मंगल का उपाय और उपाय के दिन एक साल लगातार रखें।

९. शनि जब कभी मंदा होगा तो उसकी वस्तुएं शख्स पर बुरा असर करेंगी। ग्यारहवें घर में दो या ज्यादा नर ग्रह (सूर्य) मंगल, बृहस्पति के साथ से शनि काबू होता है और विष नहीं उगल सकता, जिस कदर मुकाबले पर दुश्मन ग्रहों का साथ बढ़ता जाए, तो शनि और भी मंदा होगा। शनि की अशियां (वस्तुएं) का दान पब्लिक लोगों को देते जाना उम्दा होगा। ऐसे में बादाम तकसीम करना, लोहे का सामान (चिमटा, तवा, अंगीठी) गरीबों या साधुओं को देना मदद करेगा।

बारहवां घर—जिसके बारहवें घर में शनि हो, वो अपस्मार, उन्माद रोगी, अविश्वासी, दुर्बल शरीर का आलसी, निर्लज्ज तथा छोटी-छोटी आंखों वाला होता है। विदेश यात्रा करने में विशेष रुचि लेने वाला, अपव्ययी, कटुभाषी, दुष्ट स्वभाव का तथा मामा आदि व पारिवारिक जनों को कष्ट देमे वाला होता है। यदि बारहवें घर में अशुभ शनि हो तो नेत्र पीड़ा करता है और व्यवसाय में हानि पहुंचाता है।

जन्मकुंडली के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. स्त्री ग्रहों के साथ या ताल्लुक हो जाने पर शनि १/४/७/१० घरों में अपने प्रतिनिधि राहु/केतु का बुरा असर देगा, क्योंकि राहु/केतु को शनि की बुनियाद कहा जाता है। यही असूल शनि के साथ स्त्री ग्रह होने पर हर ग्रह पर हो सकता है। अगर मुकाबले पर स्त्री ग्रहों के साथ उसके दुश्मन ग्रह बैठे हों, तो शनि की हालत में स्त्री ग्रहों को कुछ न कहेगा, मगर दुश्मन ग्रहों को जड़ से उखाड़ फेंकेगा।
२. राहु के घर बारह में बैठा हुआ शनि हरेक का भला करने वाला होगा। शनि बीमार को तन्दुरुस्त, दुखिया को सुखिया व उजड़े को आबाद करने वाली आंख का मालिक होगा।
३. शनि की नेक हालत में शख्स दुश्मनों के ताल्लुक में हाथ में त्रिशूल लिये बहादुर की तरह अच्छी और उम्दा जिंदगी गुजारेगा और सामान

खुराक की उसे कमी न होगी। अगर सिर पर गंज हो तो दौलतमंद और सुखिया होगा।

४. शनि का नेक असर कारोबार में दौलत का लाभ कराएगा। रात का पूरा आराम और सुख के लिये विधाता की ताकत का मालिक होगा।

५. ऐसी कुंडली वाला शख्स शनि की छत्र छाया में ही नहीं रहता, बल्कि शनि के ऊंचे फल का लाभ भी उठाता है। अगर राहु/केतु कुंडली के अच्छे घरों में होंगे तो शनि और भी उत्तम फल देने वाला बन जाएगा और अपने शख्स को धन-दौलत से मालामाल कर देगा। मंदे राहु के वक्त दक्षिण के दरवाजे का साथ न सिर्फ माली नुकसान देगा, बल्कि उसका ताकतवर हाथी भी च्यूंटी से मर जाएगा, इसमें चांदी का उपाय मददगार होगा।

दुनिया के फर्जी अंदेशे के सोच-विचार और जागते हुये इंसानी दिमाग में ख्वाबी लहर और क्याफी ख्याल की नकली हरकत का ४२ साला उम्र का जमाना राहु का अहद होगा। सब कुछ होते हुये भी कुछ न होगा। राहु शरीफ की असलियत है। दिमागी लहर का मालिक सब तरह के दुश्मनों से बचाव और उनका नाश करने वाला माना गया है। यह उत्तम असर के वक्त चोट लगने से नीला रंग हो चुके जिस्म को फूंक से ही तंदुरुस्त करने वाला होगा। आसमान के गुंबद और दुनिया के समुद्र दोनों ही का मालिक राहु जिसकी मदद पर हो जाए, कुल दुनिया का सिर उसके सामने झुक जाए। जब कुंडली में मंगल शनि मुश्तरका (जब मंगल खुद अपनी हैसियत में नेक हो) हो तो राहु हमेशा ऊंचा और उत्तम होगा।

६. कुंडली में शनि के बाद के घर में बैठा हुआ राहु शनि से हुक्म लेकर काम करेगा, मगर जब वो शनि से पहले घर में बैठा हो तो खुद हाकिम होगा और शनि को हुक्म देगा।

७. मकान के पीछे वाली कोठरी में रोशनी करने से दौलत का नाश होगा।

८. कुंडली के बारहवें घर में शनि के रहते अगर छठे घर में सूरज हो तो जातक की पत्नी का सुख जाता रहेगा, उसे नष्ट होने से कोई नहीं रोक सकता! शराबी-कबाबी शख्स की औरत होगी उसका कष्ट सौ गुना होगा।

९. राहु मंदा होगा तो हर कदम पर एक नई परेशानी और उलझन ला खड़ी करेगा। इस तरह की परेशानियों और उलझनों से बचाव हेतु

चांदी का उपाय मददगार होगा। यह बर्बाद हो रही दिल की शांति के लिए कारगर उपाय होगा। दली हुई मसूर की दाल, कुछ पैसों के साथ सुबह सवेरे किसी भंगी को देना भी एक उत्तम उपाय है।

१०. मंदे राहु की वजह से जिसने खाट पकड़ ली हो, उसके वजन के बराबर ज़ौ (अनाज) चलते दरिया में बहा देने से बीमारी दूर होगी। अथवा पांच सेर जौ रात को सिरहाने रखकर सुबह जानवरों को खिलाना भी अच्छा रहता है। झगड़ा, अपमान या व्यापार-कारोबार में भारी नुकसान होने पर जिस्म के वजन के बराबर कच्चे कोयले तुलवाकर किसी चलते पानी में बहा दें। ऊपर के सब कुप्रभाव दूर हो जायेंगे।

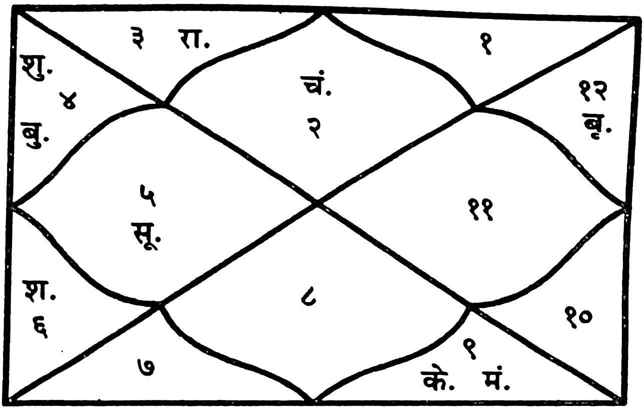
शनि के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

शनि को बलवान् करने से इसकी दृष्टि वहां अधिक हानि करती है, जहां पड़ रही हो, तो भी कुछ एक अवस्थाओं में शनि का बलवान् करना जीवन देता है और ऐसी हालत में उसको बलवान् करना बहुत जरूरी हो जाता है।

उदाहरण के लिये कर्क लग्न हो और शनि कुंडली के नौवें घर में मीन राशि में सूर्य के समीप हो और मंगल आदि पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो इसका तात्पर्य यह होगा कि आयु स्थान का स्वामी और आयुष्यकारक शनि पीड़ित और निर्बल है। परिणाम यह होगा कि शनि की इस निर्बलता के कारण जातक की आयु अल्प होगी, अतः यहां शनि का बलवान् किया जाना अत्यावश्यक होगा। यद्यपि मामा के लिए और स्वयं जातक के स्वास्थ्य के लिये बलवान् किया हुआ शनि अधिक हानिप्रद (नुकसानदेह) होगा।

शनि और राहु दोनों ग्रह अपने प्रभाव द्वारा दुःख देते हैं और यह दुःख प्रायः दर्द का रूप ग्रहण करता है, अतः यदि शनि और राहु दोनों का प्रभाव लग्नों (लग्न, चंद्रलग्न तथा सूर्यलग्न) और उसके स्वामियों पर पड़ता हो तो व्यक्ति (जातक) को पेट के शूल की बीमारी गंभीर रूप में रहती है। शरीर के अन्य अंगों में भी दर्द और कष्ट की संभावना रहती है।

बहुत से विद्वानों का मत है कि शनि कुंडली के आठवें घर में आयु की हानि नहीं करता, किन्तु ऐसा तभी होता है, जब शनि आठवें घर में उच्च, स्वक्षेत्री तथा मित्र राशि में स्थित हो। यदि आठवें घर में शुक्र राशि में स्थित हो, विशेषकर मंगल अधिष्ठित राशि का स्वामी होकर तो फिर उसकी आठवें घर में स्थिति अल्पायु ही देती है। (कुंडली देखें)।



उपर्युक्त उदाहरण कुंडली एक ऐसे शख्स की है जो पेट रोग से पीड़ित रहता था। अर्थात् प्रायः उसके पेट में शूल रहता था। कुंडली में शुक्र न केवल लग्नेश (लग्न का स्वामी) है, बल्कि चंद्रलग्न का स्वामी भी है।

इसके साथ ही बुध युति है और बुध राहु तथा शनि से अधिष्ठित राशियों का स्वामी है। अतः बुध लग्नों के स्वामियों पर राहु और शनि का दर्द भरा प्रभाव डाल रहा है। चूंकि दर्द अंतड़ियों में भी है और इसलिए भी कि शुक्र छठे घर का स्वामी है और राहु व शनि के प्रभाव में (जैसाकि हम बता चुके हैं) है।

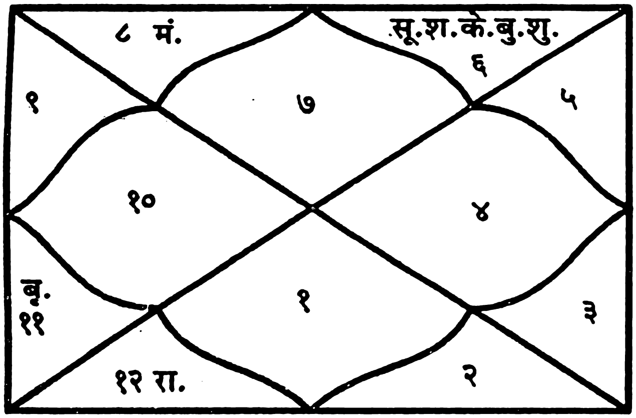
छठे घर में शनि दृष्ट राहु की पांचवीं दृष्टि भी अंतड़ियों में शूल उत्पन्न करती है। बृहस्पति की शुक्र और बुध पर दृष्टि इसलिए सहायक नहीं है कि बृहस्पति ग्रह मंगल तथा अधिष्ठित राशि का स्वामी होकर उनको देख रहा है।

इस प्रकार लग्न से और चंद्र से छठे अंग के पीड़ित होने के कारण पेट और अंतड़ियों में शूल की उत्पत्ति हुई।

यद्यपि बृहस्पति से यह आशा थी कि वो अपनी कृपादृष्टि द्वारा उक्त रोग का निवारण कर, रोग को शांत करेगा, किन्तु यह आशा उसके आधिपत्य के कारण जाती रही। इस तरह यहां उपाय केवल शुक्र के बलवान् किये जाने में अर्थात् सोने की अंगूठी में हीरा पहनने में है। साथ ही हीरा, रेशमी कपड़ा, घी, मलाई, सफेद चंदन, दही, चीनी, सुगंधित द्रव्य, घास, यव, कपूर; ये सब वस्तुएं किसी युवा स्त्री को दें और श्री लक्ष्मी जी की पूजा-अर्चना कर, उन्हें प्रसन्न करें।

दूसरा घर किसी विद्या का है। जब शनि और राहु (अंधकार के प्रतिनिधि)

दूसरे घर पर द्वितीयेश (दूसरे घर के स्वामी) के शत्रु होकर प्रभाव डालें तो विद्या में बहुत बाधा डालते हैं। उनकी दशाभुक्ति में, विद्या प्राप्त करने में मन नहीं लगता।



उपर्युक्त कुंडली में राहु की दशा में शनि की भुक्ति है। यहां राहु दूसरे घर का स्वामी मंगल का शत्रु होकर उसे अपनी पूर्ण नौवीं दृष्टि से पीड़ित कर रहा है और शनि भी अपनी तीसरी पूर्ण दृष्टि से उसे हानि पहुंचा रहा है। ऐसी स्थिति में राहु की महादशा में शनि की भुक्ति विद्या प्राप्त करने के लिये सहायक सिद्ध नहीं होगी।

इसके उपाय के फलस्वरूप विद्या के घर के स्वामी मंगल को बलांवित करना होगा, जोकि मंगल की वस्तुओं को धारण करने से, जैसे चांदी की अंगूठी में मूंगा लगवाकर पहनने से हो सकता है। उधर जो ग्रह अपने पाप प्रभाव द्वारा मंगल की हानि करते हैं, अर्थात् शनि और राहु, उनकी शांति अवश्य ही होनी चाहिये।

शनि की शांति के लिये शनि का मंत्र जपना भी श्रेयष्कर है और शनि से संबंधित वस्तुओं, जैसे काले तिल, काली माश की दाल, लोहा, सरसों का तेल आदि का दान किसी पड़िए को करना चाहिए। इसी प्रकार राहु की शांति के लिये श्री भैरव जी की पूजा, उनके मंत्र का जाप करना चाहिए और राहु से संबंधित वस्तुओं, जैसे कच्चे कीकर के कोयले, सरसों आदि का दान करना चहिए।

शनि कुंडली के जिस घर का स्वामी हो वो अल्प होता है और यदि उसमें राहु भी हो तो और भी अल्प होता है। राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी या मालिक यदि किसी प्रतिनिधित्व रखने वाले ग्रह पर प्रभाव डाले तो उसको भी अत्यल्प कर देता है।

मकर और कुंभ जानु और टांगें होने से शनि का पक्का प्रतिनिधि है। यदि इन राशियों पर और शनि पर राहु का प्रभाव हो तो टांगों में सूखे के रोग की संभावना रहती है। शनि और राहु जब वाणी दोष आदि रोग देते हैं तो वो रोग बहुत लम्बे वक्त तक कायम रहता है और पोलियो जैसा रोग तो शायद ही ठीक होता हो, वो रोग अक्सर अमर हो जाता है।

टोटके

जब शनि ग्रह अनिष्ट या प्रतिकूल प्रभाव कर रहा हो तो उसे अनुकूल करने या उसके अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिये निम्न उपाय (टोटकों के द्वारा) करना चाहिये—

जब शनि ग्रह जन्मकुंडली में अनिष्टकारी हो तो मछलियों को आटा आदि डालना लाभकारी होता है। ऐसी हालत में अपने भोजन का कुछ भाग कव्वे को डालने से भी शनि का अनिष्ट फल शीघ्र दूर हो जाता है।

शनि का अनिष्ट दूर करने के लिये तेल के छाया पात्र का भी विधान किया जा सकता है।

शनि से संबंधित दान में देने योग्य वस्तुएं हैं—साबुत काले माश, लोहा, तेल, चमड़ा और पत्थर आदि।

शनि के देवता शिवजी हैं।

शनि की दान की वस्तुओं में बादाम और लोहे की वस्तुएं भी हैं, जैसे—अंगीठी, चिमटा और तवा आदि। इसमें सरसों का तेल और शराब भी प्रयोज्यनीय हैं, अर्थात् इनका भी दान किया जाना चाहिए। अन्य उपाय हैं—

१. रांगे का ताबीज लेकर उसमें बिछुआ की जड़ रखें और काले रंग के सूती धागे में बांधकर शनिवार के दिन बाजू में धारण करें।

२. रांगे की अंगूठी को संध्याकाल में गाय के कच्चे दूध से स्नान कराकर, दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करें। इससे निश्चय ही अभीष्ट की सिद्धि होती है।

शनि का शुभ/अशुभ प्रभाव

शनि कुंभ लग्न वालों का पूर्ण प्रतिनिधि होता है। अगर वो राहु, मंगल आदि ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक की टांगों में तरह-तरह के रोगों की उत्पत्ति होती है, इसलिये ऐसी हालत में शनि को नीलम तथा लोहा पहनकर बलवान् किया जाना चाहिये।

उत्तम स्वाथ्य के लिये पीड़ा देने वाले ग्रह की शांति करवाना भी अपेक्षित होगा।

शनि दूसरे घर का मालिक होकर छठे घर में राहु से पीड़ित हो तो ये योग न केवल जातक को विद्या से हीन करता है, बल्कि भाषण-शक्ति में भी ह्रास लाता है, विशेषतया जबकि बुध भी राहु से पीड़ित हो। ऐसी स्थिति में शनि को नीलम-लोहा पहन कर बलवान् करना चाहिये और राहु की शांति करानी चाहिये।

शनि के अशुभ प्रभाव को शुभता प्रदान करने के लिये उपर्युक्त उपाय श्रेष्ठ हैं। बलान्वित किया हुआ शनि धन में वृद्धि करेगा, नेत्र-दोषो का शमन करेगा। व्यर्थ के व्यय को कम करेगा और स्नायु में बल देगा। टांगों और पांवों को भी बल देगा। पुत्र की आयु तथा भाग्य में वृद्धि करेगा।

कुछ खास जानकारियाँ

जब राहु-केतु मिलकर शनि की हालत खराब करते हैं, तो शुक्र को बलि का बकरा बनना पड़ता है। जब शनि को सूर्य का टकराव खराब करे तो शनि की जगह शुक्र की कुर्बानी दी जाती है। इसलिए शुक्र का अच्छी दशा में होना बहुत जरूरी है, वरना शनि-सूर्य के झगड़े में जातक की पत्नी पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। वह बीमार हो सकती है। इस हालत में सूर्य बर्बाद होगा और न ही शनि, क्योंकि ये बाप-बेटे हैं, लेकिन इसका असर शुक्र पर जरूर पड़ेगा।

पक्का घर	:	१०	श्रेष्ठ घर	:	२, ३, ७, १२
मन्दे घर	:	१, ४, ५, ६	रंग	:	काला (स्याह)
शत्रु ग्रह	:	सूर्य, चन्द्र, मंगल	मित्र ग्रह	:	बुध, शुक्र, राहु
सम ग्रह	:	केतु, बृहस्पति	कार्य	:	डॉक्टरी, तेल, लोहा
उच्च	:	७	नीच	:	सारी रात, अंधेरा, दिन
बीमारी	:	खांसी, नजर, उदरपीड़ा	मसनुई ग्रह	:	बुध + शुक्र (केतु स्वभाव) मंगल + बुध (राहु स्वभाव)
दिन	:	शनिवार			

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

शनि की अंधेरी रात को चन्द्र अपनी रोशनी से चमका देता है,

यानि चन्द्र शनि से उलट और सूर्य का साथ देकर शनि के अंधेरे को घटाता है। जहाँ शनि धन-सम्पत्ति देता है, वहीं वह जातक को संन्यासी, बैरागी बना देता है। शनि का असर बहुत होता है। जब मन्दा हो या मन्दा कर लिया जाए तो बड़ा सख्त नुकसान पहुंचाता है। शराब पीना, जुआ खेलना, झूठ बोलना, मक्कारी करना, पराई औरतों से इश्कबाजी करना आदि काम ही शनि को मन्दा करते हैं। ऐसे जातक का शनि चाहे जितना ही उच्च क्यों न हो, हमेशा बुरा फल ही करता है। मन्दे शनि की दशा में निम्न टोटके लाभ करते हैं–

१. गेहूँ, उड़द चना, जौ तथा तिल को चक्की में पिसवाकर और गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाएं।
२. कौएं को रोटी दें।
३. भगवान शंकर के शिव महिमा स्तोत्र का पाठ तथा उपासना करें।
४. श्रद्धापूर्वक उड़द, तवा, चकला, बेलन, चिमटा, लोहा, तिल का तेल एवं शराब दान करें।

पहले घर का उपाय

१. मन्दा शनि सेहत खराब करता है, इसलिए अच्छी सेहत के लिए बड़ के पेड़ पर दूध चढ़ाकर गीली मिट्टी का तिलक लगाएं।
२. कारोबार तेज चलाने के लिए काला सुरमा जमीन में दबाएं।
३. दौलत और जायदाद के लिए बन्दर की पालना करें।
४. तवा या अंगीठी का दान किसी साधु या फकीर को दें।

दूसरे घर का उपाय

१. चन्दन के बजाय दूध या दही का तिलक माथे पर करें।
२. घर में भूरी भैंस पालें।
३. नित्य ४३ दिनों तक नंगे पांव मन्दिर में जाकर माथा टेकें।
४. ससुराल के लाभ के लिए सांप को दूध पिलाएं।
५. जिस लड़के का शनि दूसरे घर में हो, लोहे का व्यापार करने वाला अपनी लड़की का ब्याह उससे न करे।
६. शनि २ के समय यदि बुध १२ हो और जातक के कन्या जन्म ले, उसकी पालना जातक के धन से हो तो बहुत बुरा असर होगा, अतः

उस कन्या को अपनी ससुराल वालों को पालने दें, वह उनके लिए धनलक्ष्मी के समान होगी।

७. विवाह के बाद शनि की चीजें घर में न लाएं।

तीसरे घर का उपाय

१. काले-सफेद तीन कुत्ते पालने से जातक का मकान जल्दी बनेगा, दौलत में भी इजाफा होगा। अगर केतु ३, १० में हो तो सिर्फ एक भूरा या काला कुत्ता पालें।
२. दौलत और जायदाद के लिए मकान में एक अंधेरी कोठरी कायम करें। फिर उसमें शनि की चीजें स्थापित करें।
३. घर की देहलीज को लोहे की कीलों से कील दें।
४. शराब और मांस का प्रयोग न करें।
५. दक्षिण या पूर्व वाले मकान में न रहें।

चौथे घर का उपाय

१. सांप को दूध पिलाएं।
२. कौओं या भैंस को चन्द्र की चीजें-दूध या चावल दें। कुएं में दूध गिराना भी चन्द्र के असर को बढ़ाएगा।
३. तेल, उड़द और काले कपड़ों का दान लाभ करेगा।
४. व्यावसायिक सफलता के लिए मछलियों को चावल खिलाएं।
५. शराब पीना, पराई औरत से संभोग करना, बेवा औरत पर खर्च करना और कबूतरबाजी करना बन्द कर दें।

पांचवें घर का उपाय

१. इस घर में शनि होने पर जातक अपने पुश्तैनी मकान में तांबा, चांदी, सोना एक ही जगह पर कायम करे, उसे वहां से कभी न हटाए।
२. अगर राहु (घर) में हो तो मामूली-सी आग जलाकर, उसे दूध से बुझाए।
३. एक साथ तीन कुत्तों को पालें।
४. मकान की छत से आसमानी रोशनी आने की जगह बनाएं। फिर उस मकान में चावल, चांदी, सोना या मूंगा, शहद और खांड कायम करें।
५. राहु-केतु दसवें घर में हों तो, गुड़, दूध या सौंफ जलाएं।
६. मकान की अंधेरी कोठरी में मूंगा या हथियार रखें।

७. अपने वजन का दसवां हिस्सा बादाम मन्दिर में चढ़ाकर और आधे वापस लाकर एक साल तक घर में रखें। साल खत्म होने के बाद उन बादामों को दरिया में बहा दें।
८. शराब ओर मांस का इस्तेमाल न करें। जुआ न खेलें।

छठे घर का उपाय

१. शादी २८ साल के बाद करें।
२. जन्मदिन पर चमड़े के जूते व मशीन आदि घर न लाएं।
३. मकान ३६ से ३९ वर्ष की आयु में बनाएं।
४. बीमारी के वक्त तेल से भरे बर्तन में अपना मुंह देखकर उसे खड़े पानी में दबाएं।
५. कारोबार के लिए बुध का उपाय करें।
६. औलाद की सलामती के लिए घर में काला कुत्ता पालें।
७. नारियल या बादाम दरिया में प्रवाहित करें।
८. औलाद को सुखी करने के लिए सांप को दूध पिलाएं।
९. कारोबार के लिए रात में या कृष्ण पक्ष में योजना बनाने से लाभ होगा।
१०. जूते दान करने से लाभ होगा।

सातवें घर का उपाय

१. जब शनि सोया हो (पहला घर खाली हो), शुक्र का भय सता रहा हो, तो बांसुरी में खांड भरकर, दूर किसी वीराने में जाकर दबाएं।
२. काली गाय की सेवा करें।
३. जब घर १ खाली हो तो शहद से भरा बर्तन घर में रखें, अन्यथा पौत्र की पैदाईश के बाद घर में दरिद्रता आ जाएगी।
४. शराब, मांस और मछली से परहेज करें।
५. बीस-इक्कीस साल की उम्र में शादी कर लें।
६. कारोबार में किसी रिश्तेदार को साझेदार न बनाएं।
७. परोपकार करने से धन बढ़ेगा।
८. पराई औरत से इश्कबाजी औलाद के सुख को मन्दा करेगी।

आठवें घर का उपाय

१. चांदी का चौकोर टुकड़ा हमेशा अपने पास में रखें।

२. नहाते वक्त पानी में थोड़ा-सा दूध डाल लें और पत्थर पर या लकड़ी के पटरे पर बैठकर नहाएं और इस बात को मद्देनजर रखें कि पत्थर या लकड़ी का पटरा पैरों के नीचे रहें।
३. अगर चन्द्र अच्छा हो तो आठ सौ ग्राम या आठ किलोग्राम उड़द सरसों का तेल लगाकर दरिया में बहा दें।
४. अगर चन्द्र मन्दा हो तो पहले सोमवार को आठ सौ ग्राम दूध दरिया में बहाएं, फिर बुधवार या शनिवार को उड़द बहाएं।
५. चांदी शरीर पर धारण करें।
६. नशाखोरी से बचें।
७. किसी भी तरह से राहु और शनि को मन्दा न करें।
८. लोहे से बनी चीजें दान करें।

नौवें घर का उपाय

१. बृहस्पति की वस्तुओं का दान मन्दिर में करने से शनि का अच्छा फल मिलता है।
२. जन्म के समय घर में गड़ा पत्थर शुभ फल देगा।
३. मकान की आखिरी अंधेरी कोठरी में धूप और रोशनी करना नुकसानदेह साबित होगा।
४. बृहस्पति का उपाय मददगार होगा।
५. सूर्य-चन्द्र और बृहस्पति की चीजें वीराने में आसमानी आफतों से बचाव में मददगार साबित होंगी।
६. पिता या दादा का साथ शुभ फल देगा।
७. दो से ज्यादा मकान कभी न बनवाएं।

दसवें घर का उपाय

१. महत्वाकांक्षा, राज्य से लाभ और स्त्री के कष्ट में शराब और मांस आदि के इस्तेमाल में परहेज करें।
२. दूसरों का आदर करने से मान बढ़ेगा।
३. एक जगेह रहकर ही काम करने से लाभ मिलेगा।
४. काम की मन्दी हालत में दाढ़ी-मूंछों के बाल कम कर दें।
५. अन्धों को खाना खिलाने से शनि लाभ करेगा।

६. शनि के मन्दे वक्त में बृहस्पति का उपाय मददगार होगा, क्योंकि ४ बृहस्पति का पक्का घर है। उस घर की दृष्टि १ के मुताबिक इस घर १० पर पड़ रही है।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. रात को पाँच मूली सिरहाने रखकर प्रातः मंदिर में दें।
२. यदि घर में कोई पत्थर गड़ा हो तो घर की बड़ी या बूढ़ी स्त्री नित्य उसे दूध से धोती रहे।
३. घर में काला या सफेद कुत्ता पालें।
४. शराब या तेल ४३ दिन तक भूमि पर गिराएं।
५. कहीं आने या जाने से पहले जल से भरा पात्र (कलश या घड़ा) देखें।
६. रोग की अवस्था में कम-से-कम एक वर्ष तक स्त्री (पत्नी) से सम्पर्क न करें।
७. पराई स्त्री से बचकर रहें।
८. चांदी के गिलास में पानी पिएं।
९. लहसुन, प्याज व मसूर का सेवन न करें।
१०. स्वर्ण को शरीर पर धारण करें।
११. वीरवार के दिन चने की दाल और हल्दी पीले कपड़े में बांधकर दान करें।

बारहवें घर का उपाय

१. घर की अंधेरी कोठरी में रोशनी या सूर्य के प्रकाश की व्यवस्था करें।
२. पराई औरत, पराए माल, मांस और शराब से सख्त परहेज रखें।
३. उस अंधेरी कोटरी में दक्षिण या पश्चिम हिस्से में बारह बादाम लोहे या टिन के डिब्बे या कोरे काले कपड़े में बांधकर रखें। इन बादामों को कोई खाने की कोशिश न करे।
४. मक्कारी और झूठ से दूर रहें। झूठ न बोलें।
५. बुध से सम्बन्धित कोई कारोबार न करें।
६. किसी देवी-देवता की साधना करें।
७. जिस वजह से शनि अशुभ फल कर रहा हो, पुस्तक में बताए उपायों के द्वारा उनका उपाय करें।

पाप एवं दुर्भाग्य का ग्रह राहु

विप्रचित्ति नामक दानव और हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका का पुत्र राहु केवल एक छाया ग्रह है। राहु को कालपुरुष का दुःख माना गया है। यह दुःख , शोक, पाप और दुर्भाग्य का प्रतीक ग्रह है। इस ग्रह का मानव के पैरों पर अधिकार रहता है। यह एक राशि पर पूरे डेढ़ वर्ष तक रहता है। यह मकर राशि का स्वामी है। यह स्त्रीलिंगी तथा तामस गुण वाला है । इसका नीचा स्थान वृष और ऊंचा स्थान वृश्चिक है। यदि जन्मकुंडली में राहु तीसरे, छठे और नौवें घरों में मौजूद हो तो सर्व प्रकार के दोषों को समाप्त करता है।

मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर तथा मीन राशियां राहु की मित्र राशियां हैं, तथा कर्क और सिंह शत्रु राशियां हैं। यह ग्रह शुक्र के साथ राजस तथा सूर्य एवं चंद्र के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है। बुध, शुक्र गुरु को न तो अपना मित्र समझता है और न ही उससे किसी प्रकार की शत्रुता ही रखता है। यह अपने स्थान से सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

राहु को इस युग में भी प्रत्यक्ष प्रभाव देने वाला माना गया है। इसकी शक्ति असीम है। इसके द्वारा दुःख, दुर्भाग्य, संकट, विध्वंसात्मक प्रवृत्ति, नौका चालन, राजनीति, साहस, चिंता, पितामह, अनुसंधान तथा विलासिता आदि का विचार किया जाता है।

यदि जन्मकुंडली में राहु बली होकर शुभ भावों में मौजूद हो तो जातक को राजनीति में सफलता प्रदान करता है। सामान्य रूप से राहु के द्वारा मुद्रण कार्य, फोटोग्राफी, नीले रंग की वस्तुएं, चर्बी, हड्डी, सीमेंट, चित्रकारी, मद्यपान द्यूतक्रीड़ा आदि विषयों का विचार किया जाता है। यदि जन्मकुण्डली में राहु अशुभ प्रभाव दे रहा हो तो जातक चर्बी तथा हड्डी जनित रोगों से पीड़ित रहता है। राहु के दुष्प्रभाव से जातक आलसी तथा मानसिक रूप से सदैव दुःखी बना रहता है। यह सब ग्रहों से बलवान् माना जाता है तथा वृष और तुला लग्न में योगकारक बनता है।

उच्च का राहु जातक को स्पष्ट वक्ता बना देता है, साथ ही उसे द्रव्य प्राप्ति भी कराता है। नीच का राहु व्यक्ति को दंगल अथवा मुकदमे में जीतने वाला बनाता है, किन्तु इसे द्रव्य की प्राप्ति नहीं होती। यदि राहु अपने घर में बैठा हो, तो जातक भाग्यशाली और उच्च पद का प्रत्याशी होता है, जबकि शत्रुक्षेत्री राहु जातक के भाग्य को चमकाने वाला और उसके कार्यों को संपादित करने वाला होता है।

बारह घरों में राहु का फल

पहला घर—जिसकी जन्मकुंडली के पहले घर (जन्मलग्न) में राहु होता है, वो पराक्रमहीन, अविवेकी, रोगी, व्यर्थ में बहुत बोलने वाला, कुकर्मी, साहसी, दुःखी दुर्बल शरीर वाला, अपने स्वजनों का शत्रु तथा अपने शत्रुओं का नाश करने वाला, स्वार्थी स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति किसी के संरक्षण में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने में असमर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति अल्प संतान वाला, मस्तिष्क रोगी, नीच कर्म में तत्पर और संलग्न रहने वाला और संसार से विरक्ति रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य कभी भी अच्छा नहीं रहता है।

जन्मकुंडली में राहु के पहले घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुंडली के घर में रहने वाला ग्रह सब ग्रहों पर हुकूमत करने वाला होगा, क्योंकि यह घर सूर्य और मंगल से प्रभावित है।
२. राहु सूर्य की मदद करेगा तो औलाद का मुंह देखना जरूर नसीब होगा।
३. कुंडली में राहु के पहले घर में यदि सूर्य बैठा हो तो राजदरबार में (अपने दिमागी ख्यालात में) बेबुनियादी वहम और मंदी शरारतें यकीनन खड़ी होंगी। भाई-बंदों पर दुःख मुसीबत खड़ी होंगी। माता खानदान और खुद जाती आमदन में रोड़ा अटकता होगा।
४. एक आला मालदार आदमी होगा और उसकी औरत की सेहत उम्र भर शक्की और निकम्मी होगी।
५. रात को सोने और आराम करने के वक्त कोई-न-कोई लानत खड़ी होगी, जिसका नतीजा चाहे कुछ भी हो।
६. लड़के-लड़कियों व रिश्तेदारों की तरफ से मंदी हवा और नाहक तोहमतों (आरोपों) की लहरें जारी होंगी। गृहस्थी के हालात खराब होंगे।
७. अदालती कारोबार मंदा, धर्म विरुद्ध, पूजा-पाठ से नफरत करने वाला और बुजुर्गों के असूलों की धज्जियां उड़ा देने वाला दुनियावी ऐतबारी

से बहुत दूर होगा। मुंसिफ और इंसाफ पसंदों के दिमागों को भी तकब्बूर की बदबू से बरबाद करेगा।

८. जब कुंडली के पहले घर पर राहु की बिजली चमक रही हो और एक से छह यानी छठे घर पर बुध का जैसा भी असर हो तो ४० साला उम्र तक राहु की वस्तुएं रिश्तेदारों या कारोबार मुतल्लका सब मंदे ही साबित होंगे।

९. निकाह (शादी) के वक्त व राहु का वस्तुओं का वहम निरर्थक होगा। मगर शादी के बाद ससुराल के यहां से शनि से संबंधित सामान (लोहे से निर्मित वस्तुएं) मंदा असर करेगा।

१०. अनिष्ट ग्रह के निवारण हेतु बिल्ली का जेर पीले या लाल कपड़े में बांधकर अथवा सूर्य की मुतल्लका अशियों का नेक दान और बद दोनों हालत में मददगार होगा। चांदी गले में लटकाना भी लाभ पहुंचाता है।

दूसरा घर—जन्मकुंडली के दूसरे घर में अगर राहु हो तो जातक चोरी की प्रवृत्ति वाला, अपने कुटुंब का नाश करने वाला, झूठ बोलने वाला, कटुभाषी तथा निर्भय स्वभाव का होता है, साथ ही धन की वृद्धि और रक्षा करने वाला होता है। इसकी मृत्यु किसी हथियार आदि से हो सकती है। यह अल्प संतति वाला, परदेश गमन में रुचि रखने वाला, संग्रहशील, शत्रुओं का विनाशक, मत्स्य मांस से धनोपार्जन करने वाला, नीचसेवी, चंचल, सुखी, विलक्षण बुद्धि से युक्त तथा स्त्री सुख से हीन होता है।

जन्मकुंडली में राहु के दूसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुंडली के इस दूसरे घर में राहु का जमावड़ा तो है ही मगर यह घर बृहस्पति और शुक्र से प्रभावित है। राहु दोनों का दुश्मन है। चंद्र भी इस दूसरे घर में उत्तम और बलवान् बनता है, जिसके सामने राहु भी मानों चुप्पी साधकर, धर्म-कर्म में लीन रहने की कोशिश करता है। यानि उसका धर्म सिर्फ इतना होगा कि रात के वक्त कभी कोई शरारत नुकसान, खराबी या चोरी न करेगा। ऐसे में चांदी धारण करना या चांदी का उपाय, राहु की चोरी की शरारतों या ससुराल की मंदी हालत से बचाव के लिए मददगार होगा।

२. उक्त कुंडली वाला शख्स सुखी व राजा के समान तबियत व हालत का मालिक होगा। उसकी उम्र लम्बी, आमदनी अच्छी और सेहत उम्दा होगी।

३. अगर हालत नेक रही तो २५ साला उम्र का अरसा दौलत के आराम का होगा।
४. ३६ साला उम्र से ४२ साला उम्र तक मंदी का आलम रहेगा।
५. मंदी हालत के तहत शख्स खुद मुफ्त का माल खाकर गुजारा करे और खैरात करने की बात कभी दिमाग में भी न लाये।
६. धर्म मंदिर में बैठकर भी पाप करने से बाज न आयेगा और अपने आखरी वक्त को भी गंदा कर लेगा और तब अपनी कब्र या अंत्येष्टि तक के लिये तरसेगा। किसी की मदद न मिलेगी। अगर कोई खुदाई करिश्मा हो जाए तो बात और है।

तीसरा घर—जिस जातक की जन्मकुंडली के तीसरे घर में राहु हो वो बहुत बलिष्ठ, दृढ़, विवेकयुक्त, प्रवासी, दुःखों का नाश करने वाला, विद्वान, व्यवसाथी, चोरी करने वाला, मत्स्य मांस से धन कमाने वाला, नीच सेवी, योगाभ्यासी, प्रवासी, बलवान्, बाहुबल में अपनी समता न रखने वाला होता है। यदि तीसरे घर में राहु उच्च राशि का हो तो जातक वाहन सुख से सम्पन्न होता है।

जन्मकुंडली में राहु के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. तीसरा घर बुध का है जो मंगल से पूरी तरह से प्रभावित है और इस तीसरे घर में राहु है जो दुश्मन ग्रहों से कभी मंदा न होगा, जिसकी वजह से शख्स औरत, दौलत और औलाद सभी की तरफ से सुख से होगा, अमीर होगा।
२. आसमान की बुलंदियों तक की पहुंच वाला, दूसरों की मदद करने वाला, रईस और बड़ी जायदाद का मालिक होगा।
३. दौलत का राजा होगा।
४. पक्का निशानेबाज और चौकन्ना पहरेदार होगा। शातिर शिकारी होगा। बड़े-बड़े जानवरों का शिकार करना उसके लिए मामूली बात होगी।
५. बेहद निडर होगा और शत्रु उससे भय खाएंगे।
६. दुश्मन का बुरा करने की बात भी कभी मन में न लाएगा और सबकी मदद करने को तत्पर होगा।
७. किसी भी दुर्घटना की भनक उसे पहले ही हो जाया करेगी, उसे कोई मात न दे पाएगा, उस की कलम में शत्रु का सिर काटने के लिए तलवार से भी ज्यादा ताकत होगी। कलम का पैनापन असरदार होगा।
८. कभी कर्जदार न मरेगा बल्कि जायदाद और दौलत अपने पीछे छोड़कर जाएगा।

९. मंदी हालत में भाई बंद, रुपया पैसा बर्बाद करेंगे। माल असबाब व दौलत लेकर मुकर जाएंगे। फरेब और धोखे से बर्बाद करने की कोशिश करेंगे। ऐसे वक़्त में चंद्र का उपाय मददगार होगा। ३४ साला उम्र तक बुध और केतु दोनों ही मंदा असर करेंगे।

१०. बुध और सूर्य के असर से बहन दुःखी, और शादीशुदा होगी तो बेवा होगी।

११. राजदरबार से खिताब मिलेगा। दौलत से मालामाल, इज्जत व आराम और शानों-शौकत इन सबका उसके पास भंडार होगा।

१२. मंदी हालत में हाथीदांत किसी रूप में अपने पास रखना और चंद्र का उपाय मुबारिक होगा।

चौथा घर—कुंडली के चौथे घर में राहु हो अथवा चौथा घर मेष, कर्क, कन्या और मिथुन राशि का हो और उसमें राहु पड़ा हो तो जातक को वो अपना श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। ऐसा जातक अल्पभाषी, अल्पसंतोषी, क्रूर स्वभाव का, नीच जनों का साथी, एक पुत्र वाला, दुर्बल स्त्री वाला, बंधुहीन, असंतोषी, मातृ क्लेशयुक्त, कपटी, उदर-व्याधि युक्त तथा विषधर प्राणी से अपघात पाने वाला होता है। यदि राहु पाप ग्रह से युक्त होकर चौथे घर में मौजूद हो तो जातक की माता को कष्ट होता है।

विशेष—चौथा घर चंद्र का है और राहु चंद्र का दुश्मन है।

जन्मकुंडली में राहु के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. माता-पिता के ताल्लुक में पाप न करने की कसम उठाए हुए नेक और ईमान परस्त होगा। अच्छी दौलत का मालिक होगा।

२. चंद्र कुंडली के जिस घर में बैठा होगा उस घर की मुतल्लका अशियां (संबंधी वस्तुएं) कारोबार या रिश्तेदार मुतल्लका दौलत पैदा करने के लिए मददगार और मुबारिक होंगे और जहां बुध बैठा होगा उस घर में भर देगा।

३. शादी के दिन से ससुराल की दौलत बढ़ती होगी और उस दौलत का कुछ हिस्सा वक्त जरूरत वो भी लेता रहेगा। उस पर राहु का नेक साया होगा और मंगल की मदद भी मिलेगी। यह चौबीस या अढ़तालीस साला उम्र में या औलाद की पैदाईश के दिन से मां-बाप के लिए नेक और मुबारिक होगा। किन्तु उक्त साला उम्र तक चंद्र की बेजान चीजों का फल मंदा होगा। मगर वो खुद इल्मो-अक्ल का मालिक और धर्म-कर्म में लीन

होगा। ४५ साला उम्र से राहु केतु दोनों का फल उत्तम होगा। मंदी हालत में भी धन-दौलत की कोई फिक्र या गम न होगा।

४. माली दौलत का असर मंदा ही होगा। मगर मंदा जमाना एक ख्वाब की तरह गुजर जाएगा और चंद्र की उम्र गुजरते ही दौलत की कोई कमी न रहेगी। मंदी हालत दूर होगी।

५. पांच सेर दूध में सवा सेर जौ मिलाकर चलते पानी में बहाना मंदे असर को दूर करने में मददगार होगा।

पांचवां घर—जिसकी कुंडली के पांचवें घर में राहु हो वो जातक पुत्र संततिवान्, मतिमंद, कुल धननाशक, भाग्यवान्, कार्यकर्त्ता तथा प्रिय होता है। उसकी स्त्री सदैव रोगिणी रहती है, जिस कारण वो चिंतित रहता है। उसे एक पुत्र की प्राप्ति होती है तथा वो उदर रोग से ग्रस्त, धन से हीन, पुत्र सुख से हीन, अल्प वेतन की नौकरी से जीवन निर्वाह करने वाला, कुमार्गगामी होता है। वायु रोग उसे पीड़ित रखता है। पांचवें घर में राहु और चंद्र का मिलाप संतान नाश का कारण बनता है। यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कुंडली का पांचवां घर (जिसमें राहु पड़ा है) सूर्य का है जो पुत्र सुख को दर्शाता है। जबकि कुंडली का चौथा घर चंद्र का है। यहां सूर्य और चंद्र की ताकत मिली हुई मानी जाएगी और राहु इन दोनों के मुकाबले में कमजोर होने की वजह से सूर्य और चंद्र दोनों को हानि न पहुंचा सकेगा, मगर पुत्र के साथ उसके सुख को भी मंदा करता रहेगा।

जन्मकुंडली में राहु के पांचवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. औलाद व धन दोनों ही की बरकत होगी, परिवार खुशहाल होगा। माता का साया जल्दी ही सिर से उठ जाएगा।

२. उम्र लम्बी और दौलत की बरकत होगी।

३. मंदी की हालत का असर औरत पर होगा, उसकी बीमारी पर दौलत बहुत जाया होगी।

४. बारह साला उम्र तक औलाद की सेहत मंदी रहेगी। औलाद के त्यौहार या खुशी के दिन न मानने वाले शख्स को औलाद देखनी ही नसीब न होगी। अगर ऐसे शख्स के कभी औलाद न हो तो भी कोई ताज्जुब नहीं है।

५. कुंडली के पांचवें घर में शनि औलाद का खात्मा करने वाला होगा। जबकि नौवें घर का शनि औलाद की पैदाईश के रास्ते में एक भारी पत्थर साबित होगा। शनि की इन दो हालतों के मुकाबले पर राहु (पांचवें

घर का) औलाद (लड़का) के ताल्लुक में औरत के पेट में ही बच्चे का खात्मा करने वाला साबित हो सकता है। यदि पांचवें घर के राहु की वजह से बच्चा या बच्चे पेट में ही मर जाए तो नौवें घर का राहु पैदाईश के बाद बच्चे का वजूद मिट सकता है। अगर ऐसा न कर सके तो बारह साला उम्र तक उसकी सेहत खराब रखे। अगर शख्स दो बार अपनी बीवी से शादी कर ले तो राहु के बुरे असर से बचा जा सकता है। मकान की दहलीज के नीचे जमीन में चांदी का पत्थर दबाना भी राहु के अरिष्ट को शांत करता है।

छठा घर—यदि जन्मकुंडली में राहु छठे घर में मौजूद हो तो जातक धैर्यवान्, वीर्यवान्, शत्रुओं का नाश करने वाला, निरोगी, कमर-दर्द से पीड़ित, अरिष्ट-निवारक, पराक्रमी एवं बड़े-बड़े कार्य करने वाला होता है। यदि छठे घर में राहु उच्च का हो तो सब तरह के अरिष्टों का नाश हो जाता है। राहु पीड़ितावस्था में हो तो जातक नित्य परस्त्री समागम करता है। उसे २० या २८ वर्ष की आयु में शारीरिक पीड़ा तथा शत्रु भय की संभावना रहती है।

यहां यह स्मरण रहे कि छठा घर बुध और केतु से प्रभावित है। बुध और राहु दोनों एक-दूसरे के मददगार हैं, इसलिये राहु यहां पर ताकतवर और नेक फलदाता होगा। इसी वजह से जातक की बड़ी-से-बड़ी बला आसानी से टल जाएगी। दूसरे मंगल और शनि दोनों कुंडली के आठवें घर में अच्छा असर रखने की वजह से छठे घर से मिलते रहते हैं। राहु मंगल को नियंत्रित करता है, जबकि शनि का दूत राहु बनता है और इसी वजह से उससे दबा रहता है।

जन्मकुंडली में राहु के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. हर तरह की परेशानियों और मुसीबतों से निजात पाने वाला होगा।
२. दुश्मन कैसा भी हो, उस पर जीत हासिल करने वाला होगा। न तो दुश्मन उसे अपने आगे झुका पाएगा और न ही किसी तरह का नुकसान पहुंचा सकेगा।
३. जीवन में तरक्की करता जाएगा। दौलत, इज्जत और आराम में बरकत होगी। उम्दा सेहत और तेज दिमाग का मालिक होगा। सितारे बुलन्द होंगे। कोई इल्जाम न लगा पाएगा, कोई खाक में न मिला सकेगा।
४. मंदी हालत में बीमार घर में घुसे और दौलत फिजूल में खर्च होती रहे। भाई और बहन से झगड़ा हो सकता है। इस अरिष्ट से बचने के लिये काला कुत्ता पालना और काले कुत्ते को भोजन कराना बहुत जरूरी होगा।

सातवां घर—जिसके सातवें घर में राहु हो वो एक से अधिक विवाह कर सकता है। उसका अंतःकरण अग्नि के समान सदा प्रज्जवलित रहता है। वो चाहे कितना ही अच्छा कार्य क्यों न करे, तो भी लोग उसकी निंदा ही करते रहते हैं। उसकी पत्नी खर्चीले स्वभाव की होती है। वो व्यवसाय में मूर्ख, भ्रमणशील, चतुर, दुराचारी, वात रोग से पीड़ित, लोभी, जननेंद्रिय-संबंधी रोग से ग्रस्त तथा व्यर्थ ही झगड़ने वाला होता है। सातवें घर का राहु यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो पूर्वोक्त दोष नहीं होता। जातक की पत्नी अक्सर बीमार बनी रहती है। यदि सातवें घर का राहु पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक की पत्नी पापाचारिणी, कुटिला तथा गंडमाला रोग से पीड़ित होती है।

जन्मकुंडली में राहु के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. खुद दौलतमंद होगा, गृहस्थी का सुख मंदा होगा। ससुराल व औरत दोनों मंदे होंगे इस कुंडली वाले शख्स की अपनी औरत में कोई खासियत दिखाई न देगी। उसकी नजर में सारी औरतें एक जैसी होती हैं।
२. समाज में बहुत ऊंचा मर्तबा होगा।
३. कभी किसी का मोहताज न होना पड़ेगा। किसी के आगे गरीबी या तंगदस्ती की वजह से हाथ न फैलाना पड़ेगा।
४. दुश्मनों का खात्मा करने के लिए उसके पास दिमाग और ताकत की कमी न होगी।
५. शनि और बुध हर तरह से मदद करेंगे और बरकत देंगे।
६. कुंडली का सातवां घर राहु के शत्रु शुक्र का है, अतः इसके सातवें घर में होने पर शुक्र का नाश करता है अथवा नुकसान पहुंचाता है।
७. औरत की कुंडली में २१ साला उम्र से पहले २१ वें साला उम्र में शादी बेमानी होगी। ऐसा होने पर या तो वो चल बसेगी या पति से उसकी जुदाई होगी या वैवाहिक संबंध टूट जाएगा। बदचलन होगी तो किसी के साथ भाग जाएगी, नतीजा पति-पत्नि का अलग हो जाना है। औरत की कुंडली में औरत की कई बार शादी या औरत के माता-पिता बर्बाद होंगे। गृहस्थी में दुःख, झगड़े और फिजूल की बेबुनियाद औरतों की लानतें, मौत, बीमारी, बेमानी, लम्बे-चौड़े खर्चे और गृहस्थ की हर तरफ से मंदी हालत होगी। इस अनिष्ट के निवारण के लिए किसी छोटे चांदी के बर्तन में गंगाजल भरकर, उसमें चांदी का टुकड़ा डालें और बर्तन का मुंह टांके से बंद कराकर, उस बर्तन को घर में रखें। जब तक वो बर्तन घर में रहेगा, न तो राहु का कोई

मंदा असर होगा और न औरत मर्द में से किसी का कुछ बुरा ही हो पाएगा। औरत बर्तन को अपने पास में रखे तो और भी अच्छा है। उपरोक्त सभी बातों से उसका बचाव होगा।

आठवां घर—जन्मकुंडली में राहु आठवें घर में होने पर जातक रोगी, ढीठ, चोर, दुर्बल शरीर वाला, मायाजाल रचने में प्रवीण, उदर रोगी तथा कामुक प्रवृत्ति का होता है। बहुत परिश्रमी होता है। गुदा रोग, प्रमेह, अंड-वृद्धि, वायु गोला तथा रक्त गुल्म आदि के रोग उसे सदैव कष्ट पहुंचाते हैं। उसे अपने पिता की संपत्ति प्राप्त नहीं होती तथा कुटुंबियों से एकांतवास करता है। विद्वानों तथा बुद्धिमानों में उसकी प्रशंसा होती है। ऐसा जातक पुष्टदेही, गुप्तरोगी, बकवास करने वाला होता है। उसे जल भय बना रहता है।

कुंडली का आठवां घर शनि और मंगल से प्रभावित है। मंगल राहु का शत्रु है। शनि इस घर में मंदा होता है, अतः राहु भी इस घर में मंदा असरकारी है।

जन्मकुंडली में राहु के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. २८ साला उम्र में मंगल नेक हो या कुंडली के पहले व आठवें घर में आ जाए या शनि नेक हो या आठवें घर में आ जाए तो सोया हुआ नसीब भी जगा देगा और खाली खजाना फिर से भर देगा। राजा और फकीर दोनों को बराबर एक फल देगा। चाल चंद्र की, हुक्म शनि का और असर राहु का दिया हुआ होगा।
२. बदनामी, बेबसी, धन-हानि, झगड़े, बीमारी, फिजूलखर्ची आदि हर प्रकार की मुसीबत खड़ी होगी। बददयानती का कमाया हुआ पैसा उसकी जाती कमाई से आठ गुना कम कर देगा। रंग-बिरंगी किस्मत का फैसला शनि पर होगा।
३. मन्दे वक्त में न कोई मद्दगार होगा और न कोई फरियाद सुनने वाला होगा। हर हालत में अपने आप ही हौसला शनि पर होगा।
४. जन्मकुंडली में राहु चाहे जितना उच्च का हो, पर उसका फल खराब ही होगा। अचानक हादसा, जहनी बीमारी और धन हानि करेगा। जन्मकुंडली का आठवें घर का राहु जब वर्षफल के अनुसार आठवें घर में आए तो बहुत भारी नुकसान होंगे। इसलिए जन्मदिन के बाद जब आठवां महीना शुरू हो तो हर रोज थोड़े बादाम लेकर मंदिर में जाएं और आधे वहां रखकर आधे वापस ले आएं और घर में संभालकर

रखें। आने वाले जन्मदिन को किसी दरिया में बहा दें तथा घर में रखे हुये बादामों को खाने की भी कोशिश न करें वरना वो जहर से भी तेज असरकारी साबित होंगे। अनिष्ट राहु से पैदा होने वाली सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। एक दूसरा उपाय भी है—

आठ खोटे सिक्के लेकर रोजाना दरिया में डालते जाना मुबारिक होंगे। पूरे ४३ दिन तक यह क्रिया करें। बीच में कोई नागा न करें। इससे जन्मकुंडली के सभी अनिष्ट ग्रहों का प्रभाव दूर होगा और फिर जमीन-जायदाद, नौकरी, औरत, पुत्र और तरक्की आदि में किसी भी तरह के मंदा हालात पैदा न होंगे। मगर शर्त यह होगी कि धोखा, बेईमानी का काम न करें और न ही दूसरे की औरत से मुहब्बत जताएं।

नौवां घर—जिसकी जन्मकुंडली के नौवें घर में राहु होता है वो जातक सबको प्रसन्न (अपने सद्गुणों से) रखता है। तीर्थों, आदि का प्रेमी तथा दयालु स्वभाव का यह जातक अपने कुटुंब का बड़ी कुशलता के साथ पालन-पोषण करता है। ऐसा जातक भाग्योद्य से रहित, वात रोगी, प्रवासी, परिश्रमी, बुद्धि से दुष्ट, निंद्य कर्म करने वाला, चुगलखोर, धन हीन तथा धार्मिक प्रवृत्तियों वाला होता है। यदि राहु दूषित हो तो जातक को कुटुंब तथा पिता का सुख नहीं मिलता।

विशेष—नौवां घर मुख्यतया बृहस्पति से प्रभावित होता है।

जन्मकुंडली में राहु के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बेईमानी, लालच, शराबखोरी, झूठ, मक्कारी, दूसरे की औरत पर गंदी नजर डालना आदि कारणों से बृहस्पति का असर मंदा होगा। जबकि कारोबार पर राहु का असर मंदा होगा। बालिगों से मुतल्लका झगड़े, बीमारी, औलाद पर बताए बद मंदी छत, भट्टी, गर्की दहलीज के नीचे से गंदा पानी गुजरना, स्याह कुत्ता गुम, बिल्ली का रोना, रिश्तेदार की मौत और नाखून आदि का झड़ जाना भी राहु के गंदे असर की वजह से होगा।
२. खानदान में मुश्तरका रहना, खुद मुख्तियार में लेना, ससुराल से ताल्लुक न तोड़ना मुबारिक फल देगा।
३. दिमागी उलझनें बढ़ेंगी, बुजुर्गों की तरफ से परेशानी मिलेगी और सेहत व दौलत मंदी होगी। औलाद का योग हर तरफ से मंदा होगा।

दसवां घर—कुंडली के दसवें घर में राहु हो तो जातक नीच कर्मों को करने वाला, सुंदर स्त्रियों से रमण करने वाला, वाचाल, अनियमित कार्यकर्त्ता,

संतति क्लेशी तथा मितव्ययी होता है तथा बुरे व्यक्तियों की मित्रता करने से उसे जाति और समाज में आदर नहीं मिलता। वो पापी, दूसरों के धन का लोभी, व्यर्थ बोलने वाला, आलसी तथा मनःस्ताप में जलने वाला होता है। दसवें घर में राहु यदि शुभ ग्रहों से युक्त हो तो जातक व्यवसाय कुशल, उत्तम स्त्री का भोग करने वाला, शत्रुहंता, नीच लोगों से संबंध बनाए रखने वाला होता है। यदि दसवें घर में राहु चंद्रमा के साथ पड़ा हो तो राजयोग बनता है। पचास साला उम्र के बाद किसी खतरनाक हथियार से संकट पैदा होने का भय है।

विशेष—कुंडली का दसवां घर शनि का है। अतः शनि जन्मकुंडली में जैसा होगा, राहु का दसवें घर में होने पर वैसा ही प्रभाव होगा।

जन्मकुंडली में राहु के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. वालिद (पिता) के लिए उम्दा और खुद नेक खसलत (विचार) होगा जिसकी हर जगह पर इज्जत होगी मगर दोस्तों का खतरा होगा यानि राहु का नेक और बुरा असर शक्की ही होगा जो शनि के इशारों पर चलता होगा यानि जैसा शनि हो वैसा ही राहु का असर होगा।
२. राहु वास्ते धन दौलत दोगुना नेक होगा।
३. चंद्र का असर पिता के लिए उम्दा मगर माता के लिए मंदा होगा और खुद अपनी सेहत शक्की होगी। राहु इस शक्की असर का होगा जिसका फैसला शनि की हालत पर होगा। खर्चा लम्बा नेक तभी होगा जब शनि भी नेक होगा।
४. तंगदिली और कंजूसी दूसरे से अदावत पैदा करने का बहाना होगी।
५. राहु का मंदा असर सिर्फ धन दौलत पर होगा।
६. नजर व आयु का खतरा होगा।
७. ग्रहों के मंदे असर से बचने के लिये नंगा सिर न रखें तथा अंधे साधू-संतों और फकीरों को पेट भर भोजन कराया करें।

ग्यारहवां घर—यदि जन्मकुंडली में राहु ग्यारहवें घर में मौजूद हो तो जातक शोभन व्यक्तित्व का स्वामी, प्रवासी, व्यवसाय युक्त, मंदमति, लाभहीन परिश्रमः करने वाला, राजदरबार से सम्मान पाने वाला, अपने कार्य में सदा चौकन्ना रहने वाला होता है। उसे नीच काम करने वाले लोगों से द्रव्य की प्राप्ति होती है। वो नौकरों के साथ भ्रमण करने वाला, परिजनों का साथ छोड़कर धूर्तों से मित्रता रखने वाला होता है। पुत्रों का उसे सुख मिलता है, साथ ही उसे वाहन सुख भी प्राप्त होता है।

जन्मकुंडली में राहु के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. यद्यपि जातक का पिता ज्यादा लम्बी उम्र नहीं जीता, फिर भी उसकी उम्र तक राहु का असर दौलत के लिये उम्दा ही रहेगा।
२. राहु के घर ग्यारह वाला शख्स का जन्म ऐसे वक्त में होगा, जबकि उसके वाल्दैन खूब शानोशौकत और माली हालत में व आराम से जिंदगी बसर कर रहे होते हैं। मगर उसकी पैदाईश के बाद धन दौलत बर्बाद होगी, फिजूल का नुकसान होता रहेगा। नाहक जुर्माने का सामना करना पड़ेगा। बीमारी की हालत में जरूरत से ज्यादा खर्च होगा। हर तरफ से ही मंदा जमाना माली हालत में होगा।
३. किस्मत साथ देती न दिखाई पड़ेगी।
४. पिता, ससुर या नाना की उम्र व दौलत और जाती कमाई का फैसला कुंडली के तीसरे घर के ग्रह बुध जो मंगल से प्रभावित है, की हालत पर होगा।
५. जिस तरह बेईमान और हलफ से बात करने वाले आदमी का कोई यकीन नहीं होता, उसी तरह राहु का भी कोई यकीन नहीं कि कब वो बृहस्पति पर मंदा असर कर जाए। इस हालत में बृहस्पति शख्स के पिता की उम्र तक मंदा होगा। इस मंदेपन से बचने के लिये लोहे का कड़ा या चैन पहनना मुबारिक होगा।
६. शराब, मांस, बाजारू औरत, बेईमानी, धोखा, ठगी और नीच कामों से बचकर रहें। राहु के प्रभाव से बचने के लिये बृहस्पति को बलवान् करना बहुत जरूरी है। राहु की वस्तु जौ, सिक्का और नारियल आदि को दरिया में बहाएं। शनि को मंदा न करें। धर्म मंदिर में दान देना मददगार होगा। पिता, सोना और केसर अपने पास रखें।

बारहवां घर—जन्मकुडली में राहु बारहवें घर में मौजूद हो तो जातक धर्म और धन से वंचित, प्रवासी, कुरूप, अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित, विवेकहीन, मूर्ख, चिंताशील, कामुक, त्वचा रोग से पीड़ित, समय को व्यर्थ ही नष्ट करने वाला तथा कुरूप नाखूनों वाला होता है। उसे पसलियों में दर्द से पीड़ित होना पड़ता है। उद्योग करने पर उसके मनवांछित कार्य सिद्ध नहीं होते हैं। सज्जनों से विरोध रखता हुआ वो दुष्टों से मित्रता रखता है। यदि बारहवें घर में राहु शुभ हो तो जातक शत्रुहंता, धनी, धार्मिक वृत्ति वाला, कुलदीपक तथा वाहन सुख का भोग करने वाला होता है।

जन्मकुंडली में राहु के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जन्मकुंडली में बुध जिस हालत में होगा, वैसा ही राहु का असर होगा।
२. बारहवें घर के राहु का नेक असर मकानों और चारदीवारी से संबंधित होगा।
३. लड़कियों की पैदाईश और कायम रहना और धन दौलत की आभदन और जमा होना, दोनों ही की ज्यादती होगी, बुध और बृहस्पति बुनियाद होंगे यानि जैसा बुध होगा, वैसी ही लड़कियों की तादाद और हालत होगी।
४. दुश्मनों से बचाव और रात का आराम उम्दा होगा।
५. गबन, चोरी या फौजदारी के ताल्लुक से नाहक परेशानी होगी और इसके नतीजे भी मंदे होंगे। आसमान में उड़ता हुआ धुआं, खुद मेहनती दिन भर कमाई करता और हर तरह का बोझा ढोता रहेगा। बेआराम व फिजूलखर्ची के बादल आम होंगे।
६. राहु के मंदे कामों से जितना हो, बचकर रहें। कोई छींक दे या बिल्ली रास्ता काट दे, तो फौरन आगे बढ़ना रोक दें। कोई नेक काम कर रहे हों तो थोड़ी देर के लिये उसे रोक दें। जहां खाना पके, उसे वहीं बैठकर खा लिया जाए तो यह उपाय भी राहु का असर मंदा करता है। ४२ साला उम्र के बाद राहु का मंदा असर सिफर होगा। फालतू धन दौलत दुनियावी आराम व बरकत ४२ साला उम्र के बाद फौरन बहाल होंगे।

राहु के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

जन्मकुंडली में यदि राहु अनिष्ट स्थिति में हो तो नारियल को दरिया में बहाना चाहिए ताकि अनिष्ट नष्ट हो। राहु की अनिष्ट की स्थिति में यव (जौ) को कच्चे दूध में धोकर दरिया (चलते पानी) में बहाने से राहु का दोष दूर होता है।

यदि क्षय (तपेदिक) का रोग है तो जौ को गाय के मूत्र में धोकर लाल कपड़े में बंद करके रखें और साथ ही गाय के पेशाब से ही दांत साफ करें।

राहु की अनिष्टकारी स्थिति में मूली का दान भी लाभदायक माना गया है। कोयले को दरिया में बहा देना भी इस दशा का एक टोटका है जो लाभदायक सिद्ध होता है।

राहु के दान की वस्तुओं में सरसों और नीलम भी सम्मिलित हैं। राहु

से कोयले, संतानहीन व्यक्ति, एक आंख के काने, विष्टा, मकान और उसकी छत व दरवाजे से भी संबंध है। यदि राहु अनिष्टकारी स्थिति में हो तो भंगी को दान देने से कल्याण होगा।

राहु अचानक फल देता है।

उसका विजली (विद्युत) और कारावास (जेलखाना) से भी संबंध है। यदि राहु आठवें घर में अनिष्टकारी हो तो खोटे सिक्के दरिया में डालने से शांति होती है।

यदि किसी कुंडली में राहु और सूर्य एक ही घर में मौजूद हों या जिस घर पर इनकी दृष्टि हो, उससे जातक को पृथक् कर देंगे। सूर्य और दोनों पापी ग्रह भी हैं और पृथक्ताजनक भी हैं। उदाहरण के लिए यदि ये ग्रह पांचवें घर में कर्क राशि में हों तो जहां ये गर्भ की हानि करेंगे वहां ये आय को भी कम करेंगे। ऐसी हालत में सूर्य और राहु से संबंधित रत्नों अर्थात् माणिक या नीलम पहनना लाभकारी न होकर उल्टा हानिकर होगा। इनकी शांति कराना ही अभीष्ट होगा।

सूर्य की शांति का उपाय तो हम पीछे कई बार बता चुके हैं और राहु की शांति के लिये भैरव जी की पूजा, उनका मंत्र जाप, फकीरों और कोढ़ियों को भोजन कराना तथा कच्चे कोयले और सरसों के तेल आदि का दान उपयुक्त होगा।

एक बात और भी है कि राहु की पांचवीं और नौवीं दृष्टि जिस भाव पर पड़ रही हो वहां पर राहु और सूर्य का पृथक्ताजनक प्रभाव पड़ा जानना चाहिये। ऐसी स्थिति में भावाधिपति जो बने उसका बलवान् किया जाना लाभकर होगा। मान लीजिये, यदि राहु और सूर्य किसी स्त्री की जन्मकुंडली में, जिसकी मिथुन लग्न है, तीसरे घर में पड़े हुए हैं। राहु तथा सूर्य का प्रभाव तीसरे से पांचवें अर्थात् सातवें घर पर पड़ा समझा जाएगा। ऐसी स्थिति में और विशेषतया जबकि प्रभाव बृहस्पति पर भी पड़ रहा हो तो बृहस्पति (सातवें घर के स्वामी का) बलवान् किया जाना अत्यावश्यक होगा।

बृहस्पति को बलवान् करने के लिये चांदी की अंगूठी में पीले रंग का पुखराज लगवाकर पहनने से बृहस्पति बलांवित होगा और विवाह तथा पति से संबंधित वैमनस्य आदि को दूर करने में सहायक होगा। एक बात यह भी है कि राहु सूर्य का पक्का दुश्मन है। सूर्य के साथ बैठने से राहु उस भाव को भी (अर्थात् घर को) पहुंचाएगा, जिसका कि सूर्य मालिक है। जैसे यदि धनु लग्न हो और सूर्य व राहु पांचवें घर में मेष राशि में इकट्ठे मौजूद हों, तो सूर्य को नौवें घर के मालिक के रूप में दुःख पहुंचेगा।

दूसरे शब्दों में सूर्य को तो सोना और मणिक धारण करके बलवान् करना होगा और राहु की शांति करने या कराने के बारे में हम बता चुके हैं। शांति होने से पिता के रोग का शमन होगा। राहु और चंद्र के संबंध में यह कहना चाहिए कि यदि चंद्रमा बलवान् होगा तो राहु अपनी युति द्वारा चंद्र को हानि पहुंचायेगा।

यदि चंद्र क्षीण हो तो उसको बहुत हानि पहुंच सकती है। यह हानि रक्तदोष रूप में, आंखों के कष्ट के रूप में, मानसिक व्यथा के रूप में भी हो सकती है जिसका मालिक चंद्र हो। ऐसी हालत में चंद्र को चांदी की अंगूठी में मोती लगवाकर पहनने से बलवान् करना होगा, ताकि उन घरों से संबंधित हानि न हो और राहु की शांति का उपाय हम बता ही चुके हैं।

जब चंद्र और राहु दोनों पापी हों तो स्पष्ट है कि वो उस घर को हानि पहुंचाएंगे, जिसमें कि वो बैठे हैं और जिन पर उनकी नजर है। ऐसी हालत में उन-उन घरों के मालिकों से संबंधित रत्नों को धारण करना चाहिए और राहु चंद्र की शांति का उपाय करना चाहिए।

मंगल और राहु के मिलाप से हानि मंगल की ही होती है। जैसे यदि मीन लग्न हो, राहु और मंगल दसवें घर में मौजूद हों तो राहु की पांचवीं दृष्टि विद्या स्थान (दूसरे घर) पर तथा दूसरे घर के स्वामी (मालिक) मंगल पर युति (मिलाप) द्वारा प्रभाव पड़ने के कारण विद्या में फेल हो जाने का डर रहेगा। ऐसी स्थिति में विद्या में कुशलता के लिये मंगल को चांदी की अंगूठी में मूंगा पहनकर बलवान् करें और राहु की शांति करें या कराएं।

मंगल और राहु दोनों नैसर्गिक पापी ग्रह हैं। इनका प्रभाव जहां भी पड़ेगा वहां हानि ही होगी। उदाहरण के लिये मंगल और राहु छठे घर में मकर राशि में स्थित हैं, तो इस स्थिति में ये ग्रह छठे और बारहवें घर को हानि पहुंचाएंगे। साथ ही राहु की दृष्टि जिन घरों पर पड़ेगी उनको भी हानि पहुंचेगी।

छठे घर के पीड़ित होने से शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होगी और सेहत खराब होगी। इसलिए राहु और मंगल दोनों की शान्ति आवश्यक है। मंगल और शनि के बारहवें घर पर प्रभाव के कारण आंख में कष्ट की संभावना रहेगी, जबकि चंद्र भी पीड़ित हो। यहां चंद्र मंगल और शनि की रत्नों द्वारा शांति आवश्यक होगी।

राहु का दसवें घर पर प्रभाव घुटनों में चोट का कारण बन सकता है। उस स्थिति में जबकि शुक्र चौथे घर में वृश्चिक राशि में हो । इसके प्रतिकार के लिये शुक्र को हीरा पहनकर (धारण करके) और राहु, मंगल और केतु की शान्ति आवश्यक उपाय है। राहु और बुध साथ होने पर, निश्चय ही राहु

बुध को पीड़ित करेगा। मान लीजिए, मेष लग्न है और राहु तथा बुध बारहवें घर में मीन राशि में पड़े हैं। इसका मतलब यह होगा कि राहु छठे घर, छठी राशि और उसके स्वामी बुध सबको पीड़ित करेगा।

उक्त स्थिति में जातक को गुर्दों तथा अंतड़ियों के रोगों की संभावना रहती है। उपाय वो ही यानी ग्रहों की शांति, जिनका उपाय पीछे बताया जा चुका है। जन्मकुंडली में हर ग्रह का अपना महत्त्व है; राहु दैत्यों में प्रमुख है तो बृहस्पति देवताओं में मुख्य है। इसलिए राहु द्वारा बृहस्पति की बहुत हानि होती है। उदाहरण के लिये लग्न मकर है और बृहस्पति और राहु आठवें घर में इकट्ठे हैं। इस स्थिति में बृहस्पति राहु द्वारा पीड़ित होकर कान में कष्ट देगा। यदि शनि भी तीसरे घर और बृहस्पति को पीड़ित कर रहा हो तो कान की बीमारी भयानक रूप में सामने आ सकती है। ऐसी स्थिति में बृहस्पति और राहु को बलवान् करना चाहिए। उपाय बताए जा चुके हैं। अब शुक्र, शनि और राहु के बारे में बताते हैं।

राहु और शुक्र दोनों आपस में मित्रता रखते हैं तो भी नैसर्गिक रूप से शुक्र शुभ ग्रह है और राहु पापी ग्रह है, इसलिए शुक्र को राहु से कष्ट मिलना कोई ताज्जुब की बात नहीं है। मान लीजिए लग्न कर्क हो और राहु व शुक्र बारहवें घर में मिथुन राशि में स्थित हों। यदि राहु की पांचवीं नजर (दृष्टि) का प्रभाव चौथे घर पर है और उसकी युति का प्रभाव चौथे घर के स्वामी शुक्र पर है। इसके फलस्वरूप जातक को मकान और वाहन का अभाव होगा। उपाय के रूप में शुक्र का बलवान् होना व राहु की शांति कराना आवश्यक है।

राहु और शनि दोनों पापी ग्रह हैं तथा पृथक्ताजनक और रोगजनक भी हैं। इनका प्रभाव जन्मकुंडली के जिस-जिस घर पर भी पड़ेगा वो रोग का कारक होगा। अर्थात् कन्या लग्न हो और शनि और राहु नौवें घर में मौजूद हों तो जहां वो राज्य की ओर यानी ऊरू व कानों में रोग का कारण भी बनेंगे। ऐसी अवस्था में नौवें और तीसरे घर के स्वामियों को बलवान् करना आवश्यक हो जाता है तथा शनि और राहु की शांति कराना भी न भूलने वाली बात होगी।

टोटके

जब राहु ग्रह अनिष्ट या प्रतिकूल प्रभाव कर रहा हो तो उसे अनुकूल करने या उसके अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए निम्न टोटकों के उपाय करने आवश्यक हैं—

१. लोहे के ताबीज में सफेद चंदन की जड़ को रखकर, बुधवार को नीले रंग के सूती धागे में डालकर प्रातःकाल धारण करना चाहिए।

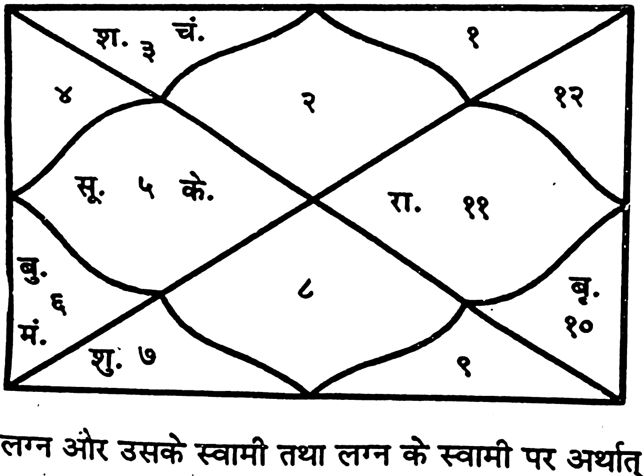
२. शनिवार को दोपहर के समय मध्यमा उंगली में लोहे की बनी अंगूठी गाय के दूध में स्नान कराकर पहननी चाहिए।

विशेष—यद्यपि राहु और केतु छाया ग्रह माने जाते हैं, तब भी इनकी प्रतिकूलता अत्यधिक पीड़ादायक होती है। अतः राहु के मंत्र का जाप करके उसकी विरोधी गति को शांत किया जा सकता है। राहु के मंत्र का जाप इक्कीस हजार की संख्या में बृहस्पतिवार से प्रारम्भ करना चाहिए। मंत्र यह है—"ओम् ग्रां ग्रीं ग्रौं सः राहुवे नमः।"

राहु का शुभ/अशुभ प्रभाव

राहु एक गंदा ग्रह है, तभी इसको पापी भी माना गया है। जब इसका प्रभाव लग्नों और कुंडली के चौथे घर पर पड़ता है तो यह पांव के रोग को प्रदान करता है। इसके लिए कुंडली का अध्ययन करना बहुत जरूरी है।

निम्नलिखित कुंडली एक ऐसे शख्स की है जिसे कई बार पांव के रोग का कष्ट भोगना पड़ा। कुंडली में राहु की पांचवीं दृष्टि का प्रभाव चंद्र

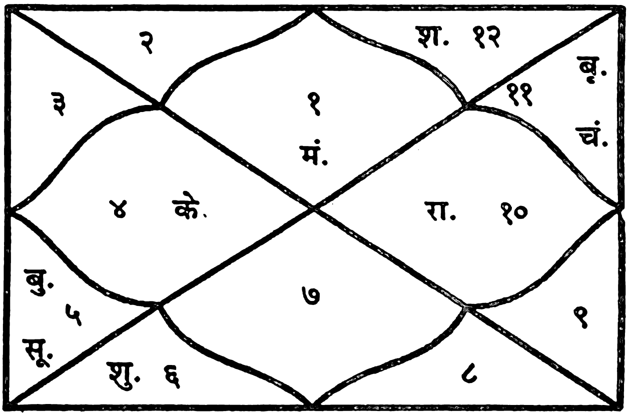


लग्न, सूर्य लग्न और उसके स्वामी तथा लग्न के स्वामी पर अर्थात् सभी पर पड़ रहा है। अतः राहु का उपाय अनिवार्य है।

सर्वोत्तम उपाय के रूप में कोढ़ियों को भोजन कराना, भैरव जी की पूजा और उनके मंत्र का जाप, राहु से संबंधित वस्तुओं का दान अपेक्षित है। चंद्र लग्न को भी विशेष बल देना आवश्यक है क्योंकि चंद्र सूर्य के समीप होने से पक्ष बल में हीन बली है। इसको चांदी की अंगूठी में मोती पहनकर बलवान् करना चाहिये। चंद्र बलवान् होने से शरीर में रक्तदोष भी शांत होगा।

शनि की भांति राहु भी अल्पता लाता है। जब इसका प्रभाव धन द्योतक

अंगों पर हो तो धन में कमी के कारण मनुष्य ऋणग्रस्त हो जाता है। निम्न कुण्डली इसका उदाहरण है—



उपर्युक्त प्रदर्शित जन्मकुण्डली के अध्ययन से यह बात सहज ही ज्ञात हो सकती है कि कुण्डली का स्वामी आयु के पहले दौर में अवश्य ही ऋणग्रस्त (कर्जदार) रहा होगा। दूसरे घर (धन का) और उसका स्वामी भी शुक्र दोनों पर न केवल राहु ही की दृष्टि है, बल्कि राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी शनि की भी दृष्टि है।

ऐसी अवस्था में ऋणग्रस्त हो जाना स्वाभाविक है। उपाय के रूप में शुक्र को बलवान् करना होगा और राहु की शांति करानी होगी। चांदी की अंगूठी में अथवा श्वेत धातु में हीरा लगवाकर पहना जाए और राहु की शांति का उपाय पूर्वोक्त रीति से किया जाए, यही उपाय की उत्तम प्रक्रिया है।

कुछ खास जानकारियां

राहु अपनी मुसीबत खुद भोगता है, अपना संकट किसी दूसरे के मत्थे नहीं मढ़ता। लेकिन इस ग्रह के कारक का जातक के कारोबार एवं रिश्तेदारों पर गहरा असर पड़ सकता है। राहु के खराब होने पर साले या बहनोई पर खास असर होता है।

राहु अकेला ही इतना ताकतवर है कि पल भर में सब कुछ खत्म कर सकता है। अच्छा होने पर यह मददगार साबित होता है और अच्छे–बुरे दोनों तरह के विचारों को जन्म देने वाला है, अगर राहु मंदा हो तो चन्द्र का उपाय सहायता करेगा, क्योंकि चन्द्र से राहु शांत होता है। मगर राहु को

शांत करने में उसकी अपनी ताकत घट सकती है। यों अगर मंगल ताकतवर हो, तो वो राहु को दबाकर रखता है।

पक्का घर	:	१२	श्रेष्ठ घर	:	३, ४ ६
मन्दे घर	:	१, २, ५, ७, १२	रंग	:	नीला
शत्रु ग्रह	:	सूर्य, मंगल, शुक्र	मित्र ग्रह	:	शनि, बुध, केतु
सम ग्रह	:	बृहस्पति, चन्द्र	कार्य	:	बिजली से सम्बन्धित
उच्च	:	३, ६	नीच	:	८, ९ ११
समय	:	पक्की दोपहर	दिन	:	बृहस्पतिवार की शाम
बीमारी	:	ज्वर	मसनुई ग्रह	:	मंगल + शनि (उच्च) सूर्य + शनि (नीच)

राहु के बारे में कहा गया है कि वो चन्द्र से घबराता है, इसी वजह से वो चन्द्र के उपाय से शान्त पड़ जाता है और जातक के दिमाग में अनेक तरह की भ्रांतियां पैदा कर दिमागी दशा को बेचैन कर देता है, दुश्मनों से घिरवा देता है, मगर नेक वक्त पर बचाव भी करता है।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

कोई ग्रह ऐसा नहीं, जो राहु की तरह जातक के भाई समान हिफाजत करता हो, शनि अच्छा हो तो यह जातक को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाता, किन्तु खराब दशा में जातक को बहुत पेरशान करता है, मंगल बद दुबारा शनि के अनिष्ट को राहु बहुत जल्दी भांप जाता है तथा उस समय बड़ी दूरदर्शिता का परिचय देता है, जिसका राहु नीच हो तो निम्न उपाय करें–

१. काले रंग के कपड़े न पहनें।
२. नीली, काली टोपी या कैप अथवा पगड़ी आदि भी न लगाएं।
३. अपनी जेब में हमेशा चांदी का चौकोर टुकड़ा रखें।
४. बादाम और नारियल को दरिया के जल में प्रवाहित करें।
५. सिक्का (लेड), जौ और सरसों को भी जल में प्रवाह करें।
६. खाना रसोईघर में बैठकर खाएं।
७. खोटा सिक्का नदी में डालें।
८. सरसों एवं नीलम रत्न किसी सफाई कर्मचारी को दें।
९. गौ–मूत्र से दांत साफ करें।

पहले घर का उपाय

१. गुड़, गेहूँ, तांबे का दान मददगार होगा। इन दोनों में से एक या दोनों तांबे के पात्र में भरकर रविवार के दिन दरिया के तेज बहते पानी में प्रवाहित करें।
२. काले या नीले रंग के कपड़े न पहनें।
३. गले में चांदी पहनें।
४. नारियल बहते पानी में डालें।
५. चन्द्र का उपाय करें।
६. मन्दे राहु के वक्त सिरहाने सौंफ रखें, सूर्य और राहु की चीजें। दान करें या पानी में बहाएं।
७. एक हिस्सा जौ और चार हिस्सा दूध मिलाकार दरिया में बहाएं।
८. दौलत और जायदाद की कमी रोग में बिल्ली की जेर गंदुमी कपड़े में बांधकर घर में हिफाजत से रखें।

दूसरे घर का उपाय

१. चांदी या सोने की ठोस गोली, केसर सहित चांदी की डिब्बी में बन्द करके सदा अपने पास रखें।
२. हाथी के पांव की मिट्टी कुएं में गिराएं।
३. विवाह के बाद ससुराल से बिजली का कोई सामान न लें।
४. जब शनि मन्दा हो तो सोने या चांदी की ठोस गोली अपनी जेब में रखें।
५. अपने हाथ से दान करें।
६. शनि को मन्दा न करें।

तीसरे घर का उपाय

१. स्वप्न की बातें सच मानकर उन पर अमल करें।
२. असली हाथीदांत घर में रखें (उससे निर्मित कोई वस्तु न हो)।
३. दरिया में श्रीफल प्रवाहित करें।
४. यव को गौ-दुध से धोकर दरिया में प्रवाहित करें।
५. दरिया में कच्चे कोयले बहाएं।
६. मूली का दान करें।

७. राहु के अशुभ प्रभाव को केतु के उपाय से दूर करें।

चौथे घर का उपाय

१. बदन पर कहीं भी चांदी पहनें।
२. ४०० ग्राम सूखा धनिया अथवा ४०० ग्राम बादाम दरिया में बहाएं।
३. सवा किलोग्राम जौ में पांच किलोग्राम दूध मिलाकर नदी के हवाले करें।
४. चालीस साल की उम्र में लड़के की पैदाईश फायदेमंद होगी।
५. गणेशजी की पूजा करें।
६. कन्यादान करें।
७. लड़कियों की शादी में पैसे दान में दें।

पांचवें घर का उपाय

१. औलाद की खुशहाली के लिए घर की देहलीज के नीचे चांदी का पतरा दबाएं।
२. बृहस्पति के साथ होने पर राहु पिता या सन्तान को कष्ट पहुंचाता है, इसलिए चांदी का हाथी हमेशा घर में रखें।
३. शराब, मांस और पराई औरत के साथ दिल को बहलाने की कोशिश न करें।
४. औरत, (पत्नी)के सिरहाने रात को पांच मूलियां रखकर, सुबह वो मूली मन्दिर में दें।
५. अपनी पत्नी से दोबारा फेरे लेने से राहु का बुरा असर खत्म हो जाता हैं।

छठे घर का उपाय

१. काला और भूरा कुत्ता पालना मददगार साबित होगा।
२. शीशे की काली गोली या सिक्के की गोली हमेशा अपने पास रखें।
३. किसी भी काम से जाते वक्त छींकें बुरा असर करेंगी।
४. बड़े भाई या बहन से झगड़ा न करें।
५. सरस्वती देवी की प्रतिमा के आगे छह दिनों तक निरन्तर नीले फूल रखें।
६. हमेशा बड़े भाई के साथ रहने की कोशिश करें।

सातवें घर का उपाय

१. २१वें साल में २१वें साल से पहले शादी न करें।
२. कुत्ता पालने से परहेज करें।
३. बिजली के सामान का कारोबार न करें।
४. सट्टे और जुए जैसी आदतों से बचें।
५. विवाह के समय कन्यादान के साथ शुद्ध चांदी, कन्या का पिता अपने दामाद के हाथ में दें, दामाद उस चांदी को अपनी पत्नी के हाथ में पकड़कर और पत्नी उस चांदी को जीवन भर अपने घर में संभालकर रखें, तो धन-दौलत की कमी न रहेगी।
६. औरत (स्त्री) दुःखी हो, तो घर में चांदी की ईंट रखना शुभ होगा।
७. चार सौ ग्राम नारियल या बादाम शनिवार के दिन दरिया में बहाएं।
८. एक पीपी में गंगाजल भरकर, टांका लगाकर घर में कायम करें। पीपी में गंगाजल भरते वक्त चांदी का एक टुकड़ा भी डाल दें।
९. अगर २१वें साल से पहले शादी हुई है तो चांदी की कटोरी में गंगाजल भरकर, उसमें चांदी का चौकोर टुकड़ा डालकर रखें और उसी तरह की एक चांदी की कटोरी में गंगाजल भरकर और उसमें चांदी का टुक़ड़ा डालकर स्त्री अपने पास हिफाजत से रखें। यह काम आसान न दिखे, तो पूजा-स्थल पर रख दें, इससे राहु के सभी अनिष्टों को शमन होगा।

आठवें घर का उपाय

१. व्यर्थ के झगड़ों में धन का व्यय न करें।
२. बेईमानी या गलत तरीके से दौलत न कमाएं।
३. चांदी का चौकोर टुकड़ा अपनी जेब में रखने से राहु के मन्दे असर को दूर किया जा सकता है।
४. अगर घर के पास कोई भी हो तो उसमें तांबे का कोई सिक्का डाल आएं।
५. ४३ दिन तक (रोज एक) खोटे सिक्के मन्दिर में जाकर चढ़ाएं।
६. राहु के मन्दे असर से बचने के लिए बेईमानी के कामों से परहेज करें।
७. सिरहाने सौंफ और देसी खांड रखकर सोएं।
८. आठवें महीने से लेकर अगले जन्म दिन तक चार महीने लगातार

आठ बादाम मन्दिर में चढ़ाकर और चार वापस लाकर एक सुरक्षित पात्र में डालते रहें। जब जन्मदिन आए, तो उन सब बादामों को दरिया के पानी में प्रवाहित कर दें।

९. सिक्का (लैड) आठ बुधवार नदी में डालें।

नौवें घर का उपाय

१. धर्म-कर्म से हीन न हों।
२. भाई-बहनों से बनाकर रखें।
३. शनि से सम्बन्धित कारोबार से लाभ होगा।
४. औलाद की हिफाजत के लिए घर में कुत्ता पालें। यदि कुत्ता मर जाए, तो दूसरा कुत्ता लाकर पालें।
५. परिवार में मुखत्यारी न करें (मुखिया न बनें)।
६. बिजली के सामान का कारोबार न करें।
७. ससुराल से अच्छे रिश्ते कायम रखें।
८. सिर पर चोटी रखें।
९. शरीर पर किसी भी रूप में सोना धारण करें।

दसवें घर का उपाय

१. किसी भी खर्चे में कन्जूसी न करें।
२. नंगे सिर रहने से राहु का असर नीच होगा, इसलिए सिर नंगा न रखें।
३. मंगल का उपाय करते रहा करें, यानि मसूर की दाल बहते पानी में बहाएं। देसी खांड चार सौ ग्राम या चार किलोग्राम पानी में बहाएं अथवा मन्दिर में दें।
४. शनि के मन्दे कामों से बचें।
५. अन्धों को खाना खिलाया करें।
६. तंगदिली दूसरों के साथ बैर की वजह बनेगी, इसलिए तंगदिली से काम न लें।
७. अपने परिवार से अलग न रहें।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. राहु की चीजें—जौ, सिक्का, नारियल आदि दरिया में बहाएं।

२. तांबे का सिक्का कुएं में गिराएं।
३. बिजली का सामान किसी से मुफ्त में न लें।
४. नीले रंग की वस्तुएं, नीलम रत्न, हाथीदांत आदि घर में सहेज कर रखें।
५. घर–दुकान से भिखारी को कभी खाली हाथ न जाने दें।
६. लोहे का कड़ा या अंगूठी पहनें।
७. शनि के मन्दे कामों से परहेज करें।
८. बृहस्पति को उच्च करें।
९. पिता, केसर और सोने को पास रखें। इससे राहु का मन्दा असर दूर होगा।
१०. पिता की मृत्यु के बाद गले में सोना पहनें।
११. केसर का तिलक लगाएं।
१२. नए आदमी या औरत पर यकीन न करें।
१३. चांदी के गिलास में पानी पिया करें।

बारहवें घर का उपाय

१. बुरे व्यसनों में मेहनत की कमाई खर्च न करें।
२. हालात से समझौता करना सीखें।
३. काम पर जाते वक्त छींक की आवाज पर थोड़ी देर के लिए ठहर जाएं।
४. रात को सोते वक्त सिर के नीचे मंगल की चीजें–सौंफ, मूंगा आदि रखें।
५. बीमारी से बचने के लिए योग करें।
६. रसोई में बैठकर खाना खाएं।
७. अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा बहन या बेटी को देते रहें।
८. बिल्ली के रास्ता काटने पर यात्रा पर न जाएं या कुछ देर ठहरने बाद जाएं। किसी भी काम से शनि को मन्दा न करें।

दुर्घटना व शोक का ग्रह केतु

केतु का पौराणिक दृष्टिकोण केवल यही है कि समुद्र-मंथन के समय राहु ने देवरूप धारण कर अमृतपान किया और फलस्वरूप विष्णु जी ने अपने चक्र से उसका सिर काट डाला। किन्तु अमृत पीने के कारण राहु का शरीर जीवित रहा। उसी समय से धड़ का ऊपरी भाग और गरदन से नीचे का भाग केतु के नाम से विख्यात् हुआ।

केतु अत्यंत बलवान् और मोक्षप्रद माना जाता है। मेष राशि का यह स्वामी है। इसका विशेषाधिकार पैरों के तलवों पर रहता है। यह नपुंसकलिंगी और तामस स्वभाव का है। इसका उच्च स्थान मेष और नीच स्थान वृश्चिक है। यह बृहस्पति के साथ सात्त्विक तथा चंद्र एवं सूर्य के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है, तथा अपने स्थान से सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

कुंडली में यह सदैव राहु से सातवें स्थान पर रहता है। इसकी विंशोत्तरी दशा सात वर्ष की मानी गई है। केतु की मित्र राशियां मिथुन, कन्या, धनु, मकर और मीन हैं तथा शत्रु कर्क, सिंह राशियां हैं। जातक की कुंडली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार केतु ग्रह से भयानक एवं अद्‌भुत स्वप्न दर्शन, दुर्घटना तथा मृत्यु के शोक आदि का विचार किया जाता है।

केतु एक क्रूर ग्रह है। त्वचीय रोग आदि का कारक भी यही ग्रह है। इसकी दशा में जातक को अचानक द्रव्य-प्राप्ति होती है। पुत्र एवं स्त्री लाभ होता है तथा साधारण रूप से आय बढ़ती है। नीच केतु की दशा में जातक कष्ट उठाता है तथा बंधुओं का विरोध सहने को विवश करता है। व्यसनों से वो स्वयं को दूसरों की दृष्टि में गिराता है। नवीन कार्यों के शुभारंभ करने से उसे असफलता का मुंह देखना पड़ता है। स्त्री से हानि और व्यापार से लाभ पहुंचता है।

बारह घरों में केतु का फल

पहला घर—जिसके जन्म लग्न (जन्मकुंडली के पहले घर) में केतु

हो वो जातक भीरू, चंचल स्वभाव का तथा मूर्ख होता है। किन्तु यदि वृश्चिक लग्न हो और उसमें केतु मौजूद हो तो जातक धनी, परिश्रमी तथा सुख उठाने वाला होता है। उससे बंधु-बांधव परेशान रहते हैं। उसका मन सदैव अशांत रहता है तथा दुर्जनों से भयभीत रहता है। उसके शरीर में वायु-संबंधी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जो परेशानी का कारण बनते हैं।

जन्मकुंडली में केतु के पहले घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है--

१. दुनियावी कारोबार को हल करने के लिये तथा सलाह-मश्विरे के लिये दौड़-धूप का ४८ साला उम्र का जमाना केतु से प्रभावित होगा।
२. कुंडली का पहला घर मंगल व सूर्य से प्रभावित है। अगर मंगल कुंडली के बारहवें घर में हो तो केतु का पहले घर पर कभी बुरा असर न होगा।
३. कुंडली में केतु कैसा ही मंदा हो, मगर बृहस्पति का असर उत्तम होगा तथा पिता की मंदी किस्मत में हमेशा मदद देगा।
४. दौलत और वासना की बेहयाई दोनों ही साथ-साथ बढ़ते होंगे।
५. रिजक बंद होने की कोई शर्त न होगी, इसलिये कल की कोई ऐसी फिक्र भी न होगी जिसकी वजह से दम सूखता रहे।
६. शादी के बाद जब केतु मंदा हो तो शनि जरूर नेक असर और मदद देगा। शनि का उपाय भी कारामद होगा।
७. सफर का हुक्मनामा जारी होने की फिक्र होगी मगर फिक्र एक इंतजार बनकर रह जाएगी । न हुक्मनामा जारी होगा और न सफर हो सकेगा।

दूसरा घर—दूसरे घर में केतु हो तो जातक को पिता का धन कठिनता से ही प्राप्त होता है। उसे जितने सम्मान की आशा होती है उतना सम्मान उसे नहीं मिल पाता है। वैसे जातक अत्यंत सुखी व मुख का रोगी होता है। ऐसा जातक विद्या हीन, धन हीन, निकृष्ट वचन बोलने वाला, कुदृष्टि (नेत्र विकार अथवा जिसके देखते हुये कोई भोजन आदि करे और नजर लग जाए) वाला और दूसरे के यहां भोजन करने में निरत होता है, जिसे एक महान दोष माना जाता है।

जन्मकुंडली में केतु के दूसरे स्थान के बारे में लाल किताब के लेखक का मत है—

१. जिस शख्स की कुंडली के दूसरे घर में केतु पड़ा हो वो केतु की मियाद यानी चौबीस साला उम्र के बाद खुद कमाकर खाने वाला और बारौनक जिंदगी का मालिक होगा।

२. सफर और हुकूमत को ज्यादा मगर हर दो का हर तरह से उत्तम फल और हर तरफ तरक्की का मुबारिक समय होगा। माथे पर तिलक कुदरती मदद देगा या माथे पर तिलक की जगह केतु का निशान व त्रिकोण मुबारिक होगा।

३. हर नया सफर किस्मत की तारीख पर होगा यानी पहले दक्षिण को चलेगा तो फिर पश्चिम में ठहरे, फिर पूरब में आए। सफर के साथ किस्मत भी घूमती होगी। हालांकि खुश्की का सफर होगा मगर तरक्की देगा, इसमें कोई शक नहीं है।

४. माथे पर हल्दी का तिलक लगाकर सफर पर जाएगा तो शौहरत, इज्जत और दौलत का लाभ मिलेगा। जहाँ भी काम से जाए, पहले धर्म स्थान पर जाकर माथा टिका आवे, तो काम में कामयाबी मिले।

५. बृहस्पति को बलवान् करना भी फायदे का सौदा होगा।

तीसरा घर—कुंडली के तीसरे घर में केतु बैठा हो तो जातक भूत-प्रेतों पर विश्वास रखने वाला, तंत्र शास्त्र का भक्त, बेकार की बातें करते रहने वाला बकवादी, स्वभाव से चंचल होता है। वो अपने शत्रुओं का नाश करने वाला, धनभोगी तथा ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है। ऐसा जातक दीर्घायु, बलवान्, धनवान् और यशस्वी एवं अन्न सुख व स्त्री सुख से परिपूर्ण होता है। किन्तु कुंडली के तीसरे घर में केतु भाई को नष्ट करने वाला होता है।

जन्मकुंडली में केतु के तीसरे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुंडली का तीसरा घर जिसमें केतु पड़ा है, मंगल और बुध से प्रभावित है। मंगल और बुध केतु के ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पक्के दुश्मन हैं। तीसरे घर को आठवें घर का दरवाजा भी मान लिया गया है और यह तीसरा घर मुर्दा कोठरी भी है, जिसकी दिशा दक्षिण है। अब अगर दक्षिण की दिशा में खुलने वाले मकान में रहा जाएगा तो वो मुर्दा कोठरी के ही समान होगा, इसलिए उस कोठरी का फल पुत्रों के लिए बड़ा अनिष्ट का होगा। यानी ऐसी कुंडली वाला शख्स औलाद की तरफ से दुःखी रहेगा।

२. भाई वगैरा और ससुरालिए मौका पड़ने पर गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले होंगे। हालत नेक होगी तो औलाद भी नेक निकलेगी। मगर साथी हर वक्त बिन बुलाए मदद को आ जाने वाला मेहरबान होगा।

३. अपने दिमाग का इस्तेमाल किए बिना दूसरे की हां-में-हां मिलाना उसकी आदत में शुमार होगा, जिसकी वजह से बाद में उसे दुःखी होना पड़ेगा।
४. केतु की मंदी हालत में भाइयों से तंग और दुःखी होगा। परदेश में भटकता फिरेगा और उम्र व दौलत को अपने हाथों बर्बाद करेगा।
५. बेवजह दौलत की बर्बादी, मुकदमे आदि की लगातार पड़ने वाली पेशियों की वजह से होगी।
६. केतु से संबंधित रोग अगर दवा वगैरा से आसानी से न चले जाएं, तो फिर ग्रह दोष का उपाय करना जरूरी होता है। जो रोग दवाओं से नहीं जाते वो छोटे-मोटे टोटकों से दूर हो जाते हैं। यदि सेहत बहुत खराब हो तो बृहस्पति की वस्तुओं को दरिया में बहाना उत्तम उपाय है। माथे पर केसर का तिलक लगाना भी लाभकारक है। अगर जिंदगी बहुत तंगी में बीत रही हो तो माली हालत को दुरुस्त करने के लिए जिस्म पर कहीं भी सोना पहनना मुबारिक होगा। इसी तरह सूर्य और चंद्र से संबंधित वस्तुओं को दरिया में बहाने से मंदे सफर से बचाव होता है।

चौथा घर—जिसकी कुंडली के चौथे घर में केतु हो वो जातक माता और मित्र के सुख से वंचित रहता है। उसकी पैतृक संपत्ति नष्ट हो जाती है तथा अपने ही घर में वो अधिक समय तक टिक नहीं पाता है। यदि केतु उच्च का हो तो जातक बंधु-बांधवों को सहायता पहुंचाने वाला होता है। वो निरुत्सायी और निरुद्यमी होता है। ऐसा जातक दूसरे के घर में रहता है और उसकी अपनी भूमि, खेत, माता, सुख आदि नष्ट हो जाते हैं। उसे जन्मभूमि भी छोड़नी पड़ती है।

जन्मकुण्डली में केतु के चौथे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. संतान बहुत देरी से पैदा होगी या देर बाद कायम होगी। वो भी किसी बुजुर्ग के दुआओं के फल से या फिर जन्मकुंडली में बृहस्पति उत्तम हो, मगर औलाद के ताल्लुक में सब्र का फल मीठा होगा। जब लड़का पैदा होगा तो वो दीर्घायु होगा।
२. माता की उम्र व धन-दौलत की हालत मंदा होगी यानि चंद्र की सब चीजों का फल मंदा होगा। मगर खुद अपनी उम्र और दौलत हर तरह से उम्दा होगी।

३. बृहस्पति के उपाय से औलाद में दौलत में बरकत होगी। उपाय के रूप में किसी मन्दिर या धर्मस्थान के प्रांगण में सोना और धर्मपुजारी (साधु-महात्मा) को जर्द रंग की वस्तुएं अर्पण कर उससे आशीर्वाद लेना सहायक होगा।
४. अगर किस्मत साथ देगी और बुद्धि से काम लिया जाएगा तो दौलत की कमी न रहेगी।
५. मंगल केतु के चौथे घर में रहकर जातक को कई तरह की बीमारियां देगा, जिसकी वजह से उसके मन की शांति भंग होगी, मूंगा दान करना मुबारिक होगा।

पांचवां घर—कुंडली के पांचवें घर में केतु मौजूद हो तो जातक के सगे भाई ही उसे कष्ट पहुंचाते हैं। वैसे भी उसे उल्टे-सीधे काम करने पर उससे होने वाली हानि से कष्ट उठाना पड़ता है। कम संतान वाला यह जातक पराक्रमी होने पर भी दूसरों का दास बना रहता है। वायु रोग से भी वो व्यथित रहता है। पांचवें घर में केतु पुत्र क्षय करता है। उसे उदर विकार भी होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः खल प्रकृति का और दुर्बुद्धि होता है।

जन्मकुंडली में केतु के पांचवें घर के बारे में लाल किताब का मत यह है—

१. माली हालत में केतु का असर कभी मंदा न होगा।
२. औलाद के रूप में कम-से-कम पांच लड़कों का पिता होगा। यह तभी होगा जब चंद्र, बृहस्पति या सूर्य कुंडली के घर चौथे, छठे या बारहवें में हो। इसी तरह शनि औलाद के ताल्लुक में कोई मंदा असर न देगा। लड़कों की हालत तादाद और उम्र बृहस्पति की हालत पर होगी। उठती जवानी के वक्त अगर आदत और नीयत से नेक हो तो लड़कों-पोतों की तादाद और भी बढ़ती होगी।
३. केतु का फल अपने लिए उत्तम होगा और नेक हालत में कुटुंब के लिए भी।
४. मंदी हालत में औलाद के लिए तरसना पड़ेगा। अगर ग्रह फेवर में न हुआ तो औलाद पेट में ही मरे या बने ही नहीं या होने के बाद भी न रहे। अगर कुंडली के तीसरे और चौथे घर में चंद्र और मंगल हों तो तीन लड़के नष्ट होने के बाद छत्तीस साला उम्र तक फिर तीन कायम जरूर होंगे। हालांकि केतु का असर मंदा होगा, फिर भी कायम लड़के खुद भी सुखी होंगे और दूसरों को भी सुख देने वाले होंगे।

५. केतु के मंदे असर के वक्त चंद्र और मंगल से संबंधित वस्तुओं का दान मुबारिक होगा।

छठा घर—जिस जातक की जन्मकुंडली के छठे घर में केतु होता है, वो मन का बड़ा ही संकीर्ण होता है; झगड़ालू, भूत-प्रेत जनित रोगों से ग्रस्त, सुखी, नीरोगी एवं मितव्ययी होता है। मामा द्वारा उसकी मानहानि होती है। चौपायों (जानवरों) आदि के पालन में उसे असीम सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक उदार, उत्तम गुण वाला, दृढ़, प्रसिद्ध, प्रभु (श्रेष्ठपद प्राप्त करने वाला), अरिमर्दक (शत्रुओं को पराजित करने वाला) होता है। उसे प्रायः इष्ट सिद्धि होती है।

जन्मकुंडली में केतु के छठे घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. कुंडली में बृहस्पति जिस हालत में होगा, केतु का असर भी वैसा ही होगा। वैसे छठा घर बुध का है जो केतु से प्रभावित है।
२. नेक हालत में शनि का असर भला ही होगा। अपनी औलाद व दीगर सलाहकार हमेशा नेक फल देंगे। दुश्मन अधीन होंगे। दौलत का खजाना बढ़ता होगा।
३. अपने घर में अकेला बैठा हुआ केतु उत्तम फल देगा। ऐसी कुंडली वाला शख्स अपने लिए अच्छा होगा मगर दूसरों पर अपना बुरा असर देगा।
४. बुध और केतु दोनों ही का नेक फल होगा।
५. अगर शख्स अहंकार न करे और खुदा का नेक बंदा बना रहे तो यकीनन केतु अपनी जगह पर बैठा हुआ अपनी नेकी में बढ़ता और उम्दा फल देता होगा।
६. सत्तर साला उम्र से कम कतई न होगी। मगर मंदी हालत में कम उम्र की कोई बंदिश नहीं है।
७. वैसे तो केतु असलियत में बुध का दुश्मन और शुक्र का दोस्त होता है। मगर मंदी हालत में, उस घर में केतु की चाल उलट होगी। यानी केतु अब बुध का दोस्त और शुक्र का दुश्मन होगा। यह अपने शख्स को ठोकरें खाने वाला बुजदिल इंसान बना सकता है। ऐसे में उल्टे हाथ में सोने की अंगूठी पहनना मुबारिक होगा। अथवा दूध में गरम सोना बुझाकर पीने से भी ग्रह का अनिष्ट प्रभाव दूर होगा यानी केतु का मंदा असर दूर होगा और सुख में किसी भी प्रकार से रुकावट न डालेगा।

सातवां घर—जिसकी कुंडली के सातवें घर में केतु हो वो जातक व्यर्थ की चिंता करने वाला होता है। उसके पास का संचित धन थोड़े समय में ही समाप्त हो जाता है। पानी से उसे बहुत डर लगता है। स्त्री और पुत्रादि उससे पीड़ित रहते हैं तथा उसका मन सदा अशांत रहता है। यदि सातवां घर वृश्चिक राशि का हो तो केतु बहुत उम्दा होता है। किन्तु जातक को अपमान भी सहन करना पड़ता है। वो व्यभिचारिणी स्त्रियों से रति करता है। उसका स्वयं अपनी पत्नी से वियोग होना भी संभव है। उसे अंतड़ियों का तथा धातु (वीर्य) रोग हो सकता है। उसकी पत्नी भी रोगिणी रहती है।

जन्मकुंडली में केतु के सातवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. एक ही ऐसा नेक होगा कि अपने साथ अपने मां-बाप के नाम को भी ऊंचा करेगा। उसके पैदा होने के बाद दौलत दिन-ब-दिन बढ़ती होगी।
२. रिजक देने वाली हवाई चक्की मदद पर चलती होगी और शुक्र या शनि कभी मंदा न होगा।
३. सब-कुछ पास में हो फिर भी दूसरों के सामने रोता रहे, तो यह उसकी खता नहीं, बल्कि उसकी नस्ल का कसूर होगा।
४. सामने घर का हाल केतु की चीजों पर मंदा होगा।
५. जन्मकुंडली वाला अगर बर्बाद होगा तो अपना खुदी और तकव्वुर से ही बर्बाद होगा।
६. अगर केतु मंदा हो तो भी जिस दिन कुंडली के पहले घर में जाए या जातक का लड़का जब बालिग हो जाए, तब उम्दा हो। मंदी जुबान और झूठा वायदा घातक बीमारी देगा। शुक्र गृहस्थी में आग पर घी का काम करेगा। मगर बुध ३४ साला उम्र के बाद तारेगा और जो दुश्मनी करे वो खुद ही बर्बाद होगा। ३४ साला उम्र तक दुश्मन जरूर गले लगे रहेंगे, मगर कुछ बिगाड़ न पाएंगे। उनका कोई बुरा असर न होगा।

नोट—समयानुसार कुंडली का अध्ययन करना और उसमें मौजूद ग्रहों का अनिष्ट रुख परख कर ही उसका निवारण करने का प्रयास करना चाहिए। मंदे ग्रह को बलवान् किया जा सकता है यदि उसका उपाय ठीक वक्त पर ठीक तरह से किया जाए।

आठवां घर—जिसकी कुंडली के आठवें घर में केतु होता है वो जातक दुष्टबुद्धि का, तेजहीन. स्त्रीद्वेषी एवं चालाक होता है। किन्त यदि आठवें घर

का केतु वृश्चिक, कन्या और मेष राशि पर हो तो उस जातक की संपत्ति बढ़ती है। आठवें घर में केतु होने से इष्ट (प्रियजनों) से विरह होता है, वो स्वयं कलहकारी और स्वल्पायु होता है। उसे प्रायः शस्त्र से चोट लगती है और उसके सब उद्योगों में विरोध होता है। ऐसा जातक बवासीर आदि रोगों से पीड़ित रहता है। वाहनादि से गिरकर मृत्यु हो जाने का भय रहता है। धन का अभाव भी उसे खलता रहता है।

आठवां घर मंगल का है जो केतु का दुश्मन है। इस घर में किसी भी ग्रह को शुभ नहीं माना जाता, इसलिये आठवें घर में केतु होने पर संतान-सुख को कम करता है।

जन्मकुंडली में केतु के आठवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. जन्मकुंडली के बारहवें घर में मंगल हो तो केतु का आठवें घर में मंदा असर होगा।
२. जब तक बुध और शुक्र उम्दा हों, केतु मंदा नहीं हो सकता, चाहे ग्रह चाल कोई भी हो।
३. केतु के अच्छे या बुरे होने का फैसला हमेशा घर नम्बर बारह से होगा।
४. शादी के बाद औलाद जल्दी से कायम हो या देर से, मगर अपनी उम्र हर हालत में लम्बी होगी।
५. पूरी उम्र सत्तर साल से कम तो हर्गिज न होगी, बेशक ज्यादा हो।
६. आठवें घर में पुत्र का सुख मंदा होगा। ३४ साल से पहले की और ३४ साल के बाद यानी दोनों तरफ की औलाद शायद ही जीवित बचे। ४८ साला उम्र में औलाद कायम होगी। कुंडली में अगर बुध पहले या सातवें घर में बैठा हो तो पुत्र अमूमन जन्मकुंडली वाले की ३४ साला उम्र के बाद की पैदा शुदा आखिर तक कायम रहेगी।

   कुंडली का छठा घर केतु का अपना घर भी है और वहां केतु नीच का भी है, इसलिए जब बुध छठे घर में हो तो ३४ साल से पहले या बाद में दोनों ही तरफ की औलाद कायम यानी जिंदा रहेगी। ऐसी हालत में किसी उपाय की जरूरत न होगी।
७. कुंडली में केतु आठवें घर में हो और बुध व शुक्र अमूमन मंदे घरों में पड़े हों तो उनका असर औरत (पत्नी) की सेहत पर पड़ेगा। यानी औरत की सेहत खराब रहेगी। औरत की सेहत मंदी होने से रोकने के लिए केतु की शांति कराना जरूरी होगा।

८. मंदे वक्त की पहली निशानी कुत्ते का मकान की छत पर बैठकर रोना होगा और यह पुत्र के कायम न रहने की निशानी होगा। इस हालत में केतु की बीमारियों का फल जो मूत्र से संबंधित होगा, भोगना होगा। ३५ साला उम्र तक केतु का फल बहुत मंदा रहेगा। मर्द व औरत दोनों ही सुख से न रहेंगे।

९. औलाद व दौलत दोनों ही मंदे बल्कि मंगल और केतु दोनों ही का फल मंदा होगा।

१०. केतु की वस्तुएं (दो रंग का काला और सफेद कंबल) धर्म स्थान में देना लाभदायक होगा। अगर केतु के अलावा कोई और ग्रह मंदी हालत में दुःखी कर रहा हो तो उस ग्रह से संबंधित वस्तु को कोरे काले सफेद/कपड़े में बांधकर किसी वीराने में जाकर दबाना मुबारिक होगा। औलाद की मंदी हालत में कान छेदन कराना मददगार होगा। केतु के मंदे असर को दूर करने के लिए सोना पहनना या धर्म स्थान में सोना दान करना अच्छा उपाय है।

नौवां घर—इस घर में केतु हो तो जातक को अपने भाइयों से सदैव भय बना रहता है। वो परोपकार अथवा दानकर्त्ता होता है। उसके ऐसा करने पर लोग उसे मूर्ख कहते हैं। भाग्य को उज्ज्वल बनाने के प्रयास में वो तत्पर रहता है। उसका दुःख दूर होता है और नीच कर्मरत लोगों से उसका धन बढ़ता है। चाहे कितना ही बड़ा परोपकारी और दानवीर वो क्यों न रहा हो, पर होता है पाप वृत्ति वाला। वो अशुभ कर्मा, पितृहीन, भाग्यहीन, दरिद्री और सज्जन पुरुषों की निंदा करने वाला होता है। उसका जीवन बड़ा ही उतार-चढ़ाव वाला होता है।

कुंडली का यह नौवां घर वास्तव में बृहस्पति का है जो निश्चय ही केतु को बलवान् करने वाला और केतु के दोषों को दूर करने वाला है।

जन्मकुंडली में केतु के नौवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बहादुरी और वफ़ादारी का मालिक होगा। दस्ती मेहनत से दौलत हासिल करेगा। तरक्की करना उसके नसीब में होगा अगर केतु की हालत मंदी न हुई तो। यह खासियत उसकी औलाद में भी दिखाई देगी।

२. केतु की अच्छी या बुरी हालत का फैसला बृहस्पति की हालत पर होगा।

३. मेहनत से गुरेज न करेगा तो यकीनन दौलतमंद होगा।

४. बृहस्पति, शुक्र और शनि का उम्दा फल और कुंडली के दूसरे घर का हर एक ग्रह मय चंद्र के उम्दा फल देगा।
५. कुंडली के सातवें घर के ग्रह की उम्र (बृहस्पति सोलह साल और सूर्य बाइस साल) के साल गुजरने के बाद केतु का असर उम्दा हालत पर होगा। औलाद के ताल्लुक में भी ग्रहों का ऐसा दशाफल मददगार होगा।
६. परदेश में जाकर काम-धंधा करना ज्यादा फायदेमंद रहेगा।
७. पुत्र नेक और अच्छी सलाह देने वाला होगा, जो बाप का फरमाबरदार (आज्ञाकारी या कहने पर चलने वाला) और वाल्दैन का एहसान सारी उम्र न भूलेगा। अहसान फरामोश न होगा। मां-बाप के साथ खानदान का नाम भी रोशन करेगा। मग़र मंदी हालत में अपने ही मामू की जड़ काट देगा, उसे खाना-खरात्र करेगा।
८. अगर कुंडली के तीसरे घर से मंगल केतु को देखेगा तो उसे और भी मंदा करेगा और कान, पैर, रीढ़, हड्डियों के जोड़ और मूत्र-संबंधी तकलीफें देगा। ऐसी हालत में बृहस्पति की मदद लेना अच्छा रहेगा। यहां बृहस्पति सहमित्र का काम करेगा, क्योंकि वो मंगल का भी मित्र है।
९. सोना घर में रखना दौलत को बढ़ाएगा, कारोबार में बरकत देगा और सोना पहनना केतु के मंदे असर को दूर करने में मदद देगा।

दसवां घर—कुंडली के इस दसवें घर में केतु मौजूद हो तो जातक भाग्यवान् तथा कष्टमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। उसे पिता का सुख नहीं के बराबर मिलता है। यदि दसवें घर में कन्या या वृश्चिक राशि हो तो केतु शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। यदि दसवें घर में केतु हो तो सत्कर्म करने में अनेक विघ्न आते हैं या जातक स्वयं सत्कर्म करने में विघ्न उत्पन्न करता है। ऐसा जातक अत्यंत तेजस्वी और अपनी शूरवीरता के लिए प्रसिद्ध हो, किन्तु ऐसा जातक दुष्ट कर्मा और अशुद्ध होता है।

कुंडली का यह दसवां घर शनि का माना गया है जो राहु और केतु दोनों ही से बड़ा खिलाड़ी है, बल्कि राहु/केतु जैसे खिलाड़ियों का कप्तान है। यही वजह है कि ये दोनों जातक को शनि की इच्छानुसार अपना शुभ या अशुभ फल देते हैं। अतः जन्मकुंडली में जैसा शनि होगा, केतु का फल उसके अनुसार होगा।

जन्मकुंडली में केतु के दसवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. शनि शक्की हालत का माहौल पैदा करेगा, औलाद पर बुरा असर करेगा मगर मालो-दौलत पर कभी मंदा न होगा।
२. अपनी समझ से अपने रास्ते पर लगातार आगे बढ़ता जाने वाला होगा।
३. दौलतमंद होगा, मिट्‌टी से भी सोना हासिल करेगा। बृहस्पति का फल उम्दा होगा। शनि उम्दा या उम्दे घरों में होगा।
४. मंदी हालत में जब शनि मंदा हो, केतु से संबंधित वस्तुओं पर २४-२८ साला उम्र तक मंदा असर देगा।
५. किसी पराई औरत पर गंदी नजर डाली तो वो यकीनन मंदे कफन का सबूत देगी।
६. औलाद की मुतल्लका (बर्बादी आदि) चांदी के किसी छोटे से बरतन में शहद भरकर घर से दूर किसी वीराने में दबा आना मुबारिक होगा और घर में कुत्ता पालना मददगार होगा। चाल-चलन पर काबू रखने से केतु नष्ट होगा और शनि भी मंदा असर न करेगा। ऐसे में केतु के आठवें घर में दिया हुआ उपाय मददगार होगा। अकेला केतु मंदा हो तो मदद मंगल से मिलेगी।
७. अढ़तालिस साला उम्र के बाद मकान बनाना मुबारिक होगा मगर इस उम्र से पहले मकान बनाना दौलत की कमी का सबब बनेगा। और भी कोई परेशानी उठ खड़ी हो सकती है।

ग्यारहवां घर—यदि लाभ स्थान (ग्यारहवें घर) में केतु हो तो जातक को सभी प्रकार का लाभ देता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान्, विद्वान्, उत्तम गुणों से भूषित तथा तेजस्वी होता है। उसकी संतान अभागी होती है तथा वो उदर रोग से पीड़ित रहता है। वो उत्तम द्रव्य वाला, द्रव्य संग्रह करने वाला, अनेक गुणों से संपन्न तथा उत्तम भोगों से युक्त होता है। ऐसे जातक के पास बहुत से भोग्य पदार्थ रहते हैं और सब कार्यों में उसे सिद्धि मिलती है।

जन्मकुंडली में केतु के ग्यारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत है—

१. जातक की बीती दशा बहुत अच्छी रही, इसलिए हमेशा आगे का ख्याल रखना होगा। पुश्तैनी जायदाद या दौलत इतनी न होगी कि उम्र बिना कुछ किए यों ही बीत जाए, बिना किए गुजारा न होगा।
२. मकान औलाद दोनों की उन्नति न होगी मगर औरत की जन्मकुंडली में शनि बुरा होने पर केतु कभी मंदा न होगा।
३. कुंडली के तीसरे घर से शनि देखता हो तो वो केतु को कभी मंदा न होने देगा; बुध देखेगा तो केतु के प्रभाव को कम करेगा।

४. बेटा, पोता या दोहता की पैदाईश पर जातक की पत्नी या माता की आंखों की रोशनी में फ़र्क आ जाएगा यानी आंखों की रोशनी कम होगी।
५. नेक काम को चलते वक्त किसी दूसरे प्राणी की तरफ से पीछे से दी हुई आवाज मंदे असर की निशानी होगी।
६. ग्यारह, तेइस, छत्तीस और अढ़तालीस साला उम्र में चंद्र का फल मंदा या सिफर रहेगा।
७. शनि की वस्तुएं जैसे सफेद मूली आदि खासकर रात को औरत के सिरहाने रखकर सुबह मंदिर में रखना मुबारिक होगा। उन औरतों के लिए यह उपाय मददगार होगा जिन्हें औलाद की फिक्र हो। इस उपाय से वो अवश्य ही पुत्र को जन्म देने में कामयाब होगी।

बारहवां घर—जिसकी कुंडली के बारहवें घर में केतु हो, वो जातक उच्च पद को प्राप्त करने वाला तेजस्वी होता है। श्रेष्ठ कर्मों में उसका धन व्यय होता है। मुकदमे आदि में शत्रुओं के विरुद्ध उसकी जीत होती है। वो जातक गुप्तेंद्रिय तथा नेत्रों की पीड़ा से व्यथित रहता है। ऐसा जातक चंचल, बुद्धिमान, ठग, धोखा देने वाला तथा सभी लोगों पर संदेह करने वाला होता है। वैसे बारहवें घर में केतु अनिष्ट फल करता है। जातक गुप्त रूप से पापी कृत्य करता है और दुष्ट कार्यों में धन का व्यय करता है। इस प्रकार ऐसे जातक प्रायः अपना धन नष्ट कर देते हैं और जो सज्जनोचित कार्य का मार्ग है, उससे विरुद्ध चलते रहते हैं।

जन्मकुंडली में केतु के बारहवें घर के बारे में लाल किताब के लेखक का मत यह है—

१. बारहवें घर को भी बृहस्पति का माना गया है। यह केतु की मदद ही नहीं करता, बल्कि उसको ताकतवर भी बनाता है। इसलिए इस बारहवें घर में वो हर तरह से उम्दा फल देने वाला होगा।
जन्मकुंडली में केतु कितना ही नीच, मंदा या बर्बाद क्यों न हो, जब तक घर में खाट (चारपाई) मौजूद है और इस्तेमाल में आती रहे तो केतु का फल कभी मंदा न होगा।
२. दौलतमंद परिवार का होगा और जायदाद का मालिक होना उसका कुदरती हक होगा। केतु का फल ऊंचा होगा। गृहस्थी के सुख में सब तरफ बरकत होगी। शानो-शौकत और आला औलाद होगी।
३. मंगल और राहु ईर्ष्या करेंगे या उनकी मुतल्लका अशियां (वस्तुएं) या

रिश्तेदार मदद न करेंगे, मगर केतु अपने लड़के की मुतल्लका अशियां व रिश्तेदार हर तरफ से बरकत लाएंगे और हर तरफ बरकत ही होगी।

४. औलाद के जन्मदिन या उसकी चौबीस साला उम्र से इज्जत व दौलत जमा होगी। खूब ऐशो आराम व माया दौलत की बरकत होगी। बृहस्पति, शुक्र और शनि तीनों का फल उम्दा मगर मंगल (बड़ा भाई, ताया, मामू वगैरा) की मदद न होगी, सिर्फ अपना जाती लड़का ही बेड़ा पार करेगा। मकान और सफर का फल उम्दा होगा।

५. तरक्की और शौहरत होगी। दौलत और सेहत में कोई कमी न होगी।

६. औलाद की मंदी हालत पर राहु का उपाय मददगार होगा।

केतु के अनिष्ट प्रभाव का निवारण

केतु जब कुंडली में अनिष्टकारी स्थिति में हो तो कुत्तों को भोजन कराना लाभप्रद रहेगा (केतु को कुत्ता माना गया है)। लाल किताब के लेखक ने केतु की दान की वस्तुओं में तिल को भी सम्मिलित किया है।

श्री गणेश जी केतु के देवता माने गए हैं।

केतु के अनिष्ट होने पर यदि लड़के का व्यवहार शुभ न हो तो धर्म मंदिर में कंबल का दान देने से केतु का अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है। यदि पांव में या पेशाब में किसी प्रकार का कष्ट हो तो शुद्ध रेशम का सफेद धागा तथा चांदी की अंगूठी, मोती आदि की वस्तुओं को धारण करना लाभप्रद रहता है।

राहु की भांति केतु भी छाया ग्रह है। इसको बलवान् करने का कोई औचित्य नहीं है। यद्यपि जब इन शुभ ग्रहों अथवा योग कारक ग्रहों का युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभाव पड़ रहा हो तो देखना चाहिए कि वो प्रभाव अत्यल्प तो नहीं है?

यदि अत्यल्प है, तो उस प्रभाव को बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। अर्थात् शुभ अथवा योगकारक ग्रह की शक्ति को उससे संबंधित रत्न को पहनकर (धारण करके) बढ़ाना चाहिए या फिर जब राहु व केतु पर मंगल, शनि आदि पापी ग्रहों का प्रभाव पड़ रहा हो और राहु की दृष्टि आदि से अनिष्ट उत्पन्न हो रहा हो तो फिर सब पापी ग्रहों का उपाय करना चाहिए।

टोटके

जब केतु ग्रह अनिष्ट या प्रतिकूल प्रभाव कर रहा हो तो उसे अनुकूल

करने या उसके अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए निम्न टोटकों के उपाय करने आवश्यक हैं—

१. चांदी से बने ताबीज में असगंध की जड़ को सूत से बने नीले रंग के धागे के साथ पहनना चाहिए। यह कार्य केवल बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल में ही करना चाहिए।

२. मंगलवार या शनिवार के दिन मध्याह्न के समय रांगे (सीसे) की अंगूठी मध्यमा उंगली में धारण करना ठीक रहता है।

केतु भी राहु ही की भांति छाया ग्रह है। इसे शांत करने के लिए शुक्रवार से मंत्र का जप किया जाता है। मंत्र यह है—"ओम् स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।"

विशेष—टोटकों में प्रयुक्त होने वाली किसी भी वनस्पति को लाने से पूर्व उसके पौधे को नियमानुसार निमंत्रण देकर विधि-विधान से ही प्राप्त करना चाहिए।

केतु का शुभ/अशुभ प्रभाव

राहु और केतु का फल ज्योतिषशास्त्र में (वो ज्योतिष लाल किताब के लेखक पंडित गिरधारी लाल शर्मा का हो या वराहमिहिर का) क्रमशः शनि और मंगल की भांति कहा है, अतः जब शनि के साथ राहु भी पीड़ित हो और शनि को बलांवित करना अभीष्ट हो तो राहु भी बलवान् किया जाना चाहिए, अन्यथा नहीं! इसी प्रकार जब मंगल को बलवान् करना अभीष्ट हो और केतु भी मंगल की भांति कार्य कर रहा हो तो केतु को भी बलवान् किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए मान लीजिए कि लग्नाधिपति शनि पर मंगल और केतु की दृष्टि है और इस पीड़ा के फलस्वरूप शनि स्नायु रोग दे रहा है तो ऐसी स्थिति में राहु को बलवान् करने के लिए गोमेद धारण किया जा सकता है, क्योंकि शनि और राहु दोनों स्नायु का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान लीजिए, मंगल लग्नेश (लग्न का स्वामी) तथा चंद्रलग्न का स्वामी होकर शनि तथा राहु की दृष्टि में है और मंगल को बलवान् करना इसलिए आवश्यक है कि हम चाहते हैं कि जातक पुलिस के महकमे में नौकरी पाए, तो ऐसी हालत में मंगल के साथ-साथ केतु को भी बलवान् किया जा सकता है और तब लहसुनिया धारण किया जा सकता है।

साधारण रूप-से राहु/केतु की दृष्टि में पापत्व होने के कारण इनकी

दृष्टि अनिष्ट करती है। ऐसी स्थिति में इनके रत्न धारण नहीं करवाने चाहिए। जैसे किसी व्यक्ति की लग्न वृष है और शुक्र व चंद्र दूसरे घर में, सूर्य/केतु चौथे और राहु दसवें घर में है तो ऐसी दशा में राहु की दृष्टि लग्न के स्वामी चंद्र और सूर्य सभी स्वास्थ्य द्योतक अंगों पर होने के कारण राहु जातक को वायुदर्द, गठिया आदि देगा। अतः राहु को उसका रत्न गोमेद धारण करके बलवान् करना चाहिए, ताकि रोग आगे न बढ़े, अर्थात् उसका शमन हो जाए।

केतु मंगल की भांति ही एक अग्नि ग्रह है और इसकी दृष्टि में भी आग है, विशेषतया जब इस पर अग्नि द्योतक ग्रहों (सूर्य अथवा मंगल) का प्रभाव हो। सूर्य और केतु दोनों जहां पापी हैं, वहां ये दोनों ग्रह अग्नि का रूप हैं। जहां इनकी युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभाव पड़ेगा उससे पृथक्ता की संभावना होगी और उस अंग का अग्नि से जल जाना भी संभावित होगा, जैसे धनु लग्न हो और सूर्य व केतु कुंडली के पांचवें घर में इकट्ठे हों तो इन ग्रहों का प्रभाव पांचवें, नौवें, ग्यारहवें और पहले घर पर पड़ेगा।

पांचवें घर की स्थिति में गर्भ की हानि होगी।

नौवें घर पर दृष्टि पिता से पृथक्ता लाएगी।

ग्यारहवें घर पर दृष्टि बड़े भाई से वैमनस्य उत्पन्न करेगी।

लग्न पर इनकी दृष्टि शरीर में आग लगा देगी, विशेषतया जबकि मंगल कहीं भी बैठकर लग्न तथा चंद्र पर अपना प्रभाव डाल रहा हो। जैसे मंगल दसवें घर में हो और चंद्र लग्न में तो सूर्य/केतु की दशा निश्चित रूप-से अग्नि-दुर्घटना का रूप देगी। ऐसी स्थिति में लग्नेश (लग्न के स्वामी) गुरु को चांदी की अंगूठी में पीला पुखराज धारण कर बलवान् करें।

यदि चंद्र और केतु की युति हो तो हानि चंद्र की होगी और उस समय तो अवश्य ही जबकि चंद्र क्षीण हो। यदि चंद्र पर मंगल का भी प्रभाव हो तो फिर शरीर में चोट लगने और दुर्घटना होने की संभावना अधिक रहती है। ऐसी स्थिति में चंद्र को बलवान् करना आवश्यक होता है और साथ ही मंगल और केतु की शांति के लिए भी उपाय किया जाना चाहिए। जैसा कि हमने पहले बताया कि केतु की शांति के लिए गणेश जी की पूजा, उनके मंत्र का जप तथा केतु से संबंधित दान जैसे काले कुत्ते को खाना खिलाना, गाय, कंबल आदि का दान आवश्यक है।

जब चंद्र और राहु दोनों पापी होकर व्यवहार कर रहे हों तो स्पष्ट है कि उन सब घरों की वस्तुओं, व्यक्तियों आदि को हानि पहुंचेगी, जहां कि ये दोनों ग्रह स्थित हैं या जिस स्थान पर ये दृष्टिपात कर रहे हैं। जैसे केतु और

चंद्र यदि नौवें घर में मेष राशि में स्थित हों, सूर्य आठवें अथवा दसवें घर में हो और मंगल छठे घर में हो तो जातक के अंधे हो जाने की संभावना है, क्योंकि चंद्रमा बारहवें घर का स्वामी होकर पाप युक्त या पाप दृष्ट है और बारहवें घर पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है और साथ ही बारहवें घर के स्वामी चंद्र पर भी। ऐसी स्थिति में चंद्र को बलांवित करना होगा तथा मंगल को उपर्युक्त विधि के अनुसार शांत करना होगा। केतु की शांति का उपाय हम पीछे बता चुके हैं।

मंगल और केतु दोनों पापी ग्रह हैं, साथ ही चोट करने वाले भी हैं। इन दोनों का मिलाप हो, तो केतु पांचवें, सातवें और नौवें घरों को भी चोट आदि आघात पहुंचेगा। उदाहरण के लिए केतु और मंगल पांचवें घर में हैं, चंद्रमा लग्न में धनु राशि में है; सूर्य नौवें घर में है और शुक्र सूर्य के साथ है तो केतु और मंगल की यह युति (मिलाप) जहां तक पांचवें घर का संबंध है, संतानों का नाश करेगी।

केतु और मंगल के नौवें घर पर प्रभाव के कारण पिता को चोट लगेगी। ग्यारहवें घर और उसके स्वामी शुक्र पर इस प्रभाव के कारण धन की हानि और जंघा में चोट का योग बनेगा। लग्न तथा चंद्र पर उक्त प्रभाव के कारण स्वयं जातक के चोटें लगेंगी। अतः संतान के लिए मंगल को, पिता के लिए सूर्य को, जंघा के लिए शुक्र को और स्वयं के शरीर के लिए गुरु जी को बलांवित करें और साथ ही मंगल व केतु की शांति कराएं।

मान लीजिए, केतु और बुध कुंडली में इकट्ठे हैं, तो अवश्य ही केतु बुध को हानि पहुंचाएगा। उदाहरण के लिए लग्न मेष है और केतु तथा बुध एकादश भाव (ग्यारहवें घर) में बैठे हैं। यहां केतु का प्रभाव तीसरे अंग पर पूर्ण है। अतः बचपन में ही बाहु पर चोट अथवा सांस की नली में कष्ट की संभावना होगी। इसके उपाय के रूप में बुध बलवान् करना होगा, तथा केतु की शांति कराना भी आवश्यक होगा। बृहस्पति और केतु के बारे में यह बात सब जान ही चुके हैं कि केतु एक पापी ग्रह है और शुक्र शुभ ग्रह है। इसलिए बृहस्पति को केतु से हानि पहुंचनी अवश्यसंभावी है।

उदाहरण के लिए सिंह लग्न है, मंगल दूसरे घर में कन्या राशि का है और बृहस्पति और केतु कुंडली के नौवें घर में बैठे हैं, ऐसी स्थिति में केतु का प्रहार मंगल के प्रभाव को लेकर पांचवें घर, पांचवें घर के स्वामी और पुत्र कारक बृहस्पति सभी पर होगा।

अतः यदि बृहस्पति बलवान् न हो अर्थात् सूर्य से दूर होकर स्थित न हो तो यह योग पुत्र के अभाव का सूचक होगा और यदि बृहस्पति वक्री

होने के कारण बलवान् हुआ तो फिर केतु तथा मंगल का प्रभाव पुत्र को चोटें या हड्डी टूटने तक ही सीमित रहेगा, तो भी पुत्रों की संख्या अधिक न होगी। ऐसी स्थिति में पुत्र के शरीर की रक्षा के लिए बृहस्पति को सोने की अंगूठी में पुखराज पहनकर बलवान् करें और केतु का उपाय शांति होगी। यहां मंगल की भी शांति करानी चाहिए।

केतु शुक्र का शत्रु है, इसलिए केतु द्वारा शुक्र को हानि पहुंचना स्वाभाविक है। जैसे मेष लग्न हो और शुक्र और केतु दोनों दसवें घर में मकर राशि में स्थित हों तो यह योग आंखों तथा गले में रोग उत्पन्न करने वाला है। यहां केतु की शांति और शुक्र को बलवान् किया जाना आवश्यक होगा और यदि कुण्डली में केतु और शनि इकट्ठे हों तो हानि शनि की ही होगी।

यदि कन्या लग्न हो और केतु/शनि दसवें घर में पड़े हों तो इस योग के कारण केतु द्वारा छठा घर उसका स्वामी शनि पीड़ित होगा। परिणामस्वरूप शरीर रोगी रहेगा। ऐसी स्थिति में केतु को शांत करें, नीलम पहनकर शनि को बलवान् करें।

कुछ खास जानकारियां

जब चन्द्र के साथ केतु मिलता है, तो चन्द्रग्रहण का समय होता है, जो अशुभ माना जाता है, किन्तु शुक्र और चन्द्र के मिलाप से केतु नीच हो जाता है, ऐसा नीच केतु बेटे और पौते को सूखा जैसी बीमारी देने वाला हो जाता है। बृहस्पति तथा मंगल के न होने की दशा में यह अच्छे असर वाला साबित होता है।

पक्का घर	:	६	श्रेष्ठ घर	:	३, ६, ९, १०, १२
मन्दे घर	:	८, ७, ११	रंग	:	काला, सफेद
शत्रु ग्रह	:	चन्द्र, मंगल	मित्र ग्रह	:	शुक्र, राहु
सम ग्रह	:	बृहस्पति, शनि, बुध, सूर्य	उच्च	:	५, ९, १२
नीच	:	६, ८	समय	:	प्रात : उषाकाल
दिन	:	रविवार	बीमारी	:	जोड़ों, पेशाब, पांव-टांगों की
मसनुई ग्रह	:	शुक्र + शनि (उच्च) चन्द्र + शनि (नीच)			

केतु कितना ही मन्दा क्यों न हो, चारपाई का इस्तेमाल कभी मन्दा

फल नहीं देता। बच्चे के जन्म के समय लोहे के पलंग आदि का नहीं, वरन् चारपाई का इस्तेमाल किया जाए, तो बहुत अच्छा रहता है।

टोटकों से सम्बन्धित उपाय

मन्दी के वक्त केतु धोखेबाज और छलावा बन जाता है, जातक को यह मौत तो नहीं देता, लेकिन धन-दौलत की कमी से दुःखदायी जिन्दगी बसर करने पर मजबूर जरूर कर देता है। यह औरत, बच्चे और मकान की हालत मन्द ही रखता है। जिसका केतु नीच हो, उसे निम्न उपायों का सहारा जरूर लेना चाहिए-

१. कानों में सोना डालें।
२. केसर का सेवन करें।
३. काला-सफेद कुत्ता पालें।
४. पुरोहित को केले, गेहूँ, सोना और गुड़ पीले कपड़े में बांधकर दें।
५. पीले चन्दन का तिलक लगाएं।
६. तिल और काला-सफेद कम्बल किसी साधु या फकीर को दान करें।

नोट-सूर्योदय से एक घण्टे तक का वक्त उस दिन की होरा होता है। उस वक्त किया उपाय बहुत मददगार और लाभ पहुंचाने वाला होता है।

पहले घर का उपाय

१. पिता के कदमों में सिर झुकाने वाले अथवा पिता के चरण धोकर पीने वाले को केतु कभी मन्दा असर नहीं करता।
२. माता के भाई (मामा) के मन्दे असर को दूर करने के लिए बन्दर को गुड़ खिलाएं।
३. बुध का उपाय मददगार होगा।
४. औलाद को दुःख-तकलीफ हो तो काला-सफेद कम्बल धर्म-स्थान में दें।
५. दोनों पांवों के अंगूठों में चांदी पहनें या सफेद धागा बांधें।
६. खराब सेहत के समय केसर का तिलक लगाएं।
७. शादी के बाद अगर केतु नीच हो जाए, तो शनि का उपाय करें।
८. पत्नी के साथ के अलावा किसी पराई औरत की कल्पना तक न करें।

दूसरे घर का उपाय

१. नेक-नियति से काम लें। पाक-साफ रहें। कच्चे लंगोट से परहेज करें।
२. माथे पर केसर का तिलक लगाना फायदेमन्द होगा। केसर के अभाव में पीले चन्दन का तिलक भी लगाया जा सकता है।
३. रोज मन्दिर जाया करें।
४. इस घर में मन्दे केतु के वक्त बृहस्पति का उपाय मददगार होगा।
५. अच्छी सेहत के लिए चन्द्र का उपाय करें।
६. पांव या पेशाब की बीमारी में दोनों पैरों के अंगूठों में चांदी का तार डालें।

तीसरे घर का उपाय

१. केतु के मन्दे असर के समय केसर का तिलक लगाया करें।
२. रीढ़ की हडी में, पांवों, घुटनों या कमर में दर्द और तकलीफ हो, तो गले में सोने की चेन डालें।
३. चने की दाल, चावल और गुड़ दरिया में बहाएं। इस उपाय से बदन में दर्द, फोड़े-फुंसी और हडी की तकलीफ में आराम मिलेगा।
४. दौलत की कमी गले में सोना पहनने से ठीक होगी।
५. रक्त-सम्बन्धी दोष के लिए बृहस्पति की चीजें। दरिया में बहाएं।
६. मकान के दक्षिण दरवाजे में तांबे का पत्थर तांबे की कीलों से ठोंकें। इससे औलाद की तकलीफ दूर होगी।

चौथे घर का उपाय

१. मन को शांत करने के लिए शरीर पर किसी भी रूप में चांदी धारण करें।
२. दूध में सोना बुझाकर, उस दूध को पिएं।
३. बृहस्पति की चीजें पानी के तेज बहाव में बहा दें।
४. पुरोहित को सूर्य की चीजों का दान करें, उससे आशीर्वाद लें।
५. पीली वस्तुओं का दान करें।

पांचवें घर का उपाय

१. पुरोहित को बृहस्पति की चीजें दान करें।

२. पितरों का श्राद्ध करें अथवा गयाजी में जाकर पिंडदान करें।
३. छोटी कन्याओं की सेवा करें।
४. अपने बुजुर्गों की दुआएं लें।
५. चन्द्र और मंगल की चीजों का दान करें। अथवा उन चीजों को दरिया में प्रवाहित करें।
६. केसर का टीका लगाएं।
७. पति-पत्नी आपस में झगड़ा न करें।
८. कुत्तों को रोटी खिलाएं।
९. तिलों का दान करें।

छठे घर का उपाय

१. कभी भी अपने पर अभिमान न करें।
२. जो भी काम करें, उसमें पत्नी और बच्चों से सलाह-मश्विरा जरूर करें।
३. दूध में केसर मिलाकर पिएं।
४. दूध में गरम सोना बुझाकर उस दूध को पिएं।
५. उल्टे हाथ में सोने की अंगूठी पहनें।
६. बृहस्पति का उपाय करें।
७. मंगल तथा शुक्र का उपाय करने से सामाजिक तथा आर्थिक परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।
८. चितकबरा पत्थर अपने पास रखें।

सातवें घर का उपाय

१. किसी को झूठा वचन न दें। जो कहें, उस पर अमल करें।
२. मंगल का उपाय करें।
३. बीमारियों से बचने के लिए या उन्हें दूर करने के लिए बछिया का दान करें।
४. गणेशजी की पूजा रोज किया करें।
५. सतनजे की रोटी कुत्तें को खिलाएं।
६. चितकबरे रंग का कम्बल दान में दें।
७. ज्यादा परेशानी के वक्त कपिला गाय का दान करें।

८. कान का छेदन कराएं।

आठवें घर कर उपाय

१. औलाद को कष्ट, दौलत की कमी, धोखेबाजों और चोरों से डर, बवासीर की बीमारी और औरत से मनमुटाव या द्वेष से बचने के लिए पांव के अंगूठे में चांदी का छल्ला पहनें।
२. बृहस्पति का उपाय मददगार साबित होगा।
३. हरेक बृहस्पति को दो किलोग्राम या दो सौ ग्राम चने की दाल पीले कपड़े में बांधकर मन्दिर में दें।
४. कान का छेदन कराकर उसमें ९६ दिनों तक सोने की छोटी-सी बाली डाले रखें।
५. चन्द्र नीच हो तो चन्द्र का उपाय मददगार होगा।
६. नीच केतु के वक्त काला-सफेद कम्बल मन्दिर आदि धर्म-स्थान में दें। जब कोई ग्रह साथ में बैठा हो, तो उस ग्रह की चीजें भी कम्बल के साथ में रखें, अथवा काले-सफेद कम्बल के टुकड़े में उन सभी ग्रहों की चीजें बांधकर दूर वीराने में जाकर जमीन में दफन कर दें।
७. केसर का तिलक लगाएं।
८. अपनी औरत की अच्छी सेहत के लिए अथवा औरत की सेहत को बरकरार रखने के लिए अपने चाल-चलन को ठीक करें। गणेशजी की पूजा करें और कुत्ते की रोटी डालें।

नौवें घर का उपाय

१. इस घर में केतु की सही दशा के लिए गणेशजी की पूजा करें।
२. घर में कुत्ते को पाला करें।
३. अपनी मेहनत से अपने पैरों पर खड़े हों।
४. दूसरे के अच्छे कामों को देखकर उन्हें दुआएं दें।
५. हर तरह के दुःख, दर्द और तकलीफ से छुटकारा पाने के लिए शरीर पर सोना धारण करें।
६. कारोबार में बरकत के लिए घर में सोना कायम करें।
७. घर में पली हुई कुतिया बच्चों सहित अच्छा फैल देने वाली होगी, निःसन्तान को संतानयुक्त बनाएगी और नामर्द को भी अपने असर से मर्द बना देगी।

८. कानों में सोना पहनें।
९. घर में किसी स्थान पर सोने का चौकोर पत्थर स्थापित करें।

दसवें घर का उपाय

१. शनि और मंगल का उपाय करें।
२. मकान की बुनियाद में लौहे के बरतन में शहद और दूध भरकर दबाना अच्छा फल देगा।
३. पराई औरत कफन के समान होगी, उससे बचकर रहें।
४. चांदी का शुद्ध और पवित्र बरतन शहद से भरकर घर में कायम करें।
५. पाक-साफ रहें और चाल-चलन की संभाल करें।
६. अड़तालीस साल के बाद घर में कुत्ता पालें।
७. सन्तान कष्ट में हो या सन्तान का कष्ट हो तो ४२वें साल में चांदी का एक बर्तन शहद से भरकर सुनसान जगह में जाकर दबा दें।
८. केतु ८ का उपाय करें।
९. शनि नीच हो तो घर की बुनियाद में शहद भरा चांदी का बर्तन दबवाएं।

ग्यारहवें घर का उपाय

१. काला कुत्ता पालना मददगार होगा।
२. औरत की जिन्दगी बचाने के लिए ४३ दिन तक रोजाना ग्यारह मूलियां रात को औरत के सिरहाने रखकर, प्रातः मन्दिर में दें।
३. नामर्दी दूर करने के लिए बृहस्पति का उपाय किया करें।
४. दूध में सोना बुझाकर पिएं।
५. भविष्य के लिए सत्कर्म करते रहें।

बारहवें घर का उपाय

१. घर में कुत्ता जरूर पालें। मर जाए, तो दूसरा ले आएं।
२. मन्दे केतु की दशा में मकान न खरीदें।
३. गणेशजी की पूजा किया करें।
४. सन्तान का कष्ट हो, तो राहु का उपाय करें।
५. औलाद पैदा करने की ताकत को कायम करें।
६. औलाद के साथ मिलकर काम करने से कामयाबी मिलेगी, दौलत की बढ़ोत्तरी होगी।

७. दूध में खांड डालकर, उसमें अंगूठा भिगोकर चूसा करें।
८. दक्षिण के दरवाजे वाले मकान में रहने से बचें।
९. तिल का दान करें।
१०. किसी भी ग्रह से सम्बन्धित कोई ऐसा काम न करें, जिससे उस ग्रह का फल मन्दा हो जाए।
११. यदि केतु नीच का हो, तो स्वर्ण भस्म और केसर का सेवन करें। शरीर पर सोना पहनें, घर में काला कुत्त पालें। पुरोहित या ब्राह्मण को केले, गेहूँ, सोना, गुड़ और काला-सफेद कम्बल दान करें।

दो ग्रहों के योग व उपाय

जब दो ग्रहों का योग हो तो कष्ट के निवारण के लिए किन-किन वस्तुओं का दान और किन रत्नों को धारण करना उचित है, यह जानना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। ऐसा अनेकों बार देखा गया है कि जन्मकुंडली में कोई भी ग्रह अकेले न बैठकर दो या इससे भी ज्यादा संख्या में बैठे होते हैं। ऐसी हालत में यह जानना बहुत जरूरी हो जाता है कि ग्रहों के इस योग का फल अच्छा निकलेगा या बुरा।

बृहस्पति और सूर्य

बृहस्पति यद्यपि सूर्य का मित्र है, तो भी सूर्य के साथ होकर बृहस्पति को थोड़ी हानि पहुंचने की संभावना है। जैसे मिथुन लग्न हो और सूर्य/बृहस्पति की युति हो तो सातवें घर के स्वामी के रूप में बृहस्पति को हानि पहुंचेगी।

स्त्रियों की जन्मकुंडली में ऐसा योग दंपत्ति कलह का कारण बनेगा। ऐसी स्थिति में बृहस्पति को बलवान् करना होगा और सूर्य की शांति करानी होगी। बृहस्पति को बलवान् करने के लिए चांदी की अंगूठी में पुखराज लगवाकर पहनना होगा।

यदि सिंह लग्न हो और बृहस्पति व सूर्य की युति हो तो यह युति पुत्र की प्राप्ति में बाधक मानी जाएगी। यहां भी बृहस्पति और सूर्य के उपरोक्त उपाय करने होंगे।

कन्या लग्न हो और सूर्य व बृहस्पति की युति हो तो यह सांसारिक सुखों की हानि का योग समझा जाएगा। ऐसी स्थिति में भी उपरोक्त सूर्य और बृहस्पति को क्रमशः बलवान् और शांति ही आवश्यक प्रक्रिया होगी।

नोट—सूर्य और बृहस्पति के बारे में भी यही समझना चाहिए।

बृहस्पति और चंद्र

यदि चंद्रमा शुभ भाव का स्वामी होता हुआ पक्ष बल में बली हो, अर्थात् सूर्य

से ७२ अंश से अधिक दूरी पर हो और बृहस्पति भी शुभ धन द्योतक घरों का स्वामी होता हुआ, जैसे मेष लग्न में नौवें घर का स्वामी या कुंभ लग्न में ग्यारहवें या दूसरे घर का स्वामी या वृश्चिक लग्न में दूसरे घर का स्वामी पांचवें घर के स्वामी चंद्र से युति करे तो यह योग जातक को असाधारण रूप से धनाढ्य बना देता है।

किन्तु यदि चंद्र पक्ष बल में हीन बली हो तो फिर चंद्र/बृहस्पति की युति से उस घर को हानि पहुंचेगी, जिस घर का बृहस्पति स्वामी है।

जैसे मेष लग्न हो, बृहस्पति और चंद्र दूसरे घर में वृष राशि में हो; सूर्य लग्न तीसरे घर में हो तो बृहस्पति भाग्य में हानि करेगा। राज्याधिकारियों से हानि दिलाएगा। ऐसी स्थिति में बृहस्पति को शांत करना चाहिए।

नोट—चंद्र और बृहस्पति के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

बृहस्पति और मंगल

उपर्युक्त दोनों ग्रहों की युति में मंगल को लाभ और बृहस्पति को हानि पहुंचती है। अतः बृहस्पति जिस घर का स्वामी हो, उसी को हानि पहुंचाती है। जैसे सिंह या वृश्चिक लग्न हो और मंगल तथा बृहस्पति की युति हो तो पांचवें घर का स्वामी और पुत्र कारक गुरु यानी बृहस्पति के मंगल द्वारा पीड़ित होने पर पुत्रों की संख्या कम हो जाएगी। उपाय के रूप में बृहस्पति को बलवान् करने की प्रक्रिया करें (जो पीछे बतायी जा चुकी है), साथ ही मंगल की शांति का विधान किया जाएगा।

नोट—मंगल और बृहस्पति के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

बृहस्पति और बुध

इन दोनों ग्रहों की युति से साधारणतया बृहस्पति की बुध सहायता करता है, किन्तु जब बुध पापी हो जाए, तो बृहस्पति को हानि अवश्य ही पहुंचती है। उदाहरण के लिए लग्न मेष है और राहु तीसरे घर में है और शनि छठे घर में है तथा बृहस्पति और बुध की युति दूसरे घर में है, तो ऐसी स्थिति में बुध चूंकि राहु तथा शनि अधिष्ठित राशियों का स्वामी है, उसकी बृहस्पति से युति नौवें घर को जिसका कि बृहस्पति स्वामी है, हानि करेगी।

अर्थात् जातक के भाग्य में हानि, राज्याधिकारी वर्ग से वैमनस्य आदि होंगे। इसके उपाय के रूप में बृहस्पति को चांदी की अंगूठी में पुखराज पहनकर बलवान् करना होगा। बुध का उपाय होगा तथा शनि और राहु की शांति कराई जाएगी।

नोट—बुध और बृहस्पति के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

बृहस्पति और शुक्र

बृहस्पति और शुक्र दोनों नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं। यहां बृहस्पति सात्त्विक और शुक्र राजसिक है। इसलिए शुक्र से बृहस्पति को हानि पहुंच सकती है . जैसे धनु लग्न हो और छठे घर में बृहस्पति और शुक्र इकट्ठे हों तो शुक्र के द्वारा बृहस्पति को अर्थात् जातक को शरीर में चोट (आघात) पहुंचने का भय रहेगा।

उपर्युक्त स्थिति में बृहस्पति को सोने की अंगूठी में पुखराज लगवाकर पहनने से बलवान् किया जाएगा और शुक्र की शांति की जाएगी।

शांति उपाय स्वरूप श्री लक्ष्मी जी की पूजा तथा उनके मंत्र का जाप होगा और गोदान अथवा गौ (गाय) को घास खिलाना तथा रेशमी कपड़े, दूध की मलाई और चीनी आदि के दान से अपघात की संभावना का शमन होगा।

नोट—शुक्र और बृहस्पति के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

बृहस्पति और शनि

बृहस्पति का शनि शत्रु है, अतः इन दोनों की युति में हानि बृहस्पति की होगी। उदाहरण के लिए लग्न वृश्चिक है और बृहस्पति और शनि दोनों आठवें घर में मिथुन राशि में स्थित हैं। सूर्य लग्न में है, तो ऐसे योग में शनि के दूसरे, पांचवें तथा बृहस्पति पर प्रभाव के कारण जातक के धन का नाश होगा। उपाय के रूप में बृहस्पति को बलवान् करना होगा और शनि की शांति करानी होगी।

नोट—शनि और बृहस्पति के बारे में भी यही फल समझना चाहिए। बृहस्पति की राहु और केतु की युति के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं।

सूर्य और चंद्र

यदि सूर्य और चंद्र का योग हो तो स्पष्टतया चंद्र पक्षबल से हीन हो जाएगा और जिस भाव का यह स्वामी है, उसको अपनी दशा-भुक्ति में यह हानि देगा। जैसे मान लीजिए कि कर्क लग्न है और सूर्य व चंद्र दोनों आठवें घर में कुंभ राशि में इकट्ठे हैं, तो—चूंकि चंद्र लग्न का स्वामी होकर सूर्य से पीड़ित हुआ है और स्थिति के दृष्टिकोण से भी बुरा है, इसलिए वो आयु, स्वास्थ्य, धन सभी के लिए बुरा होगा। ऐसे में चंद्र को बलवान् करने के लिए चांदी की अंगूठी में मोती लगवाकर पहनना धन आदि के लिए सहायक होगा।

दूसरी ओर पीड़ित करने वाले ग्रह अर्थात् सूर्य के मंत्र जाप, रविवार के व्रत तथा सूर्य से संबंधित वस्तुओं—तांबा, सोना और गुड़ आदि के दान से होगी।

नोट—चंद्र और सूर्य के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

सूर्य और मंगल

यदि इन दोनों ग्रहों का योग हो और मंगल शुभ भावों का स्वामी हो तो उसकी सूर्य से युति मंगल के बल को कम कर देगी और मंगल उस घर के लिए जिसका कि वो स्वामी है, हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

ऐसी स्थिति में मंगल को बलवान् करना बहुत आवश्यक हो जाएगा।

यहां और अंयत्र भी जब हम कहें कि किसी ग्रह का आधिपत्य शुभ है, तो हमारा तात्पर्य यह समझना चाहिए कि उस ग्रह की मूल त्रिकोण राशि जन्मलग्न से शुभ स्थान में पड़ती है।

कुंडली के लग्न, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें तथा ग्यारहवें घर शुभ स्थान समझने चाहिए।

उदाहरण के लिए यदि लग्न मीन हो और सूर्य तथा मंगल कहीं इकट्ठे पड़ें हों तो धनाधिपति मंगल सूर्य के साथ होकर निर्बल होगा और इसको चांदी की अंगूठी में मूंगा लगवाकर पहनने से धन प्राप्ति में सहायता मिलेगी।

यहां सोने की अंगूठी में मूंगा लगवाना उपयुक्त न होगा, क्योंकि सोने का द्योतक सूर्य है। अतः सोना पहनने से सूर्य बलवान् होगा, लेकिन मंगल को आगे से हानि करेगा।

नोट—मंगल और सूर्य के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

सूर्य और बुध

यदि इन दोनों ग्रहों का योग (युति) हो और बुध का आधिपत्य शुभ भाव का हो तो प्रायः बुध को इस युति से हानि पहुंचती है। जैसे कन्या लग्न हो और सूर्य/बुध इकट्ठे हों तो बुध लग्नेश (लग्न का स्वामी) रूप-से हानि उठाएगा, जिसका फल धन का नाश, त्वचीय रोग, अंतड़ियों और गुर्दे के रोग के रूप में हो सकता है।

किन्तु ध्यान रहे कि यहां और अंयत्र जब भी दो ग्रहों में कोई अच्छी बात साझी हो तो उसकी हानि नहीं होती।

जैसे ऊपर दी गई कन्या लग्न का ही उदाहरण लें—यहां लग्न का स्वामी होने से यश का प्रतिनिधित्व करता है और सूर्य कारक रूप-से यश का प्रतिनिधित्व करता है। अतः बुध और सूर्य का योग यश-प्राप्ति के लिए अपने आप में बुरा न होगा। हां, यदि दोनों पर शनि की अथवा राहु की दृष्टि है तो मानहानि हो सकती है।

इसके विरुद्ध यदि सूर्य और बुध इकट्ठे हैं और उन पर बृहस्पति

आदि शुभ ग्रहों की दृष्टि आदि का प्रभाव है तो ऐसी स्थिति में यह युति लाभप्रद रहेगी।

मान लीजिए कि यह युति अनिष्टकारी है और बुध सूर्य के हाथों पिट रहा है तो बुध को बलवान् करना अपेक्षित होगा, ताकि बुध लग्न प्रदर्शित धन आदि दे सके। ऐसी अवस्था में बुध का रत्न पन्ना पहनना शुभ रहेगा और सूर्य की शांति कराने से लाभ रहेगा।

सूर्य की शांति श्री विष्णु जी की पूजा से, सूर्य के मंत्र जाप से, रविवार के व्रत से और सूर्य से संबंधित वस्तुएं, जैसे सोना, तांबा और गुड़ आदि के दान से होगी।

नोट—बुध और सूर्य के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

सूर्य और शुक्र

इन दोनों ग्रहों की युति में हानि अधिक शुक्र की ही होती है। मान लीजिए कि लग्न मेष है, तथा जन्मकुंडली किसी पुरुष की है और सूर्य/शुक्र की युति है, तो सातवें घर का स्वामी और स्त्री कारक शुक्र सूर्य के सान्निध्य में हानि उठाएगा, जिससे स्त्री (पत्नी) से वैमनस्य तथा व्यापार में हानि की अधिक संभावना रहेगी।

उपर्युक्त स्थिति में शुक्र का बलवान् किया जाना दाम्पत्य जीवन में सुधार अवश्य करेगा। शुक्र को प्लेटिनम की अंगूठी में हीरा लगवाकर पहनने से बलवान् करना होगा तथा सूर्य की शांति करानी होगी।

अथवा मान लीजिए, लग्न कर्क है और सूर्य और शुक्र को युति है तो यह योग या युति शुक्र से पीड़ित होने के कारण वाहन-प्राप्ति में बाधक बनेगी। अतः वाहन-प्राप्ति के लिए भी प्लेटिनम व हीरे की अंगूठी पहननी चाहिए और सूर्य का उपाय उपरोक्त ढंग से कराया जाना चाहिए।

नोट—शुक्र और सूर्य के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

सूर्य और शनि

यहां सबसे पहले तो यह बात जान लेनी चाहिए कि सूर्य और शनि क्रूर और पापी ग्रह हैं। ये जन्मकुंडली के जिस घर में पड़े होंगे अथवा घर को देखते होंगे, उसकी हानि करेंगे। इसलिए यदि युक्त अथवा दृष्ट घर की बातों की प्राप्ति अभीष्ट हो तो प्रायः सूर्य और शनि दोनों की शांति की प्रक्रियाएं करनी उचित होंगी। उनके रत्न धारण करना कभी न उचित होगा।

जैसे—मेष लग्न हो और सूर्य व शनि की युति तीसरे घर में हो तो

तीसरे और नौवें घरों की अर्थात् छोटी बहन और भाग्य दोनों को हानि पहुंचने की संभावना होगी।

उपर्युक्त स्थिति में उपाय द्वारा सूर्य की शांति करवाएं और शनि की शांति, शनि के मंत्र, व्रत और शनि की वस्तुएं, जैसे काले तिल, काली दाल, लोहा और सरसों के तेल आदि दान न करें।

नोट—शनि और सूर्य के बारे में भी यही फल समझना चाहिए। सूर्य की राहु और केतु से युति के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं।

चंद्र और मंगल

जब चंद्र और मंगल का योग हो तो पहले यह अच्छी तरह से देख लें कि कुंडली में चंद्र शुभ है या पापी है। यदि चंद्र सूर्य से ७२ अंश तक की दूरी के अंदर-अंदर है, तो यह निश्चित रूप-से पापी समझा जाएगा।

ऐसी स्थिति में चंद्र और मंगल जिन घरों के स्वामी हैं, उनको हानि पहुंचेगी।

मान लीजिए, कुम्भ लग्न है और चंद्र और मंगल वृश्चिक राशि में दसवें घर में स्थित हैं और सूर्य नौवें तथा बारहवें घर में है। यहां तीसरे घर का स्वामी मंगल को चंद्र से युति द्वारा हानि पहुंचेगी और फल होगा, छोटे भाई की हानि तथा उससे वैमनस्य।

इस प्रकार की स्थिति में सुधार करने के लिए मंगल को और अधिक बलवान् करना होगा। अर्थात् सोने की अंगूठी में मूंगा लगवाकर पहनना होगा। इस क्रिया से मंगल को बल मिलेगा तथा चंद्र की शांति कराई जाएगी। शिव की पूजा, चंद्र के मंत्र का जाप, सोमवार के व्रत द्वारा तथा चंद्र से संबंधित वस्तुओं, जैसे दूध, चावल, चांदी आदि के दान द्वारा चंद्र (क्षीण) और मंगल की उक्त युति का यह फल होगा कि माता को कष्ट की प्राप्ति होगी।

क्योंकि मंगल का प्रभाव चौथे घर और माता के कारक दोनों पर होगा। चंद्र का उपाय चांदी की अंगूठी में मोती लगवाकर पहनने से और मंगल की शांति श्री गणेश जी की पूजा, मंगल के मंत्र का जाप, व्रत तथा इनसे संबंधित वस्तुओं जैसे लाल कपड़ा, मसूर की दाल आदि के दान द्वारा होगी।

नोट—मंगल और चंद्र के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

चंद्र और बुध

यदि चंद्र और बुध का योग हो और चंद्र पक्ष बल में बलवान् हो तो बुध अपनी दशाभुक्ति में चंद्र का शुभ फल अर्थात् धन आदि देगा। किन्तु

जब चंद्र सूर्य से ७२ अंश के भीतर हो तो बुध का योग पापी चंद्र के साथ माना जाएगा और दोनों को पीड़ित कहा जाएगा।

यदि इन दोनों ग्रहों पर शनि आदि का प्रभाव भी पड़ता हो तो यह योग बुद्धिनाश तथा मस्तिष्क शक्ति के ह्रास और मानसिक धक्का खाने का होगा। ऐसी स्थिति में बुध और चंद्र दोनों को बलवान् किया जाना आवश्यक होगा।

अर्थात् चांदी की अंगूठी में मोती और पन्ना दोनों लगवाकर पहनने होंगे और शनि आदि जो पापी ग्रह चंद्र/बुध को देख रहे हों, उनकी शांति करवानी चाहिए। यही उपाय उस दशा में भी करना होगा जब बुध शुभ भावों का स्वामी होकर पापी चंद्र के साथ हो।

नोट—बुध और चंद्र के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

चंद्र और शुक्र

चंद्र यदि पक्ष बल में बली हो और शुक्र शुभ भावों (घरों) का स्वामी हो तो इस योग का अर्थ धन की वृद्धि भी होगा और साथ ही उन घरों के पदार्थों आदि की वृद्धि जिनका कि शुक्र स्वामी है।

किन्तु यदि चंद्र पक्ष बल में बलवान् नहीं है, तो चंद्र की युति से शुक्र को हानि पहुंचेगी। यदि शुक्र सातवें घर का स्वामी हुआ तो स्त्री की प्राप्ति में विलंब तथा वैवाहिक जीवन में बाधा होगी।

ऐसी अनिष्टकारी दशा में शुक्र को बलवान् करना अनिवार्य होगा तथा चंद्र की शांति करानी होगी।

नोट—शुक्र और चंद्र के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

चंद्र और शनि

इन दोनों ग्रहों की युति, योग या मिलाप से हानि चंद्र को पहुंचती है। विशेषकर उस दशा में जब चंद्र पक्ष बल में बली न हो और यदि राहु का प्रभाव भी युति दृष्टि आदि से चंद्र पर हो तो चंद्र को बहुत हानि पहुंचती है, जिसका अर्थ होगा धन का नाश, स्वास्थ्य की हानि, रक्तदोष, आंखों में कष्ट, छाती के रोग और माता को कष्ट आदि।

ऐसी स्थिति में चंद्र को निश्चय ही बलवान् करना होगा और शनि की शांति करानी होगी। चंद्र की क्षीणावस्था में शनि को भी हानि पहुंचती है।

मान लीजिए, मकर लग्न है और शनि और चंद्र नौवें घर में इकट्ठे हैं, सूर्य आठवें या दसवें घर में है तो यहां शनि को चंद्र के साथ युति होने

से हानि पहुंचेगी। फल—धन और स्वास्थ्य का नाश होगा। तब शनि को बलवान् करना आवश्यक न होगा। वो तो चंद्र को बलवान् करने से ही बलवान् हो जाएगा, क्योंकि यदि शनि को नीलम आदि के धारण करने से बलवान् किया गया तो चंद्र को हानि पहुंचेगी जो अभीष्ट न होगा।

नोट—शनि और चंद्र के बारे में भी यही फल समझना चाहिए। चंद्र की राहु और केतु से युति के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं।

मंगल और बुध

इन दोनों ग्रहों की युति में मंगल को लाभ पहुंचेगा। अर्थात् उन बातों में वृद्धि होगी, जिनका प्रतिनिधित्व मंगल अपने आधिपत्य द्वारा करता है। किन्तु मंगल द्वारा बुध की हानि होगी और यदि मंगल की दृष्टि बुध की राशि मिथुन पर भी पड़ती हो तो मिथुन जिस घर से आठवें में पड़ता हो, उस संबंधी की ज़ीवन हानि का योग बनेगा।

जैसे लग्न सिंह हो और मंगल/बुध आठवें घर में मीन राशि में स्थित हों तो यह योग माता के जीवन के लिए अचानक हानि करने वाला होगा, क्योंकि मंगल का प्रभाव माता के आठवें घर पर और उस स्थान के स्वामी दोनों पर पड़ेगा।

उपर्युक्त स्थिति में माता के लिए पन्ना धारण करना आवश्यक होगा और साथ ही मंगल की शांति करानी होगी। मंगल और बुध की युति विद्या हानि की द्योतक नहीं है, क्योंकि मंगल सूझबूझ और ऊहापोह का ग्रह है।

नोट-बुध और मंगल के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

मंगल और शुक्र

इन ग्रहों की युति की एक खास बात यह है कि इसमें शुक्र बिगड़ता है और मंगल बनता है। जैसे लग्न कन्या हो और मंगल/शुक्र की युति सातवें घर में मीन राशि में हो तो धनेश (दूसरे घर का स्वामी) शुक्र पर तथा धन-स्थान दोनों पर मंगल का प्रभाव रहेगा। यह योग धन-नाश का है, अतः शुक्र को बलवान् और मंगल को शांत करना चाहिए।

नोट—शुक्र और मंगल के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

मंगल और शनि

इन दोनों ग्रहों की युति में मंगल और शनि दोनों एक-दूसरे के पक्के

शत्रु हैं, जैसे लग्न मीन हो और शनि तथा मंगल बारहवें घर में स्थित हों तो शनि द्वारा मंगल तथा दूसरे घर पर प्रभाव पड़ने के कारण धन की हानि होगी। ऐसी दशा में मंगल को चांदी/मूंगा की अंगूठी पहनकर बलवान् करें, ताकि धन-हानि से बचा जा सके।

मंगल और शनि की युति यदि छठे स्थान में वृश्चिक राशि में हो तो भाग्य हानि का तथा राज्य हानि का योग बनाती है, क्योंकि मंगल का प्रभाव नौवें और उसके स्वामी शनि दोनों पर पड़ता है। इस स्थिति में शनि को बलवान् करना चाहिए। अर्थात् नीलम या लोहा पहनें।

मंगल और शुक्र चूंकि दोनों नैसर्गिक पापी ग्रह हैं, उनका प्रभाव जिन भावों पर पड़ रहा हो उनके स्वामियों को बलवान् करना आवश्यक हो सकता है। उदाहरण के लिए मंगल और शनि कन्या राशि में एकादश भाव में स्थित हों तो ये एकादश (ग्यारहवें) और (पांचवें) दोनों घरों को हानि पहुंचाएंगे।

अतः ग्यारहवें घर की हानि से बचने के लिए मंगल तथा शनि की शांति के अतिरिक्त बुध को पन्ना लगी चांदी की अंगूठी पहनकर बलवान् करें और पुत्र की प्राप्ति में बाधा को दूर करने के लिए पीले पुखराज को चांदी की अंगूठी में लगवाकर पहनें।

नोट—शनि और मंगल के बारे में भी यही फल समझना चाहिए। मंगल की राहु और केतु से युति के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं।

बुध और शुक्र

बुध शुक्र का मित्र है और दोनों की युति होने पर भी वो शुक्र की सहायता करेगा। अर्थात् शुक्र जिस घर का स्वामी है उसको लाभ रहेगा। किन्तु यदि बुध पापी हो तो शुक्र को हानि पहुंचेगी। मेष लग्न हो और राहु तीसरे घर में तथा शनि छठे घर में हो और शुक्र नौवें घर में हो तो फिर यदि बुध और शुक्र की युति हो, जैसे ग्यारहवें घर में बुध द्वारा शुक्र को हानि पहुंचेगी।

चूंकि पुरुष की कुंडली में शुक्र सातवें घर का स्वामी और स्त्री कारक है। वो राहु और शनि से प्रभावित समझा जाएगा, क्योंकि बुध राहु तथा शनि अधिष्ठित राशि का स्वामी है। ऐसी स्थिति में जहां शुक्र को बलांवित करने के लिए प्लेटिनम अथवा व्हाइट मैटल में हीरा लगवाकर पहनना होगा, वहां शनि और राहु की शांति का उपाय भी करना होगा।

नोट—शुक्र और बुध के बारे में भी यही फल समझना चाहिए।

बुध और शनि

इन दोनों ग्रहों की युति में भी बुध शनि का मित्र है और साधारणतया वो शनि की सहायता करेगा तथा शनि जिस घर का स्वामी है, उसको लाभ पहुंचायेगा, किन्तु यदि बुध पापी हो तो शनि को बुध द्वारा हानि पहुंच सकती है।

जैसे मेष लग्न हो, केतु तीसरे घर में और मंगल छठे घर में हो, बुध और शनि की युति नौवें घर में हो तो चूंकि बुध, केतु और मंगल अधिष्ठित राशियों के स्वामी हैं, वो मंगल और केतु रूप होकर शनि को हानि पहुंचाएगा और टांग टूटने का भय रहेगा। ऐसी स्थिति में जहां शनि को बलवान् करना आवश्यक होगा, वहां मंगल और केतु की शांति भी आवश्यक होगा।

नोट—शनि और बुध के बारे में भी यही फल समझना चाहिए। बुध की राहु और केतु से युति के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं।

शुक्र और शनि

शनि यद्यपि शुक्र का मित्र है तो भी पापी होने से शुक्र को हानि पहुंचा सकता है। उदाहरण के लिए जन्मकुंडली पुरुष की है, जिसका मेष राशि में जन्म है। शुक्र और शनि पांचवें घर में सिंह राशि में स्थित हैं। यहां शनि का प्रभाव सातवें घर, उसके स्वामी और उसके कारक सभी पर पड़ रहा है। यह योग विवाह में निश्चित रूप-से विलंब करेगा तथा वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न करेगा। उपाय के रूप में शनि की शांति और शुक्र को बलवान् करना आवश्यक होगा।

नोट—शनि और शुक्र के बारे में यही फल समझना चाहिए। शुक्र की राहु और केतु से युति के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं।

महत्त्वपूर्ण सुझाव लाल किताब के

लाल किताब के लेखक ने केतु को कुत्ता और पुत्र दोनों माना है। लेखक का मत है कि जब पुत्र पर आ बने तो कुत्ते को रोटी खिलाने से कल्याण होता है। उनका यह भी विचार है कि द्वादश भाव (बारह घरों) से संबंधित संबंधी का जातक से संबंध उसकी रक्षा करता है। जब वो जीवित न रहे तो उस संबंधी को दर्शाने वाली वस्तु का धारण करना जातक के लिए सुख का कारक होगा।

जैसे जब तक बृहस्पति बारहवें घर में हो, तब तक पिता, दादा जीवित रहें; जातक की रात्रि सदा सुख से कटती है। उनकी मृत्यु के अनंतर बृहस्पति से

सम्बन्धित वस्तुओं को जातक द्वारा रात्रि को धारण किया जाना, नींद के लिए आवश्यक होगा।

जैसे रात्रि को दाल, चना, केसर और सोना (सुवर्ण) आदि का धारण करना; अर्थात् अपने पास में रखना निद्रा (नींद) के सुख को देने वाला होगा। एक अन्य उदाहरण में चंद्र के ग्यारहवें घर में अनिष्टकारी होने के बारे में लाल किताब के लेखक का विचार है कि जिस समय जातक की स्त्री को प्रसवकाल का दर्द होना आरम्भ हो, उस समय जातक की माता वहां से किसी अन्य स्थान को चली जाए और ४३ दिनों तक बच्चे का मुंह न देखे।

इस उल्लेख के पीछे यह सिद्धान्त कार्य करता प्रतीत होता है कि जब चंद्र, जो कि माता का कारक है, अपनी दृष्टि पांचवें घर पर डालकर संतान के लिए अनिष्टकारी सिद्ध होने जा रहा है, अच्छा हो कि कारक रूप माता दूर हो जाए ताकि चंद्र का अरिष्ट प्रभाव भी दूर हो सके।

इसी प्रकार लाल किताब के लेखक का यह भी विचार है कि यदि नौवें घर में मंगल अनिष्टकारी फल दे रहा है तो भाई की स्त्री को पालना और सेवा करना लाभकारी होगा {जिसका संबंध नौवें घर से है, क्योंकि नौवां घर तीसरे (भाई) से स्त्री (पत्नी) का है}। इस सिद्धांत का अनुसरण करते हुए कहना होगा कि जब मंगल सातवें घर में मौजूद होकर अनिष्टकारी हो, भाई की संतति (औलाद) की सेवा लाभकारी होगी।

क्योंकि समय स्थान तीसरा (भाई) से पंचम (संतति) बनता है। इसी प्रकार यदि किसी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे घर में स्थित हो तो उसकी चौथी दृष्टि के पांचवें घर पर पड़ने से संतानहीनता का योग बन सकता है।

किन्तु लाल किताब के लेखक के अनुसार यदि जातक अपने कुल (परिवार) के लोगों को पालता रहता है तो संतानहीन नहीं होता।

ज्योतिषशास्त्रानुसार दूसरा घर परिवार (कुल) का है, इसलिये यहां परिवार को पालने का आदर्श दिया है। उक्त लेखक महाशय ने आगे निर्देश दिया है कि जब शनि पांचवें घर में हो तो मकान बनाने के समय संतति पर कष्ट आता है। यह कष्ट जातक से अपने मकान के बनने पर लागू होता है न कि उसके पुत्र आदि द्वारा बनाए अथवा खरीदे हुए मकान पर।

शनि के पांचवें घर में स्थित होने की दशा में जद्दी (बाप-दादाओं का "पुश्तैनी") मकान के पश्चिम में शनि के शत्रु ग्रहों से संबंधित वस्तुओं का रखना इस दोष को दूर करेगा। शनि के शत्रुओं की वस्तुओं से तात्पर्य है, सूर्य की वस्तुओं से; जैसे–गुड़, तांबा, भूरी भैंस इत्यादि।

लेखक ने यह भी स्वीकार किया है कि ग्रह जिस घर में स्थित हो, उससे सातवें घर यदि कोई ग्रह हो या किसी घर से सातवें कोई ग्रह हो तो पहले ग्रह अथवा घर को लाभ रहता है और यह तब तक होगा जब तक सातवें घर में मौजूद ग्रह की वस्तु नहीं बन जाती।

उदाहरण के लिए, यदि शनि दसवें घर में मौजूद हो तो जब तक मकान (कुंडली का चौथा घर) नहीं बनता, शनि का चौथे से सातवां होना चौथे घर को लाभप्रद सिद्ध होता रहेगा, किन्तु मकान बनने के बाद शनि चौथे घर के लिए शुभ न रहेगा।

❑❑

विशेष ग्रहों की युति का फल

ग्रहों की युति से संबंधित जो फलादेश यहां दिए जा रहे हैं, उन्हें "मेष लग्न" के अंतर्गत समझना चाहिए। पिछले प्रकरण में मात्र दो ग्रहों के योग और उपाय के बारे में बतलाया गया था, अब दो से ज्यादा ग्रहों के योग (युति) के बारे में बतलाया जा रहा है।

सूर्य, चंद्र और मंगल

जिसके जन्मकाल में सूर्य, चंद्र और मंगल की युति लग्न में हो, वो यंत्रादि बनाने में मांहिर, शूरवीर, दयाहीन, घुड़सवारी करने में निपुण, औरत और औलाद से हीन तथा रक्त-विकार से पीड़ित होता है।

सूर्य, चंद्र और बुध

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक धनवान, विद्वान्, श्रेष्ठ कवि अथवा कथाकार, सभाप्रिय, चतुर, प्रियवादी, राजा का सेवक, प्रतापी, अच्छे कामों को करने वाला, वार्त्तालाप करने में पटु तथा समस्त शास्त्रों का जानकार एवं कलाओं का पारखी होता है।

सूर्य, चंद्र और बृहस्पति

जन्मकाल में, लग्न में उपरोक्त ग्रहों की युति हो तो जातक राजा का मंत्री, स्थिर बुद्धि वाला, धर्मात्मा, बंधु-बांधवों का आदर करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का पूजक, चंचल, चतुर, धूर्त, घूमने-फिरने का शौकीन, कुशल तथा बुद्धिमान होता है।

सूर्य, चंद्र और शुक्र

लग्न में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक सुंदर शरीर वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, परम तेजस्वी, राजा के समान प्रतापी, भाग्यवान्, धर्म में प्रीति न

रखने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी तथा दांतों में विकार वाला होता है।

सूर्य, चंद्र और शनि

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक ब्राह्मणों व देवताओं का भक्त, धातुकर्म करने में कुशल, वेश्याप्रेमी, व्यर्थ का परिश्रम करने वाला, अत्यंत धूर्त, धर्म का पालनकर्त्ता, पशुओं को पालने वाला तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल और बुध

यदि जन्मकाल में इन तीनों ग्रहों की लग्न में युति हो तो जातक कठोर चित्तवृत्ति वाला, प्रसिद्ध, पराक्रमी, साहसी, निर्लज्ज, धन-स्त्री-पुत्र-मित्रादि से युक्त तथा सलाह देने में होशियार होता है।

सूर्य, मंगल और बृहस्पति

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक उम्दा बोलने वाला, दौलतमंद बादशाह का वजीर, लड़ाका, सेनापति, नीतिशास्त्रा का ज्ञाता, सत्यवादी, उदार हृदय वाला, प्रियभाषी, उग्र प्रकृति का तथा प्रत्येक कार्य को कुशलता से करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल और शुक्र

जन्मकाल में ये तीनों ग्रह पहले घर (लग्न) में हों तो जातक सुंदर, आंखों का रोगी, दयालु, कार्यकुशल, धनी, विनम्र, बहुत चतुर, बहुत ज्यादा बोलने वाला, गुणवान, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुशील तथा कुशीलवान होता है।

सूर्य, मंगल और शनि

इन तीनों ग्रहों की युति से जातक मूर्ख, धन तथा पशुओं से रहित, रोगी, स्वजनों से तिरस्कृत अथवा स्वजन-विहीन, कलह से व्याकुल तथा घने बालों वाला होता है।

सूर्य, बुध और बृहस्पति

जन्मकाल में इन तीनों ग्रहों की युति लग्न में हो तो जातक नेत्ररोगी, धनी, शस्त्र-विद्या का ज्ञाता, लेखक तथा संग्रहशील स्वभाव का, चतुर व्यक्ति होता है।

सूर्य, बुध और शुक्र

यदि इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक आचार-विहीन, विदेशवासी, सबसे

शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि, माता-पिता आदि गुरुजनों से तिरस्कृत और औरत (स्त्री) के कारण दुःखी रहने वाला होता है।

सूर्य, बुध और शनि

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक दुराचारी, बंधु-बांधवों से परित्यक्त, सबसे शत्रुता रखने वाला, शत्रु द्वारा पराजित, नपुंसकों जैसे स्वभाव वाला, परम दुष्ट तथा नीच लोगों का संगी होता है।

सूर्य, बृहस्पति और शुक्र

उपरोक्त ग्रहों की युति हो तो जातक राजा का आश्रित, आंखों का रोगी, पंडित, शूरवीर, परोपकारी, कम बोलने वाला, दुष्ट स्वभाव का, पराये कामों में ज्यादा दिलचस्पी लेने वाला, धन से रहित होता है।

सूर्य, बृहस्पति और शनि

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक राजाओं का प्रिय, मित्र, स्त्री तथा पुत्रादि से युक्त, सुंदर शरीर वाला, बहुत सोच-विचारकर खर्च करने वाला, निर्भय, अपने बंधुओं का हित करने वाला तथा मित्रों से युक्त होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति राजाओं से द्वेष रखता है।

सूर्य, शुक्र और शनि

लग्न (पहले घर) में इन तीनों ग्रहों की युति से जातक कला-विहीन, मानहीन, खुजली अथवा कुष्ठ रोग का रोगी, दुश्मनों से डरकर रहने वाला, दुराचारी, भाई-बंधुओं से रहित तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल और बुध

जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक दुराचारी, पापी, बंधु-बांधवों से हीन, जीविका-विहीन, अपमानित, अत्यंत दीन तथा नीच मनुष्यों की संगति करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल और बृहस्पति

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक क्रोधी, स्त्री में आसक्त, फोड़ा-फुंसी से युक्त, सुंदर शरीर वाला, अपहरणकर्त्ता, बलवान्, स्त्रियों का प्रिय, परस्त्रीगामी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

चंद्र, मंगल और शुक्र

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक की माता और स्त्री (पत्नी) दुष्ट स्वभाव वाली होती हैं। जातक शीत से डरने वाला, निरंतर भ्रमणशील, चंचल स्वभाव वाला, कुशील होता है तथा उसका पुत्र शीलवान् होता है।

चंद्र, मंगल और शनि

लग्न में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक की माता की उसके बाल्यकाल में ही मृत्यु हो जाती है। ऐसा व्यक्ति क्षुद्र स्वभाव का, कुटिल, लोकद्वेषी तथा कलहप्रिय होता है। वह सदैव दुःखी बना रहता है।

चंद्र, बुध और बृहस्पति

मेष लग्न में इन तीन ग्रहों की युति हो तो जातक अत्यंत बुद्धिमान्, भाग्यवान्, श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाला, यशस्वी, परम प्रसिद्ध, श्रेष्ठ मित्रों वाला, तेजस्वी, धनवान्, पुत्र-मित्र-स्त्री आदि के सुख से युक्त तथा कुशल वक्ता होता है।

चंद्र, बुध और शुक्र

लग्न में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक विद्वान् ईर्ष्यालु, धन का लोभी, दुराचारी, नीच वृत्ति द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला होता है।

चंद्र, बुध और शनि

लग्न में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक विनम्र, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, प्रसिद्ध, उच्च शासकों का प्रिय, नगर अथवा ग्राम पर अधिकार रखने वाला, महाविद्वान्, प्रियवादी, पंडित तथा लम्बे शरीर वाला होता है।

चंद्र, बृहस्पति और शुक्र

लग्न में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक की माता अत्यंत सुशील होती है। वह विद्वान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, मंत्र एवं शास्त्रज्ञ, सुंदर शरीर वाला, चतुर तथा राजाओं का प्रिय होता है।

चंद्र, बृहस्पति और शनि

लग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, शास्त्रज्ञ, व्यवहारकुशल, स्त्रियों का प्रिय, राजा द्वारा सम्मानित, अत्यंत चतुर तथा उच्चाधिकारी होता है।

चंद्र, शुक्र और शनि

यदि जन्मकाल में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक वेदज्ञ, चित्रकार, लेखक, धनी, धर्मात्मा, सुंदर शरीर वाला तथा पुरोहितों में श्रेष्ठ होता है।

मंगल, बुध और बृहस्पति

यदि इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक प्रतापी, संगीतज्ञ, परोपकारी, श्रेष्ठ कवि, चतुर, स्त्रियों को पसंद आने वाला, परहित साधन करने वाला तथा अपने कुल में राजा के समान होता है।

मंगल, बुध और शुक्र

इन ग्रहों की युति हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, अत्यंत उत्साही, बहुत बोलने वाला, ढीठ, धनी, चंचल, हीन-कुल में उत्पन्न, संतुष्ट तथा किसी अंग से हीन होता है।

मंगल, बुध और शनि

इन ग्रहों की युति हो तो जातक डरपोक, शरीर से दुर्बल, परदेश में रहने वाला, वन में रहने की इच्छा रखने वाला, बुरे नेत्रों वाला, अधिक कष्ट भोगने वाला, नेत्ररोगी, मुखरोगी, हास्यप्रिय तथा दूतकर्म करने वाला होता है।

मंगल, बृहस्पति और शुक्र

लग्न में इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक सुखी, सबको प्रसन्न करने वाला, राजा का प्रिय, उत्तम स्त्री तथा पुत्रों वाला एवं श्रेष्ठजनों द्वारा सम्मानित होता है।

मंगल, बृहस्पति और शनि

इन तीनों ग्रहों की युति हो तो जातक कृश-शरीर, दुराचारी, निर्धन, मित्रों द्वारा निन्दित किन्तु राज्य द्वारा कृपापात्र तथा बुरे कर्म करने वाला होता है।

मंगल, शुक्र और शनि

इन ग्रहों की युति हो तो जातक स्त्री के सुख से रहित, परदेश में रहने वाला, सदा दुःख भोगने वाला; किन्तु स्वयं बहुत अच्छे स्वभाव वाला होता है।

बुध, बृहस्पति और शुक्र

इन ग्रहों की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, राजा द्वारा सम्मानित,

शत्रुओं को परास्त करने वाला, परम यशस्वी, सत्यवादी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

बुध, बृहस्पति और शनि

जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक बड़ा धनवान्, शीलवान्, श्रेष्ठ वस्त्राभूषण वाला, सेवक, वाहनों से युक्त, भाग्यवान्, पंडित, सुखी, धैर्यवान् तथा उत्तम स्त्री का पति होता है।

बुध, शुक्र और शनि

इन ग्रहों की पहले घर में युति हो तो जातक चुगलखोर, नीच लोगों के साथ रहने वाला, परस्त्रीगामी, कलाओं का जानकार, मिथ्यावादी, धूर्त, आचाररहित, दूरदेश की यात्रा करने वाला, धैर्यवान् तथा स्वदेशप्रेमी होता है।

बृहस्पति, शुक्र और शनि

यदि जन्मकाल में ये तीनों ग्रह एकत्रित हों तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर भी सुशील, राजा के समान प्रतापी, धनी, यशस्वी तथा निर्मल चित्त वाला होता है। वह अत्यंत कीर्ति अर्जित करता है तथा भूमिपति होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध

यदि जन्मलग्न में उपरोक्त चारों ग्रहों की युति हो तो जातक चुगली करने वाला, चौर्य-कार्य में दक्ष, व्यर्थ बोलने वाला, मायावी, प्रत्येक कार्य करने में सक्षम, चित्रकार, लेखक, मुखरोगी तथा किसी एक भाषा पर सम्पूर्ण अधिकार रखने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और बृहस्पति

उपरोक्त चारों ग्रहों की युति हो तो जातक शास्त्र के अर्थ का जानने वाला, पुत्र तथा स्त्री-सुख से सम्पन्न, बहुत बोलने वाला, विद्वान्, धनवान्, भाषण, वाक्पटुता, वकालत आदि वाणी से संबंधित कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है।

नोट—बहुत-से विद्वान् लाल किताब के इस फलादेश को उचित नहीं मानते। उनके मातनुसार ऐसा व्यक्ति चोर, खोटे चित्त वाला, निर्लज्ज, परस्त्रीगामी तथा धन से हीन होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि

यदि जन्मकाल में इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक नाटा, विषम शरीर

वाला, धनहीन, मूर्ख, भिक्षा द्वारा आजीविका-साधन करने वाला, कमजोर शरीर का, दरिद्र होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और बृहस्पति

इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक शोकरहित, तेजस्वी, धनवान्, नीतिशास्त्र में कुशल, शिल्पज्ञ, रोगहीन, सुंदर आंखों वाला तथा गौर वर्णीय शरीर वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र

इन ग्रहों की युति हो तो जातक छोटे कद वाला, सुंदर, राज्य द्वारा सम्मानप्राप्त, सुवक्ता, कांतिमान; किन्तु सदा विकल बना रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और शनि

जिसके जन्मकाल में उक्त चारों ग्रहों की युति हो तो जातक माता-पिता से हीन, विकलाक्ष, निर्धन, दरिद्र, भिक्षुक, नेत्ररोगी तथा कुटुम्बरहित होता है।

सूर्य, चंद्र, बृहस्पति और शुक्र

यदि जन्मलग्न में इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक जल (पानी), मृग (हिरण) एवं वन में प्रीति रखने वाला, सुखी तथा राजाओं द्वारा सम्मानित होता है।

सूर्य, चंद्र, बृहस्पति और शनि

यदि जन्मलग्न में इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक बहुत पुत्रों वाला, इकहरे शरीर का, सुंदर आंखों वाला, धनी, स्त्री का प्रिय, यशस्वी तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, शुक्र और शनि

इनकी युति हो तो जातक कमजोर शरीर का, औरतों की तरह आचरण करने वाला, डरपोक; किन्तु लोगों का अगुआ होता है।

सूर्य, मंगल, बुध और बृहस्पति

यदि इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक पराई स्त्रियों से रमण करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का सेवक, विजयी, शूरवीर, चक्रधारी तथा सूत बनाने में कुशल अथवा सूत का व्यवसाय करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र

इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक निर्लज्ज, चोर, दुर्जन, विषम अंगों वाला, परस्त्रीगामी, देवता तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला तथा सदैव विजयी रहने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध और शनि

यदि जन्मकाल में उक्त चारों ग्रह की युति हो तो जातक कवि, योद्धा, कोई बड़ा नेता, शासक, नीच आचरण करने वाला, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता तथा नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शुक्र

जन्मकाल में उक्त चारों ग्रहों की युति हो तो जातक राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला, बहुत धनी, यशस्वी, सुंदर शरीर वाला, नीतिज्ञ तथा मनुष्यों का पालन करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनि

जन्मकाल में इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक आम मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजा द्वारा पूजित, सब कामों में कामयाबी प्राप्त करने वाला, सेनानायक, मंत्री, धनी, अन्न का संचय करने वाला, दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि

इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक नीच जाति के लोगों की संगति में रहने वाला, जनद्रोही, दुराचारी, मूर्ख, कटुभाषी, मांसाहारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, बुध, बृहस्पति और शुक्र

इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक धनवान्, सुखी, प्रसन्न रहने वाला, बुद्धिमान्, अनेक कार्यों में सफलता पाने वाला, विनेयी, मानी, राजा के समान सुख भोगने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से युक्त होता है।

सूर्य, बुध, बृहस्पति और शनि

इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक बहुत भाइयों वाला, नपुंसक के समान, झगड़ालू, उद्योगहीन, निन्दित कर्म करने वाला, मानी होता है।

सूर्य, बुध, शुक्र और शनि

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक पवित्र हृदय वाला, सवक्ता, मित्रों वाला, सुंदर, पंडित, विद्वान्, भाइयों द्वारा सम्मानित, पुत्र तथा स्त्री के सुख को प्राप्त करने वाला, पवित्र विचारों का, भाग्यशाली तथा सुखी होता है।

सूर्य, बृहस्पति, शुक्र और शनि

यदि जन्मकाल में इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक लोभी, सुखी, शिल्पज्ञ, कवि, राजा का प्रिय, परम कृपण तथा करुण हृदय वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध और बृहस्पति

यदि इन चारों ग्रहों की युति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, श्रेष्ठ मनुष्य, परम विद्वान्, लोकपूजित, सत्यवादी, राजा का कृपापात्र तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक की स्त्री कुलटा होती है। वह बहुत ज्यादा नींद लेने वाला, झगड़ालू, नीच प्रकृति का, बंधु-द्वेषी, वेद तथा शास्त्रों का निन्दक, भाइयों से द्रोह करने वाला तथा नीच लोगों से प्रेम रखने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध और शनि

यदि जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक वीर वंश में जन्म लेने वाला, दो माताओं वाला, स्त्री-पुत्र-मित्रादि से युक्त, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला, साहसी होता है।

चंद्र, मंगल बृहस्पति और शुक्र

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक अंगहीन, साहसी, धनी, मानी, पंडित, पुत्रवान्, नीतिज्ञ; किन्तु सदा विकल बना रहने वाला होता।

चंद्र, मंगल, बृहस्पति और शनि

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक बहरा, उन्मादी, धनवान्, अपने वचन का पालन करने वाला, शूरवीर, पंडित, सत्यवादी, सदैव आनंदित रहने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, दयालु; किन्तु नीच लोगों के साथ रहने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि

यदि जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक मलिन, कुलटा स्त्री का पति, उद्वेगी, जुआरी, मद्य-मांस का सेवन करने वाला, सर्प जैसी चमकीली आंखों वाला, महा ढीठ, कुल का वंचक, सबका शत्रु तथा दरिद्री होता है। वीर वंश में जन्म लेकर भी वह वीर नहीं होता।

चंद्र, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक सुंदर शरीर वाला, धनी, माता-पिता से रहित, शत्रुविहीन, पंडित, दयालु, चतुर तथा दानी होता है।

चंद्र, बृहस्पति, शनि और बुध

यदि इन ग्रहों की युति हो तो जातक कवि, तेजस्वी, बंधु-बांधवों का प्रिय, राज्यमंत्री, धर्मात्मा, यशस्वी, ज्ञानी, इंद्रियजनित तथा सब लोगों का प्रिय होता है।

चंद्र, बुध, शुक्र और शनि

इन ग्रहों की युति से जातक नेत्ररोगी, उच्च शासक द्वारा सम्मानित, धनवान्, किसी ग्राम का स्वामी तथा पत्नी के रूप में एक से ज्यादा औरतें रखने वाला होता है।

चंद्र, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक पंडित, परस्त्रीगामी, दूसरों की मदद करने वाला, पुरुषों मे श्रेष्ठ तथा धनहीन होता है। उसकी पत्नी का शरीर मोटा होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार वह स्वयं स्थूल देह वाला, चतुर तथा धर्मात्मा होता है।

मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र

यदि जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक स्त्री से कलह करने वाला, सुशील, धनी, दयालु, राजमान्य, स्वस्थ शरीर वाला तथा लोकप्रिय होता है।

मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि

जन्मलग्न में इनकी युति हो तो जातक शूरवीर, सत्यवादी, पवित्र हृदय वाला, धैर्यवान्, सुवक्ता, विद्वान्, विनम्र; किन्तु धनहीन होता है।

मंगल, बुध, शुक्र और शनि

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक शरीर से अत्यंत पुष्ट, मधुर-

भाषी, मल्लविद्या में निपुण, धनहीन, कुत्तों को पालने वाला तथा लोक में प्रसिद्धि पाने वाला होता है।

मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक मानी, धूर्त, विषयी, परस्त्रीगामी, धनी, विनम्र, साहसी, विद्वान् तथा श्रेष्ठ मनुष्यों का प्रिय होता है।

बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मकाल में इन ग्रहों की युति हो तो जातक वेद-वेदांग का ज्ञाता, मेधावी, शस्त्रविद्या में रुचि लेने वाला, विषय-वासना में लीन रहने वाला कामी पुरुष होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और बृहस्पति

यदि जन्मकाल में उपरोक्त पांच ग्रहों की युति हो तो जातक की पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती है, जिसके कारण वो सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्त्रीहीन भी हो सकता है। साथ ही वो दुष्ट, क्रोधी, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र

यदि इन पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक बंधुहीन, असत्य बोलने वाला, दूसरों का काम करने वाला, हिजड़ों के समान आकृति वाला, दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शनि

जन्मलग्न में यदि उक्त पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से रहित, चोर, सदैव दुःख भोगने वाला, बंधनयुक्त (क़ैदी) तथा अल्पायु वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बृहस्पति और शुक्र

इन ग्रहों की युति हो तो जातक माता-पिता के सुख से रहित, नेत्ररोगी, दुःखी, हाथी से प्रेम करने वाला, संगीतज्ञ आदि होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बृहस्पति और शनि

इन पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक पराये को हड़पने वाला, व्यसनी, सज्जनों का वैरी, वृक्ष के समान आकृति वाला, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक तथा दूसरों को दुःख पहुंचाने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि

उपरोक्त ग्रहों की युति वाला जातक प्रायः सबका द्वेषी, धन से हीन, अधर्मी, आचार-विचाररहित तथा परस्त्रीगामी होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र

उपरोक्त ग्रहों की युति वाला जातक पराए अन्न पर निर्वाह करने वाला, कर्जदार, दुष्टकर्मी, धर्म का द्वेषी, कायर, वेश्यागामी, उन्मादी, उग्र स्वभाव वाला, अपने मित्रों के कारण दुःखी तथा धूर्त होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र और शनि

उपरोक्त ग्रहों की युति वाला जातक धन, संतान, मित्र तथा सुख से हीन, उत्साही तथा रोगी शरीर वाला होता है। उसका कद लम्बा होता है तथा उसके शरीर पर रोएं बहुत ज्यादा होते हैं।

सूर्य, चंद्र, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मलग्न में उक्त पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक इंद्रजाल जैसी विद्या का जानकार, पंडित, समर्थ, निर्भय, चंचल स्वभाव वाला, सुवक्ता, स्त्रियों का प्रिय, पापी, वाक्छल में प्रवीण तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र

इन पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक स्वच्छ एवं सुंदर शरीर वाला, समर्थ, कामी, धीर, राजप्रिय, सेनापति, बहुत-से घोड़े रखने वाला, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि

इन ग्रहों की युति हो तो जातक रोगी, मलिन, उद्विग्न चित्त वाला, जर्जर शरीर का, भिक्षुक, जड़, पुत्रवान् तथा अल्प धन वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

इन ग्रहों की युति से जातक रोग तथा शत्रुओं से ग्रस्त, स्थान-भ्रष्ट, विकल, बुभुक्षित, दुःखी तथा दरिद्री होता है।

सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि

इन ग्रहों की युति हो तो जातक धातु यंत्र एवं रसायन के कार्यों में प्रवीण

तथा उनसे प्रसिद्धि पाने वाला, विद्वान्, विचारवान्, धनवान्, भाई-बंधुओं से युक्त तथा तपस्वी होता है।

सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मलग्न में इन ग्रहों की युति हो तो जातक मित्रों का प्रिय, माता-पिता तथा गुरुजनों का भक्त, दयालु, धर्म के प्रति आस्थावान्, शास्त्रों का ज्ञाता तथा सुवक्ता होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र

उपरोक्त ग्रहों की युति हो तो जातक सज्जन, विद्वान्, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान्, धनवान्, अच्छे स्वभाव वाला, निष्पाप तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि

जन्मलग्न में उपरोक्त पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक दूसरों से अन्न की याचना करने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला ब्राह्मण तथा रतौंधी के रोग से पीड़ित होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

इन पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक कुरूप, मलिन, मूर्ख, नपुंसक, निर्धन, मित्रों से वैर रखने वाला, दुष्टकर्मी, पराई निन्दा करने वाला, कठोर हृदय का होता है।

चंद्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मकाल में उक्त ग्रहों की युति हो तो जातक के मित्र और शत्रु बहुत-से होते हैं। वह दुष्ट स्वभाव वाला, दूसरों को कष्ट पहुंचाने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला, विद्वान् व्यक्ति होता है।

चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

इन पांचों ग्रहों की युति हो तो जातक राज्यमंत्री, लोकपूजित, अत्यंत गुणवान्, गणाधीश, धनवान्, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

इन ग्रहों की युति हो तो जातक तामसी स्वभाव वाला, चंचल, आलसी, अधिक सोने वाला, पवित्र वक्ता, दीर्घायु, राजा-प्रजा सबको प्रिय, धनी तथा सुखी होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र

यदि जन्मलग्न में उपरोक्त छह ग्रहों की युति हो तो जातक धन-धान्य, विद्या तथा धर्म से युक्त, कम बोलने वाला, अत्यंत भोगी, भाग्यवान्, यशस्वी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि

जन्मलग्न में उपरोक्त छह ग्रहों की युति हो तो जातक परम दयालु, चंचल स्वभाव का, शुद्ध अंतःकरण वाला, परोपकारी, वन में विचरण करने वाला तथा विवादादि में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

यदि इन छहों ग्रहों की युति हो तो जातक प्रत्येक कार्य में संशय करने वाला, मानी, सुप्रसिद्ध, संग्राम तथा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला, चिन्तित, भ्रमणशील, घातक स्वभाव वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि

यदि इन ग्रहों की युति हो तो जातक युद्ध करने के लिए उद्यत, क्रोधी, धनी, सुखी, बड़े लोगों का कृपापात्र, ग्राम का पूज्य, लोभी, सुंदर, भ्रष्ट मति वाला तथा स्त्रियों का प्रिय होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

यदि इन ग्रहों की युति हो तो जातक स्त्रीविहीन, धनहीन, राज्यमंत्री, क्षमाशील, धर्मज्ञ, वेदज्ञ, राजा द्वारा सम्मानित, दयालु तथा सुप्रसिद्ध होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

जन्मलग्न में इन छहों ग्रहों की युति हो तो जातक धन, स्त्री तथा पुत्र से रहित, तीर्थ यात्रा करने वाला, वनवासी, ब्रह्मविद्या का ज्ञाता, क्षमाशील तथा भिक्षुक होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि

यदि जन्मकाल में उपरोक्त छह ग्रहों की युति हो तो जातक राजमान्य, धनी, गुणवान्, विश्वप्रसिद्ध, अनेक स्त्रियों वाला, राजमंत्री, पवित्र हृदय वाला, आलसी तथा यशस्वी होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि

यदि जन्मकाल में उपरोक्त सात ग्रह लग्न में हों तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजाओं द्वारा सम्मानित, दानी, धनी तथा भगवान, शंकर का परमभक्त होता है।

विशेष-ग्रहों की युति से संबंधित जो फलादेश दिए गए हैं, वो सब मेष लग्न के अंतर्गत हैं; यह बात हम शुरू में भी बता चुके हैं, किन्तु इन युति वाले ग्रहों में राहु, केतु को स्थान नहीं दिया गया है। इन दोनों ग्रहों के संबंध में सामान्य सिद्धान्त यह है कि ये अपने मित्र ग्रह के साथ बैठे होते हैं तो उसके प्रभाव को बढ़ाते हैं और शत्रु ग्रह के साथ बैठते हैं तो उसके प्रभाव को घटाते हैं। राहु, केतु स्वयं कभी एक साथ नहीं बैठते बल्कि ये सदैव एक-दूसरे से सातवें घर पर ही कायम रहते हैं।

किसी जन्मकुंडली में यदि तीन ग्रहों की युति हो और जन्म के समय चंद्रमा किसी पाप ग्रह के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु होने की संभावना रहती है। इसी प्रकार यदि सूर्य पाप ग्रहों से युक्त हो तो पिता की मृत्यु की संभावना रहती है।

यदि चंद्रमा शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो वह शुभ फल देता है और यदि शुभ ग्रह तथा पाप ग्रह दोनों के साथ बैठा हो तो मिश्रित फल देता है। यही बात सूर्य के विषय में भी समक्ष लेनी चाहिए। यदि जन्म के समय तीन शुभ ग्रहों की युति हो तो जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है, किन्तु यदि तीन पाप ग्रह एक साथ बैठें हों तो जातक का सम्पूर्ण जीवन दुःखी बना रहता है और वो सर्वत्र निन्दित होता है।

जन्म-समय में यदि पांच अथवा छह ग्रह एक ही घर में बैठे हों तो ऐसा जातक प्रायः दरिद्र और मूर्ख होता है। जिस प्रकार दो-तीन आदि ग्रहों की युति का फलादेश कहा गया है, उसी प्रकार यदि जन्मकुंडली के किसी भाव में बैठे हुए को दो-तीन अथवा अधिक ग्रह एक साथ देख रहे हों; अर्थात् उन सबकी दृष्टि उस ग्रह पर पड़ रही हो, तो वह ग्रह भी युति वाले ग्रह के समान अपना फल देने लगता है।

लाल किताब के उपयोगी सिद्धान्त

लाल किताब के जो उपयोगी सिद्धान्त यहां बतलाए जा रहे हैं, उनकी बदौलत कोई भी औरत-मर्द अपनी जन्मकुंडली की मदद से अपने जीवन का पूरा-पूरा हाल जान सकता है। सभी बातों को अपने दिमाग में रखना जरूरी होगा।

अपनी जन्मकुंडली में सबसे पहले यह देखना चाहिए कि कहीं कोई ग्रह अपने घर से ८वें घर में बैठे ग्रह को टक्कर तो नहीं मार रहा है? अथवा जिस विषय-वस्तु के बारे में जानकारी चाहते हों तो देखें कि उस विषय-वस्तु का कौन-सा ग्रह स्वामी है? वो किस हालत में है और उसके अपने पक्के घर में कौन-से ग्रह बैठे हैं तथा अपनी दृष्टि से कौन-सा ग्रह उसे नुकसान या फायदा पहुंचा रहा है? मिसाल के तौर पर किसी जातक की तालीम के बारे में जानकारी हासिल करनी है, तो पहले तालीम के घर ५ को देखें कि उस घर का स्वामी ग्रह सूर्य किस हालत में हैं, फिर उस घर के पक्के घर के स्वामी ग्रह बृहस्पति को देंखे। इसके बाद चंद्र को देंखे, क्योंकि तालीम का फल चंद्र से देखा जाता है। अगर चंद्र के घर ४ को कोई शुभ ग्रह नीच कर रहा होगा, तो तालीम अधूरी या भारी झंझटों के बीच होगी और अगर ग्रह अच्छी हालत में है, तो तालीम पूरी जरूर होगी। इसी तरह जन्मकुंडली के घरों से, उसमें मौजूद ग्रहों का फल आसानी से जाना जा सकता है।

बृहस्पति

१. बृहस्पति जब दुश्मन ग्रहों के घर में हो तो बुरा असर नहीं करता, किन्तु दुश्मन ग्रह (बुध, शुक्र) बृहस्पति के घरों में आ जाएं तो हमेशा बुरा फल ही देते हैं।
२. शनि, राहु, केतु जैसे पापी ग्रहों के साथ बृहस्पति भी पापी हो जाता है। ६ठे व ११वें घर में बैठा बृहस्पति सिर्फ शनि को मदद देता है।
३. अकेला बृहस्पति जहां भी बैठा होगा, अच्छा फल ही देगा। जब केतु मंदा हो तो केतु (पुत्र) पर अपना बुरा असर डालता है।

४. अगर राहु १/२/३ घरों में, यानी बृहस्पति से पहले घरों में हो तो जातक गुरुओं का भी गुरु होता है।
५. जब पापी ग्रहों का फल नीचा हो रहा हो तो बृहस्पति का फल भी नीचा हो जाता है और जब मंगल नष्ट या मंगल बद हो तो बृहस्पति भी नष्ट हो जाता है। जो अपनी बुजुर्गों की बेइज्जती करता है, उसका बृहस्पति भी नीच हो जाता है। औलाद, तालीम, राज्य से इज्जत और आदर और बड़प्पन आदि बृहस्पति के शुभ होने से ही हासिल होते हैं।
६. बृहस्पति जब मिथुन राशि में आता है तो चारों और अव्यवस्था फैला देता है, तब अप्रत्याशित घटनाएं घटती है। अगर उसके सामने धनु राशि में शनि हो तो अनेक उत्पात दिखाई पड़ते हैं। १/४/५/६/८/९/१२ घरों में बृहस्पति बैठा हो तो जातक बड़ी तालीम हासिल करता है और उसी तालीम से गुजर-बसर करता है।
७. केन्द्र स्थानों (१/४/७/१०) का बृहस्पति जातक की साथ लाई हुई दौलत होता है, बशर्ते वह किसी दूसरे ग्रह से मंदा न हो रहा हो। अगर बृहस्पति के मित्र अच्छी हालत में न हों, तो भी जातक का नसीब सोया रहता है।
८. बृहस्पति जब १/५/१२वें घर में हो तो सूर्य और शनि को और ६/११वें घर में हो तो सिर्फ शनि को मदद पहुंचाता है।

मंदे बृहस्पति के लक्षण

- किसी भी रूप में सोना (सुवर्ण) खो जाए या चोरी चला जाए।
- तालीम बंद हो जाए।
- सिर के बाल चोटी के स्थान से उड़ जाए।
- बेवजह की झूठी अफवाह फैलने लगें। कोई तोहमत लगे।
- गले में माला पहनना भी मंदे बृहस्पति की पहचान है।
- दिमागी कामों में मन न लगे।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे बृहस्पति के हैं। बृहस्पति को उच्च एवं अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होते हैं–

- सोना गले में डाले रखें।
- केसर खाएं और उसी का तिलक करें।
- बृहस्पति की चीजों में से कोई भी एक चीज; जैसे सोना, पुखराज, कांस्य धातु का बना कोई पात्र, खांड (चीनी), घी, पीला स्वच्छ रंग, दाल चना (चने की दाल), हल्दी या कोई पवित्र पुस्तक दान में दें।

- चलते पानी में तेल, बादाम और नारियल बहाएं।
- बृहस्पतिवार के दिन ब्राह्मण को पीले वस्त्र दान करें। कढ़ी और चावल खाएं और खिलाएं।
- हर समय पीले रंग का रूमाल अपनी जेब में रखें।

नोट—बृहस्पतिवार के दिन किसी भी हालत में साबूत मूंग नहीं खाना चाहिए। लाल किताब के लेखक का मत है कि मूंग यानि बुध मिलने से बृहस्पति का प्रभाव नष्ट हो जाता है; जैसे पारा (बुध), सोना (बृहस्पति) में मिले तो सोना मिट्टी हो जाता है। बृहस्पति पर बुध की दृष्टि हो तो बृहस्पति का असर मंदा हो जाता है।

बृहस्पति का खास असर

बृहस्पति ग्रह की मियाद कुल सोलह साल की होती है, जिसमें से आठ साल के बाद बृहस्पति का फल शनि खराब कर देता है। पहले आठ साल का अरसा हमेशा नेक असर का होता है, क्योंकि बृहस्पति किसी से दुश्मनी नहीं करता। मगर पापी ग्रह बुरा असर कर दिया करते हैं, लेकिन वह भी उस वक्त जब बृहस्पति के दूसरे घर पर आ जाएं। लेकिन जब बृहस्पति पापी ग्रह के घर पर जाए तो बृहस्पति अपना नेक फल ही रखेगा।

पापी ग्रह या वो ग्रह जिसके घर में बृहस्पति आकर बैठा है और बृहस्पति उसके घर में है, इसलिए बृहस्पति अपना सारा अरसा नेक फल देगा और शनि बुरा फल देगा, जो बृहस्पति के अरसा के बाद शुरू हो सकता है। यानि बृहस्पति के सोलह साल की बाद छत्तीस साल शनि की कुछ मियाद में से बाकी बीस साल शनि कर सकता है।

शनि का बृहस्पति के साथ बुरा असर तब ही हो सकता है, जब कि बृहस्पति उसके साथ चल रहा हो और शनि का बुरा असर बृहस्पति के पहले आठ साल के बाद सोलह साल तक ही हो सकता है।

सूर्य

१. सूर्य ४/८वें घर में नुकसान ही ज्यादा करता है।
२. १/४/११वें घर में बैठा सूर्य बहुत अच्छा माना जाता है। मंगल ६ और केतु १ के वक्त भी सूर्य उच्च हो जाता है। अगर दुश्मन ग्रह सूर्य के साथ हो तो वह सूर्य की मदद ही करता है। इसका असर २२वें साल के शुरू होता है।
३. सूर्य खुद से कभी नीच नहीं होता, अपितु अपने नीचपन का प्रभाव साथी ग्रह पर डाल देता है।

४. मंगल के साथ से सूर्य की ताकत कम नहीं होती, मगर राहु-केतु से मिलने पर सूर्य को मानो ग्रहण लग जाता है।
५. सूर्य और शनि एक साथ बैठे हों तो भी कभी झगड़ा नहीं करते, किन्तु शुक्र को नीच जरूर कर देते हैं।
६. अगर सूर्य और बुध ५वें घर में हों तो जातक का बुढ़ापा बहुत अच्छा बीतता है, किन्तु उसकी मौत हवा के एक झोंके के सामन आती है।
७. जिस व्यक्ति का सूर्य प्रकाशित (उच्च) रहता है, वो खुद कमाकर दौलतमंद बनता है। किसी दूसरे की मदद की उसे उम्मीदें नहीं रखनी चाहिएं। वक्त के जितने थपेड़े वो खाएगा, उतनी की कामयाबी हासिल करेगा। उसे सताने वाला खुद खाक में मिल जाएगा और सूर्य का कुछ बिगाड़ न सकेगा।
८. श्रेष्ठ और प्रकाशित सूर्य वाले जातक के सभी ग्रह अपनी-अपनी अवधि में बहुत असरदार साबित होंगे; जैसे बृहस्पति १६-२१, सूर्य स्वयं २२-२३, चंद्र २४, शुक्र २५-२७, मंगल २८-३३, बुध ३४-३५, शनि ३६-४१, राहु ४२-४७ और केतु ४८; किन्तु बुध सूर्य के वक्त (आधा वक्त) १७ साल तक चुप रहेगा और शनि १८ साल तक वालिद (पिता) की कमाई पर बाद में अपनी कमाई पर असर डालेगा।
९. अगर सूर्य के साथ कोई उसका दोस्त ग्रह है तो जातक अपने वालिद से ज्यादा अच्छे नसीब वाला होगा और अगर दुश्मन ग्रह है तो औलाद का हाल नीच होगा।
१०. सूर्य के राहु से मिलने पर जातक के विचारों में गंदापन, केतु से मिलने पर पैरों में खराबी और शनि से मिलने पर सिर पर हमेशा इश्क का भूत सवार रहेगा।
११. जब दुश्मन ग्रह सूर्य से पहले घरों में हो तो अपना नीच असर सूर्य पर डालता है, जिससे जातक पर बुरा असर पड़ता है, किन्तु जब उक्त ग्रह सूर्य के बाद के घरों में होगा, तो सूर्य की चीजों पर अपना नीच असर डालेगा।
१२. सूर्य जिस राशि-घर में बैठा हो, उस घर के स्वामी ग्रह के सर को नीच कर देता है।
१३. सूर्य-शनि के टकराव में जातक की स्त्री को कष्ट पहुंचता है।
१४. सूर्य और मंगल के साथ अगर चंद्र-केतु हों तो पुत्र, मामा अथवा पिता को बीमारी देता है।

मंदे सूर्य के लक्षण

- अग्निकांड होते रहें।
- बाल्यकाल में पिता की मृत्यु हो जाए।
- बात करते वक्त मुंह से थूक निकले।
- शरीर के अंग नाकारा हो जाएं।
- अचानक पशु का नुकसान हो।
- दिमाग में कमजोरी हो, बुजदिली हर काम में आड़े आए।
- आर्थिक संकट उत्पन्न हो।
- मुकदमों आदि पर ज्यादा पैसा बर्बाद हो।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे बृहस्पति के हैं। बृहस्पति को उच्च एवं अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक्र सिद्ध होते हैं–

- जब सूर्य का बुरा असर हो रहा हो तो उसके दुश्मन ग्रहों को अच्छा करने की कोशिश करनी चाहिए।
- सूर्य ६/७ घरों में हो तो बुध को उपाय द्वारा ठीक कर लेना चाहिए।
- सूर्य को उच्च और अनुकूल करने के लिए चावल और गुड़ चलते दरिया में बहाएं।
- रविवार को दूध-चावल में गुड़ मिलाकर खुद खाएं।
- गुड़ खाकर पानी पीकर काम शुरू करें।
- बहते पानी में गुड़ बहाएं।
- रात को सोते समय दूध से आग बुझाएं।
- सूर्योदय के समय तांबे में माणिक्य पहनें।
- गेहूं के आटे के लड्डू बनाकर बच्चों को बांटें और खुद भी खाएं।
- तांबे का सिक्का पानी में डालें अथवा तांबे का सिक्का गले में डालें।
- लाल कपड़े में गेहूं, गुड़ या सोना बांधकर दान करें।
- अगर घर ७ में सूर्य को शनि का टकराव आ जाए तो चंद्र का नाश करने से सूर्य को मदद पहुंचेगी।

विशेष–सूर्य ग्रह का अपना तमाम अरसा हो तो अपनी जात के लिए अच्छा ही होगा, लेकिन यह ग्रह अपने साथी शुक्र के फल का तमाम अरसा खराब या नीच ही करेगा और चंद्र भी सौ फीसदी अपनी बड़ी नजर शुक्र कर करता रहेगा। मगर सूर्य को चंद्र २५ फीसदी मदद और देगा।

चंद्र

१. जब चंद्र पहले घरों में और दुश्मन ग्रह बाद के घरों में हो तो चंद्र अपना अच्छा असर दुश्मन ग्रह को नहीं देता।
२. जब दुश्मन ग्रह और चंद्र दोनों इकट्ठे हों तो दोनों का फल नीच हो जाता है।
३. अगर दुश्मन ग्रह पहले घरों में और चंद्र बाद के घरों में हो तो चंद्र का असर अच्छा नहीं होता।
४. चंद्र के असर के वक्त, शुक्र और बुध चंद्र की ताकत आधी कर देते हैं, मगर अपनी ताकत पूरी रखते हैं।
५. चंद्र के साथ सूर्य के मिलने पर दोनों का असर अच्छा होता है।
६. सूर्य-बुध या बुध-बृहस्पति जब चंद्र के सामने आ रहे हों तो जातक का समुद्री-सफ़र का नतीजा अच्छा नहीं होता।
७. जब नम्बर ४ (चंद्र का पक्का घर) खाली हो, किसी उच्च ग्रह की दृष्टि उस पर न पड़ रही हो, बाकी ग्रह चाहे कितने भी नीच हालत में क्यों न पड़े हों, अकेला चंद्र ही अच्छा फल देगा।
८. अगर चंद्र के घर बैठा ग्रह, घर का साथी ग्रह बन रहा हो तो वो भी अच्छा फल ही देगा, चाहे वो चंद्र का दुश्मन ग्रह ही क्यों न हो।
९. शुक्र, बुध, शनि, राहु, केतु—इन पर चंद्र की दृष्टि पड़ रही हो तो नतीजा ठीक ही होगा, लेकिन अगर इनकी दृष्टि चंद्र पर पड़ रही हो तो चंद्र का असर अच्छा नहीं होगा; यानि चंद्र में इतनी ताकत है कि वो दुश्मन ग्रहों में भी जाकर दोस्ती कायम रख सकता है, क्योंकि माता (चंद्र) का कहना सभी मानते हैं।
१०. अगर कुंडली में बृहस्पति पहले घरों (१-७) में और केतु बाद के घरों में (७-१२) हो तो दोनों की अपेक्षा चंद्र का फल नीच होगा।
११. उच्च चंद्र वाला जातक सबको बात में हां-में-हां मिलाकर, आखिर में उसे अपने हक में कर लेने वाला होता है।
१२. चंद्र उच्च का, अपनी राशि या घर का हो तो जातक किसी एक भाषा का विद्वान् होता है।

मंदे चंद्र के लक्षण

- दूध देने वाला पशु अचानक मर जाए।
- महसूस करने की ताकत चली जाए।

- नल, कुआं या तालाब आदि सूख जाएं।
- शादी या औलाद के बारे में गड़बड़ी हो।
- काम में मंदी आए।
- किसी तरह का आरोप लगे।
- माता, नानकों पर असर नीचा हो।
- मूत्र की बीमारियां आ घेरें।
- ऐसी घटनाएं घटें जिनके बारे में कभी सोचा तक न हो।

उपरोक्त लक्षण सभी मंदे चंद्र के हैं। चंद्र को उच्च एवं अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होंगे–

- माता की सेवा से चंद्र शुभ हो जाता है।
- शिव आराधना, अपने बुजुर्गों, साधु-संतों व ब्राह्मणों के पैरों को छूना और उनकी दुआएं लेना भी फायदेमंद होता है।
- रात को पानी सिरहाने रखकर सुबह कीकर में (वृक्ष में) डालना नीचे चंद्र को बल देता है।
- सोमवार को सफेद कपड़े में मिश्री बांधकर पानी में बहाएं।
- मोती चांदी में पहनें।
- चंद्र निर्बल हो तो सोमवार के दिन दूध-चावल की खीर का भोजन करें। खीर में चांदी का वरक डालें।
- सफेद कपड़े पहनें।
- सफेद चंदन का तिलक करें।
- मोती या चांदी का दान करें।
- बड़ के पेड़ की जड़ में पानी डालें।
- माता से चांदी, चावल लेकर, सफेद कपड़े में बांधकर संभालकर रखें।
- नया मकान बनाते वक्त बुनियाद में चांदी का पतरा गाड़ें या बहुत पुराने चावल चांदी की डिब्बी में बंद करके घर में संभालकर रखें।

विशेष–आमतौर पर चंद्र ग्रह से कोई ग्रह दुश्मनी नहीं करता। यह खुद ही दूसरें ग्रहों से दुश्मनी करे तो बेशक करे, इसलिए इस ग्रह का अपना फल तो बृहस्पति के घर बैठे हुए ऊंचा होगा, नगर खुद बुध और शुक्र से दुश्मनी करता जाएगा।

शुक्र

१. शुक्र बहुत प्यार करता है शनि से, क्योंकि जब कभी भी कोई ग्रह शनि पर चोट करता है, तो शुक्र उसकी जगह पर अपने को कुर्बान कर देता है।

२. मंगल और शुक्र दोनों का असर चंद्र जैसा होता है। अगर उसमें बुध और केतु का असर न मिल रहा हो; शुक्र अकेला चाहे जहां भी बैठा हो, अच्छा ही असर करता है। शुक्र जब ७वें घर में बैठ जाए तो अपना सारा असर उसी ग्रह को दे देता है।

३. शुक्र वृष २, तुला ७, धनु ९, मकर १० में शुभ और कर्क ४, सिंह ५ में अशुभ फल देता है, जबकि मिथुन ३ में योगकारक होता है।

४. शुक्र ६-७वें घर में अशुभ होता है।

५. १२वें घर में शुक्र हो तो जातक को राजा, मंत्री तथा नेता बना देता है।

६. अशुभ शुक्र से जातक को वीर्य रोग होता है और उसकी औरत बीमार रहती है।

७. शुक्र पहले घर में हो तो कामदेव की ताकत को बढ़ाता है, दूसरे घर में बहुत ज्यादा असरदार साबित होता है, तीसरे में मर्द जैसी ताकत वाली औरत दिलाता है, चार में हो तो दो औरतों का सुख देता है, पांच में हो तो मर्द को औरत (पत्नी) का पिट्ठू बनाता है, छह में नीच होता है, सात में दौलत और कमाई के मामले में मंदा होता है, आठ में बहुत ज्यादा मंदा होता है, नौ में मंगल बद और दस में खुद शनि बन बैठता है; यानि मर्द औरत से दबा रहता है, ग्यारह में अच्छा साबित होता है और बारह में उच्च का होता है।

८. शुक्र अगर अच्छी हालत में हो तो हर तरफ से भला करने वाला बन जाता है।

९. शुक्र और शनि दोनों मिलकर सूर्य को नुकसान पहुंचाते हैं, क्योंकि ७वें घर में शनि ऊंचा और सूर्य नीचा होता है। ७वां घर (राशि) तुला भी शुक्र की राशि है, इसलिए बाप या बेटे में झगड़े से धन-दौलत का नाश होता है।

१०. यह ग्रह किसी भी ग्रह के असर का नाश नहीं करता, बल्कि दुश्मन के साथ मिलने पर अपनी ही ताकत (काम वासना) ज्यादा या कम लेता है।

११. जब शुक्र अपनी राशि २-७ में होता है तो जातक को बिना मेहनत के रोटी हासिल नहीं होती, बेशक वो चाहे जितना दौलतमंद क्यों न हो; यानी दौलतमंद होते हुए भी वो मेहनत करने वाला होता है।

१२. शुक्र का शनि से मेल अंधेरे में होता है, इसलिए यह सूर्य के खिलाफ रहता है।

१३. अगर बिना बीमारी के अंगूठा नाकारा हो जाए तो शुक्र को नष्ट हुआ समझना चाहिए।

१४. शुक्र और चंद्र जब आमने-सामने हों तो माता की नजर पर बुरा असर पड़ता है।

१५. ७वें घर में शुक्र के साथ जो भी ग्रह हो उसका दोस्त बन जाता है।

१६. केतु और शुक्र किसी भी घर में पड़े हों, तो संतान में रुकावट डालते हैं।

१७. इकट्ठे केतु-शुक्र के वक्त अगर जातक की शादी न हो तो वो अंधा हो जाता है।

१८. दूसरे घर में शुक्र ससुराल के लिए निकम्मा साबित होता है।

मंदे शुक्र के लक्षण

- बदन की चमड़ी (खाल) अचानक खराब होने लगे या उसमें कोई तकलीफ हो जाए।
- बिना बीमारी के अंगूठा निकम्मा हो जाए।
- स्वप्नदोष की ज्यादती रहे।
- अपनी औरत (पत्नी) बीमार पड़ जाए।
- पराई औरत की मुहब्बत के फेर में पड़ें।
- खांसते वक्त मुंह से खून आए या तपेदिक हो जाए।
- औरत की सेहत ठीक न रहे, दिमागी खराबी हो।
- सास-बहू में लगातार तकरार रहे।
- अच्छी आमदनी के बाद भी कर्जा बना रहे।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे शुक्र के हैं। शुक्र को उच्च एवं अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होंगे-

- नीच शुक्र का जातक काली गाय की रोज सेवा करे।
- दही एवं लाल ज्वार मंदिर में दान करें।
- सफेद वस्त्र का दान करें।
- पत्नी के वजन जितना या उसका दसवां हिस्सा लाल ज्वार मंदिर में या किसी धर्म-स्थान में दान स्वरूप दें।
- पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें।
- आलू उबलकर जब पीले हो जाएं, तब काली गाय को खिलाएं।
- राहु जब शुक्र के खिलाफ चले, तब सूर्य की चीजें विशेषकर तांबा (तांबे का पैसा) अथवा चंद्र की चीजें (चांदी, चावल) दूध से धोकर, गड्ढ़ा खोदकर उसमें दबाएं।
- रोजाना अपनी रोटी से गाय की रोटी निकालें।

- गाय या चरी का दान करें।
- गो-मूत्र का सेवन करें।
- चांदी में हीरा पहनें।
- गुड़ न खाएं।
- दिन में संभोग न करें।
- दही से स्नान करें।
- दो सौ ग्राम गाय का पीला घी मंदिर में दें।
- औरत की बीमारी के वक्त मकान की छत पर शहद से भरा बर्तन रखें।
- चांदी की छोटी-सी डिब्बी तालाब की चिकनी मिट्टी में दबाएं।
- आडू की गुठली में सूराख करके, उसमें सुरमा भरकर घर से बाहर वीराने में, उस जमीन में जिस पर घास हो, दबाएं।
- बृहस्पति का उपाय मददगार साबित होगा।
- चांदी की ठोस गोली अपनी जेब में रखें।
- बीमार औरत अपने गुप्तांग को लाल दवा से धोए।
- औरत नंगे पांव जमीन पर न रखे, जुराब या जूती डालकर रखे।
- औरत की अच्छी सेहत के लिए छह शुक्रवार सफेद पत्थर को धोकर सफेद चंदन लगाकर बहाए।
- गंदे नाले में नीला फूल डालना मददगार होगा।
- कांसे के बर्तन का दान, शुक्रवार के दिन मंदिर में दें।
- आठ शुक्रवार काली गाय को गुड़ लगाकर आटे का पेड़ा दें।
- मकान की तह में चांदी, शहद दबाएं।
- नीम के पेड़ में ४३ दिन लगातार चांदी के चौकोर पत्तर गाड़ें।

विशेष—शुक्र जब नीच का हो और १/६ या ९वें घर में हो तो विवाह २५वें वर्ष में नहीं करना चाहिए। बिल्ली की जेर घर में रखी हुई अशुभ होगी। अगर वह चमड़े के बटुए में रखी होगी तो धन-दौलत का नाश कर देगी।

शुक्र का खास असर

सूर्य का अरसा २२ साल होता है और चंद्र का २४ साल। वे दोनों ही शुक्र के दुश्मन हैं। शुक्र की मियाद २५ साल है। सूर्य और शुक्र इकट्ठे बैठे होने की वजह से दोनों का असर इकट्ठा शुरू हुआ। सूर्य की दुश्मनी २२ साल बाद खत्म हुई और चंद्र की २५ फीसदी बुरी नजर भी २४ साल में जाकर हटी। अब शुक्र का अरसा सिर्फ एक साल बाकी रहा (आगे के 'मंगल के अंतर्गत' दी गई कुंडली का अध्ययन करें)।

उधर शुक्र के घर को राहु भी यानि घर संख्या ७ को खराब कर रहा है और शुक्र उसके घर में बैठा हुआ है। उसका दोस्त बुध बेशक उसके साथ है, मगर वो अपने दोस्त सूर्य के निस्फ (तमाम) अरसा तक (यानि १७ साल) चुप है, न बुध बिगड़ता है न सूर्य, १८ साल के बाद शुक्र की मदद शुरू कर सकता है।

मगर बुध की मियाद ३४ साल की शुरू होती है, इसलिए शुक्र का पहला अरसा तो सौर का २५ साल ही खराब होगा। बुध की मदद या बुध की ऊंची हालत से सिर्फ लड़कियां ही पैदा करता है। इसलिए शुक्र पहले ही दौरे में मदद न दे सकेगा। यों शुक्र और चंद्र की दुश्मनी हुई, मगर दूसरे चक्र में शुक्र जो मीन राशि घर १२वें में ऊंचा होता है, अपने वक्त से ऊंचा फल देगा।

मंगल

१. शुभ मंगल सेना में अधिकारी बनाता है और अशुभ मंगल वाला जातक बदमाश होता है जो छुरी, चाकू, बंदूक दिखाकर लोगों को लूटता है।
२. मंगल का जातक दिल का साफ, अंदर-बाहर से एक-जैसा होता है।
३. संतानवान् होना नेक मंगल का फल है। शनि के बिल्कुल विपरीत चलना इसका स्वभाव है।
४. पहले घर में मंगल शुभ माना जाता है और ८ में मंगल अशुभ (बद) हो जाता है। १ में सूर्य का अच्छा असर भी साथ ही होता है। ४ में मंगल बद (अशुभ) ही होता है।
५. मंगल पहले घर में जिस जातक की कुंडली में होता है, वो भाइयों में सबसे पीछे तक जिंदा रहता है, चाहे वो सबसे बड़ा ही क्यों न हो।
६. बनावटी मंगल (सूर्य+बृहस्पति) औलाद के मामले में बहुत बढ़िया माना गया है।
७. मंगल राशि मेष १, वृश्चिक ८, सिंह ५, धनु ९, मकर १० और मीन १२ में शुभ और मिथुन ३, कन्या ६ में अशुभ होता है। जिसका मंगला ऊंचा होता है वो बहुत अक्लमंद होता है।
८. मंगल बद यानि मंगल ४ या मंगल ८ (शनि ९) आदि के मुताबिक जब मंगल वहां हो जाता है, तो बहुत असर डालता है और हर वक्त बर्बादी और तबाही ही करता है।
९. मंगल बद हो तो राहु-केतु दोनों बुरा असर देते हैं। ऐसी हालत में जो घर १ में बैठा ग्रह होता है, वो अपनी दृष्टि से घर ११ को देखता है।

१०. सूर्य-मंगल के साथ अगर शुक्र-केतु हों तो औरत, औलाद (बेटा) या मां बीमार हो और वालिद (पिता) बीमार हो तो चंद्र-बृहस्पति साथ हों।

११. ५-९ में मंगल इंसाफ करने वाला, १०-११ में मंगल ऊंचा तथा मंगल + शनि साथी बना रहता है।

१२. अगर मंगल के दाएं चन्द्र, बाएं सूर्य हो तो जातक के मां-बाप उसकी १३/१४/१५ या १८ वर्ष की उम्र में ही मर-खप जाएं या उसका साथ छोड़ जाएं। पहले तो उसकी बहन होगी नहीं, अगर होती तो महारानी के समान सुखी होगी। अगर बद होगी तो बिना ब्याही (अकेली) होगी।

१३. अगर जातक दरवेशों का साथ करेगा तो खुद मारा-मारा फिरेगा। भाई-बंद दु:खिया होंगे, बीमार पड़ जाएंगे। अगर नसीब साथ देगा, तो कतई दरवेशों का साथ नहीं करेगा, पर खुद से दरवेश होगा।

१४. ३९ साला उम्र के बाद मंत्री की तरह सलाह देने वाला होगा। दुश्मन चाहे जितने हों, उनसे बचाव होता रहेगा।

१५. लकड़ी के कारोबार में फायदा होगा।

१६. सूर्य और मंगल का अपना-अपना उम्दा फल होगा। अगर नौकरी करना चाहे तो वो २८ से ३५ साल तक हो सकती है। राजदरबार में फायदा होगा।

१७. जब शनि या मंगल बद का संबंध हो जाए तो शारीरिक कष्ट होता है।

१८. पहले घर में सूर्य-मंगल हों और ४/७/९ में कोई ग्रह न हो तो जातक हमला रोकने की ताकत वाला, मगर खुद तेज हमला करने वाला होगा।

१९. जातक जब तक दूसरों का पालन करता रहेगा, तब तक उसकी अपनी भी कमाई होती रहेगी। जब मंगल बद (नीचा) हो जाए (वर्ष फल के मुताबिक) तो बीमारी पल्ले पड़े।

२०. अपने लिए की तो कोई शर्त नहीं होगी, किन्तु ससुराल से दूसरों के लिए (पालने के लिए) धन-दौलत मिलती रहेगी।

२१. औरत और दौलत की मदद करे तो खुद भी बढ़े, वरना घटना नसीब में होगा।

२२. मंगल १, बुध ३ और ७-९ घर खाली हों तो जातक के भाई दो हों और दोनों की हालत ऐसी कि वो कभी शाह तो कभी फकीर होंगे।

२३. मंगल ३, बृहस्पति या सूर्य ९/११ अथवा चंद्र या बुध ९/११ में हो तो नतीजा ठीक नहीं रहता, बल्कि आ बैल मुझे मार वाला हाल होता है; किन्तु जातक के परिवार को मदद मिलती रहेगी। ससुराल दौलतमंद होगी और वहां से वक्त-वक्त पर मदद भी मिलती रहेगी।

२४. मंगल ३, शनि ९-११; इस हालत में शनि बुरा असर नहीं डालेगा।

२५. मंगल ३, बृहस्पति, सूर्य या चंद्र ७ में और बुध ३ में हो तो खुद का हाल मंदा होगा, मगर ससुराल की पूरी मदद मिलेगी।

२६. जिस तरह मंगल १२ (घर) के समय राहु चुप हो जाता है, उसी तरह मंगल ६ के वक्त केतु के असर से औलाद (पुत्र) की कमी होगी और बुध १२ के वक्त जातक को दिमाग की खराबी होगी। ३४ साल से पहले बेटे का जन्म नहीं होगा।

२७. मंगल ७ (मंगलीक) के वक्त जातक के पास उसकी बहन, साली, बुआ का रहना ठीक नहीं; यानि जातक के लिए अशुभ फल देगा। तोता पालना या बकरी का रखना भी नुकसानदेह साबित होगा।

२८. मंगल ८ (मंगलीक) पक्का घर—यह मंगल का पक्का घर है। मौत का फंदा, भाइयों के लिए बहुत बुरा, लड़ाई-झगड़ा हमेशा कायम रहे। जातक अपने घर कभी तंदूर न लाए, क्योंकि तंदूर का लाना शुक्र (औरत) के लिए बुरा असरकारी साबित होगा। भाई-बंदों के लिए मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी।

२९. अगर मंगल नेक हो तो घर ९ में मंगल माना जाता है। यहां सभी नौ-ग्रहों का फल अच्छा हो जाता है।

३०. मंगल १२ और केतु २ में हो, तो २४वें साल जब पहला लड़का पैदा हो तो, तब से अच्छा वक्त शुरू होगा।

मंदे मंगल के लक्षण

- काना हो या आंख कानी हो जाए।
- मैथुन की ताकत होते हुए भी औलाद पैदा करने के काबिल न रहे।
- बच्चे पैदा होते ही मर जाएं।
- बर्बादी और तबाही हो।
- भाई-भतीजे या बेटे की अचानक मौत हो।
- किसी तरह का कलंक लग जाए।
- दरिद्री का मुंह देखना पड़े।
- बीमारी गले पड़ जाए।
- दौलत का नुकसान हो।
- औलाद में रुकावट।
- ननिहाल, ससुराल में परेशानी।
- जातक को सिर की पीड़ा हो।

- चोरी या डकैती की वजह से सजा पाए।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे मंगल के हैं। मंगल को उच्च एवं अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होंगे–

- मंगल नीच हो, अशुभ या दुश्मन के क्षेत्र का हो तो जातक मसूर की दाल एवं दूसरी मंगल की चीजों का इस्तेमाल खुद के लिए न करें। रेवड़ियां बहते पानी में बहाएं। मीठी रोटी बनाकर बच्चों को बांटें और बंदरों को खिलाएं। हनुमान जी के मंदिर में जाकर दर्शन करें।
- मंगल उच्च का हो तो मिष्ठान्न (मीठा आदि) बनाकर हनुमान जी के मंदिर में चढ़ाकर बांटें और खुद भी खाएं।
- लाल रूमाल हमेशा जेब में रखें।
- मसूर की दाल रोटी से खाएं।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में जरूर जाया करें।
- मृगछाला का इस्तेमाल करें।
- रेवड़ियां या बताशे बहते पानी में बहाएं।
- सफेद सुरमा आंखों में डालें।
- बिजली के कारोबार से दौलत में इजाफा होगा।
- भाइयों तथा दोस्तों की मदद करने से आमदनी बढ़ेगी।
- हाथीदांत घर में रखें (हाथी या हाथी का खिलौना नहीं)।
- तीन धातु की (सोना, चांदी, तांबा) अंगूठी पहनें।
- ४०० ग्राम चावल कच्चे दूध में धोकर ७ मंगलवार को बहते पानी में छोड़ें।
- चंद्र का उपाय मददगार साबित होगा।
- रात को सोते समय सिरहाने पानी रखकर सोएं, सुबह उस पानी को पी लें या किसी पौधे में डाल दें।
- कन्याओं को दूध, चावल या चांदी का दान करें, (अगर मंगल छठे घर में हो तो)।
- मंगल ७ में हो तो बुआ, बहन को लाल कपड़े देना मंदे असर को दूर करेगा। शनि को उच्च करना, मकान/दीवार बनाना अच्छा नतीजा देगा, चांदी की ठोस गोली जेब में रखना अच्छा होगा।
- दंपति नहा-धोकर लाल कपड़े पहनें और तांबे का बर्तन चावलों से भरकर, चंदन का लेप लगाकर हनुमान मंदिर में दें।
- ८ मीठी एक तरफ सिंकी हुई तंदूरी रोटियां कुत्तों को डालें।
- मंगलवार के दिन मूंगा धारण करें।

- काला-सफेद कुत्ता पालना अच्छा फल देगा।
- हनुमानजी को सिंदूर चढ़ाएं।
- पानी में गुड़ डालकर सूर्य को देना नेक होगा।
- सिर पर चोटी रखें या खाकी टोपी से सिर ढांप कर रखें।

मंगल बद का नतीजा

जब मंगल को चंद्र, सूर्य का साथ न मिल रहा हो तो वो मंगल नीच हो जाता है। नीच मंगल सबका दुश्मन होता है। धर्म-विरुद्ध कार्य करता है। उसकी अपनी मौत किसी हथियार से या लम्बी बीमारी से होती है। ऐसा जातक बहुत कमीना और निर्दयी होता है।

अगर ३/४ (चंद्र) की मदद न मिले तो चंद्र के घर ४ को दौलत के समुद्र को भी जला दे। जब इससे बुध का साथ हो जाए तो भी बुरा असर होता है।

जातक जब सिर्फ मंगलीक हो तो पुरुष या स्त्री पर भारी होता है; किन्तु जब मंगल बद ४, ७ हो तो स्त्री या पुरुष, धन-संपत्ति दोनों का नाश कर देता है। शनि के घर में बैठा भाई पर भारी, शनि के दोनों घरों में पुत्र पर भारी, अगर मंगल और शनि अलग-अलग जगह पर बैठे हों, दृष्टि से भी न मिल रहे हों तो दीर्घायु होती है। यह ग्रह हरेक बुराई का मालिक होता है, हर काम टेढ़ा होता है।

मंगल ४ को ही मंगल बद कहते हैं। अगर मंगल के पक्के घर ३ में चंद्र हो अथवा मंगल को सूर्य या चंद्र की मदद हासिल न हो रही हो, बुध का संबंध हो रहा हो।

सांप का काटा (शनि का बुरा असर) तो बच सकता है, मगर मंगल बद का मारा हुआ कभी नहीं बच सकता। मंगल बद जातक की धन-सम्पति को तो नष्ट करता ही है, उसके दीन-ईमान को भी नहीं बख्शता। मां-बाप, औरत की सेहत का हाल मंदा, उनकी बेइज्जती करने वाला होता है।

जातक की औरत को बीमारी की लत लग जाए, उसका बच्चा ८वें या १८ वें साल में चल बसे, खुद जातक की मौत लम्बी बीमारी से या किसी घातक हथियार से होती है।

उपाय-चंद्र की मदद लेकर मन को शांत किया जा सकता है।

कैसे बन जाता है मंगल बद

- सूर्य अकेला कुंडली के ६/७/१०/१२ वें घर में हो।
- शुक्र ९वें घर में हो।

- बुध-केतु के साथ मंगल हो।
- राहु ५/९वें घर में और केतु ३/६वें घर में हो।
- सूर्य के बिना मंगल, जब सूर्य की मदद मंगल को न मिले।
- मंगल के १/८वें घर में सूर्य की रोशनी न हो रही हो।
- सूर्य, शनि, शुक्र, बुध; शुक्र ९वें घर में हों तो भी मंगल बद हो जाता है।

जब मंगल बद का असर पुरुष ग्रहों (सूर्य, बृहस्पति) के घरों, सूर्य ५वें घर में और बृहस्पति २/५/९/११वें घर में पड़ रहा हो तो अपने सगे-संबंधियों पर उसका नीच असर हो जाता है।

मंगल बद पापी ग्रहों के साथ जुध, शुक्र के सामने वाले घरों में आ जाए, तो मान-सम्मान को धक्का लगता है।

जब शुक्र, चंद्र के सामने वाले घरों में या स्त्री ग्रहों के घर में हो तो औरत को दु:ख.होता है। लड़ाई-झगड़ा उठ खड़ा होता है।

मंगल बद के वक्त अगर बुध दूसरे घर में हो तो जातक लड़ाई में मारा जाए, बुध तीसरे घर में हो तो एय्याश, बुध चौथे घर में हो तो नजूमी, बुध पांचवें घर में हो तो अक्लमंद, बुध छठे घर में हो तो हुक्मरान और बुध दसवें घर में हो तो दौलतमंद होता है।

चाहे मंगल को चंद्र, सूर्य, बृहस्पति की मदद मिल जाए, किन्तु (शनि, मंगल) के दुश्मन ग्रह (बुध, शुक्र) का साथ हो जाए (मंगल के साथ) तो भी मंगल बद हो जाता है। मंगल बद का असर कायम ग्रह के लोगों पर होता है।

जब मंगल बद पाप ग्रहों के साथ अपना असर पुरुष ग्रहों के घर पहुंचा रहा हो तो पुरुषों की अपेक्षा धन-सम्पत्ति पर बुरा असर पड़ता है। जब मंगल बद स्त्री ग्रह (शुक्र, चंद्र) के घरों में बैठ जाए या आमने-सामने नजर से आ जाए, तो औरतों को दु:ख-तकलीफ, नाश, लड़ाई-झगड़ा खड़ा कर देता है।

उपाय–

- पूजादि के वक्त मृगछाला का इस्तेमाल करें।
- तीन धातु से बनी अंगूठी पहनें।
- बताशे या रेवड़ियां चलते पानी में बहाएं।
- मीठी तंदूर की रोटियां भूखे कुत्ते को सुबह के वक्त खिलाएं।

जन्मकुंडली के १२ घरों में मंगल बद का असर अग्रलिखित है–

पहले घर में मंगल बद का असर

इस घर में मंगल बद किसी जिन्नात से कम नहीं होता। यह दौलत और जायदाद के लिए अच्छा नहीं है, हालांकि जातक की उम्र लम्बी होती है, मगर २८ से ४२ साल की उम्र तक ऐसे मंगल का फल नीच (मंदा) ही रहता है।

नोट–श्यामला या काले रंग का जातक मंगल बद के असर से आजाद रहता है।

दूसरे घर में मंगल बद का असर

इस घर का जातक लड़ाई-झगड़ा करने में बहुत माहिर होता है और वक्त पड़ने पर वो भाइयों तक की हत्या करने से परहेज नहीं करता। उसके हर काम में रुकावट आती रहती है। यहां से मंगल ९वें घर के ग्रहों को भी देखता है तथा वहां भी अपना बुरा असर ही डालता है।

९वां घर बृहस्पति का पक्का घर है तथा नसीब वाला घर है, किन्तु वालिद और खुद के नसीब के लिए निकम्मा है। इसका जातक घर के लोगों से नहीं बच सकता, जबकि बाहर के लोगों से वो खुद को बचाने में कामयाब हो सकता है। दरअसल वो अपना रक्त अपने हाथों बहाने वाला झगड़ालू होता है, ९वें घर का बुरा असर भी साथ होता है। नतीजे के तौर पर अपने कामों को खराब करने वाला और रुकावट लाने वाला वो खुद होता है तथा अपनी मौत का कारण भी खुद ही बनता है।

नोट–अगर दूसरे घर में केतु भी हो तो जातक हुकूमत करने में माहिर होता है।

तीसरे घर में मंगल बद का असर

इस घर का बदकारी मंगल ताऊ, चाचा, मामा, मौसी और भाई आदि से दुश्मनी करता है। चाचा जात भाइयों से दुश्मनी रखता है। हमेशा बीमार रहता है। लेकिन बुध साथ में हो तो ऐसे मंगल का बुरा असर नहीं होता।

चौथे घर में मंगल बद का असर

इस घर वाला जातक घर फूंककर तमाशा देखने वाला होता है। उसे जुबान की बीमारियां होती हैं। चोरों का वो भारी दुश्मन बन जाता है। यों वो दौलत और जायदाद के लिए इतनी नीचता पर उतर आता है कि लोग ताज्जुब करने लगते हैं, क्योंकि दौलत और जायदाद के लिए अपने सगे को भी वो नहीं छोड़ता और मां/औरत

पर भी हमला करने से बाज नहीं आता। अगर बृहस्पति आठवें घर में मौजूद हो तो वो जातक के जीवन के लिए ढाल बन जाएगा।

उपाय–

- मंगल बद के बुरे असर को दूर करने के लिए जातक रोज हनुमान मंदिर जाया करें। काने और काले आदमियों से मेल–जोल न रखें।
- चांदी का चौकोर पत्तर हमेशा अपनी जेब में रखें।
- घर का दरवाजा दक्षिण दिशा में हो तो उसे लोहे की नोकीली कीलों से कील दें।
- घर में मंगल बद का पेड़ (नीम) लगा हो तो उसे उखाड़ फेंक दें।
- इस घर में चंद्र का उपाय मददगार होगा।
- बड़ के पेड़ में ४३ दिन तक लगातार पानी डालकर उसकी गीली मिट्टी से तिलक करने से मंगल बद का जहर ख़त्म हो जाएगा।
- छ़त पर देशी खांड कायम करें।
- छत पर कभी भी तंदूर न रखें, क्योंकि औलाद के लिए यह बुरा साबित होगा।
- जब लड़का या लड़की बीमार हो तो शहद से भरा बर्तन किसी वीरान जगह पर जाकर दबाएं।
- मृगछाला का इस्तेमाल करें।
- चिड़ियों को खाने की मीठी चीजें डालें।

पांचवें घर में मंगल बद का असर

जातक ज्यादातर सफर करता रहता है। औलाद का सुख भी उसे कम मिलता है। वो बहुत–से लोगों से दुश्मनी रखता है। पन्द्रह साल वो दुःख–तकलीफ में गुजारता है। आंखों की रोशनी कम होने का डर रहता है। बुध से मिलने पर भी मंदा असर रहता है। रिश्तेदारों का हाल भी मंदा ही रहता है। औरतों पर इसका कुछ खास असर नहीं पड़ता, मगर आदमियों पर मौत का साया छाया रहता है।

छठे घर में मंगल का असर

यह केतु का पक्का घर है, इसलिए मंगल–केतु दोनों का असर मंदा (नीच) और बुरा ही रहता है। बात–बात में झगड़ा और नुकसान इसके कुफल हैं।

सातवें घर में मंगल बद का असर

यह बुध का पक्का घर है। इस घर के जातक पर शुक्र और बुध का असर

मंदा ही होगा। औरत धोखा देने में क़ामयाब होगी। सत्रह साल तक आग आदि का डर बना रहेगा। अक्लमंदी काम न आएगी। औरत का सुख भी न मिल सकेगा। दूसरों का बना काम बिगाड़ने में उसे खुशी होगी। पराई औरत की मुहब्बत के फेर में पड़कर बदनामी तो उठाएगा ही, यह भी हो सकता है कि उसी औरत की वजह से उसे जान से भी हाथ धोना पड़े।

आठवें घर में मंगल बद का असर

जातक लड़ाई-झगड़े का ताना-बाना बुनने में बड़ा होशियार होता है और ऐसे मामलों में बड़ी बुद्धिमानी से काम लेता है। उसकी औरत (पत्नी) जीवित नहीं रहती। यह मंगल बद का अपना घर है। इसके जातक को मौत का डर हमेशा बना रहता है, लेकिन उसकी मां पर इसका कुछ खास असर नहीं होता।

जातक पर उपरोक्त घर का बुरा असर शादी के बाद शुरू होता है। अगर घर ४ में सूर्य या बृहस्पति हो तो यह घर मौत का घर न होगा। अगर औलाद दुःख-तकलीफ में न भी हो तो भी खुद की कमाई दूसरों के काम आएगी और दूसरे कामों में उसकी बुराई का असर होता रहेगा।

नौवें घर में मंगल बद का असर

इस घर में यों तो मंगल नेक होता है, मगर मंगल बद के वक्त पासा पलट जाता है और इसका असर एकदम खिलाफ हो जाता है। इसका जातक अपने ईमान के खिलाफ चलता है। उसके पैदा होने के वक्त वालिद की आमदनी अच्छी होगी, लेकिन पैदाईश के बाद आधी रह जाएगी। खास रिश्तेदारों पर भी असर माकूल नहीं पड़ेगा।

दसवें घर में मंगल बद का असर

जातक की जिंदगी के लगभग पन्द्रह साल बड़े दुःख और तकलीफ के साथ बीतते हैं। ऐसा जातक कोई तांत्रिक या मौलवी हो सकता है। वो जादू, तंत्र और मंत्र का जानने वाला होता है।

ग्यारहवें घर में मंगल बद का असर

आमदनी और नसीब के लिए हमेशा शक्की हालत रहेगी। मां-बाप की माली हालत बहुत खराब रहेगी। सुख-चैन नदारद होगा। जातक बेआराम और बेऔलाद होगा।

बारहवें घर में मंगल बद का असर

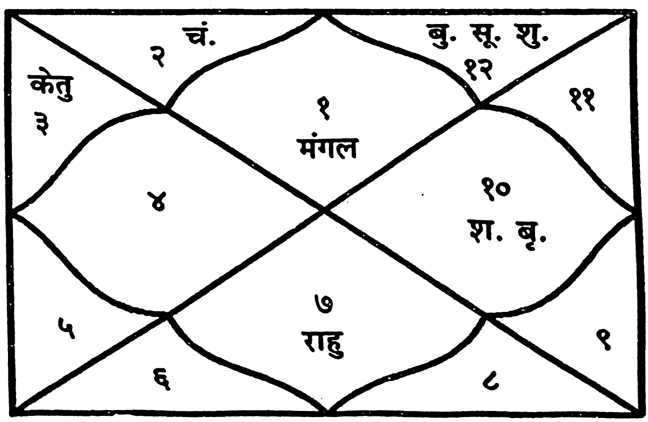
बुध घर आठवें, मंगल बद बारहवें घर में अगर चंद्र और सूर्य से ताल्लुक न हो रहा हो तो जातक बचपन में मौत को गले लगा सकता है। मंगल उस वक्त बुरा असर न करेगा, जब सूर्य घर ४ में कायम हो।

विशेष–२८ साल तक राहु की अंदरूनी पापी चाल की वजह से औलाद, भाई-बंद और नजर पर जरूर बुरा असर होगा, मगर दूसरी बातों में मंगल का असर नेक ही होगा।

१/७ घरों के ग्रह एक-दूसरे को सौ फीसदी की नजर से देखते हैं। मंगल के साथ बैठा हुआ राहु, बुध रहता है और मंगल बद के बुर्ज पर जिसे घर ७ दिया गया है, चौकोर वाकया है। इसलिए १/७ के असर के लिए मंगल का असर नेक होगा।

वैसे तो मंगल के जोर से राहु चुप रहेगा, मगर मंगल से दूर बैठा होने की वजह से जरूर बुरा असर ही अंदरूनी तौर पर करता जाएगा। मंगल के असर का तमाम अरसा; यानी २७ साल तक औरत की नजर व औरत के सुख पर जरूर असर करेगा।

मंगल के असर के अरसा के बाद १४ साल तक राहु व मंगल दोनों इकट्ठे असर करने लगें। राहु के असर की मियाद ४२ साल होती है और मंगल की कुल मियाद २८ साल है, इसलिए एक ही वक्त में मुश्तरका (संयुक्त) घर ७ और सूर्य का घर १ पर अकेले राहु का असर होगा। मगर वो तीनों ही इकट्ठे उठकर घर १२ में बैठे हुए हैं; यानि राहु जुदा एक तरफ शुक्र के घर मेहमान बैठा है और शुक्र अपने दोस्त बुध को साथ लेकर सूर्य के हमराज राहु के घर चला गया है, इसलिए न राहु शुक्र का नुकसान कर सकता है सिर्फ एक-दूसरे घरों की इमारत खराब कर सकते हैं, घर २ में ऊंचा होता है।



सूर्य और बुध बाहम दोस्त हैं, मगर सूर्य व शुक्र बाहम दुश्मन हैं और दूर बैठा हुआ चंद्र शुक्र और बुध दोनों से दुश्मनी करने वाला है। इस तरह पर सूर्य व चंद्र तो शुक्र का फल खराब कर लेंगे और बुध का फल चंद्र से खराब होगा।

मगर चंद्र, सूर्य का फल अच्छा होगा। सूर्य के साथ बैठा हुआ बुध अपने असर का निस्फ (तमाम) अरसा का फल अच्छा होगा; यानि वो १७ साल तक चुप रहता है और बाद में १७ साल अकेला नेक फल देता है।

१०वें घर में शनि और बृहस्पति इकट्ठे हैं। इस हालत में दोनों का अपना-अपना, पर शनि का फल खराब होगा। बृहस्पति भी दुश्मन या पापी ग्रह के साथ-साथ अपना निस्फ अरसा; यानि ८ साल जरूर नेक फल देगा। इन ग्रहों का ताल्लुक पिता से है। ३ में केतु मंगल के घर पड़ा है, जो मंगल का दुश्मन है, लेकिन मंगल अपने घर से उठकर सूर्य के खाना (घर) १ में चला गया है। मंगल के साथ सूर्य हो तो मंगल का फल हमेशा मंगल नेक का होगा और तब सूर्य के साथ मंगल भी ऊंचा होता है।

बुध

१. जिस जातक की जन्मकुंडली में बुध ऊंचा होता है, वो प्रत्येक व्यक्ति को अपना साथी बना लेने वाला, डरपोक, बहरूपिया, गप्पी, कबूतर जैसी आंखों वाला और डरपोक होता है।
२. दो दुश्मन ग्रहों की शक्ति को अपनी नाली से बदलने की ताकत का मालिक होता है और दो दुश्मनों के बीच रहकर भी अच्छा काम करना बुध का ही काम है। शनि में भी यह खासियत है कि वो बुराई की ओर ही झुकता है और हमेशा बुरा ही ज्यादा रहता है।
३. सूर्य के लिए मंगल बद से बचाव के लिए बुध की मदद जरूरी है। अगर बुध मंदा होगा तो वो मदद नहीं करेगा। बुध की मदद लेने से पहले शुक्र को ठीक करना लाजिमी है।
४. बुध बेपैंदे के लोटे के समान होता है, क्योंकि ऊंचे ग्रहों के साथ मिलकर वो उनकी ताकत को बढ़ा देता है और कमजोर ग्रहों से मिलकर उन्हें पहले से भी ज्यादा कमजोर कर देता है।
५. ३२ से ३४ साला उम्र तक यह बहुत असरकारी साबित होता है। वृष, सिंह, कन्या, तुला और मिथुन में शुभ और कर्क में अशुभ होता है।
६. बृहस्पति, शुक्र और चंद्र के साथ बैठा बुध अच्छा फल देता है।
७. अकेला बुध निरपक्ष, निर्लेप होता है।
८. २, ४ या ६ठे घर में बैठा बुध राजयोगकारक होता है और ३ से ८वें घर

तक बैठा सूर्य को मदद देता रहता है। ९ से १२वें घर तक बैठा शनि को प्रबल करता है। ७वें घर में बैठा पारस मणि की तरह का होता है और जो भी ग्रह साथ हो, उसे तार देता है।

९. वर्षफल के मुताबिक जब यह ९वें घर में आता है, तब अपनी अच्छाई या बुराई का भेद खोलता है।

१०. दो दुश्मन ग्रहों की ताकत को अपनी अक्ल से बदलने और उनके बीच रहकर अपना काम निकाल ले जाना बुध की अक्लमंदी है।

११. पीपल या बड का पेड़ अगर घर के साथ हो तो बृहस्पति या चंद्र की श.त्रुता बुध से रहती है।

१२. ३रे घर का कन्या का बुध जब ५वें घर में बैठ जाए तो जातक का भाई नहीं होता तथा जातक की एक बांह भी कमजोर होती है।

१३. ७ वें घर में बुध, शुक्र इकट्ठे हों तो उनका फल अच्छा नहीं होता है, क्योंकि यह उनका पक्का घर है। लेकिन जब अलग-अलग हों, आपस में १/७वें में हों तो दोनों का फल नीच हो जाता है।

१४. जब शुक्र को बुध की मदद नहीं मिलेगी तो शुक्र पागल हो जाएगा। ऐसे में उपाय करके शुक्र से बुध को मिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

१५. बुध ग्रह, सूर्य के साथ पारा, चंद्र के साथ दही, शुक्र के साथ पानी, बृहस्पति के साथ दोस्त, मंगल के साथ शेर का दांत, राहु के साथ हाथी की सूंड, केतु के साथ कुत्ते की पूंछ और शनि के साथ कली जैसा संबंध रखता है।

१६. सूर्य और मंगल के सामने या साथ बैठे बुध का असर खत्म हो जाता है।

१७. ९/१०/११वें घर में बुध हमेशा मंदा नहीं रहता, सिर्फ अपनी उम्र १७/३४वें साल में ही मंदा होता है।

१८. अकेले घर में शनि बुध के इशारे पर चलने वाला होगा। बुध अकेला इस घर में होगा तो ३४वें साल से आगे ११ साल तक इज्जत और शौहरत दोनों देगा।

१९. सूर्य और बुध आमने-सामने होने पर मंगल का असर मामूली होगा और कुंडली का ७वां घर खाली होगा तो असर सिफ़र होगा।

२०. अकेला बुध २ में हो और ८ में उसका शत्रु ग्रह हो तो बुध का असर नीच होगा और अगर ८ में कोई ग्रह न हो तो बुध राजयोगकारक होगा। २ में बुध के वक्त बृहस्पति का असर ऊंचा होता है, मगर बुध उसे राख बना देता है।

२१. बुध २ के वक्त बृहस्पति ६/७ में हो तो जातक को बाप का सुख कम मिलता है और जैसे ही जातक १९ साल का होता है, बाप का साया उसके सिर से उठ जाता है।

२२. दूसरे घर में बैठा बुध नीच होता है। ९ का असर नीच कर देता है और ११ को भी ठीक नहीं रहने देता; यानि ९/११ पर नजर की वजह से बृहस्पति का असर डालता है।
२३. बुध ३ के वक्त सूर्य ११ में हो तो खामोश रहता है।
२४. जन्मकुंडली का तीसरा घर मंगल का पक्का घर है। मंगल बद हो तो यहां बहुत ज्यादा नीच असर डालता है।
२५. बुध ४, सूर्य ३/५/११, बृहस्पति ९वें में राजयोगकारक। इस घर में बुध मां के लिए भारी होता है।
२६. अगर ३/४/६ में चंद्र हो तो ऊंचा और जब चन्द्र २ में हो तो और भी ऊंचा होता है।
२७. चन्द्र या पुरुष ग्रह ३/५/९/११वें में हो तो अच्छा फल देता है; किन्तु शुक्र जातक के जैसे बैठे हों, तो बुध भी वैसा ही फल देता है। इसके अलावा अगर बृहस्पति और चंद्र नीच हो रहे हों तो बुध का अपना असर भी जहर की तरह हो जाता है।
२८. जो असर २ में शुक्र का होता है, वो ही असर ६ में बुध का होता है, जबकि मंगल और चंद्र अशुभ न हों।
२९. बुध ६ के वक्त कुंडली में अच्छा ग्रह अपना दुगना अच्छा असर देगा।
३०. मंदा बुध ७ में मंगल और शुक्र का असर नीच कर देता है।
३१. बुध ८ के वक्त अगर उसके साथ सूर्य, मंगल, बृहस्पति कोई भी बैठा हो या मंगल १२ हो तो बुध ७ का नीच असर नहीं होता। यहां बैठा बुध आमतौर पर गुप्त विद्याओं का ज्ञान करवा देता है।
३२. सूर्य-चंद्र ४ में या ४ वैसे ही श्रेष्ठ हो तो ३४ साला उम्र के बाद बुध के ज़हर का असर खत्म हो जाएगा। केतु (औलाद) और माता (चंद्र) का असर भी ठीक होगा।
३३. बुध ८ के समय अगर चंद्र २ में हो तो माता, केतु २ में हो तो औलाद पर भारी होगा और अगर बुध ८ के वक्त शनि २ में हो, वर्षफल के लग्न में सूर्य बैठा हो तो सूर्य के उपाय से लाभ होगा।
३४. १/३/६/७/९/११वें में चंद्र, केतु, बृहस्पति बैठे हों तो ९ का बुध कोई भी नीच असर नहीं डालता। अगर अकेला बृहस्पति ६/८/१०/११ में हो तो जातक अल्पायु होता है।
३५. बुध १०वें में हो और ३रा घर खाली पड़ा हो तो जातक के लिए समुद्री सफर फायदेमंद साबित होगा और जब २ खाली हो तो बहुत अच्छा फल प्राप्त होगा।

३६. बुध १२ के समक्ष ६ठे घर में बैठे सभी ग्रह चाहे सूर्य व शनि के साथ हों नष्ट हो होंगे।

मंदे बुध के लक्षण

- गंध का पता न चले।
- मुंह के सामने के दांत झड़ जाएं।
- माता और घर के आदमियों पर तकलीफ हो।
- उत्तर का दरवाजा बुरा असर डाल रहा होगा।
- नजर कमजोर हो जाए।
- शादी में गड़बड़ हो।
- राजदरबार से अचानक धोखा मिले।
- आमदनी आधी रह जाए।
- बहन, बुआ, मौसी, साली या खुद की लड़की दु:खिया रहे।
- मकान की सीढ़ी से गिरकर चोट लगे।
- बीमारी पल्ले पड़े।
- हरा रंग बुरा असर देगा।
- जुबान का स्वाद खराब हो जाए।
- दौलत पास में रहने पर भी दु:खी रहे।
- हवाई काम, सट्टे का व्यापार नीचा हो। शेयर आदि में घाटा हो।
- दौलत बर्बाद हो।
- ससुराल में मंदा असर।
- औलाद के मामले में फिक्र हो।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे बुध के हैं। बुध को उच्च एवं अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होते हैं–

- कांसे के किसी बर्तन में देशी घी, कपूर और शक्कर डालकर चलते पानी में बहाएं तथा बर्तन को अच्छी तरह से धोकर घर ले आएं।
- सूराख वाला तांबे का पैसा नदी में डाले।
- नाक का छेदन कराएं।
- रोज फिटकरी से दांत साफ करें।
- छोटी लड़कियों को पूजें।
- राहु-केतु का उपाय फायदेमंद साबित होगा।
- बुध, शनि और केतु के लिए सिर्फ राहु का उपाय करें।
- शुक्र और राहु के लिए केतु का उपाय करें।

- बुध ३/९ के लिए लोहे की गोली की मदद लें।
- चंद्र, सूर्य और बृहस्पति के लिए मंगल नेक का उपाय करें।
- मंगल के लिए बृहस्पति का उपाय करें।
- बुध जिस घर में बैठा हो या जिस राशि में बैठा हो, उस घर या राशि का ग्रह ९वें घर में हो तो शादी और गृहस्थ में बुध का असर नीच हो जाता है। इस मौके पर राहु-केतु का उपाय करना चाहिए।
- बुध के लिए लाल रंग को छोड़कर किसी भी रंग का कुत्ता पालना अच्छा (शुभ) रहेगा।
- बुध जिस घर के ग्रह में या जिस ग्रह में भी मिल रहा हो तो उन दोनों ग्रहों का उपाय करना चाहिए। मिसाल के तौर पर अगर बुध ३/९ हो तो बुध की गोली (लोहे की) लाल करके अपने पास में रखें। अगर बुध अच्छे स्वभाव वाला हो तो लोहे की जगह कांच की गोली रखें, जिसका रंग बुध के स्वभाव वाले रंग का हो।
- हरे रंग से परहेज रखें।
- साली का साथ न दें, साथ देना बर्बादी की निशानी होगा।
- नाकछेदन फायदेमंद होगा, उसमें ९६ दिन तक चांदी का छल्ला पड़ा रहे।
- घर में सूत के गोले पड़े हों, तो उन्हें खोल दें।
- बीमारी की हालत में ९/११ घरों के रंग का पत्थर जमीन में गाड़ें।
- मकान के पूरब वाले दरवाजे में सूर्य की लाल चीजें लगाना अच्छा रहेगा।
- जिस घर में जातक रह रहा हो, उसकी पश्चिम दीवार में, माणिक, गुड़, लाल कपड़े में बांधकर, आला बनाकर रखना लाभकारी होगा।
- बुध के दिन बकरी का दान करें।
- जितनी आयु हो, उतने ढाक के पत्ते कच्चे दूध में धोकर जमीन में दबाएं। दूध का बर्तन और जमीन खोदने के औजार वहीं पर छोड़ दें।
- रात को साबूत मूंग पानी में भिगोकर ४३ दिन तक रोज़ सुबह पक्षियों को डालें। इससे कारोबार ठीक चलने लगेगा।
- औलाद की तकलीफ को दूर करने के लिए घर में कुत्ता पालें।
- साबुत मूंग खाना छोड़ दें वरना बीमारियां घर घेरे रहेंगी।
- पीले रंग की कोड़ियों को जलाकर, राख करके दरिया या नदी में बहाएं। यह उपाय बुध के जहर को कम कर देगा।
- मन की शांति के लिए गले में चांदी की जंजीर डालें। दौलत और जायदाद के लिए सोने की जंजीर पहनें।
- ४३ दिन तक रोज केसर का तिलक करें और केसर खाएं।

- नीच बुध के लिए ४०० ग्राम गुड़ ७ इतवार (रविवार) को दरिया में डालें।
- तांबे का पैसा गले में डालना खजाने में बढ़ोत्तरी करेगा।
- जब केतु, चंद्र मंदे हों तो चांदी की अंगूठी दाएं हाथ की उंगली में पहनें। शुक्र मंदा हो तो बारिश का पानी कांच की बोतल में डालकर, कांच के बर्तन से बंद करके खेती की जमीन में गहरा दबाएं।
- मकान में उत्तर का दरवाजा बुरा असर देगा।
- किसी भी काम से जाते समय फूल अपने साथ ले जाएं।
- बुध अशुभ हो तो, और शुक्र भी मंदा हो तो मिट्टी का बर्तन दूध से भरकर, ढंककर वीराने में दबा आएं। अगर चंद्र भी मंदा हो तो शीशे के बर्तन में गंगाजल भरकर, ढक्कन से बंद करके खेती की जगोन में दबाएं।
- काले रंग की मोंडी गाय की सेवा में मदद मिलेगी।
- ससुराल में खराबी हो तो अपने घर की सीढ़ियां तुड़वाकर नई बनवा लें, कुछ दिनों बाद मकान भी नया बन जाएगा।
- पीला कपड़ा ४३ दिन तक नदी में धोएं।
- बारिश की खुंभ (मशरूम) मिट्टी के बर्तन में रखकर मंदिर में रख आएं।
- घर में पूजा का स्थान बदल दें।
- बारिश का पानी या दूध मकान की छत पर रखें, लड़की की नाक में चांदी का छल्ला डाल दें, मगर लड़की को लाल रंग का कपड़ा या शीशा मत दिखाएं।
- जब भी वर्षफल में बुध ८ आ जाए तो जन्मदिन आरम्भ होने से ३४ दिन पहले मिट्टी के बर्तन में देशी खांड भरकर, मिट्टी के ढक्कन से बंद करके श्मशान या वीराने में दबाएं। दूसरे बुधवार को गड़वी में साबुत मूग भरकर तांबे के ढक्कन को टांके से बंद करके चलते पानी में बहाएं। इससे हर तरह की बीमारी से बचाव होगा।
- मावे के ३४ पेड़े जिनमें खांड न मिली हो कुत्तों को दें या दरिया में बहाएं। अथवा चावल व चने की दाल बहते पानी में बहाएं।

उपाय—बुध ग्रह का अरसा ३४ साल होता है। यह अपने साथी शुक्र जिसकी मियाद २५ साल है और सूर्य जिसकी मियाद (अवधि) २२ साल है। दोनों की मदद करेगा। मगर चंद्र की २५वीं सदी नजर चंद्र की मियाद २४ साल तक ग्रह के अपने असर के लिए बुरी ही होगी। वो चंद्र से दुश्मनी नहीं करेगा।

शनि

१. वृष, तुला, मिथुन, मकर और कुम्भ में शनि शुभ माना जाता है तथा कर्क, सिंह और वृश्चिक में अशुभ माना गया है। अशुभ शनि हमेशा नुकसान

करता है और शुभ शनि वारे-न्यारे कर देता है। इसका जातक बहुत अक्लमंद होता है।

२. शनि का अच्छा असर जातक की उम्र के ३६वें साल से शुरू होगा।

३. पैदाईश का मंदा (नीच) शनि वर्षफल में भी मंदे घरों में आ जाए तो ९/१८/२७ व ३६वें वर्षों में बहुत नुकसान करता है।

४. शनि से शुक्र मिले तो जातक का मकान बने, मगर उसकी औरत मकान बनाने पर असहमत ही रहेगी।

५. शनि अकेला या चंद्र के साथ जब कुंडली के १२वें घर में होता है तो बड़ा ज़हरभरा असर डालता है। दूसरे घर में शनि के अगर दोस्त ग्रह हों, शुक्र-मंगल कायम हों तो बीमार को भी तन्दुरुस्त कर देता है।

६. जब शनि आठवें घर कर मालिक ग्रह बन रहा हो तो जिस घर में भी वो बैठेगा, उस घर को नुकसान पहुंचाएगा।

७. बृहस्पति के घरों २/९/१२वें में शनि कभी मंदा असर नहीं करता, किन्तु मंगल के घरों ३/८ में मंगली हो जाता है। ४ में चंद्र का नुकसान करता है, जबकि ८ में दुर्घटना करा देता है।

८. ९वें घर में शनि बहुत अच्छा साबित होता है, बशर्ते कि २ में उसके दुश्मन ग्रह हों।

९. शनि पर सूर्य की नज़र पड़े तो शुक्र का नुकसान होता है।

१०. शनि पर अगर शुक्र की नजर हो तो दौलत का नुकसान, लेकिन शुक्र पर शनि की नजर से फायदा होता है।

११. मंगल और बुध मिलते हों तो मनसूई ताकत (राहु मिजाज) नीच, बृहस्पति और शुक्र मिलते हों तो मनसूई ताकत (केतु मिजाज) उच्च होती है।

१२. राहु पहले घरों में, मध्य में शनि और बाद के घरों में केतु तो शनि का असर बुरा होता है।

१३. शनि-चंद्र का टकराव होने पर जातक अपनी आंखों के मामले में परेशान होता है। उसे अपनी आंखों का ऑपरेशन तक कराना पड़ सकता है।

१४. अगर सूर्य से पहले घरों में शनि बैठा हो तो अच्छा फल देता है।

१५. शनि जब दृष्टि से शुक्र से मिले तो दौलत का नुकसान और औरत को तकलीफ हो।

१६. जब शनि ५वें घर में हो और मंगल बद हो तो चंद्र पर बुरा असर डालता है।

१७. शनि घर १ में तीन गुणा मंदा और ३ में दो गुणा मंदा होता है। ६ में भी मंदा, ४ में सांप पानी का और ५ में बच्चे को खाने वाला सांप, २ में उस्ताद

का चेला, ८ में बर्बाद, ७/९/१२ में अच्छा, १० में खाली कागज तथा ११वें में नसीब की हिफाजत करने वाला होता है।

१८. शनि के साथ अगर राहु-केतु का नाता हो जाए तो शनि पापी हो जाता है। अगर शनि से पहले घरों में केतु हो तो शनि इच्छाधारी सांप होता है, किन्तु इसके विपरीत फल देने वाला होता है।

१९. इश्कबाजी करना, शराब पीना, झूठ बोलना और जुआ, सट्टा खेलना शनि को मंदा करने वाले कुफल हैं। ऐसे जातक का शनि चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न हो, कभी भी अच्छा फल देने वाला नहीं होगा। इसकी वजह यह है कि जातक अपने गंदे और गलत कामों से खुद शनि को मंदा और नीच कर लेता है।

२०. अगर कुंडली में मंगल और बुध इकट्ठे हों या दृष्टि से मिल रहे हों तो राहु-स्वभाव होने की वजह से जातक की औलाद को तकलीफ का नाश करेंगे।

२१. सूर्य या बृहस्पति, इनमें किसी के साथ बैठा शनि कभी नीच असर नहीं डाल सकता। वो इनसे दबकर रहेगा, किन्तु इसके विपरीत अगर चंद्र, मंगल में से किसी एक के साथ बैठा हो तो मंदा असर डालेगा।

२२. पहले घर में बैठा सूर्य मंगल को, ३ में बैठा सिर्फ मंगल को, ४ में बैठा चंद्र को, ५ में बैठा मंगल को चोट पहुंचाता है।

२३. बृहस्पति के घर बैठा शनि अच्छा असर देता है, २/९/१२ शनि कभी मंदा असर नहीं करता; किन्तु शनि के घर बैठा बृहस्पति १०वें घर में नीच हो जाता है। इसी तरह शनि के घर १० में बैठा मंगल उच्च का हो जाता है, जबकि मंगल के घर ३ में बैठा नीच शनि जहां जातक के लिए दौलत का नुकसान करता है। इसी तरह सूर्य के घर ५ (अपने घर) शनि के घर ११ में सूर्य उच्च फल देने वाला होता है। शुक्र के घर ७ में शनि उच्च का माना गया है। वही राहु के पक्के घर १२ में शनि भला होता है।

२४. १०वां घर खाली हो और ५ में शनि हो तो वह यकीनन औलाद का नाश करता है; किन्तु अगर १० में बृहस्पति का केतु हो तो औलाद जरूर जिंदा रहेगी। वो ७ में अच्छा तभी होगा, जब १ में कोई ग्रह जरूर हो।

२५. शनि १ के वक्त अगर ७/१० खाली हों तो फल अच्छा, शनि १ के वक्त अगर ७/१०/११वें में सूर्य हो तो औरत तकलीफ में होगी। शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्र हों तो, या राहु हो तो उन ग्रहों की चीज रिश्तेदार नीच असर डालेंगे।

२६. शनि और मंगल के योग से हर वक्त नीच असर रहता है।

२७. अगर शनि १ के वक्त मंगल बद हो तो चोरी या धोखा होगा और औलाद भी मुसीबत झेलेगी।

२८. राहु-केतु मंदे हों, मंगल ७वें में हो तो बुरा साबित होता है। औरत दुःखी रहती है और मां भी दुःख ही भोगती है। ऐसे वक्त में बुध बुरा, मंदा हो तो कारोबार खराब होता है या खत्म हो जाता है।

२९. जन्मकुंडली के दूसरे घर में ६/८/१२ का साफ असर रहता है। बाप की दौलत की कमी, औलाद बेवकूफ, ससुराल के लिए मंदा अथवा शादी के वक्त ससुराल में आग लग जाए; किन्तु अगर शनि २ के वक्त चंद्र अच्छी हालत में है, तो इसके नतीजे अच्छे ही होंगे और शनि ११ में हो तो जातक इज्जत और शौहरत वाला होगा।

३०. अगर ५/९/१०/११ में कोई ग्रह हो तो जातक उदासीन रहता है। बृहस्पति ४ में हो तो वह तेज अक्ल वाला, बृहस्पति १० में हो तो जातक जलन करने वाला, कंजूस होता है और अगर बृहस्पति ११ (घर) में हो तो जातक कच्चे ख्यालातों का, मुर्दा दिल व टूटे हौसले वाला होता है। जब मंगल बद यानि सूर्य, शनि या शुक्र, बुध इकट्ठे हों तो २८ से २९ साल की उम्र तक बीमारी गले पड़ी रहती है। इसी तरह शनि २ और राहु ८ में हो तो शनि उससे दुश्मनी करेगा और सूर्य १२ में हो तो जातक जुआरी होगा और ससुराल के लिए मंदा होगा।

३१. दूसरे घर में बैठा शनि सिर्फ शनि (अपनी) की चीजों पर ही असरकारी होगा।

३२. दौलत के बारे में ७ से, उम्र का ८ से और मकानों की हालत का पता २ से लगेगा।

३३. शनि २ के वक्त अगर बृहस्पति ४ में हो तो जातक ईश्वर का भक्त होता है।

३४. जब शुक्र ७/१२ में हो और सूर्य-चंद्र ५/९/१० में हो या मंगल १० में हो तो औलाद को नुकसान नहीं पहुंचता, मगर औलाद अच्छी भी नहीं होगी और घर का सोना लोहे के भाव में बेचने वाली साबित होगी।

३५. सूर्य-चंद्र-मंगल जब वर्षफल के अनुसार ७वें घर में आते हैं तो जातक को दुःख आते हैं। उसको तकलीफ देते हैं और उसकी सेहत खराब करते हैं।

३६. ६ठे घर में शनि २ को भी देखता है। अगर २ में शनि का दुश्मन ग्रह बैठा हो और राहु ८ में हो तो बहुत नुकसान करेगा।

३७. सूर्य-चंद्र-मंगल की युति हो और बुध-शुक्र या राहु ४ में हो तो जातक की मौत दुर्घटना में होगी। घर में खुशहाली नहीं, बल्कि तंगी होगी। खाना खाने या बनाने को भी कुछ नहीं होगा।

३८. शुक्र या चंद्र २ में और राहु ८ में हो तो जातक की मां और औरत दोनों तकलीफ में होंगी।

३९. शनि ७ के वक्त अगर बुध ११ में हो और मंगल-शुक्र-शनि इकट्ठे या साथी

हो रहे हों तो जातक गांव का मालिक, दौलतमंद होगा। औलाद की तरफ से खुशहाल व लम्बी उम्र वाला होगा।

४०. वर्षफल के मुताबिक जब शनि ५/७ में आ जाए और सूर्य-मंगल का साथ हो तो जातक की सेहत खराब रहेगी।

४१. चंद्र-मंगल-शुक्र मंदे हों तो जातक दुःखों का पुतला होता है।

४२. वर्षफल के मुताबिक जब शनि ५ या ७ में और मंगल ७ और सूर्य या चंद्र ७में आ जाएं तो जातक की सेहत खराब रहेगी।

४३. अगर जातक दूसरों की दुआएं लेने वाला परोपकारी होगा तो शनि ९वें घर में उम्दा फल देगा। जातक का परिवार बड़ा होगा, मगर शर्त यह है कि कुंडली में बुध नीच न हो रहा हो; यानि बुध ३ में न हो। जब शनि पर चोट पड़ रही हो तो शुक्र का असर मंदा हो जाता है, नहीं तो शुक्र का असर १२ का होता है; यानि शुक्र ऊंचा हो जाता है। मतलब यह कि वर्षफल के मुताबिक जब शुक्र २ में आता है तो शनि ९ गुणा फायदा करता है।

४४. जिसके ९वें घर में शनि हो, उसके औलाद देर से होगी और जिंदा भी रहेगी।

४५. जब सूर्य या मंगल १०वें में हों और चंद्र ६ में आ जाए तो ११वें घर का शनि अच्छा फल देता है।

मंदे शनि के लक्षण

- शराब पीना, जुआ खेलना, इश्कबाजी करना या जरूरत से ज्यादा झूठ बोलना मंदे शनि के लक्षण हैं।
- बदन पर बनमानुष की तरह बहुत ज्यादा बाल हों।
- यकायक घर गिर जाए।
- दूध देता पशु मर जाए।
- आग लगे। जूते खो जाएं, खांसी हो, कान में बीमारी हो या आंख की रोशनी कम हो जाए।
- मांसादि खाने की इच्छा बहुत ज्यादा होने लगे।
- इश्कबाजी करने को मन उतावला हो।
- जातक फकीर या दरवेश बन जाए।
- आलस्य, दरिद्रता, बीमारी पीछा न छोड़ें, औरत तकलीफ में रहे।
- जद्दी जयादाद का खात्मा हो।
- छोटा भाई दुश्मन बन जाए।
- कारोबार या नौकरी में अचानक बाधाएं खड़ी हो जाएं।
- २८वें साल से पहले शादी हो जाए।

- बच्चे के लिए चमड़े के जूते या अपने लिए लोहे की कोई वस्तु खरीदना।
- परिवार में किसी की सिर कटने से मौत हो।
- औरत और बेटे के दोस्तों से दुःख मिले।
- सेहत खराब रहे।
- नपुंसकता जारी हो जाए, बिना वजह की।
- दौलत और जायदाद का नुकसान हो।
- शादीशुदा जिंदगी परेशानी का सबब बने।
- नशा करने की लत पड़े।
- बुढ़ापा गरीबी में कटे।
- मकान की अंधेरी कोठरी में सूर्य की रोशनी पहुंचाने के लिए रोशनदान खोल दिया गया हो।
- दौलत और जायदाद होते हुए भी जीवन दुःखी।
- माथे या पांवों पर जरूरत से ज्यादा बाल हों।
- घर में मां के या खुद अपनी औरत के पेट में बच्चा हो और मकान बनाना शुरू कर दें।
- मकान की छत पर बांस या चौखट रखी हो।
- दाढ़ी-मूंछों के बाल कम हो जाएं। दाढ़ी-मूंछों के बाल बिल्कुल भी न हों।
- फरेब से धन कमाए।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे शनि के हैं। शनि को अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होते हैं–

- दक्षिण दरवाजे वाला मकान बदल दें।
- शनि के दिन, उड़द व तिल का लड्डू बनाकर जहां हल न चला हो, उस जमीन में दबाएं।
- कीकर की दातुन किया करें।
- उड़द, बादाम, नारियल दरिया में बहाएं।
- तिल के तेल का छाया-पात्र दान करें।
- लोहे का तवा, चिमटा, अंगीठी का दान किसी साधु को करें।
- दौलत और जायदाद के लिए ४३ दिन रोज कौओं को रोटी डालें।
- काले कपडे में बांधकर उड़द, साबुन और लोहे का दान करें।
- मंदे शनि के वक्त शनि की चीजें (काले उड़द, तेल, बादाम, लोहा, काला कपड़ा) दान करें।
- दौलत के लिए बंदरों को पालें।
- सेहत के लिए बड़ के पेड़ में दूध डालकर गीली मिट्टी का तिलक लगाएं।

- कारोबार क लिए काला सुरमा जमीन में दबाएं।
- माथे पर तेल लगाना शनि को मंदा करेगा, इसलिए माथे पर सिर्फ दूध का तिलक लगाएं।
- शनि २ के वक्त अगर बुध १२ हो और जातक के कन्या पैदा हो तो उसे पालने के लिए ससुराल में दें, खुद पालन करना बर्बादी की निशानी होगी।
- काली या भूरी भैंस न पालें।
- ४३ दिन लगातार नंगे पैर मंदिर में जाकर पूजा-पाठ करें।
- ससुराल के फायदे के लिए सांप को दूध पिलाएं।
- दक्षिण या पूर्व दरवाजे वाले मकान का त्याग कर दें।
- काले-सफेद तीन कुत्ते पालने से दौलत में इजाफा होता जाएगा।
- घर की अंधेरी कोठरी दौलत-जायदाद के लिए अच्छी होगी। उसमें शनि की चीजें स्थापित करें।
- घर की देहलीज को लोहे की कीलों से कील लें।
- पराई औरत के साथ कबूतरबाजी करना या पराई औरत पर अपनी कमाई लुटाना खुद को कंगाल करना होगा।
- सांप को दूध पिलाएं, कौओं या भैंस को चंद्र की चीज (चावल या दूध) दें या कुएं में दूध-चावल गिराएं।
- अपने जद्दी घर में तांबा, चांदी, सोना एक जगह पर कायम करें।
- रात को घर में दूध से आग बुझाएं।
- अपने वजन का दसवां हिस्सा मंदिर में बादाम चढ़ाकर आधे वापस लाकर एक साल तक घर में रखें। साल खत्म हो जाने बाद उन्हें नदी में बहा दें।
- जद्दी मकान की अंधेरी कोठरी में मूंग या हथियार रखें। दूध, गुड़, सौंफ को घर में जलाएं।
- बीमारी के वक्त तेलभरा बर्तन खड़े पानी में दबाएं, लेकिन दबाने से पहले तेल में अपना मुंह जरूर देख लें।
- कारोबार के लिए बुध का उपाय करें।
- संतान के लिए कुत्ता पालें।
- अपनी कारोबारी योजना रात के वक्त बनाएं या कृष्णपक्ष में बनाएं तो बहुत ज्यादा फायदा होगा।
- घर में शहद से भरा बर्तन रखने से दौलत खत्म नहीं होगी।
- जब शनि सोया हो या दुश्मन का डर हाजिर हो तो बांसुरी में खांड भरकर, बाहर वीराने में जा दबाएं।
- काली गाय की सेवा करें।

- चांदी का एक चौकोर टुकड़ा अपने पास रखें।
- बर्बादी को रोकने के लिए नशे से बचें।
- नहाते वक्त पानी में दूध डाल लें तथा पत्थर या लकड़ी के पटरे पर बैठकर नहाएं। ध्यान रहे, पत्थर या लकड़ी का पटरा पैरों के नीचे रहे।
- जातक जितना दूसरों का आदर, मान करेगा उतना ही आप उन्नति करेगा।
- किसी भी काम से घर से बाहर जाएं तो पानी का घड़ा सामने रखें और तेल या शराब ४३ दिन तक रोज जमीन पर गिराएं।
- बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।
- शराब और पराई औरत से दूर रहना बहुत जरूरी।
- किसी को धोखा मत दें, घर में औरत से झूठ न बोलें।
- जब शनि का नीच (मंदा) असर हो रहा हो तो शनि का उपाय करें या कराएं।

विशेष–जातक तब तक शराब न पिए, शनि की बरकत बढ़ती रहेगी और उसका भेद किसी को जाहिर न होगा। अगर ४८ साल की उम्र तक नया मकान न बनाए तो शनि मकान की कीमत व सामान के बराबर धन-दौलत देता जाए, लेकिन जब ही मकान बन जाए तो शनि अपनी मदद का बिस्तर-बोरिया उठाकर ले जाएं। वो उस दिन से आगे और ज्यादा नफा न देगा, मगर बुरा असर भी न देगा। मुराद सिर्फ यह है कि उस दिन के बाद शनि मकान बनाने के लिए दौलत घर में जमा न होने देगा।

राहु

१. गरीबों का मददगार और रहनुमा ग्रह है, यह जिसकी मदद पर आ जाता है, आखिरी वक्त तक उसकी मदद करता है। शनि के साथ सर्पमणि जैसा असरकारी बन जाता है। जन्मकुंडली में यह शनि से पहले घर में बैठा हो तो जातक को उच्च प्रशासक या राजा तक बना देता है। अगर शनि के बाहर के घरों में हो तो शनि की इजाजत के मुताबिक चलने वाला होता है। अगर राहु की नजर शनि पर पड़े राहु खुद ही मंदा हो जाता है और फिर शनि को कोई मदद नहीं पहुंचाता।

२. नीच या मंदे राहु के वक्त दक्षिण दरवाजे वाला मकान माली हालत खराब कर देता है।

३. वर्षफल में मंगल के पहले घर में आने पर राहु चुप (शांत) रहेगा।

४. राहु जिस घर में बैठा हो, उस घर की चीजों तो बढ़ोत्तरी में रुकावट पैदा करेगा।

५. बृहस्पति के साथ या बृहस्पति के घरों २/५/९/१२ में राहु हो तो बृहस्पति का सत्यानाश कर देता है।

६. अगर राहु ऊंचा चल रहा हो तो जातक के चाहे जितनी चोट आए, फूंक मारकर ठीक कर देने वाला होगा।
७. जन्मकुंडली में मंगल नेक और शनि दोनों इकट्ठे हों तो राहु का असर अच्छा होगा और अगर मंगल बद होगा तो जातक भविष्यवाणी करने में सक्षम होगा।
८. जब बुध-शुक्र ऊंची हालत में हो तो राहु का असर अच्छा होगा।
९. मंगल १२वें घर में हो तो राहु शांत हो जाता है। उसका अच्छा-बुरा कैसा भी असर नहीं होता।
१०. १/६ में बुध जैसा असरकारी होगा और ७/१२ में केतु जैसा असर करेगा।
११. बुध-केतु के मिलने पर राहु बहुत ज्यादा मंदा हो जाता है।
१२. शुक्र ७ और राहु १ में होगा तो जातक दौलतमंद होगा, किन्तु उसकी औरत हमेशा तकलीफ भोगेगी।
१३. चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना राहु का काम होगा।
१४. अगर शादी के बाद ससुराल से कोई बिजली का सामान या नीले रंग के कपड़े आएं तो जिस घर में सूर्य बैठा है, राहु उस घर को बहुत खराब कर देता है।
१५. सूर्य-राहु, चंद्र-राहु के वक्त जो खराबियां होंगी वो जातक की खुद पैदा की होंगी। उसे हमेशा बोलते रहने की आदत होगी।
१६. वर्षफल में जब शनि पहले घर में आए और बृहस्पति नेक हो तो दौलत हासिल होगी, वैसे गृहस्थ की गाड़ी आसान पटरी पर चलती रहेगी। ऐसे में शनि मंदा हो तो सब कुछ उल्टा हो जाएगा।
१७. राहु ३ में और १२ में साथ या साथी ग्रह केतु-बुध हों तो उम्र के ३४वें साल तक उन ग्रहों का फल मंदा होगा।
१८. जब कोई ग्रह १२वें घर में हो या साथ या साथी ३ में हो रहा हो (मंगल को छोड़कर) तब सूर्य-बुध की उम्र २२/३४ साला आयु में बहन या लड़की विधवा हो जाए।
१९. राहु ४ के समय अगर चंद्र ऊंचा १ में हो तो जातक को बहुत दौलतमंद बनाता है। वो चंद्र वाले घर से दौलत लेकर बुध वाले घरों को भरता होगा।
२०. जब राहु ४वें घर में हो या चंद्र के साथ ४ में हो तो घर में ही गंगा-स्नान का फल मिले।
२१. राहु ४ वाला जातक मकान मरम्मत में सिर्फ मकान की छतें ही न बदलें, बल्कि उसे पूरा बनवाएं, नहीं तो दौलत का नुकसान होगा।

नोट–अगर छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत का सामान नई छत में जरूर डाल दें, ताकि वो मरम्मत ही माना जाए।

२२. अगर शनि मंदा हो तो राहु जरूर बुरा ही करेगा, अगर मंगल १२ में हो तो मंदा असर नहीं होगा। २८वें साल में जब मंगल १/८ और शनि ६ में आ जाए तो जातक का नसीब जागेगा और दौलत में इजाफा होगा।

२३. जन्म ८ का राहु जब वर्षफल के अनुसार ८ में आए तो बहुत नुकसान पहुंचाता है। (जन्म के महीने से जब ८वां महीना शुरू हो तब से) मान लो किसी का जन्म जनवरी का है, तो बुरा असर अगस्त में होगा।

२४. राहु ८वें घर में हो और शनि २/३ में हो तो जातक की ८/११ साला उम्र में चाचा को बहुत नुकसान होगा, खासतौर पर उस वक्त जब चाचा शनि की चीजें या भैंस आदि खरीदे।

२५. राहु ८ के वक्त अगर शनि ६ में हो तो मौत का साया सिर पर मंडराने लगे।

२६. ४थे घर का ग्रह जब १ में आता है तो राहु को नीचा करता है। अदालती झगड़े कायम रहते हैं। औलाद तकलीफ में रहती है और जब १ खाली हो तो बुजुर्गों की सेहत मंदी रहती है।

२७. अगर शनि ५ में हो तो शनि के हुक्म के मुताबिक फल देगा, जिसकी वजह से औलाद पैदा न होगी।

२८. कुंडली का १०वां घर शनि का है, इसलिए शनि के इशारे पर राहु काम करेगा। अगर शनि अच्छा (उच्च) हो तो जातक बहादुर, दौलतमंद, कोई बड़ा कारोबारी होता है। अगर शनि मंदा हो तो सोने को जंग लगा दे, जातक जद्दी जायदाद को बेचकर खा जाए।

२९. जातक की कंजूसी दूसरे से दुश्मनी की वजह बनेगी। (मंगल, शुक्र, सूर्य), दुश्मन ग्रहों के साथ हो तो राहु १० की कुंडली आधी मानी जाएगी और उस वक्त मंगल ऊंचा हो तो राहु का असर नीचा नहीं होता।

३०. १/३ में राहु के साथी ग्रह हों तो राहु से, मंदे असर को बढ़ाते हैं। वर्षफल के मुताबिक जब ११ का राहु १ में आ जाए तो जातक का १६वां साल दादा के लिए बहुत तकलीफदेह साबित होगा। ११ में राहु के वक्त अगर मंगल बद हो तो पैदाईश से पहले घर में सब कुछ होता है, पर पैदाईश के बाद सब कुछ खत्म हो जाता है। पैदाईश के ११ या २१वें दिन अथवा ११ या २१वें साल पिता या दादा को गोली लगे, किसी दुर्घटना में मारे जाएं। अगर किसी वजह से बच जाएं तो निर्धन हो जाएं, बेकार के झंझटों में उलझ जाएं, दौलत पास में न रहे, चोरी चली जाए।

३१. ३ (घर) का ग्रह ५ पर बिजली की तरह असर करेगा। हालांकि राहु ११ वाले का बाप नहीं रहता, मगर बाप की उम्र (बृहस्पति की अवधि) १६ साल तक दौलत-जायदाद के लिए उच्च होगी।

३२. शनि ३/५ के वक्त अगर केतु–शनि राहु वर्षफल के मुताबिक १/३ में आ जाएं, तब जातक मां–बाप से कोई मदद न लेगा, बल्कि खुद कमाकर दौलतमंद बनेगा।

मंदे राहु के लक्षण

- मकान का दरवाजा दक्षिण में हो।
- राहु ९/१२/५/२ घरों में बृहस्पति के साथ बैठा हो।
- राहु मंदा चल रहा हो, ८वें घर में हो।
- कुंडली में शुक्र–सूर्य या सूर्य–शनि इकट्ठे हों। अगर पहले घरों में केतु और बाद के घरों में राहु हो।
- बड़ों से लड़ाई–झगड़े हों।
- औलाद तकलीफ में हो।
- मकान की सिर्फ छत बदली गई हो।
- देहलीज के नीचे से गंदे पानी का निकास हो।
- काला कुत्ता खो जाए।
- बेवजह बिल्ली का रोना जारी रहे।
- काले रंग वाले किसी रिश्तेदार के मरने की खबर मिले।
- यकायक नाखून झड़ने लगें।
- जातक धर्मविरुद्ध चलने लगे।
- ससुराल का अपमान करे।
- भाई–बंधुओं पर दुःख का पहाड़ टूट पड़े।
- बिना वजह का खर्चा हो।
- रात को सोने के कमरे में कोई–न–कोई झगड़ा खड़ा रहे।
- मंदिर में चोरी करे।
- अंतड़ियों का रोगी हो।
- दौलत मिल जाने पर भाई–बंधु मुकर जाएं।
- जमीन खोदकर भट्टी बनाएं।
- कच्चे कोयले की बोरियां इकट्ठी करें।
- गर्भपात हो जाए या किसी का गर्भपात करवा दें।
- किसी खास काम से जाते हुए कोई सामने से छींक दें।
- दौलत लुटती रहे, मगर वजह का पता न चले।
- तलाक की नौबत आ जाए।
- अच्छे घर का होते हुए भी जातक काफिरों जैसा काम करे।
- अचानक दौलत का भारी नुकसान, कोई गंभीर बीमारी या दुर्घटना हो।

- मुख्यद्वार से अंदर के कमरों का फर्श नीचा होता जाए।
- चलता कारोबार अचानक ठप्प हो जाए।
- दिल की बीमारी हो।
- पिता, दादा, ससुराल सब तबाह हो जाएं, भाई-बंधु तंग करते रहें।
- सिरदर्द बना रहे।
- घर की श्रेष्ठ आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही हो।
- अपने अधिकारी से बिना वजह नाराजगी हो जाए।
- गर्भ में आते ही, जन्म लेते ही बाप को नष्ट कर दे।
- बुरे व्यसनों पर बेकार का खर्च हो।
- रात को नींद न आए।
- काम शुरू करने से पहले छींक आ जाए।
- कहीं भी, किसी काम से सुख-चैन न मिले।
- हर वक्त कल्पनाएं करें।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे राहु के हैं। राहु को अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होते हैं—

- नीच (मंदे) राहु के वक्त चंद्र से मदद लें। (चांदी पहनें)।
- बीमारी के वक्त दली हुई मसूर की दाल में कुछ रुपया-पैसा रखकर तीन दिन मेहतर को दें।
- अपने वजन के बराबर जौ या कोई अनाज दरिया में बहाएं।
- किसी तरह के झगड़े खड़े हों तो अपने वजन के बराबर कीकर के कच्चे कोयले नदी के पानी में बहा दें।
- रात को जौ भिगोकर सिरहाने रखें और सुबह को जानवरों को डाल दें।
- गुड़, गेहूं, तांबे का दान मददगार होगा। इन तीनों में से एक या तांबे के पात्र में तीनों को भरकर इतवार के दिन दरिया के पानी में बहाएं।
- दौलत की कमी में, बीमारी में बिल्ली की जेर गंदुमी कपड़े में बांधकर घर में रखें।
- काले, नीले रंग के कपड़े मत पहनें।
- बहते पानी में नारियल बहाएं।
- चांदी की ठोस गोली हमेशा अपनी जेब में रखें।
- हाथी के पांव की मिट्टी कुएं में गिराएं।
- शादी के बाद ससुराल से बिजली का कोई भी खिलौना आदि नहीं; किन्तु जब सूर्य-बुध ३रे घर में हों तो हाथीदांत का इस्तेमाल न करें।

- चांदी पहनकर रखें।
- ४०० ग्राम धनिया या ४०० ग्राम बादाम पानी में बहाएं।
- औलाद के सुख के लिए घर की देहलीज के नीचे चांदी का पत्तरा रखना ठीक रहेगा।
- शराब, मांस, परस्त्रीगमन से दूर रहें।
- अपनी औरत के सिरहाने रात को पांच मूलियां रखकर सुबह मंदिर में दें।
- भूरा-काला कुत्ता पालना बहुत शुभ फल देगा और राहु के मंदे असर को दूर करेगा।
- शीशे की काली गोली या सिक्के की गोली पास में रखें।
- सरस्वतीजी की मूर्ति के आगे निरंतर ६ दिन नीले फूल चढ़ाएं।
- शादी के वक्त कन्यादान के साथ ही शुद्ध चांदी, कन्या का पिता अपने दामाद को दें। दामाद उस चांदी को अपनी औरत को दे। औरत उसे जीवन भर संभालकर रखे (वह लक्ष्मी है)। एक छोटी लुटिया में गंगाजल भरकर उसे घर में कायम करें।
- शादी २१ साल से पहले हो जाए तो लड़की का बाप चांदी की कटोरी में गंगाजल भरकर, चांदी का एक चौकोर टुकड़ा उसमें डालकर लड़की को दे और इसी तरह एक कटोरी अपने पास रखे। इसे पूजा की जगह रखकर रोज उसकी पूजा भी करे।
- अगर घर के पास कोई भट्टी हो तो उसमें तांबे का पैसा डाल दें।
- सिर को कभी नंगा न रखें। नीले, काले रंग को छोड़कर किसी भी रंग की पगड़ी बांधें या टोपी पहनें।
- मंगल का उपाय भी मददगार होगा।
- चांदी के गिलास में पानी पीना भी असरदार होगा।
- बृहस्पतिवार के दिन दाल चना, हल्दी कपड़े में बांधकर दान करें और उस दिन लहसुन, प्याज का सेवन न करें।
- रसोइघर में बैठकर खाना खाया करें।

नोट—उपरोक्त उपायों में से जिसे भी ठीक समझें या जिसे करने में सहूलियत महसूस हो, उसको करें। इससे राहु अनुकूल होकर फल देता है।

केतु

१. दुनियावी कारोबार को पूरा करने के लिए दौड़-धूप का वक्त ४२ साल उम्र तक का वक्त केतु का माना जाता है। केतु अच्छाई का देव, सफर का

मालिक और आखिरी वक्त तक मदद देने वाला साबित होता है। वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मकर और मीन राशियों में केतु हमेशा अच्छा फल ही देता है; किन्तु अशुभ केतु का फल कभी अच्छा नहीं होता। यह धनवान को भी निर्धन बना देता है। अगर मंगल, बुध, बृहस्पति १२वें घर में हों तो भी केतु का असर मंदा हो जाता है, उस वक्त जातक अपनी कमजोरी का बखान दूसरों के सामने करता फिरता है।

२. केतु पापी ग्रहों में गिना जाता है, इसलिए पापी ग्रहों से मिलकर यह नीचा फल ही करता है। जब बृहस्पति या सूर्य दुश्मन ग्रहों से पीड़ित होंगे तो केतु का असर भी नीचा हो जाता है। इसी तरह जब शुक्र और चंद्र आपस में मिल रहे हों तो केतु नीच हो जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि जातक के बेटे या पोते को सूखे की बीमारी हो जाती है।

३. कुंडली के पहले घर में केतु शुभ राशि का हो तो जातक मेहनती, सुखी, दौलतमंद होता है। वर्षफल के हिसाब से जब केतु पहले घर में आता है तो अपने जातक को लम्बी यात्राएं कराता है। यहां केतु कितना की नीच क्यों न हो, वो अपने गुरु और पिता को तारता होगा। १ में बैठा केतु ६,७ के ग्रहों पर नीच असर डाले तो डाले, मगर सूर्य पर नीच असर नहीं करता। शादी के बाद अगर केतु नीच हो जाए तो शनि अच्छा असर डालता है। लाल किताब के लेखक का मत है कि ऐसे में शनि का उपाय मददगार होगा।

४. केतु २ में और ६ में कोई भी पापी ग्रह कायम हो तो जातक को नाभि के नीचे के हिस्से में बीमारियां रहती हैं। पथरी आदि की वजह से ऑपरेशन तक की नौबत आ सकती है। अगर ८ में चंद्र या मंगल हो तो जातक की उम्र कम होती है। १६ या २२ साल उम्र में वो बहुत तकलीफ उठाएगा। ८ में जो भी ग्रह होगा, वो अपनी अवधि (वक्त) तक औलाद के लिए दुःख और तकलीफ ही पैदा करेगा।

५. केतु ५वें में और बृहस्पति ११ में हो तो जातक के मरा हुआ बच्चा पैदा होगा और ४८ साल उम्र से पहले ही माता की मौत हो जाएगी। अगर बृहस्पति मंदा होगा तो केतु का फल भी मंदा ही होगा, रोजगार २४ साल के बाद ढर्रे पर चलेगा।

६. जिस तरह राहु १ सूर्य को मदद पहुंचाता है, वैसे ही केतु ६ बृहस्पति को कभी मंदा नहीं होने देगा, चाहे बृहस्पति कहीं भी, किसी भी हालत में क्यों न हो, ऐसे जातक की औलाद अपने वालिद (पिता) का हाथ बंटाती रहेगी।

७. अकेला केतु ६ में बैठा अच्छा फल देता है। इसका जातक अपने लिए ठीक

मगर दूसरे के लिए ठीक नहीं होता। आमतौर पर केतु बुध का दुश्मन और शुक्र का दोस्त होता है, मगर ६ में केतु की चाल उल्टी होगी। यहां ६ में केतु बुध का दोस्त और शुक्र का शत्रु होगा। ननिहाल का असर भी यह मंदा कर देता है। शुक्र-बृहस्पति के वक्त केतु भी मंदा हो जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि जातक को बेकार का सफर करना पड़ता है। बिना वजह के लोग उसके दुश्मन हो जाते हैं। अगर चंद्र-केतु ६ में हो तो जातक की औलाद पर उसका बहुत बुरा असर पड़ता है। मां की मौत के बाद ही औलाद कायम होगी।

८. केतु ८ के वक्त अगर बुध १, ६ में बैठा हो तो ३४ साल उम्र तक औलाद पैदा होगी, बाद में नहीं (अगर होगी तो जिंदा नहीं रहेगी), और बुध ७, १२ में होगा तो औलाद ३४ साल के बाद पैदा होगी।

९. केतु ८ के वक्त बुध-शुक्र मंदे घरों में होते हैं और जातक का मिजाज उसकी औरत की सेहत पर पड़ता है।

१०. ७वें घर के ग्रहों की साला-मियाद बीत जाने के बाद केतु का असर ऊंचा होगा। जातक प्राय: परदेश में ही जीवन बिताता है। केतु की अच्छाई या बुराई बृहस्पति के मुताबिक होगी, इसलिए कि ९वां घर बृहस्पति का पक्का घर है। १०वां शनि का पक्का घर है। इस घर में केतु का असर शक्की होता है। मंगल इस घर में बहुत अच्छा माना गया है। केतु के साथ बैठा हो तो दोनों का असर ठीक नहीं होता। अगर खुद शनि अच्छे घरों में बैठा हो तो वहां केतु अच्छा असर देने वाला होता है।

११. केतु ११वें में अच्छा माना जाता है। दौलत और जायदाद सभी कुछ देता है; किन्तु ३ में या साथ में बुध हो तो केतु का असर मंदा हो जाता है। जब शनि अच्छा हो या वर्षफल में ११ में आया हुआ हो तो बहुत अच्छा फल देता है।

१२. केतु ११ के वक्त अगर बुध ३ में हो तो बहुत बुरा होता है। इसके जातक को अपने भविष्य की ओर बहुत ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उसको अक्सर पेट की बीमारियां घेरे रहती हैं। केतु ११ के वक्त अगर बृहस्पति ५, ११ में हो तो औलाद का दु:ख जातक को होता है। लेकिन ५ का राहु किसी खास वजह से मददगार हो रहा हो तो जातक औलाद की तरफ से सुखिया होगा।

१३. कुंडली के १२वें घर में केतु ऊंचा माना जाता है। इसका जातक ऊंचा या बड़ा ओहदा हासिल करता है। वह इज्जत, शौहरत और दौलतमंद होता है। अच्छे कामों पर ही उसका रुपया-पैसा खर्च होता है। २४वें साल में जब लड़का पैदा हो तो उसके घर में दौलत लक्ष्मी बनकर आती है।

१४. केतु १२ के वक्त शनि-शुक्र-बृहस्पति का फल बहुत शानदार होता है और उन ग्रहों से जातक को मदद मिलती है।

मंदे केतु के लक्षण

- बेटे या पोते को सूखे की बीमारी लगे।
- रीढ़ में दर्द हो।
- फोड़े-फुंसी निकलें।
- पेशाब की बीमारी हो।
- जोड़ों का दर्द कायम रहे।
- औलाद की पैदाईश में रुकावट आए।
- हर वक्त बच्चे बनाने की फिक्र रहे।
- औरत की सेहत खराब रहे।
- पित्त या गुर्दे की पथरी की वजह से तकलीफ हो।
- भाइयों की तरफ से दु:खिया रहे।
- दीवानी मुकदमों में पैसा बर्बाद हो।
- शूगर की बीमारी से पीड़ित हो।
- लड़कों को श्वास की बीमारी तकलीफ दे।
- जातक कुत्तों से बेहद डरे।
- दुश्मन साथ लगे रहें।
- छत पर बैठकर कुत्ते रोया करें।
- मकान की छत गिर जाए।
- काम वासना बहुत ज्यादा हो।

उपरोक्त सभी लक्षण मंदे केतु के हैं। केतु को अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय लाभदायक सिद्ध होते हैं–

- बृहस्पति का उपाय मददगार होगा और सेहत के लिए चंद्र का उपाय मदद देगा।
- जब औलाद तकलीफ में हो तो काला-सफेद कम्बल धर्म-स्थान में बैठे साधु को देना अच्छा होगा।
- पांव या पेशाब की तकलीफ में पांव के दोनों अंगूठों में चांदी की तार डाल दें।
- माया के मंदे असर के लिए बंदर को गुड़ खिलाएं।
- बुध का उपाय करें या कराएं।
- सेहत मंदी के वक्त रोज केसर का तिलक करें।

- चाल-चलन की संभाल जरूरी।
- रीढ़·में दर्द, पांव, घुटने या कमर आदि में तकलीफ हो तो गले में सोना पहनें।
- गुड़, चावल या दाल चना दरिया में बहाएं।
- दक्षिण के दरवाजे पर तांबे की कीलें या तांबे के पत्तर तांबे की कीलों से गाड़ दें।
- सोना, सूर्य की पीली चीजें कपड़े में बांधकर कुल पुरोहित को देकर आशीर्वाद लें।
- औलाद की तकलीफों को दूर करने के लिए कुत्ता पालें।
- मन की शांति के लिए चांदी पहनें।
- चंद्र, मंगल की चीजें दान करें।
- सोने की अंगूठी बाएं हाथ में पहनें।
- ४३ दिन तक रोज मंदिर में केले दें।
- घर में किसी भी जगह पर सोने का चौकोर पत्तर कायम करें।
- मकान की बुनियाद में लोहे के पात्र में शहद, दूध दबाएं।
- चांदी का शुद्ध बर्तन शहद से भरकर घर में रखें।
- अपनी औरत की जिंदगी बचाने के लिए ४३ दिन तक रोज़ रात को ग्यारह मूलियां उसके सिरहाने रखें और सुबह मंदिर में दे आएं।
- रोज सुबह गणेशजी की पूजा करें।

विशेष—लाल किताब के लेखक ने केतु को चारपाई भी माना है, जातक को जो चारपाई (या पलंग) अपनी ससुराल से मिली है, जातक रात को उसी चारपाई पर सोए। औलाद पैदा करने के लिए वो चारपाई अच्छा फल देगी। जब तक वो चारपाई घर में रहेगी, केतु का फल कभी नीच (मंदा) नहीं होगा।

देवोपासना

नौ ग्रहों का सही अनुपात ही मनुष्य के जीवन की श्रेष्ठता के लिए आवश्यक है, ग्रहों के उतार-चढ़ाव को सामान्य रूप में लाने के लिए देवताओं की उपासना करने का विधान है, जिसके बारे में आगे बताया जा रहा है।

सूर्य की उपासना—हृदय, उदर एवं नेत्र-सम्बधी रोग, आकस्मिक रूप से धन का नाश, मान और सम्मान को ठेस सूर्य की अशुभता की वजह से ये सब कारण उत्पन्न हो जाते हैं। सूर्य नमस्कार, सूर्य-पूजा और हरिवंश

पुराण आदि का पाठ करने से सूर्य के सभी अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाते हैं।

चन्द्र की उपासना—यदि चन्द्र अशुभता प्रदान करे तो अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोग सहज ही उत्पन्न हो जाते हैं। इस तरह के हालात पैदा हो जाने पर अपनी कुल देवी की उपासना करें। इससे सभी प्रकार के कष्टों से छुटकारा मिल जाएगा।

मंगल का उपासना—भाई से विरोध, पुश्तैनी जायदाद में विवाद, हत्या, चोरी, डकैती, आगजनी, सेना अथवा पुलिस की कार्यवाही, राजनेताओं तथा राज्य का अमंगल तथा यकृत एवं मुंह आदि रोगों की उत्पत्ति मंगल के अशुभ प्रभाव के कारण ही संभावित होती है। ऐसे में सुन्दरकाण्ड का पाठ, हनुमान बाहुक, हनुमद्स्तोत्र व हनुमान चालीसा आदि का पाठ करना चाहिए। हनुमानजी के प्रसाद को भी वितरित करना चाहिए।

बुध की उपासना—ब्ध भाग्य को जगाने वाला ग्रह है। यों यह ३२वें वर्ष में भाग्योदय कराता है, किन्तु जब यह मन्दा या बद दशा को पहुंचता है, तो गुर्दे या पित्त की थैली में पथरी, बवासीर, ज्वर, दन्त तथा स्नायु रोग आदि की उत्पत्ति कर देता है। इस दशा में कीलक एवं अर्गला स्तोत्र व दुर्गा सप्तशती कवच का पाठ करना अच्छा रहता है।

बृहस्पति की उपासना—बृहस्पति कृपा से जगत को ज्ञान और गरिमा की प्राप्ति होती है। यह सारे जगत को प्रदीप्त कर देता है। इसकी अशुभता से स्वजनों से वियोग, विवाह में धिघ्न, सन्तान में बाधा, पुत्र-हानि, पति-पत्नी में अनबन तथा विविध प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। श्रीमद्भागवत का पाठ, हरिवंश पुराण का पाठ तथा हरि पूजन आदि करने से बृहस्पति की अशुभता दूर हो जाती है।

शुक्र की उपासना—कामसूत्र के कारक शुक्र का वीर्य पर विशेषाधिकार है। शुक्र मन्दा या बद दशा में हो तो यह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शरीर में कमजोरी, सन्तान उत्पन्न करने में अक्षमता, यौन-सम्बन्धी विकार, भूत-प्रेत बाधा, गम और वात, पित्त, कफ आदि रोगों को जन्म देता है। शुक्र को अनुकूल बनाने के लिए श्रीलक्ष्मी जी की पूजा-उपासना करनी चाहिए।

शनि की उपासना—अनेक दुर्घटना और रोगों को जन्म देने वाले शनि को शांत और अनुकूल बनाने के लिए भैरव देवता की उपासना, पूजा करें। भैरव मन्दिर में शराब चढ़ाएं, लेकिन खुद शराब और मांसादि से परहेज रखें।

राहु की उपासना—राहु के बद, मंदा या प्रतिकूल होने से राजकोप, मानसिक रोग, भूत-प्रेतों का प्रकोप, वैराग्य, सिर पर चोट तथा मस्तिष्क और फेफड़ों से सम्बन्धित रोगों की उत्पत्ति होती है। कन्यादान करना, कन्याओं की शादी पर दानादि देना तथा गणेशजी की पूजा करते रहने से यह शुभता प्रदान करने लगता है।

केतु की उपासना—यह मंगल ग्रह की भांति अनिष्ट करने वाला है। गणेशजी की पूजा और गोदान आदि के द्वारा इससे शुभता प्राप्त की जा सकती है।

राशियों से सम्बन्धित ग्रहों की शांति

नौ ग्रहों की शांति के उपाय लाल किताब में दिए गए हैं, उनका वर्णन इस प्रकार है—

सिंह राशि (सूर्य)—हरिवंश पुराण का पाठ करें। गेहूँ, गुड़ और तांबा धर्म-स्थान में दें। रात में चूल्हे की आग दूध से बुझाएं तथा किसी भी शुभ कार्य को करते वक्त या कहीं जाते वक्त पहले मुंह मीठा करें।

कर्क राशि (चन्द्र)—चांदी का टुकड़ा नदी में डालें। मोती पहनें और चावल व चांदी अपने पास में रखें। रात्रि के वक्त दूध पिएं और सुबह के वक्त दूध का दान करें, लेकिन दूध बेचना नुकसानदेह साबित होगा। रात को सिरहाने दूध का गिलास रखकर सोएं और सुबह उसे क्यारी में गिरा दें। कुएं का जल लाकर घर में कायम करें।

मेष-वृश्चिक राशि (मंगल)-तन्दूर की मीठी रोटी और मसूर की दाल धर्म-स्थान में दें। सम्भव हो तो मृगछाला का भी दान करें और मूंगा पहनें, किसी पवित्र नदी या नहर में रेवड़ी और बताशे प्रवाहित करें। हनुमानजी की पूजा और उपासना करें तथा हनुमान मन्दिर में जाकर बूंदी या लड्डू का प्रसाद चढ़ाकर वितरण करें। इसी के साथ हनुमान बाहुक या हनुमान चालीसा का पाठ करें।

मिथुन एवं कन्या राशि (बुध)—देवी दुर्गा की उपासना करें। आग में कौड़ियां जलाकर दरिया में प्रवाहित करें। फिटकरी से दांत साफ करें। कनिष्ठिका उंगली में पन्ना रत्न पहनें और चांदी के सिक्के में सूराख करके नदी में डालें। कद्दू (सीताफल) और बकरी का दान करें और छोटी कन्याओं के पैरों को पूजें।

धनु और मीन राशि (बृहस्पति)—हरिवंश पुराण को सुनें और विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें। केसर का तिलक करें और नाभि पर लगाएं। सोना, हल्दी, पीले फूल, चने की दाल मन्दिर में दें। अपने हाथों से पेड़ लगाकर रोज उसकी पूजा किया करें।

वृष और तुल राशि (शुक्र)—गरीब और बेसहारा लोगों को सूखी सब्जी और रोटी खिलाकर और दान देकर विदा करें। अपने भोजन का एक हिस्सा निकालकर गाय को खिलाएं। सम्भव हो तो गोदान करें। दूध, दही, घी, कपूर, सफेद फूल, सफेद मोती और चरी को धर्म-स्थान में दें। बेवा औरतों की मदद करें। देवी लक्ष्मी का श्रद्धापूर्वक पूजन करें और आरती उतारकर भोग लगाएं।

मकर एवं कुम्भ राशि (शनि)—भगवान् शंकर के शिव महिमा स्तोत्र का पाठ तथा उपासना करें। कौए को रोटी खिलाएं। काले साबुत उड़द, तवा, चकला-बेलन, चिमटा, लोहा, तिल का तेल व शराब का दान करें। आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं।

कन्या राशि (बुध)—राहु-केतु दोनों छाया ग्रह हैं, अतः ये किसी पृथक् राशि के स्वामी नहीं हैं। फिर भी ज्योतिषों ने राहु को कन्या राशि और केतु को मिथुन राशि का स्वामी माना है। सरसों तथा नीलम रत्न दान करें। दरिया में कोयला प्रवाहित करें। खोटा सिक्का पानी में डालें। गणेश की पूजा करें।

मिथुन राशि (केतु)—कपिला गाय का दान करें। सतनजे की रोटी कुत्ते को खिलाएं। चितकबरे रंग का कम्बल धर्म-स्थान में दें। गणेशजी का स्मरण एवं पूजन करें।

❑❑❑

हालात मालूम करने की निशानियां

किसी भी शख्स को देखकर आसानी से उसके हालात बता देना उन लोगों के लिए ताज्जुब की बात हो सकती है जिन्होंने यह नहीं पढ़ा है, जो हम लिख रहे हैं। यह कोई इल्म नहीं है बल्कि कुछ खास किस्म की जानकारियां हैं, जिनके बलबूते पर किसी भी शख्स के बारे में सही राय कायम की जा सकती है।

सिर की बनावट

१. जिसका सिर लम्बोत्तरा यानी लम्बाई में हो वो शानो-शौकत वाला होगा।
२. जिसका सिर दरमियाना होगा वो दौलतमंद होगा।
३. जिसका सिर जरूरत से ज्यादा बड़ा होगा वो गरीब और हमेशा परेशान-सा रहने वाला होगा, मानो मुसीबतों का बोझा ढोता फिर रहा हो।

सिर के बाल

१. जिस के बाल काले और मुलायम होंगे वो जरूर दौलतमंद होगा अथवा दौलतमंद बाप का बेटा होगा या उसका बेटा दौलतमंद होगा।
२. जिसके बाल बहुत बारीक होंगे, वो सुंदर और दिल का साफ होगा।
३. जिसके बाल बहुत सख्त और कुछ रूखे से हों वो तंगदस्ती और बहादुर होगा।
४. जिसके बाल सुर्ख रंग के जैसे होंगे वो गरीब और परेशान होगा।
५. जिसके बाल सुनहरे होंगे वो मध्यम दर्जे का होगा।

पेशानी (माथा)

१. जिसकी पेशानी (या माथा) ऊंची हो वो शख्स भाग्यशाली और दौलतमंद होगा।
२. यदि पेशानी चौड़ी हो तो यह इल्म व अक्ल की निशानी है।
३. पेशानी छोटी होगी तो यह छोटी उम्र और बदसख्ती की निशानी होगी।

४. जिसकी पेशानी समतल व ऊंची होगी वो शख्स यकीनन दुःख व मुसीबत की अलामत होगा; यानि सारी उम्र सख्ती में गुजारेगा।
५. यदि पेशानी पर तिल होगा तो यह अच्छे भाग्य की निशानी होगा।
६. यदि पेशानी पर एक रेखा हो जो एक किनारे से दूसरे किनारे तक हो, तो ऐसी रेखा दौलतमंदी की निशानी साबित होगी। बीच में से टूटी होगी तो माल व दौलत के नुकसान का नमूना होगी।
७. पेशानी पर दो रेखाएं ऊंचे पद व लंबी उम्र की निशानी होंगी।
८. चार या पांच रेखाएं निर्धनता व परेशानी की निशानी हैं।
९. यदि कोई रेखा न हो तो यह संन्यासी हो जाने की निशानी है।

भौंहें

१. जिस शख्स की दोनों भौंहें सुंदर, बारीक और कमान की तरह से होंगी, वो दौलतमंद होगा। ऐसी भौंहें सल्तनत की निशानी हैं।
२. मिली हुई भौंहों वाला शख्स चोर या डकैत होगा।
३. भौंहों के बालों का सख्त होना यकीनन बदबख्ती की निशानी हैं और गरीबी का सबूत है।
४. भौंहें चौड़ी और भरी हुई हों, मगर दोनों भौंहों का आपस नें मिलान न हुआ हो, तो ऐसी भौंहों वाला शख्स यकीनन कोई राजा या महाराजा होगा।

आंखें

१. चकोर की तरह की आंखें चालाकी और बेवफाई की निशानी हैं;
२. अगर बिल्ली की तरह आंखें हों, नीली हों या सब्ज रंग की हों तो यह दुराचार व बेमुरव्वती की निशानी हैं।
३. अगर आंखें सफेद या काली हों और उसमें सुर्ख डोरे पड़े रहते हों तो वो शानो-शौकत, खुशहाली व सुखदायी जिंदगी की निशानी हैं; किन्तु ऐसे शख्सों को औरतों से बहुत लाभ पहुंचता है।
४. अगर शेर की आंखों की तरह खतरनाक हों या गुस्से से भरी हुई हों तो यह बहादुरी की निशानी है।
५. मुर्ग की तरह की आंखें हों, जैसे कि मुर्ग कन-अंखियों से देखता है तो यह बेशर्मी व बेहयाई की निशानी है।

पलकें

१. पलकों के बाल कम होना, जीवन का भोग-विलास में बसर होने की निशानी है।

२. पलकों के बालों का सख्त होना या अधिक होना गरीबी व बदबख्ती की निशानी है।

नाक

१. ऊंची व बड़ी नाक दौलतमंदी की निशानी है।

२. सुंदर तोते वाली नाक अक्लमंदी, नेक और सत्तासीन होने की निशानी है। यह नाक तोते की चोंच जैसी टेढ़ी और फैली हुई होती है।

३. जो नाक छोटी व ऊंची बारीक-सी हो, वो नेकी की निशानी है।

४. मोटी/छोटी नाक का होना कमअक्ली व रोजगार के लिए परेशान होने की निशानी है।

५. नाक के सूराखों का तंग होना अक्लमंद और हयादार होने की निशानी है।

६. नाक के सूराखों का बड़े होना बेहया होने की निशानी है।

कान

१. जिस शख्स के काले लम्बे होंगे वो दौलतमंद, नेक तबियत का और बड़ी उम्र का (दीर्घायु) होगा।

२. अगर कान लम्बे व कमजोर हों तो यह नेकी की निशानी है। ऐसे कानों वाला शख्स बहुत उम्दा बातें करने वाला, अच्छे अख्लाक का होगा।

३. कानों की लौ यदि कनपटी से अलग हों तो शख्स खुशहाल होगा और रहेगा।

४. अगर कानों की लौ मिली हुई हों, मगर बारीक हों तो यह भी खुशहाली की निशानी है।

५. अगर कानों पर बाल बहुत हों तो यह निशानी दुःख और मेहनत की है।

चेहरा

१. चूहे जैसे चेहरे वाला शख्स भिखारी (भिक्षा मांगने वाला साधु) होगा।

२. हिरण जैसा चेहरा बदबख्त की निशानी है।

३. जिसका चेहरा चीते के चेहरे जैसा होगा, वो अवश्य ही मान और सम्मान वाला होगा।

४. किताबी/आफताबी चेहरे का होना भाग्यशाली और ऊंची शान की निशानी है।

५. सुंदर व गोश्त से भरे चेहरे वाला नेक और दौलतमंद होगा।

जुबान

१. सुर्ख जुबान दौलतमंद की निशानी है।
२. सफेद जुबान (जीभ) गरीबी और तंगदस्ती की निशानी है।
३. काली जुबान दौलतमंद तथा मंदी सेहत की निशानी है।

होंठ

१. सुर्ख होंठ दौलतमंदी की निशानी है।
२. काले होंठ तंगदस्ती व गरीबी की निशानी है।

दांत

१. अनार के दानों की तरह के बारीक दांत दौलतमंदी की निशानी है।
२. पीले, भद्दे और मैले दांत दिलद्दरी की निशानी है।
३. मोतियों की तरह चमकते सफेद दांत दौलतमंदी की निशानी है। श्रेष्ठ महापुरुषों के दांत भी कुछ इसी प्रकार के होते हैं।

स्वर (आवाज)

१. आवाज में बादलों जैसी गरज का होना नेकी की निशानी है।
२. ऊंची आवाज होना शानो-शौकत की निशानी है।
३. आवाज में खनक दिल की सुंदरता का सबूत है।
४. मोर की तरह की आवाज का होना दौलतमंदी व नामवरी की निशानी है।

दाढ़ी

१. दाढ़ी के बाल काले और मुलायम हों तो यह दौलतमंदी व नामवरी की निशानी है।
२. सुर्ख बालों की दाढ़ी निर्दयता व गुस्से का सबूत देती है।

मुंह

१. चौड़ा मुंह कमअक्ली व परेशानहाली की निशानी है।
२. दरम्याने दर्जे का मुंह जीवन का ठीक-ठाक गुजरने का पक्का सबूत होगा।
३. जिसका मुंह तंग होगा उसका जीवन भोग और विलास में व्यतीत होगा।

ठोढ़ी (ठुड्डी)

१. गोल ठोढ़ी होना अक्लमंद व फनकार होने की निशानी हैं।

२. लम्बी ठोढ़ी दोषी होने की निशानी है।
३. ठोढ़ी का खाली होना बुरी आदत की निशानी है।
४. जिसकी ठोढ़ी ऊंची होगी वो निसंदेह दौलतमंद होगा।

गरदन

१. सुराहीदार गरदन सुंदरता की निशानी है।
२. जिसकी गरदन जरूरत से ज्यादा बड़ी होगी वो चोर या चोरी की आदत वाला होगा।
३. सीधी लम्बी गरदन वाला शख्स कमीना और मक्कार होगा।
४. लम्बी गरदन जलील होने की निशानी है।
५. गरदन का दरम्यानी होना जीवन के ठीक बसर होने की निशानी है।

गले की रेखाएं

१. गले पर एक रेखा का होना लम्बी उम्र जीने की निशानी है।
२. दो रेखाओं का गले पर होना अक्लमंदी का सबूत है।
३. तीन रेखाओं वाला शख्स शान व शौकत वाला होगा।
४. चार रेखाएं परेशानी और बेकरारी की निशानी हैं।

पीठ

१. चौड़ी पीठ दौलत व शासन की निशानी है।
२. ज्यादा लम्बी पीठ तंगदस्ती व गरीबी की निशानी है।

बाजू

१. दरम्याने बाजू वाला शख्स दौलतमंद होगा।
२. लम्बे बाजू दानाई व होशमंदी की निशानी है।

हाथ

१. जिसका दायां हाथ बाएं हाथ से बड़ा होता है, वो यकीनन बहादुर होता है।
२. जिसका बायां हाथ दाएं हाथ से बड़ा होगा वो परेशान और बेचैन होगा।

कोहनी

१. शेर की सी कोहनी जो मांस से भरी हो, दौलतमंदी की निशानी है।
२. खुश्क, रूखी व बारीक बंदर जैसी कोहनी तंगदस्ती व गरीबी की निशानी है।

उंगलियां

१. जिस शख्स की तर्जनी और अनामिका उंगलियां बराबर हों वो मान और सम्मान में अपने पिता से भी बढ़कर होगा।

पेट

१. बड़ी तोंद का होना दौलत व नेमत की निशानी है।
२. पेट का बड़ा और बेगोश्त होना गरीबी की निशानी है।

नाभि

गहरी और गोश्त से भरी हुई नाभि दौलत व माल की निशानी है।

रान

१. रान पर गोश्त की अधिकता दौलतमंदी की निशानी है।
२. घोड़े की तरह रानों का होना रोजी बढ़ने का सबूत है।
३. शेर की रानों की तरह होना दौलत व माल की निशानी है।
४. बहुत बड़ी और थोड़े गोश्त वाली रानों का होना बुजदिली की निशानी है।

पिंडली

१. पिंडली पर ज्यादा गोश्त का होना दौलतमंदी की निशानी है।
२. पिंडली का मजबूत होना सुंदर औरत मिलने की निशानी है।

पांव

१. जिसके पांव गोश्त से लबालब भरे होंगे वो जरूर दौलतमंद होगा।
२. कम गोश्त और तलुवे का गहरा होना भी दौलतमंदी और इज्जत की निशानी है।
३. तलवे का गोश्त से भरा होना बदचलनी की निशानी है।

दिनों का शुभ/अशुभ होना

यहां हम सप्ताह के सातों दिनों के बारे में बता रहे हैं। अच्छे कामों के लिए कुछ दिन अच्छे होते हैं और कुछ दिन बुरे। किस दिन कौन-सा काम अच्छा होगा, यह निम्न प्रकार से जाना जा सकता है—

रविवार—यह सूरज का दिन है। सूरज इसका सितारा है। अगर दिन की पहली घड़ी में कोई मौहब्बत का अमल करेगा तो जरूर कामयाब होगा। यह सारा दिन ही बहुत अच्छा है। नया कपड़ा पहनने के लिए बेहतर है। इसके अलावा नया मकान बनाने के लिए, जमीन जोतने के लिए, बच्चे को स्कूल में बैठाने के लिए,

सफर करने के लिए अच्छा दिन है। अगर पूरब की ओर से सफर किया जाएगा तो फलकारक होगा। जो बच्चा इस दिन पैदा होगा, वो बड़ा ही भाग्यशाली होगा।

सोमवार—यह चाँद का दिन है। चंद्र इसका सितारा है। सारे कामों के लिए यह दिन मुबारक है। शादी करने के लिए, बच्चे का नाम रखने के लिए, नया मकान बनाने के लिए, बच्चे को स्कूल में डालने के लिए और सेहत के गुस्ल के लिए यह दिन बहुत मुबारिक होता है। अगर दक्षिण व पश्चिम की ओर से सफर किया जाएगा तो यकीनन कामयाबी मिलेगी। अलबत्ता बीमारी के लिए यह दिन अच्छा नहीं है। इस दिन जो बच्चा पैदा होगा, वो बड़ा नेक होगा।

मंगलवार—यह मंगल का दिन है। मंगल इसका सितारा है। कुछ कामों के लिए यह दिन अच्छा है और कुछ के लिए बुरा है। इस दिन मकान बदलना हो या खरीदना व बेचना हो तो कुछ बुरा न होगा। मगर नया लिबास पहनना या सिलवाना अच्छा नहीं है। पूरब या दक्षिण की ओर सफर करने में कोई हर्ज नहीं है। इस दिन जो बच्चा पैदा होगा वो बहुत तेज मिजाज का होगा।

बुधवार—यह बुध का दिन है। बुध इसका सितारा है। इस दिन को भी अच्छा माना गया है। नया लिबास पहनने के लिए, नए मकान में जाने के लिए, स्कूल में पढ़ने के लिए और जमीन जोतने के लिए यह दिन मुबारिक है। अगर पूरब या पश्चिम की ओर सफर करें तो कोई हर्ज नहीं। जो बच्चा इस दिन पैदा होगा, वो इल्म का शौकीन और योग्य होगा।

बृहस्पतिवार—यह बृहस्पति का दिन है। इसका सितारा बृहस्पति (गुरु) है। यह दिन अच्छा माना जाता है। इस दिन नया लिबास पहनना, अपने किसी खास से मुलाकात करना, तिजारत करना, शादी-विवाह करना और नया मकान बदलना अच्छा है। सफर के लिए यह दिन सबसे बेहतर है। जो बच्चा इस दिन पैदा होगा, वो नेकबख्त होगा।

शुक्रवार—यह शुक्र का दिन है। इसका सितारा शुक्र (जोहरा) है। यह बड़ा मुबारिक दिन है। इस दिन तिजारत शुरू करना और नया मकान बनाना, शादी-विवाह करना व बच्चे को पढ़ने के लिए स्कूल में बिठाना बड़ा ही मुबारिक है। जो काम इस दिन शुरू करें, उसमें कामयाबी होगी। इस दिन दोपहर तीन बजे के बाद सफर करना मुबारिक होगा।

शनिवार—यह शनि का दिन है। इसका सितारा शनि है। ज्योतिषियों के निकट यह सबसे अधिक अशुभ है। इस दिन नए कपड़े पहनना उचित नहीं है। इस दिन कोई नया काम नहीं करना चाहिए और न ही सफर करना चाहिए। जो बच्चा इस दिन पैदा होगा, उसकी सेहत अक्सर खराब ही ज्यादा रहेगी।

हमारे अति सुन्दर धार्मिक प्रकाशन

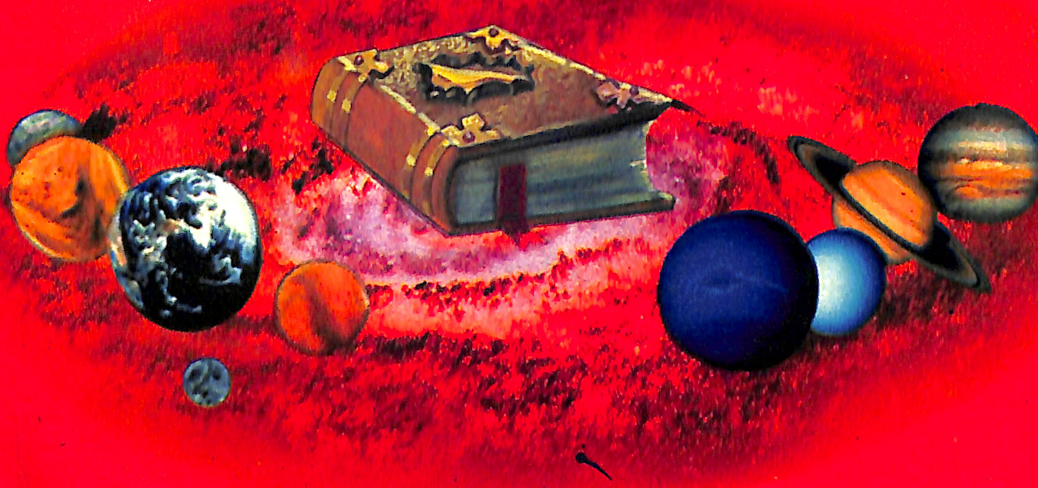
सं० क्र०	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	सम्पूर्ण सुख सागर	125/-
2.	सम्पूर्ण शिव पुराण	125/-
3.	सम्पूर्ण देवी भागवत पुराण	100/-
4.	सम्पूर्ण व्रत और त्यौहार	75/-
5.	श्री बाबा बालक नाथ जीवन चरित्र	150/-
6.	भृतहरि शतक	60/-
7.	चाणक्य नीति	60/-
8.	अनमोल वचन	60/-
9.	अपनी बीमारी अपना ईलाज	60/-
10.	जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज	60/-

सं० क्र०	पुस्तक का नाम	मूल्य
11.	हर्बल चिकित्सा (जड़ी-बूटी, फल सब्ज़ी)	60/-
12.	कुकिंग गाइड	60/-
13.	श्री बालाजी उपासना संग्रह	60/-
14.	माता वैष्णों देवी कथा	60/-
15.	घरेलू ईलाज	40/-
16.	धन कमाने के 30 स्कीमें	40/-
17.	भारतीय दर्शन	40/-
18.	हर्बल ब्यूटि पार्लर	60/-
19.	महा इन्द्रजाल	101/-
20.	हिप्नोटिज़्म के चमत्कार	30/-

सभी पुस्तकें अनेकों चित्रों से सजी हुई व पक्की मज़बूत जिल्ददार हैं।

असली एवं प्राचीन
लाल किताब

इसी ग्रन्थ में सृष्टि और समष्टि के उत्थान और पतन का रहस्य छिपा है। शुभ और अशुभ ग्रहों के फलादेश के तदनुरूप आचरण करना ही व्यक्ति के सर्वोत्तम जीवन के लिये आवश्यक है यह पुस्तक मानव मन-मस्तिष्क के अबूझे और अनसुलझे रहस्यों को उजागर करती है। नवग्रहों के शुभ-अशुभ प्रभावों के रहस्यों को परत दर परत खोलती है।



लक्ष्मी प्रकाशन दिल्ली-6